मध्यप्रदेश की जनपदीय पहेलियाँ

आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद् भोपाल का प्रकाशन

मध्यप्रदेश की जनपदीय
पहेलियाँ

सम्पादक
डॉ. कपिल तिवारी

सहायक सम्पादक
अशोक मिश्र

प्रकाशक – आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्
मुल्ला रमूजी संस्कृति भवन, आधार तल, बाण गंगा, भोपाल-462003
मध्यप्रदेश, भारत
फोन – 0755-2551878, 2760668
E-mail : mplokkala@rediffmail.com

प्रकाशन वर्ष – वर्ष 2011 प्रथम संस्करण

स्वत्वाधिकार – आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

शब्दांकन – आदिवासी लोक कला एवं तुलसी साहित्य अकादमी
मध्यप्रदेश संस्कृति परिषद्

आवरण – काष्ठ शिल्प, बस्तर, अकादमी के संकलन से।

मुद्रण – शासकीय केन्द्रीय मुद्रणालय, भोपाल

मूल्य – 300/- रुपये (तीन सौ केवल)

■ पुस्तक से सम्बन्धित समस्त विवादों का न्यायालयीन कार्य क्षेत्र भोपाल होगा।

■ पुस्तक में प्रकाशित समस्त सामग्री लेखक की है, आवश्यक नहीं कि प्रकाशक इससे सहमत हो।

भाषा की शक्ति के स्वरूप और विकास की सामान्यत: दो दिशाएँ हैं- एक जहाँ भाषा स्वयं एक व्यक्तित्व की तरह विकसित होती है, और दूसरी में वह बहुत सी अभिव्यक्तियों का माध्यम होकर स्वयं एक संस्कृति रचना करती है। जब हम कुछ स्थानिक संस्कृतियों को उनकी भाषाओं और भाषिक क्षेत्रों या जनपदों की तरह परिभाषित करते हैं, तो वास्तव में वे भाषाएँ संस्कृति के विशेष जनपदों की तरह परिभाषित होतीं हैं। भाषा का एक आधार 'लोक सम्प्रेषण' का है, जहाँ वह अपनी सत्ता का विस्तार विशेष ध्वनियों, शब्दों और वाक् पद्धतियों में करती है, जिसमें अर्थों की एक परम्परा भी समाहित होती है- यह भाषा का अपना आधारभूत क्षेत्र है, जहाँ किसी समुदाय के लोक व्यवहार से नये शब्द, कुछ नये अर्थ उसे समृद्ध करते रहते हैं। प्रत्येक समय और जीवन तथा प्रत्येक पीढ़ी भाषा को अपने लोक व्यवहार के अनुभव से थोड़ा समृद्ध करती रहती है। भाषा के विकास का दूसरा क्षेत्र जीवन अर्थों और उसकी रचनाओं की 'अभिव्यक्ति के माध्यम' के रूप में सामने आता है।

हम कह सकते हैं कि यह भाषा में मनुष्य की सर्जना का विशिष्ट क्षेत्र है, जहाँ भाषा एक सांस्कृतिक विश्व होती है। धीरे-धीरे समुदायों में भाषा एक अस्मिता और सांस्कृतिक पहचान का भी रूप लेती है, जिसमें भाषा के ये दोनों रूप अर्थात् 'लोक सम्प्रेषण' और 'संस्कृति रचना का आधार' शामिल होते हैं।

सम्प्रेषण और संस्कृति की ये दोनों शक्तियाँ, एक भाषा परम्परा के दो छोर हैं- सुदीर्घ काल में एक समृद्ध भाषा अपनी विशिष्ट ध्वनियाँ, मुद्राएँ, अर्थ और

भंगिमाएँ विकसित कर लेती है। इसमें वह सारा समाज शामिल होता है, जो उस खास भाषा का उपयोग करता है। इस भाषिक समृद्धि में 'जीवन के अनुभव' और 'अनुभव के ज्ञान की भाषा' विकसित होना आरंभ हो जाती है। प्राचीन भाषाओं के पास कथन और अभिव्यक्तियों के अपने विशेष ढंग विकसित होने लगते हैं- जब हम किसी भाषा की कहावतें, मुहावरे, पहेलियाँ आदि अध्ययन करते हैं, तब हमारे अवधान में 'जीवनानुभव के ज्ञान परम्परा की भाषिक अभिव्यक्तियाँ' और उनकी भंगिमाएँ ही होना चाहिये। वास्तव में यह भाषिक सम्पदा 'समूह अनुभव के जीवन के सार' और उसी के सूत्र हैं। 'सूत्र' की वास्तविक शक्ति उसके संक्षेपीकरण में होती है। यह अर्थों के भाषा में व्यक्त 'कूट पद' नहीं हैं, बल्कि वे संभव सामान्यता में बहुत प्रचलित और सुपरिचित अर्थों के भाषिक सूत्र जैसे होते हैं। उनके अर्थ खोलने और प्रकट करने किसी विशेष व्याख्या की आवश्यकता नहीं होती, वे समूह चित्त में पहिले ही सुपरिचित होते हैं- इसलिए एक विशेष स्थिति, घटना या दशा में ये भाषिक सूत्र पूरी स्थिति पर एक संक्षिप्त और सारपूर्ण टिप्पणी जैसे होते हैं- यहाँ भाषा बहुत अर्थवान और शक्तिशाली हो जाती है। किसी भाषा की सम्प्रेषण और रचना में अभिव्यक्ति की शक्ति को, यह सूत्र बहुत बढ़ा देते हैं। प्राचीन भाषाओं और लोक भाषाओं की शक्ति उनकी इन्हीं भाषिक सम्पदाओं में निहित होती है। अपेक्षाकृत नयी भाषाओं में, भाषिक सम्प्रेषण और अभिव्यक्तियों के सपाटपन और एकायामी होने का एक कारण यह भी है कि इनमें जीवन अनुभव की यह भाषा सम्पदा बहुत कम अथवा सीमित होती है।

हिन्दी क्षेत्र में प्रचलित प्राचीन समृद्ध लोकभाषाएँ इसीलिए एक संस्कृति भी हैं, क्योंकि उनके पीछे 'जीवन के अनुभव' की एक विशाल परम्परा में भाषाएँ बेहद अर्थगर्भा और संश्लिष्ट हैं। एक शब्द के दस-दस, बीस-बीस समानार्थी शब्द होते हैं और कहावतों, मुहावरों और पहेलियों की एक परम्परा ही उनमें समाहित होती है- जो सूत्र रूप में अर्थों की एक समष्टि हैं। दूसरी ओर रचना में भाषा स्वयं एक संस्कृति को रचती है और एक सांस्कृतिक परम्परा से स्वयं प्रतिकृत होकर सर्जना का एक अनन्त विश्व रच देती है- जिन भाषओं के पास केवल सम्प्रेषण का समाज है, संस्कृति का नहीं, उनमें भाषिक अर्थों की अनुगूँज बहुत गहरी नहीं होती- भाषा की संस्कृति का निर्माण एक बहुत लम्बी प्रक्रिया है, जिसमें सम्प्रेषण के साथ सांस्कृतिक प्रतीकों और अभिप्रायों, अर्थों और संकेतों के एक समानान्तर विश्व का निर्माण होता है। वास्तव में वे भाषाएँ जिस सम्पदा से इतनी ऐश्वर्यवान होतीं हैं, वह तत्त्वत: सांस्कृतिक सम्पदा और प्रसंगत: भाषा की अपनी सम्पदा होती है। दोनों का एक दूसरे से घनिष्ट और परस्पर संबंध है।

एक भाषा अपने बोलने वालों से कितने संबंध बनाती है? हम इस पर विचार करें। एक भाषा की 'अर्थ सम्पदा' कितने भाषिक रूपों और उनकी परम्पराओं से बनती है? हम इसपर भी विचार करें।

जिन भाषा ज्ञानियों ने 'भाषा और मनुष्य के अद्वैत' और 'अटूट संबंध' को खोजा, उन्होंने अकारण ही सारी सत्ता को 'वाक् मय' नहीं कहा है। एक स्तर पर भाषा मनुष्य की अभिव्यक्ति का माध्यम है, पर तत्वत: वह अस्तित्व की एक शक्ति है। 'भाषा में पहेलियों की परम्परा' आखिर है क्या? क्या एक भाषा अपनी 'अर्थ सम्पदा में हमारी दीक्षा' पहेली देकर और ' पहेलियों के अर्थ पूछकर' पूरा करती है? जैसे भाषा कहती हो 'जीवन तर्क भी है और तर्कातीत भी'। ठीक वैसे ही 'अर्थ' भी कुछ जो बिल्कुल साफ, दोटूक और स्पष्ट हैं - तो कुछ ऐसे भी जो हमारे संज्ञान और संवेदना की परीक्षा लेकर ही हमारे सामने उद्घाटित होंगे। भाषा में दीक्षित होना कई स्तरों पर होता है। 'पहेली' भी किसी भाषा में एक स्तर है। जीवन को कुछ लोगों ने 'एक पहेली' कहा है। भाषा, जीवन का ही खेल है। यहाँ जैसे भाषा कहती हो - भाषा और उसके अर्थ भी एक 'पहेली' हैं। इनका हल बताओ तभी भाषा के विश्व में हमारा प्रवेश होगा।

मध्यप्रदेश के लोकांचलों में प्रचलित भाषाएँ इन जनपदों की संस्कृति और उसकी पहचान हैं- इनकी पहेलियों के विश्व में प्रवेश कर हम इन जनपदीय भाषाओं की अर्थ सम्पदा के क्षेत्र में प्रवेश करते हैं। निमाड़ी, मालवी, बुन्देली और बघेली भाषाओं की पहेलियों का यह संग्रह इस अर्थ में बड़ा महत्त्वपूर्ण है कि एक ही ग्रंथ में सभी अंचलों की पहेलियों इसमें समाहित हैं। इनका संग्रह करने वाले अध्येताओं सर्वश्री वसन्त निरगुणे, रमेशचन्द्र तोमर 'निमाड़ी', छोगालाल कुमरावत 'सुजस', श्रीमती निर्मला राजपुरोहित, ओमप्रकाश चौबे, डॉ. कुंजीलाल पटेल, रूपसिंह कुशराम, भानुशंकर गेहलोत के प्रति अकादमी हार्दिक आभार व्यक्त करती है। आशा है कि भाषा दर्शन में उत्सुक अध्येताओं के लिए यह प्रयास महत्त्वपूर्ण प्रतीत होगा।

-कपिल तिवारी

पहेलियाँ

लोक साहित्य की जब बात चलती है, तो ऐसा लगता है- हम लोक जनजीवन के मध्य पहुँच गये हैं। जहाँ लोकगीत, लोककला और लोकोक्तियों का दिव्य दर्शन होता है, जिसमें मन आनन्द विभोर हो जाता है। एकबारगी मन कह उठता है कि लोक साहित्य जनजीवन का जीता-जागता चमत्कार है, जो भोले-भाले लोगों के दिलों में बसता है, जिनकी रसमय वाणी गीतों और कथाओं के रूप में ढलकर निकलती है, जो लोक में समाया हुआ है। यह अलिखित साहित्य जनजीवन की जिह्वा से नि:सृत होता है, जो पीढ़ी-दर-पीढ़ी परम्परागत है। इसलिए श्री रामनारायण उपाध्याय ने लिखा है- 'इनमें छोटे, सरल शब्दों में 'जी' की ऐसी बात कही है, जिससे इन्कार नहीं किया जा सकता। यही वजह है, जिससे ये पुस्तकों में नहीं, वरन् सदियों से मनुष्य की जुबान पर तैरती आई हैं और अनेक बार इनमें कटु सत्य कह जाने पर इनके सौन्दर्य पर मुग्ध रह जाना पड़ता है।'

आश्चर्य तो उस स्थान पर होता है कि लिखित हर युग में लिखित है ही, किन्तु लोक साहित्य अलिखित होते हुए भी सदा अमर रहा है। इसी बात से लोक साहित्य की लोकप्रियता, सरसता और समृद्धि का अनुमान लगाया जा सकता है। निमाड़ का लोक साहित्य किसी से कम नहीं है। एक स्थान पर लोक मर्मज्ञ साहित्यकार श्री रामनारायण उपाध्याय ने लिखा है- 'इसका (निमाड़ी का) लोक साहित्य इतना समृद्ध है कि उसे किसी भी लोक भाषा के समक्ष गर्व के साथ रखा जा सकता है।'

लोकगीतों और लोककथाओं का कलेवर कुछ बड़ा होता है, जिसके कहने-सुनने में कुछ समय लगता है, परन्तु निमाड़ की लोकोक्तियाँ और पहेलियाँ ऐसी हैं, जो वेद-सूत्रों के समान संक्षिप्त एवं प्रभावशाली तो हैं ही, साथ ही साम्य भी रखती हैं। इससे इनकी प्राचीनता का अन्दाज सहज में लग जाता है। बिहारी के दोहों के समान ये भी गम्भीर घाव करने में सक्षम हैं। लोकोक्तियाँ बुद्धि-परीक्षा की अनोखी कसौटी हैं। 'मर्‌या बिना सरग नी देखा' किसी को इतना

कह दिया तो काम करने वाला पानी-पानी हो जायेगा। 'नानी सी गड़ू मं बत्तीस लड्डू' कहने पर सामने वाला कुछ सोचने के लिए मजबूर हो जाता है। लोकोक्तियों की बात बिल्कुल तीर के समान निशाने पर बैठती है। यदि किसी को साधारण शब्दों 'आजकल आप दिखाई नहीं देते' कि बजाय 'आजकल आप ईद के चाँद हो रहे हो' कहने पर सामने वाले के दिलोदिमाग पर अनूठा ही असर पड़ता है।

लोकोक्तियों को दो भागों में विभक्त करना उचित है - एक पहेलियाँ और दूसरी कहावतें। पहेलियाँ मानव बुद्धि की कसौटी है। ज्ञान की पराकाष्ठा हैं। पहेलियों को ताड़ने में बड़े-बड़े पानी भरते नजर आते हैं। वहीं पहेली कहने वाला अपनी श्रेष्ठता का रुतबा जमा लेता है। श्री रामनरेश त्रिपाठी के शब्दों में- 'पहेलियाँ बुद्धि पर शान चढ़ाने का यंत्र हैं। ये स्मरण-शक्ति और वस्तु ज्ञान बढ़ाने की कलें हैं।' जीवन में कई ऐसे अवसर आते हैं जिनका उत्तर हमारे पास नहीं होता है। हम बगलें झाँकने लगते हैं। उस समय हम यह चाहते हैं कि एक ही शब्द का प्रयोग कर अपने मनोभावों को व्यक्त कर दें। ऐसी परिस्थिति में मस्तिष्क की क्षमता का प्रदर्शन ही पहेली बनकर उतरता है। श्री जेम्स फ्रेजह कहते हैं- 'इन पहेलियों की रचना अथवा उदय उस समय हुआ होगा, जब कुछ कारणों से वक्ता को स्पष्ट शब्दों में किसी बात को कहने में किसी प्रकार की अड़चन पड़ती होगी।'

प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है कि उसकी बातों में कुछ आकर्षण हो तो उसे चाहिये कि वह पहेलियों की शरण में जाये। पहेलियों के वातावरण में साधारण बुद्धि असाधारण बन जाती है। मस्तिष्क सक्रिय हो सकता है, तर्क शक्ति विकसित हो सकती है।

निमाड़ में पहेलियों की कमी नहीं है। ये वेदों के सूक्तों के समान ही प्राचीन हैं। इन्हें निमाड़ में 'कवाड़ा', 'ताड़नई वार्त्ता' या 'पाड़छी' कहते हैं। पाड़छी विशेष त्योहारों-विवाहादि के अवसर पर कही (गाई) जाती है, जिनका उत्तर भी गेय पदों में होता है। कैसा सुन्दर आयोजन है? बात पूछो तो गीत में, गीत के आधार पर बुद्धि परीक्षा। यहाँ मन अपने आप कवि बन जाता है। कवाड़ा या ताड़नई वार्ताएँ तो दो-चार बड़ों या बच्चों के बीच 'सरी साँझ' से छिड़ जाती हैं।

आज भी निमाड़ में दादा-दादी या नानी को घेरे हुए गाँव के बच्चे पहेलियों का आनन्द लेते हुए देखे जा सकते हैं। अबोधगम्य पहेलियों में आपकी भी 'अक्कल फूट' सकती है। फिर आपको भी 'खुटी' कहना ही पड़ेगा और दादा-दादी या नानी झट से पहेली को बूझ देगी।

- वसन्त निरगुणे

मध्यप्रदेश की लोकभाषाओं में निमाड़ी का अपना अनूठा स्थान है। खण्डवा, खरगौन और धार जिले के धरमपुरी, मनावर, कुक्षी, हरदा-होशंगाबाद तहसील के सीमान्त भागों में निमाड़ी बोली जाती है। निमाड़ी साहित्य में लोकगीत, लोकगाथाएँ, लोककथाएँ, पहेलियाँ

अत्यन्त सशक्त ज्ञानवर्धक एवं मनोरंजक हैं। हिन्दी साहित्य में पहेली के नाम से परिचित निमाड़ी साहित्य में ताड़ने वाली वार्ताएँ के नाम से जानी जाती हैं। संस्कृत में इसे 'प्रहेलिका' नाम दिया गया है।

पहेलियाँ बालकों के मनोरंजन, ज्ञानवर्धन एवं तर्कशक्ति का विकास करने वाली होती हैं। निमाड़ के गाँवों में माता-पिता, दादा-दादी, नाना-नानी बालकों की जिज्ञासा जगाने हेतु ताड़ने वाली वार्ताएँ कहते हैं। एक बालक उसका समुचित उत्तर नहीं दे पाता, तो माता-पिता, दादा-दादी उनसे पूछते हैं- 'थारी अक्कल फूटी'। तात्पर्य यह है कि क्या तुम उत्तर बताने में असमर्थ हो, तब दादा-दादी, नाना-नानी उसका सही उत्तर बच्चों को कुछ इस प्रकार बतलाते हैं कि पहेली और उसका उत्तर सदा के लिए उसे याद रह जाये।

- रमेशचन्द्र तोमर 'निमाड़ी'

संस्कृति प्रधान देश भारत के मध्यभाग में विन्ध्य और सतपुड़ा का जो भू-भाग है, वह 'निमाड़' के नाम से प्रसिद्ध है और यहाँ की लोकभाषा 'निमाड़ी' है। वे शब्द हैं- 'फूटी' एवं 'खूटी'।

जब भी कोई व्यक्ति किसी से कोई पहेली पूछता है और सामने वाले को जब कोई सही जवाब नहीं सूझता है, तब पहेली पूछने वाला उससे कहता है कि- 'अक्कल-फूटी' यानी अक्ल फूट (रफूचक्कर) चुकी है, टूट चुकी है। तब उत्तर न सूझने पर जवाब पाने के लिए वह कहता है- 'खूटी' यानी उसकी बुद्धि खूट (समाप्त) चुकी है। तब कहीं जाकर व्यक्ति पहेली का सही जवाब बता देता है एवं सामने वाला जितनी पहेलियों के उत्तर नहीं दे पाता तथा उत्तर पाने के लिए 'अक्कल फूटी' के कहने पर 'खूटी' कहता जाता है, उसकी गणना के लिए उतनी 'हण्डी चढ़ाई' जाती है।

निमाड़ी में पहेलियों को 'ताड़नई वार्ताएँ' कहते हैं। इन निमाड़ी की पहेलियों के बारे में डॉ. कृष्णलाल 'हंस' के विचारों पर गौर करें तो उनका कहना है- 'ये बच्चों के मनोरंजन के साधन हैं। अधिकांश पहेलियाँ हास्यपूर्ण हैं, जिससे उन्हें सुनने में बड़ा आनन्द आता है और उनका उत्तर ढँढने में बड़ा कौतूहल देखने को मिलता है। पहेलियाँ केवल मनोरंजन तक ही सीमित नहीं होती हैं, उनमें उस समाज का बुद्धि-कौशल और रुचि का भी पता लगता है, जिस समाज में यह प्रचलित है। ये मनोरंजन के साथ-साथ कौतूहल, तर्क और कल्पना-शक्ति को भी कुशाग्र करती हैं।'

निमाड़ी पहेलियों में मुख्य रूप से प्रकृति सम्बन्धी, खेत-खलिहान सम्बन्धी, फल-फूलों से सम्बन्धित, पशु-पक्षियों व घरेलू वस्तुओं के अलावा जो भी यहाँ की संस्कृति में रची-बसी चीजें हैं, उन पर पहेलियाँ हैं। कुछ पहेलियाँ छोटी-छोटी हैं, तो कुछ जटिल व बड़ी, तो कुछ गणितीय और कथात्मकता लिए होती हैं, जिन्हें बूझने के लिए कभी-कभी महीने का समय भी दिया जाता है।

– छोगालाल कुमरावत 'सुजस'

पारसी या पहेली रम्य रचना होती है। उसमें कूट अर्थ छिपा रहता है। इसके द्वारा बुद्धि और विवेक का परीक्षण किया जाता है। उसका अर्थ कहे गये वाक्य या उसके अर्थ में छिपा रहता है। चाबी ताले में ही रहती है। बस, उसे पहचानने की दक्षता चाहिए। इन पहेलियों के द्वारा दामाद, समधी आदि की समझ का परीक्षण स्त्रियाँ करती हैं। ये लोग जब भोजन करते हैं, उस समय नारियाँ पहेलियाँ, प्याली या पारसी गाती हैं और गीत में ही शर्त रखती हैं कि या तो हमारी इस पारसी का अर्थ बताओ या हारो अपनी नार। या ऐसी ही अन्य कई शर्तें। सही अर्थ बताते ही दूसरी पहेली पेश कर दी जाती है। गलत अर्थ पर खिलखिलाती हैं नारियाँ और झेंपते रहते हैं अतिथि। ये पहेलियाँ बहुरंगी होती हैं। इनमें लोक-ज्ञान छिपा रहता है। जो जितना अधिक लोकवेत्ता और चालाक होता है, वह उसी मात्रा में अर्थ बताने में सफल होता है। प्रस्तुति का उदाहरण यह दिया जा सकता है-

माय बोड़ी ने बेटी झींतरी दोई को एक भरतार म्हारा मारूजी
बुजो हो जमई म्हारी पारसी नी तो हारो तमारी माँय
माँय हार्यां पूरो नी पड़े हारो सोई परवार गड़ा मारूजी... ।

माता गंजी और बेटी बिखरे बाल वाली है। दोनों का एक ही पति है। दामादजी! मेरी पहेली का अर्थ बताओ, वरना अपनी माता हार जाओ। माता हारने से भी काम नहीं चलेगा। पूरा परिवार हारना पड़ेगा। इसका अर्थ है केरी (आम का फल)। केरी माता है जिसके बाल नहीं होते। उसके बेटी गुठली है, जो बाल वाली होती है। केरी एवं गुठली दोनों का पति है – आम का पेड़। ऐसी रहस्य भरे अर्थ वाली होती हैं सब पारसियाँ।

मालवी में पारसी कहलाने का क्या कारण है? क्या यह प्रश्नोत्तर पद्धति पारस या फारस से आयी है? पर ऐसा तो नहीं है। पारसी या पहेली तो भारत में चिरकाल से प्रचलित हैं। वैदिक काल से प्रचलित हैं। तब पारसी का अर्थ होगा – पारस का पत्थर। इस पारस को छूते ही, पहेली के संस्पर्श से, लोहा भी स्वर्ण बन जाता है, बल्कि बुद्धि भी स्वर्ण जैसी चमक उठती है। तो लोहे को सोना बनाने का साधन है पारसी। प्रकृत के द्वारा अप्रकृत अथवा प्रत्यक्ष से अप्रत्यक्ष अर्थ निकालने के कारण प्रहेलिका को अन्योक्ति के निकट भी माना जा सकता है। परन्तु वह अन्योक्ति नहीं है।

मालवी में हेल क्रीड़ा या खेल जैसी सरलता को कहते हैं। बिना परिश्रम के सरलता से कोई काम कर लेना 'हेल' कहलाता है। संस्कृत में 'हेलि' का अर्थ है- सूर्य, केलिक्रीड़ा, प्रेम का खेल। 'प्रहेलि' या 'प्रहेलिका' का अर्थ है- पहेली, बुझौवल, कूटप्रश्न। विदग्ध मुखमण्डन में प्रहेलिका की परिभाषा देते हुए कहा गया है कि प्रहेलिका उसे कहते हैं, जिसमें अपना मूल अर्थ छिपाकर कुछ और ही अर्थ प्रकट करते बाहरी और आन्तरिक अर्थ व्यक्त किया जाता है,

वह प्रहेलिका कहलाती है।

व्यक्तिकृत्य कमप्यर्थं स्वरूपार्थस्य गोपनात्।
यत्र बाह्यान्तरावर्थौ कथ्यते सा प्रहेलिका॥

मोटे रूप में यह दो प्रकार की होती है- शाब्दी और आर्थी। शाब्दी पहेली का उदाहरण-

सदारिमध्यापि न वैरियुक्ता नितान्तरक्ताप्यासितैव नित्यम्।
यथोक्तवादिन्यपि नैव दूती का नाम कान्तेति निवेदयाशु॥

सदा अरि के बीच होते हुए भी वैरी वाली नहीं है। सर्वथा रक्ताया अनुराग पूर्ण या तल्लीन होने पर भी सदा काली रहती है। जैसा कहा उसे वैसा ही कहने वाली होने पर भी वह दूती नहीं है। जल्दी बताओ वह कान्ता कौन है?

- सारिका या मैना।

आर्थी प्रहेलिका का यह उदाहरण है-

तरुण्यालिंगितः कण्ठे नितम्बस्थलमाश्रितः।
गुरूणां सन्निधानेऽपि कः कूजति मुहुर्मुहुः॥

तरुणी ने कण्ठ को आलिंगन कर रखा है, नितम्ब पर धर रखा है। बड़े-बूढ़ों के सामने भी बार-बार वह कौन कूज रहा है?

- अधभरा घड़ा।

दण्डी ने काव्यादर्श (3/96-124) में सोलह प्रकार की पहेलियों का परिचय दिया है। वाणी की इस विशेष शैली द्वारा अपनी बात छिपाकर कहने की वाणी की विदग्धता की प्रवृत्ति आरम्भ से ही रही है। प्रहेलिका का सर्वप्रसिद्ध उदाहरण ऋग्वेद (4/58/3) का है-

चत्वारि शृंगास्त्रयोऽस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासोऽस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्यानाविवेश॥

चार सींग, तीन पैर, दो सिर, सात हाथ वाला वृषभ तीन प्रकार से बँधा है। ऐसा यह महादेव मर्त्यलोक में प्रवेश कर गया। सायण भाष्य, निरुक्त (13/18), पतंजलि महाभाष्य आदि में इसके विभिन्न अर्थ किये गये हैं। कोई इसे व्याकरण बताता है तो कोई काव्य। श्वेताश्वतर उपनिषद् का एक मंत्र है-

अजामेकां लोहितशुक्लकृष्णां बह्वीः प्रजाः सृजमानां सरूपाः।
अजो ह्येको जुषमाणोऽनुशेने जहात्येनां भुक्तभोगामजोऽन्यः॥

इसे थोड़ा-सा परिवर्तित करके वाचस्पति मिश्र ने प्रस्तुत कर दिया है। लाल, सफेद एवं काले रंग की बकरी अपने जैसी बहुत-सी सन्तानें पैदा कर रही है। यह प्रकृति है जो सत्त्व, रज व तमो गुण वाली है। इस प्रकृति से उत्पन्न पूरी की पूरी सृष्टि त्रिगुणात्मिका तीन रंगों वाली है।

एक अन्य मंत्र में कहा गया है कि एक डाल पर दो पक्षी बैठे हैं। एक फल-खा रहा है, दूसरा निरपेक्ष है। इसके द्वारा अद्वैत का उदाहरण दिया गया है। इस प्रकार वैदिक कालीन

पहेलियों के असंख्य उदाहरण पाये जा सकते हैं।

पुराणों सहित पुरातन वाङ्मय में ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है। भगवद्गीता का यह श्लोक पहेली ही तो है–

उर्ध्वमूलमध:शाखमश्वत्थं प्राहुरण्ययम्। (15/1)

जिसे कबीर ने अपनी उलटबाँसी में इस प्रकार कहा है–

तल करि साख ऊपर करि मूल। बहुभाँति जड़ लागे फूल॥

वास्तव में कबीर की उलटबाँसियाँ बहुधा पहेलियाँ ही तो हैं। उससे पूर्व अमीर खुसरो की यह पहेली तो बड़ी प्रसिद्ध है–

एक थाल मोतियों से भरा। सबके सिर पर ओंधा धरा।
चारों ओर थाल फिरे। मोती उससे एक न गिरे॥

लोक में एक से बढ़कर एक पहेलियाँ लोकप्रिय हैं। जैसे–

तीतर के दो आगे तीतर। तीतर के दो पीछे तीतर।
बतलाओ कुल कितने तीतर॥

पहले का अर्थ है– तारों भरा आकाश। दूसरे का उत्तर है– तीन।

प्रश्न में उत्तर देना पड़ता है अपनी मर्जी का परन्तु सतर्क। पहेली में उत्तर स्वत: छिपा रहता है। उसे समझकर प्रकट करना पड़ता है। पहेली का एक अन्य रूप वेतालपंचविंशतिका में पाया जाता है। वहाँ भी कहानी कहकर एक समस्या खड़ी कर दी जाती है। उसका सही उत्तर अपेक्षित है। उत्तर उस कहानी में ही विद्यमान है। विक्रमादित्य वेताल के प्रश्नों के तत्काल विवेकपूर्ण उत्तर दे देता है।

लोक में यह पहेली के रूप में प्रसिद्ध है। खूब मनोरंजन हो जाता है इससे। पहेली द्वारा खेल और मनोरंजक बातें होती रहती हैं – प्रहेलिका लोकप्रतीता क्रीड़ार्था वादार्थ च। यशोधर ने कामसूत्र की टीका में यह बात कही है। चौंसठ कलाओं में अट्ठाईसवीं कला है प्रहेलिका। इससे ही इसकी लोक तथा अभिजात दोनों में महत्ता तथा स्वीकृति सिद्ध होती है।

इस प्रकार प्रहेलिका की परम्परा सुदीर्घ तथा परिपुष्ट है। उसके कई रूप हैं। उनके शास्त्र तथा लोक के परिप्रेक्ष्य में व्यापक अन्वेषण तथा अध्ययन अभी अपेक्षित हैं। परन्तु यह तय है कि संसार के सब समाजों में पहेली किसी न किसी रूप में प्रचलित है ही। मालवी में बड़े–बच्चे, नर–नारी – सब पहेलियों का रस लेते पाये जाते हैं। क्योंकि पहेली से जहाँ एक ओर मनोरंजन होता है, वहीं मेधा भी तराशी जाती है। यही कारण है कि सभी पहेलियाँ कहते–सुनते पाये जाते हैं।

- श्रीमती निर्मला राजपुरोहित

आधुनिक बुन्देलखण्ड की भौगोलिक सीमाओं का निर्धारण यहाँ की नदियों के आधार पर किया गया है। उत्तर में यमुना नदी से लेकर दक्षिण में नर्मदा तक तथा पूर्व में टोंस नदी से लेकर पश्चिम में चम्बल नदी के मध्य स्थित भौगोलिक परिक्षेत्र को इतिहास में बुन्देलखण्ड कहा गया है। इस जनपद की इन सीमाओं की पुष्टि बुन्देली लोकमानस में प्रचलित इस पारम्परिक दोहे से होती है-

इत यमुना उत नरमदा, इत चम्बल उत टोंस।
छत्रसाल सों लरन की, रही ना काहू होंस॥

बुन्देलखण्ड केशरी महाबली छत्रसाल कालीन इस दोहे में बुन्देली जनपद की प्राकृतिक एवं भौगोलिक सीमाओं का निर्धारण हुआ है। यहाँ के लोकमानस में प्रचलित एक बुन्देली पहेली बुन्देलखण्ड के राजनैतिक तथा ऐतिहासिक नगरों के आधार पर बुन्देलखण्ड की सीमाओं की ओर इंगित करती प्रतीत होती है-

भैंस बँधी है ओरछा, पड़ा हुसंगाबाद।
लगबईया है सागरै, चपिया रेवा पार॥

बुन्देलखण्ड के मूल निवासियों की मातृभाषा बुन्देली या बुन्देलखण्ड है। जनपद काल में बुन्देलखण्ड को चेदि जनपद के नाम से जाना जाता था। मध्यभारत के इतिहास में जुझौति, जैजाकभुक्ति, दशार्ण, चंदेरी तथा गुड़ानों आदि इसी जनपद के नाम समय-समय पर रहे हैं। इस जनपद का वर्तमान नाम बुन्देलखण्ड तथा इसकी प्रधान बोली या विभाषा बुन्देली है। बनाफरी, लोधान्ती, भदावरी, तिरहारी, तोमरी, कुन्डरी, कोष्टी, निभट्टा, जादौमाटी तथा खटोला आदि बुन्देली की ही सहायक उपबोलियाँ हैं।

बुन्देली तथा उसकी उपबोलियों के नामकरण निराधार नहीं हैं, बल्कि यहाँ के मूल निवासियों तथा उनके भाषायी साहित्य, लोकसाहित्य, लोकसंस्कृति, लोकजीवन तथा लोक इतिहास पर किये गये शोधकार्यों के आधार पर अन्वेषकों द्वारा इनको नामांकित किया गया है।

बुन्देली का अधिकांश साहित्य यहाँ की संकलित तथा असंकलित दोनों परम्पराओं में पाया जाता है। लोककथाएँ, लोकगाथाएँ, लोकगीत, लोकोक्तियाँ तथा पहेलियाँ बुन्देलखण्ड की वाचिक परम्परा के असाधारण लोकसाहित्य भंडार हैं। बुन्देली लोकसाहित्य एवं संस्कृति की सामूहिक गुणग्राही अनुकरणीयता के कारण देश के ही नहीं, बल्कि विदेश के भी अनेक अन्वेषकों ने अपने शोधकार्यों के लिये बुन्देलखण्ड के ऐतिहासिक स्थलों की समय-समय पर शोध यात्राएँ की हैं। बुन्देली साहित्य तथा संस्कृति की प्राचीनतम गुणधर्मी विश्वसनीयता के कारण उसकी अनुकरणप्रियता पर ग्रामीण लोकमानस के लोकविश्वास की अविस्मरणीय मोहर आज भी लगाई जाती है।

बुन्देली साहित्य में लोककथाओं की भाँति लोकोक्तियों एवं लोककिस्सों का भी असीमित भंडार है। संस्कृत साहित्य में जिसे प्रहेलिका कहा गया है, उसी को हिन्दी में पहेली कहते हैं। लेकिन बुन्देली ने संस्कृत तथा हिन्दी साहित्य से शाब्दिक ऋणभार नहीं लिया, बल्कि पहेली के लिये अपनी खानदानी संज्ञा के आधार पर जानने वाले किस्सा को जनौवल अथवा बूझनेवाली किस्साओं को बुझौवल नाम दिया है।

बुन्देली बुझौवल वक्रोक्ति विश्लेषण के लिये लोकमानस में रचे-बसे अनगिनत सोपान हैं। गाँव के लोगों को गूढ़ार्थी प्रसंगों का ज्ञान कराने के लिये लोकमानस में जनौवल अथवा बुझौवल विषयक काव्योक्तियों की रचना की होगी। लोकोक्तियों एवं पहेलियों की विषयवस्तु में वैदिक, पौराणिक, प्राकृतिक तथा लोकजीवन के प्रसंग प्रचुर मात्रा में देखने-सुनने को मिलते हैं। पहेलियाँ ज्ञानवर्धन तथा स्मरण शक्ति बढ़ाने के उद्देश्य से कही और सुनी जाती हैं।

- डॉ. कुंजीलाल पटेल

अनुक्रम

निमाड़ी पहेलियाँ

वसन्त निरगुणे –21
रमेशचन्द्र तोमर 'निमाड़ी'– 56
छोगालाल कुमरावत 'सुजस' – 92

मालवी पारसी

श्रीमती निर्मला राजपुरोहित – 131

बुन्देली पहेलियाँ

डॉ. ओमप्रकाश चौबे – 169
डॉ. कुंजीलाल पटेल – 191

बघेली पहेलियाँ

बाबूलाल दाहिया – 213

गोंड जनजातीय धन्धा

रूपसिंह कुशराम – 245

भीली हेखण्या वात्रा

भानुशंकर गेहलोत – 287

निमाड़ी पहेलियाँ

वसन्त निरगुणे
रमेशचन्द्र तोमर 'निमाड़ी'
छोगालाल कुमरावत 'सुजस'

वसन्त निरगुणे

एक फळ अर्र, ओको नावं कर्र, सुर्वो हलाल, डल्ली मुरदार।
एक फल अर्र, उसका नाम कर्र, सूप पी गये, डली मुर्दे के समान फेंद दी।
– गन्ना।

ऐंग सो, डेंग सो, खाय तो कपूर सो, थूकऽ तो फूल सा।
ऐंग (एक फल) के समान जमीन में गड़ा, डेंग (लकड़ी) के समान खायें तो कपूर के समान, थूके तो फूल के समान।
– गन्ना।

मंजिल पऽ मंजिल, मंजिल पऽ हरी झण्डी।
मंजिल पर मंजिल, मंजिल पर हरी झण्डी।
– गन्ना।

उच्चो मकान, जेमं ग्यारा दूकान। रस की कोठड़ी, भर–भर पी।
ऊँचा मकान, उसमें ग्यारह दुकान, रस की कोठी, भर–भर पी।
– गन्ना।

दूर सी आई झबर, गांव मं हुई खबर।
दूर से आई लहर, गाँव में हो गई खबर।
– ओले या गारें।

हर–हर हरणा, मोती वरणा, दिया धरणा, हाट न हटड़ी, खेत न बाड़ी।
हर–हर बादलों की आवाज के साथ मोती के वर्ण वाली धरती पर वह धरना देती है। परन्तु बाजार, गली, खेत या बाड़ी में नहीं मिलती।
– ओले या गारें।

ऊप्पर सी पड़ी पट्ट वोको माथो धवळो फट्ट।
ऊपर से पट से गिरी उसका सिर सफेद।
– ओले या गारें।

काळा घर मंऽ धवळी बई,
भुईं पऽ अई तवं कोईननी पाई।
काले–काले घर में सफेद औरत रहती, धरती पर आते ही किसी को नहीं मिलती।
– ओले या गारें।

य्हां नहीं व्हां नहीं लन्दन का बजार नहीं,
छिलो तो छिलको नहीं, चूसो तो गुठली नहीं।
यहाँ नहीं वहाँ नहीं, लंदन के बाजार नहीं, छीलो तो छिलका नहीं।
– ओले, गारें, बर्फ।

रस–रस रसिया, परबत बसिया,
नीली टोपी जरद कमान, रसिया बैठे बड़ी दुकान।
रस से भरा पूरा, पर्वत वासी, नीली टोपी, पीली कमान, रसिया बैठे बड़ी दुकान।
– आम।

आसमान मं काट्यो बकरो, जमीन मं हेड़ी खाल।
जा–जा रे लाल, थारा कलिजा मं बाल।
आकाश में काटा बकरा, जमीन पर निकाली खाल, जा–जा रे लाल, तेरे कलेजे में बाल।
– आम।

बाळ पणां मं हरी भरी थी, दादा जी का बाग मं झूलो झूली थी,
चारा मं जाई सोई थी, पीळी चूंदड़ी ओढ़ी थी।
बचपन में हरी–भरी थी। दादाजी के बाग में झूले पर झूली थी। घास में सोई थी, पीली चूनर ओढ़ी थी।
– आम (कैरी)।

नीळई बेटी झूलऽ बठी, लऽरे सगा थारी बेटी।
नीली लड़की झूले में बैठी, समधी अपनी लड़की ले लो।
– आम (कैरी)।

वा–वा रे लाल थारा कलिजा मं बाळ।
वाह–वाह रे लाल, तेरे कलेजे में बाल।
– आम और आम की गुठली।

झाड़ पऽ सी झोड़ी, नऽ चारा मं सोवाड़ी।
पेड़ पर से तोड़ी और घास में सुलाई।
– आम या कच्ची कैरी।

हरो मकान, लाल दिवाल, जेमं बठ्या काळा जवान।
हरे मकान की लाल दीवाल, उसमें बैठे काले जवान।
– तरबूज।

काँच को कोट, कचनार की कली, सरबत को घूँट, मिसरी की डली।
काँच की दीवार में कचनार की कली। शरबत का घूँट, मिश्री की डली।
– तरबूज।

हरो माथणो, लाल पेट, रस पी लेव भर–भर पेट।
हरे मटके का लाल पेट। रस पी लो भर–भर पेट।
– तरबूज।

अक्कल की कोठड़ी मं, बक्कल को खेत।
चुनिया की खोपड़ी मं पाणी को खेत।
अक्ल की कोठरी में तर्क का खेत। चुनिया की खोपड़ी में पानी का खेत।
– तरबूज।

कटोरा मं कटोरो, बेटो बाप सी गोरो।
कटोरे में कटोरा, बेटा बाप से गोरा।
– नारियल।

खोपड़ी मंऽ झोपड़ी, झोपड़ी मंऽ पाणी।
एक खोपड़ी में झोपड़ी और झोपड़ी में पानी।
– नारियल।

गड़बड़ गोटो, ताँबा को लोटो।
जो नी ताड़ऽ ऊ डाक्कण को बेटो।
गड़बड़ गोटा (लुढ़कने वाली कोई चीज) ताँबे का लोटा, जो नहीं बूझे वह डाकन का बेटा।
– नारियल।

नानो सो बटवो, बट–बट करऽ।
हाथ–पांय जोड़ी नऽ दग्गड़ सी लड़ऽ।

छोटा-सा बटवा (पक्षी) बट-बट करे। हाथ-पैर जोड़कर पत्थर से लड़े।
- नारियल।

पाणी छे, पण मच्छी नी, बादल छे, पण तारा नी।
बाळ छे, पण जूँ नी।
पानी है पर मछली नहीं, आकाश है पर तारे नहीं, बाल हैं पर उसमें जूँ नहीं।
- नारियल।

थळ थम्बा, पान छे लम्बा।
फळ पायो पण बीज नी पायो।
पैर खम्बे के समान, पत्ते लम्बे, फल खाया, पर बीज नहीं मिला।
- केला और केले का पेड़।

जा बे जा, बिना बीज को फळ लई आ।
जा रे जा, बिना बीज का फल ले आ।
- केला।

एक छोरा को जमीन मं माथो, ऊप्पर पांय।
एक लड़के का सिर जमीन में, ऊपर पैर।
- गाजर।

एक छोरो धरती मं सोवऽ, अद्दर पांय करीनऽ दिनरात रोवऽ।
एक लड़का जमीन में सोता, ऊपर पैर करके दिन-रात रोता।
- गाजर।

हरी-हरी पूँछ लाल लाल मंडो जो नी ताड़ऽ ऊ भसम कुण्डो।
हरी-हरी पूँछ लाल लाल मुँह, जो नहीं बूझे वह भसम कुण्डा।
- गाजर

हरी पूंछ, धवळी मूंछ, तूकऽ नी आव तो थारा बाप से पूछ।
हरी पूँछ, सफेद मूँछ, तुझे नहीं आये तो तेरे बाप से पूछ।
- प्याज।

सुफेद घोड़ो हरी पूँछ लूख नी आवऽ तो थारा बाप ख पूछऽ।
सफेद घोड़ा, हरी पूँछ तुझे नहीं आये तेरे बाप से पूछद्ध
- प्याज।

नानी सी गड़ू, वोखऽ देखी-देखी रड़ूं।
छोटी-सी गड्डू, उसे देख-देख रड़ूँ।
- प्याज।

हरी हसू बाई, काळी कसू बाई।
धवळा रामा जी मुंडली सीता बाई।
हरी हसूबाई, काली कसूबाई। सफेद राम जी, मुंडली सीताबाई।
– क्रमशः– पान, कत्था, चूना, सुपारी।

हरा–हरा हरी दादा, नीळी काळी हसू बाई।
धवळा–धवळा रामाजी, मुंडली–मुंडली सीता बाई।
हरा–हरा दादा, नीली काली हसूबाई। सफेद रामा जी, मुंडली सीताबाई।
– क्रमशः– पान, कत्था, चूना, सुपारी।

नानी सी होलगी, डेबरियो सो पेट।
आवसे राम जी, फोड़से पेट।
छोटी–सी होलगी (पक्षी) उसका बड़ा पेट। रामजी आयेंगे तब उसका फोड़ेंगे पेट।
– सरौंता–सुपारी।

पांच भाई पचरंग्या, फूल पड़ऽ एक रंग्या।
पाँच भाई पचरंगी, उनके फूल पड़े एक रंगी।
– पान, सुपारी, कत्था, चूना, लौंग।

दो टांग का ईच मं चिपी।
दो टाँगों के बीच में रखकर जिसके टुकड़े किये जाते हैं, बताओ कौन?
– सरोता और सुपारी।

दूर देस सी आयो जवान, माथऽ टोपी चार कान।
दूर देश से आया जवान, सिर पर टोपी चार कान।
– लौंग।

वावऽ नर उगऽ नारी, भर जवानी मं लगऽ प्यारी।
बोते हैं नर उगती है नारी, भर जवानी में लगती है प्यारी।
धनिया बोते हैं उगती है कोतमीर।

घेरदार घाघरो, चटकदार बूटी।
भर्‌या बजार मं हवळदार नऽ लूटी।
घेरदार घाघरा, चटकदार बूटी। बीच बाजार में हवलदार ने लूटी।
– कोतमीर।

लाल छड़ी मैदान गड़ी, चाकू मारनऽ मं गिरी पड़ी।
लाल छड़ी मैदान गड़ी, चाकू मारो तो गिर पड़ी।
– शकरकन्द।

लाल चामड़ी धवळो पेट, धरती मांय, वादळ जेट।
लाल चमड़ी, सफेद पेट, धरती माता, बादल (आकाश) जेट।
– शकरकन्द।

सौ कुटुम की एक गाँठ।
सौ सदस्यों का एक झुण्ड।
– लहसुन।

एक रांड का सौ सांड।
एक विधवा के सौ सांड।
– लहसुन।

एक खेत मं बड़ो अचम्भो, आधो तोतो आधो बगुलो।
एक खेत में बड़ा अचम्भा, आधा तोता आधा बगुला।
– मूली।

धवळी मुर्गी हरी पूँछ,
तूखऽ नी आवऽ तो थारा पड़ोसी खऽ पूछ।
सफेद मुर्गी, हरी पूँछ, तुझे नहीं आवे तो तेरे पड़ोसी से पूछ।
– मूली।

धवळी घोड़ी, हरी लगाम।
वा–वा वो घोड़ी थारो कितरो दाम।
सफेद घोड़ी, हरी लगाम, वाह–वाह घोड़ी तेरा कितना दाम।
– मूली।

धवळई मूँछ, हरी पूँछ।
सफेद मूँछ और हरी पूँछ।
– मूली।

हम लटकां, तम गड़ेला, हम लटके, तुम गड़े।
भुट्टे और मूली, हरी–हरी डण्डी, लाल कमान।
हाय–हाय करऽ भूरया पठान।
हरी डण्डी लाल कमान। हाय–हाय करे भूरया पठान।
– मिर्ची।

मसरू की थैली मं हाय–हाय का बीज।
मसरू की थैली में हाय–हाय के बीज।
– मिर्ची।

लालबाई को घणो मिजाज।
मुंडऽ हायनऽ पेटऽ झाळ।
लालबाई का बड़ा मिजाज, मुँह में हाय और पेट में ज्वाला।
– मिर्ची।

नानी–नानी छोरी, लालबाई नाम छे।
पेरऽ वा घाघरो एक पैसो दाम छे।
छोटी–सी लड़की लालबाई नाम है। पहने वह घाघरा, एक पैसा दाम है।
– मिर्ची।

नानो सो झाड़, वोको लेंडी येत्तो भार।
छोटा–सा पेड़ उसका भार (फल) लेड़ी के समान।
– चने का पौधा।

एक सेठ वोको फाड़्यो पेट,
छत्तीस पकवान मं ऊज श्रेष्ठ।
एक सेठ का फाड़ा जाये पेट। छत्तीस पकवान में वही श्रेष्ठ।
– गेहूँ।

नानो सो फकीर वोका पेट मं लकीर।
छोटा–सा फकीर उसके पेट में लकीर।
– गेहूँ।

बैळ बठतो जाय, रास चलती जाय।
बैल बैठता जाता है, रस्सी चलती जाती है।
– कद्दू की बेल।

हरी बेल हरियाळी, कुंभकरण की छाती पीली।
हरी बेल हरियाली है। कुम्भकरण की छाती पीली है।
– कद्दू।

जाड़ो–जाड़ो सेठ, वोको चितकबर्‌यो पेट।
पीली–पीली छाती, छे ऊ धन्ना सेठ।
मोटा सेठ का चितकबरा पेट और पीली छाती है। सबमें धन्ना सेठ है।
– कद्दू।

हरी मुर्गी का हरा–हरा अण्डा।
जोनी ताड़ऽ वोख मारू डंडा।

हरी मुर्गी के हरे अण्डे, जो नहीं बूझे उसको मारे डण्डे।
– मटर फली।

सुफेद खड़ी, भुई मं पड़ी।
रुमझुम करती मयल पऽ चढ़ी।
सफेद खड़ी, जमीन में पड़ी। रुमझुम करती महल पर चढ़ी।
– जुवार का दाना और पौधा।

नानी सी छड़ी, भुई मं गड़ी।
रूमझुम करती मयल पऽ चढ़ी।
छोटी–सी छड़ी, धरती में गड़ी। रूमझुम करती महल पर चढ़ी।
– जुवार का दाना और पौधा।

हरी थी, मन भरी थी,
दादाजी का बाग मं, हरो लुगड़ो पेरी थी।
हरी थी मन भरी थी, दादाजी के बाग में हरी साड़ी पहनी थी।
– मक्का।

काळा खेत मं दई को छाटों।
काले खेत में दही का छींटा।
– कपास।

काळा खेत मं शेर को पंजो।
काले खेत में शेर का पंजा।
– अदरक।

काळी गाय तीन खूँटा, दूध सफेद लगऽ मीठा।
काली गाय, तीन खूँटे। दूध उसका लगे मीठा।
– सिंगोड़ा।

काळी डेचकी मं धवळो माखण।
काली डेगची में सफेद–सफेद मक्खन।
– सिंगोड़ा।

बैड़ा मं भैसी जणी, आंगठा सी चिको खाय।
पहाड़ों में भैंस जने, अंगूठे से चिका खाये।
– टेमरू का फूल।

हऊं बैड़ा को वासी आय।
मकऽ सबसी पयल अंगठो खाय।
मैं पहाड़ों का निवासी हूँ। मुझे सबसे पहले अंगूठा खाता है।
– टेमरू (टेमरू को खाते समय अंगूठे से ही उसका गूदा निकाला जाता है)।

हेकड़ी मं तेकड़ी, टेड़ी-टेड़ी कौन?
लाल-लाल चामड़ा मं काळी-काळी कौन?
हेकड़ी में हेकड़ी, टेड़ी-टेड़ी कौन? लाल-लाल चमड़े में काली-काली कौन?
– इमली।

वाकी तेकी बाई, वोका साथ मं काळा भाई।
बाकी तिरछी एक बाई, उसके साथ काले-काले भाई।
– इमली।

वाकी तेकी बई बड़ी स्याणी।
देखि न आई जाय मुंडा मं पाणी।
देखने में टेढ़ी-मेढ़ी और देखकर मुँह में पानी आ जाता है।
– इमली।

एक झाड़ प गुमड़ा ज गुमड़ा।
एक पेड़ पर गुमड़े ही गुमड़े।
– कबीट।

एक झाड़ प धवळा लड्डू लटक ऽ।
एक पेड़ पर सफेद लड्डू लटके।
– कबीट।

हरी थी मन भरी थी, काळापन मं रयती थी
नागझिरी को पाणी पीती थी, हरा पत्तानमं सोवती थी।
हरी थी मन भरी थी, कालापन में थी, नागझिरी का पानी पीती थी। हरे पत्तों में सोती थी।
– बेंगन।

ऊप्पर सी पड्यो पट्ट, वोको माथो लाल चट्ट।
ऊपर से गिरा पट, उसका सिर लाल चट।
– जामुन।

नानो सो दाणो छुन्नुक दाणो,
पेटऽ दुखऽ तो मांगी खाणो।

छोटा सा दाना, बारीक दाना, पेट दुखे तो माँग के खाना।
– अजवाइन।

चार बोट की तू वो बई, आठ बोट को हंऊ।
बड़ी रसीली तू वो बई, घणो हठीळो हंऊ।
चार अंगुल की तू बाई, आठ अंगुल का मैं, बड़ी रसीली तू है बाई, बड़ा हठीला मैं।
– गेहूँ की हुम्बी एवं गेहूँ की बाली।

दर उखड़ गया, खूँटा रह गया।
पेड़ उखड़ गया और खूँटा रह गया।
– महुआ के फूल।

बाप बेटा को एक नाम, नात्या को न्यारो नाम।
बाप और बेटे का एक ही नाम, पर नाती का अलग नाम।
– महुआ वृक्ष, महुआ फूल और फल (टोली)।

दूर सी चळकऽ, पोर्‌या पळकऽ।
दूर से चमके, लड़के लपके।
– गोंद।

आरकस, बारकस नौ सौ खूटा,
गाय छे मारकणई दूध छो मीठा।
आरकस (चौखट) बारकस (दरवाजे) में नौ सौ खूंटे, गाय मारकनी है दूध मीठा।
– छत्ता, मधुमक्खी और शहद।

आटा सरीखी गीली, न पतासा सी मीठी।
आटे के समान गीली, बताशे के समान मीठी।
– दाख (मुनक्का)

नीळी सोटी, ऊप्पर कोठी, भाई भळो, भौजाई खोटी।
नीली सोटी, ऊपर कोठी, भाई अच्छा है, भौजाई खोटी।
– खस के दाने व अफीम।

गारा को घोड़ो, लखोंडा की लगाम,
वोका पऽ बठ्यो, पिलपिलो जवान।
मिट्टी का घोड़ा, लोहे की लगाम, उस पर बैठे पिलपिले जवान।
– क्रमशः चूल्हा, कड़ाही और भजिये (पकौड़े)।

काळो तळाव, काळो पाणी, लाल राणी डुबकी खाय।
काले तालाब में काला पानी, लाल रानी उसमें डुबकी लगाये।
– कड़ाही, तेल, आटे की पूरी।

नानी सी कढ़ाई, वोमं नाचऽ होलगी बाई
छोटी सी कड़ाही में होलगी नाचती है।
– पूरी।

नानी सी होलगी डेबरियो सो पेट।
कां गई होळगी, राणाजी का देस।
छोटी सी होलगी (पक्षी) उसका डेबरिया पेट। कहाँ गई होलगी, राणाजी के देश।
– संजोरी।

एक छोरी रखोड़ा मं लोटऽ।
एक लड़की राख में लोटती है।
– बाटी।

सर सरी, सक्कर परी, बिल मं छोड़ी, पण खिसळी पड़ी।
लकीर के समान, शक्कर की है परी। बिल में छोड़ी तो खिसल पड़ी।
– सिवैंया।

तू हिलऽ, मखऽ हिलावऽ।
थारो हिलणूं, म्हारा मन भावऽ।
तू हिले, मुझको हिलावे, तेरा हिलना, मेरे मन भावे।
– सिवैंया (बनाने की प्रक्रिया भी)

चाँद सरीखो चकळो, पान सरीखो पातळो।
चाँद के समान गोल और पत्ते के समान पतला।
– पापड़।

घेरदार घेर मं रस भर्‌यो जीब चाटऽ होठ मुस्काय।
घेरदार घेर में रस भरा है, जीभ चाटती है ओंठ मुस्काते हैं।
– जलेबी।

धवळा माथणा मं दो रंग्यो पाणी।
सफेद मटके में दो रंग का पानी।
– अण्डा।

जा बे जा बिना डेड को लिम्बू ला।
जा रे जा बिना डेड का नीबू ला।
– अण्डा।

धवळी मुर्गी, काळा अण्डा, नई ताड़ऽ तो मारू डण्डा।
सफेद मुर्गी, काले अण्डे, नहीं बूझो तो मारू डण्डे।
– इलायची।

वाटकी भरी दूध थारा सी बी नी पिवाय,
नऽ म्हारा सी बी नी पिवाय।
कटोरी भर दूध तू भी नहीं पी सकता और मैं भी नहीं।
– अकाव का दूध।

वाटकी भरी रुपया थारा सी बी नी गिणाय, नऽ म्हारा सी बी।
कटोरी भर रुपये तुझसे भी नहीं गिना सकते और मुझसे भी।
– तारे।

दुई अक्षर को म्हारो नांव, आसमान छे म्हारो ठांव।
टिम टिम करणूं म्हारो काम, जल्दी बनाओ म्हारो नांव।
दो अक्षर का मेरा नाम, आसमान में मेरी ठांव।
टिम-टिम करना मेरा काम, जल्दी बताओ मेरा नाम।
– तारे।

माथा पऽ घड़ो, कम्मर पऽ हाथ, कसी चढूं औघड़ घाट।
सिर पर घड़ा, कमर पर हाथ, कैसी चढूँ औघड़ घाट।
– आसमान।

वाकी तेकी पावंळई, बजावण वाळो कुण।
सुन्दर जाय सासरऽ मनावण वाळो कुण।
बाकी तिरछी बाँसुरी, बजाने वाला कौन?
सुन्दर जाये सासरे मनाने वाला कौन?

– नदी।

वाकी तेकी चलती जाय, खाळया खोदरा भरती जाय।
बाकी तिरछी चलती जाय। नद्दी नाले भरती जाय।
– नदी।

बिना चामड़ा की मोट, खैचण वाला कूण।
बिना डंका का वाजा, बजावण वाला कूण।
बिना चमड़े की मोट को खींचता कौन? बिना डंके के बाजा बजाता कौन?
– बादल।

धरती की आरती, चाँद सूरज को दियो।
भाई की बईण पूजण चली, पांय कां दियो।
धरती की आरती, चाँद सूरज का दिया, भाई की बहन पूजने चली पाँव कहाँ दिया।
– बिजली।

अलख्या की वाड़ी मं, गिलख्या का फूल,
दस-दस हत्थी करऽ कबूल,
तो बी नी टूटऽ गिलख्या को फूल।
अलख्या (आसमान) की बाड़ी में, गिलकी के फूल, दस-दस हाथी करे कबूल। तो भी टूटे नहीं गिलकी के फूल।
– आसमान, तारे, दस दिशाएँ।

रोज जगाड़ऽ, रोज सोवाड़ऽ, इंधारा ख तो दूर भगाड़ऽ।
रोज जगाता, रोज सुलाता, अँधकार को तो दूर भगाता।
– सूरज या दीपक।

एक लिम्बू की पन्द्रह फांक, फिर बी आउखो को आउखो।
एक नींबू की पन्द्रह चीर, फिर भी पूरा का पूरा।
– चन्द्रमा।

असो कसो पावणो माय घर मंऽ सूतो, आंगणा पांय।
हे माँ! यह कैसा मेहमान। घर में सोये, आँगन में पाँव फैलाये।
– दीपक।

आयो एक असो पावणो घर मं सुतो घेरऽ आंगणो।
यह कैसा मेहमान आया, घर में सोया पर आँगन को भी घेरता है।
– दीपक।

बाबो सोव या घर मं, टांग फसारऽ वा घर मं।
बाबा सोता है इस घर में पर टाँग पसारे उस घर में।
– दीपक।

एक जानवर दुम सी पाणी पीयऽ।
एक जानवर दुम से पानी पीता है।
– दीपक (चिमनी)।

एक जानवर असो वोका माथा पऽ लाल पैसो।
एक जानवर ऐसा, जिसके सिर पर लाल पैसा।
– दीपक।

रात पड़े जगाड़ी दे, दिन पड़े भगाड़ी दे।
रात में जगाते हैं, दिन में भगाते हैं।
– दीपक।

तलाव भर्‌यो, हिरण खड्यो।
तलाव सुख्यो, हिरण भग्यो।
तालाब भरा, हिरण खड़ा।
तालाब सूखा, हिरण भगा।
– दीपक।

जरा सी माटी मं सारो घर लिपई जाय।
थोड़ी सी मिट्टी में सारा घर लिपा जाता है।
– माटी का दिया एवं प्रकाश।

फुटळी दिवाळ मं फूल खिळऽ।
टूटी हुई दीवार में फूल खिलते हैं।
– ताक में जलता दीपक।

बाप कऽ आगऽ बेटो शरमाय।
बाप बड़ो पण बेटा पाखर रयोनी जाय।
बाप के आगे लड़का शरमाता है, बाप तो बड़ा है परन्तु बेटे के बिना रहा भी नहीं जा सकता है।
– सूरज और दीपक।

नानो सो जीव, सब खऽळेणऽ जीवऽ।
घर मं आव जवं इंधारो पीवऽ, छोटा सा प्राणी, सबके लिये जीए।
घर में आये जब अंधेरा पीये।
– दीपक।

नाना सा छोरा का, माथा पऽ अंगार।
छोटे से लड़के के सिर पर अंगार।
– दीपक।

माटी का तन मं तेल को तळाव।
माथा पऽ जोती, हिरदा मं बाती।
मिट्टी के तन में तेल का तालाब, सिर पर ज्योति, हृदय में बाती।

– दीपक।

माटी को जायो, मांय हऊं थारा घर आयो।
नवी लाड़ी वऊ नऽ, म्हारो जीव जळायो।
मिट्टी से बना, हे माँ! मैं तेरे घर आया जब नई बहू ने मेरे हृदय में जलाया।
– दीपक।

एक लुगई गांव जाय, बजार जाय, सेर सोन्नो गाड़ी नऽ जाय।
एक महिला जब गाँव या बाजार जाती है तब सेर भर सोना गाड़ जाती है।
– आग (गाँवों में आज भी आग को चूल्हे में गाड़कर रखते हैं)।

सब ळोग भागी गया, नऽ सेर सोन्नो डाटी गया।
सब लोग भाग गये पर सेर भर सोना गाड़ गये।
– आग।

ताड़ बे ताड़ बत्तीस ताड़ हाथ नी पूरऽ तो बोम मार।
बूझ बे बूझ, बत्तीस बार बूझ, ताड़वृक्ष समान ऊँचा, हाथ नहीं पूरे तो जोर–जोर से चिल्ला।
– धुँआ।

जरा सी राई सब दूर बगळई।
थोड़ी राई सब दूर फैलाई।
– तारे।

मारनऽ सी मरती नी, काटणऽ सी कटती नी।
मारने से मरे नहीं, काटने से कटे नहीं।
– धूप।

नौ सौ कुल्हाड़ा, नौ सौ झाड़, नी कटऽ जामुण का झाड़।
नौ सौ कुल्हाड़े, नौ सौ पेड़, फिर भी कटे नहीं जामुन के पेड़।
– छाँव।

खड़-खड़ कागज करऽ, चमचम तलवार फिरती जाय।
यो बताओ तम सायबा, या काई चीज आय।
खड़-खड़ कागज करे, चम-चम चमके तलवार। यह बताओ सायबा यह चीज क्या है।
- बादल और बिजली।

नर मंऽ नर कुण नरऽ।
नर में नर, नर कौन है।
- घोड़ा (घोड़े के स्तनों के निशान तक न होने से उसे नर कहा गया है)।

दो चक चले, दो भक चळे, आगे नाग चले पीछे गोप चळे।
दो चाक चले, दो पैर चले, आगे साँप चले, पीछे गोप चले।
- हाथी।

काळो छे पण कौओ नी, बेढब छे पण हव्वौ नी।
काला है पर कौवा नहीं, बेढ़ब है पर हौवा नहीं।
- हाथी।

चलता फिरता खम्बा देख्या, सूपड़ामं नाग सरकतो जाय।
बड़ो अचम्भो मनऽ देख्यो-परबतज चलतो जाय।
चलते-फिरते खम्बे देखे। देखा सूप में नाग सरकता, बड़ा अचम्भा हमने देखा। देखा पर्वत चलता।
- हाथी।

चार खम, अकड़ बम, नागन लोटऽ, भिलट गम।
चार खम्बे, सीधे बड़े, नागिन लोटती है और नागराज चलते हैं।
- हाथी।

एक जानवर असो, वोको एक नी सीधो।
एक जानवर ऐसा जिसका एक अंग सीधा नहीं।
- ऊँट।

वाको तेको ळीम वोका ऊप्पर गुब्बो।
जो नी ताड़ऽ वोको बाप फुग्गो।
बाँका तिरछा नीम उसके ऊपर गुब्बा, जो नहीं बूझे उसका बाप फुग्गा।
- ऊँट।

काळो छे, कौओ नहीं, पेट बड़ो छे पण हब्बा नहीं।
करऽ सदा नाक सी काम बताजे भाई ओको नाम।

काला है पर कौआ नहीं। पेट बड़ा पर हौआ नहीं। करे नाक से काम। बताओ भाई उसका नाम।

– हाथी।

एक जानवर असो, जेकी दुम पर लाल पैसो।
एक जानवर ऐसा, जिसकी दुम पर लाल पैसा।
– मोर।

नानी सी कराय, थारा सी बी नी कुदाय नऽ म्हारा सी बी।
छोटी सी खाई तुझसे भी नहीं कुदा सकती और मुझसे भी।
– सर्प।

एक राजा नऽ पेऱ्यो वागो, कभी नी लग्यो सुई नऽ धागो।
एक राजा ने पहना ऐसा अंगरखा। उसमें लगा नहीं सुई धागा।
– सर्प और केंचुली।

बिन सुई सी वागो सिवाड़ियो,
वोखऽ हेड़ी दियो जाय, पण पेराड़्यों नी जाय।
बिना सुई से सिलाया वागा। निकाल तो सके पर पहना नहीं सके।
– साँप की केचुली।

नानो सो बटवो बावन बीर, उठई कामठी, मार्‌यो तीर।
छोटा सा प्राणी बड़ा वीर। धनुष उठाये और मारे तीर।
– बिच्छू।

हम उबेल था, तम आवता था।
हमनऽ मजाक कर्‌यो, तम रड़ी धर्‌या।
हम खड़े थे, तुम आते थे। हमने मजाक किया, तुम रो दिये।
– बिच्छू और डंक मारना।

लक-लक लकड़ी टेकी नी जाय।
कबरिया बैल, जोत्या नी जाय।
लक-लक लकड़ी, टेकी नहीं जाय। चितकबरे बैल जोते नहीं जाय।
– अजगर।

पाणी नी पाउस नी, रंग कसो हिरवो।
कत्थो नी सुपारी नी, तोंड कसो किर वो।
न पानी है न वर्षा, उसका रंग पूछो तो हरा है। न कत्था है न सुपारी है। फिर भी मुँह लाल है।
– तोता।

नानी सी गाय, टुबुक-टुबुक जाय।
देख जे वो माय, थारा गहूं नी खाय।
छोटी सी गाय, धीरे-धीरे जाय। देखना माँ, तेरे गेहूँ न खा जाय।
- धंधोरिया या चिल्ले।

बैड़ी प चोर पकड़्यो, हथनापुर मं लाया।
नखल्या पुर मं मार गिरायो।
पहाड़ी पर चोर पकड़ा। हथनापुर (हाथ) में लाये, नखल्या पुर (नख) में मारा।
- जूँ।

काळी थी कजराळी थी, काळा बन मं रयती थी।
लाल पाणी पीती थी।
काली थी कजराली थी, काले वन में रहती थी। लाल पानी पीती थी।
- जूँ।

सबई लोग भागी गया, घर मं उड़द्या बगणई गया।
सब लोग भाग गये घर में उड़द फैला गया।
- मक्खियाँ।

दो भाई एक पाग बाँधऽ।
दोनों भाई एक ही पगड़ी बाँधते हैं।
- बैल।

चार हलण चलण, चार दोनिया, दो सुखी लकड़ी एक राम ळखन।
चार हिलने चलने के लिये, चार दोनिये भरे हुए। दो सूखी लकड़ी। एक राम लखन से हैं।
- गाय के पैर, थन और सिंग।

रोज चलऽ बारा कोस, पण रय घर को घर।
प्रतिदिन बारह कोस चलता है, लेकिन घर पर ही रहता है।
- घाणी का बैल।

बठऽ जवं खड़ा का खड़ा।
सोवऽ जवं बी खड़ा का खड़ा।
बैठे जब खड़े के खड़े। सोये जब भी खड़े के खड़े।
- जानवरों के सींग।

बिना पाणी को मयळ बणायो वो कारीगर कसो।
बिना पानी का महल वाला कारीगर कैसा?
- मकड़ी।

अग्गड़ फोड़ऽ दग्गड़ फोड़ऽ फिरऽ चारई देसा।
बिना पाणी को मयल बणायो, वो कारीगर कसा?
अग्गड़ फोड़े, दग्गड़ फोड़े, फिरे चारों देश। बिना पानी का महल बनाया, वह कारीगर कैसा।
– दीपक।

या गई वा आई।
यह गई वह आई।
– दृष्टि या नजर।

तम काई फेकीनऽ चळ्योज।
तुम क्या फेंक कर चलते हो।
– नजर।

या गई इनी पार, वा गई उनी पार।
अभी इस पार है वह गई उस पार।
– नजर।

नानी सी डब्बी डब–डब करऽ।
छोटी सी डिबिया डब–डब करती है।
– आँखें।

नानी सी डिबिया डब–डब करऽ।
माणक मोती खिर–खिर–खिरऽ।
छोटी सी डिबिया डब–डब करती है उसमें से माणिक–मोती गिरते हैं।
– आँखें और आँसू।

सरीर मं कां की चीज, कबी बड़तीज नी।
शरीर में कौन सा अंग बढ़ता ही नहीं।
– आँखों की पुतलियाँ।

ऊप्पर कटोरी नीचऽ कटोरी, इचमण नाचऽ चतुर गोरी।
ऊपर कटोरी, नीचे कटोरी, बीच में नाचे चतुर गोरी।
– जीभ।

नानी सी डब्बी मं रम्बा बाई नाचऽ।
छोटी सी डिबिया में रम्बा बाई नाचे।
– जीभ।

आल्या मं गोपाल्यो नाचऽ।

ताक में गोपाली नाचे।

– जीभ।

अईं गादी, वईं गादी, ईच मं बठी झूमाराणी।

इधर गद्दी, उधर गद्दी, बीच में बैठी झूमा रानी।

– जीभ।

नाना सा आल्या मं गोपाल्यो नाचऽ।

छोटे से ताक में गोपाली नाचे।

– जीभ।

नानी सी गड्डू मं बत्तीस लड्डू।

छोटे से गड्डू में (लोटे में) बत्तीस लड्डू।

– दाँत।

नाना सा चौका मं, बत्तीस जणऽ जीमऽ।

छोटे से चौके में बत्तीस लोग जीमते हैं।

– दाँत।

पांच पिपळी रतन तळाई, जो नी ताड़ वो को बाप बळाई।

पाँच पिपली, रतन तलाई, जो नी, बूझे उसका बाप बलाई।

– हाथ, पाँच ऊँगलियाँ।

दो मोटी, ऊप्पर कोठी।

दो फरदल... खुर-खुर, सुर-सुर, गुर-गुर, फुर-फुर-ऊप्पर चोटी।

दो मोटी के ऊपर कोठी, फिर फर्दल, फर्दल के बाद खुर-खुर, सुर-सुर, गुर-गुर, फुर-फुर। फुर-फुर के ऊपर चोटी।

– आदमी (पैर, पेट, हाथ, मुँह, नाक, सिर)।

एक झाड़ झबरो ओखा नीच्च दगड़ो।

दगड़ा का नीच्च मिचकु, मिचकु का नीच्च-सुनकु

सुनकु का नीच्च मटको, मटका मं बठ्यो लड़को।

एक पेड़ बड़ा, पेड़ के नीचे पत्थर, पत्थर के नीचे मिचकु, मिचकु के नीचे सुनकु, सुनकु के नीचे मटका, मटके में बैठा है लड़का।

– सिर के बाल, माथा, आँख, नाक, मुँह, पेट।

नई जुळुम कर्‌यो नई खून कर्‌यो।
फिर बी बिचारा को गळो क्यों काटी लियो।
न जुल्म किया, न खून किया। फिर भी बिचारे का गला क्यों काटा।
– नाखून।

एक सखि यूं कर बोळी, थारा नीच्च काळो क्यों?
दुई फांक बरोबर छे, बीच मं फर्रो टेढ़ो क्यों?
एक सखी दूसरी सखी से बोली– हे सखी तेरे नीचे काला क्यों। दोनों फाँके तो बराबर हैं फिर उसके बीच का हिस्सा टेड़ा क्यों?
– टेसू का फूल।

काळी कचनार ओको सेंदुर सिणगार।
मयल पऽ बठी जसुबाई, देखऽ लोग हजार।
काली कचनार उसका सिन्दुरी शृंगार। महल में बैठी जसुबाई उसको लोग देखें हजार।
– टेसू के फूल।

वाको तेको धावड़ो, टिकी येत्तो पान।
मत तोड़ो राजाजी, उंधाळा मं आव काम।
बाका तिरछा धावड़ा, टिकिया के बराबर पत्ते। हे राजा ये पत्ते मत तोड़ो,गर्मी में आये काम।
– करोंदा की पत्तियाँ।

हरी थी मन भरी थी, लाख चूनी जड़ी थी।
राजा आंगणा खड़ी थी, रुखड़ऽ जाई पड़ी थी।
हरी थी मन भरी थी, लाख मोतियों से जड़ी थी, राजाजी के आँगन में खड़ी थी और अब घूरे पर जाकर पड़ी हूँ।
– पत्तलें।

उच्ची सी बाई ओका बड़ा–बड़ा दात।
ऊँची सी बाई उसके बड़े–बड़े दाँत।
– खजूर का वृक्ष।

नानी सी गडू मं मोती प मोती।
छोटी सी गडू में मोती पर मोती।
– अनार।

सर सराटा, ऊपर काँटा, जो नी ताड़े उसका बाप मराठा।
सर–सर स्वर के ऊपर काँटा। जो नहीं बूझे उसका बाप मराठा।
– सिन्देन का वृक्ष।

बाप गयो जंगल मं, माय गई पंगत मं, बेटो गयो रंगत मं।
बाप गया जंगल में, माँ गई पंगत में और बेटा गया रंगत में।
– महुएं का पेड़, उसके पत्तों से बनी पत्तलें, महुएं से बनी शराब।

ऊँची गोरी पातळी, सरवर न्हावण जाय।
हड्डीन को ढेर लग्यो, चामड़ो वेचाण जाय।
ऊँची गोरी पतली सरोवर नहाने जाय, हड्डियों का ढेर लगे, चमड़ा बिकने जाय।
– अमाड़ी का पौधा और अमाड़ी के रेशे।

ऊच्ची गोरी पातळी, हलदी सरखो रंग।
ग्यारा देवर छोड़ीन, जाय जेठ का संग।
ऊँची गोरी पतली, हल्दी सरिखा रंग। ग्यारह देवर छोड़ के जाय ज्येष्ठ के संग। (सिन्देन वृक्ष के फल केवल जेठ माह में ही लगते हैं।)
– सिन्देन का वृक्ष और उसके फल।

एक पगड़ी थारा सी बी नी समटाय नऽ म्हारा सी बी।
एक पागड़ी इतनी लम्बी तेरे से भी नहीं समटाये और मुझसे भी नहीं।
– धरती।

एक छोरो फिरतो जाय नऽ पागड़ी बाँधतो जाय।
एक लड़का घूमता जाता है और पगड़ी बाँधता जाता है।
– घास का पूला।

नीळी सोटी, ऊप्पर कोठी भाई भळो, भौजाई खोटी।
नीली सोटी, ऊपर कोठी, भाई तो अच्छा है पर भौजाई खराब है।
– अफीम का वृक्ष और दानेखस।

राम गया काम पर, सीता लाई रोटा।
बिन जड़ को झाड़ बताओ, तवं खांवा रोटा।
राम गया काम पर, सीता लाई रोटी। बिना जड़ का पेड़ बताओ, तब खाये रोटी।

– अमरबेल।

लाल माथणो, काळो ढाकणो।
जे नी ताड़, वो को बाप डाकणों।
लाल मटका, काला ढक्कन। जो नहीं बूझे उसका बाप डाकना।
– जुरूंग।

माय कुंवारी, बेटी पन्नेळ, बेटी का सात-सात फेरा।
माँ कुँवारी, बेटी परिणिता, बेटी के सात फेरे।
- सिन्देन का वृक्ष और उससे बनने वाली झाड़ू।

सब लोग भागी गया, झापड़ई रांड ख कोंडी गया।
सब लोग भाग गये, झापड़ी रांड को बंद कर गये।
- झाड़ू।

हाथ हरणी, मौसी जनती, मांय कुंवारी बेटी परणी।
हाथ की बनाई। मौसी ने जन्म दिया। माँ कुँवारी ही है पर बेटी परिणिता है।
- झाड़ू बनाने वाली मौसी, सिन्देन माँ, झाड़ू परिणिता।

ऊ बाई असी निस्सेड़ी, वोखऽ तीनन घिस्सेड़ी।
वह बाई ऐसी निसेड़ी। उसे तीन लोगों ने घिसड़ी।
- झाड़ू।

काळी कुतरी रग भग, तीन माथा, दस पग।
काली कुतिया, तीन सिर, दस पैर।
- खेत, दो बैल और आदमी।

काळी भैंसी लद बद, तीन माथा दस पग।
काली भैंसी मोटी चौड़ी, तीन सिर, दस पैर।
- मोट, दो बैल और आदमी।

दे तवं खाय नी, नी दें तवं खाय।
देते हैं तब खाता नहीं। नहीं दे तो खाता है।
- बैलों के मुस्के।

पांच माथा, पन्द्रा पांय, चलऽ एकसांय।
पाँच सिर, पन्द्रह पैर चले एक सरीखे।
- बैल तिकन आदमी सहित।

चार चोंच की चिड़िया बाई, पड़ी समुन्दर माय।
भरभर आवाज करऽ माळपाणी सब खाय।
पाणी ख तो अलग करऽ माल-माल तू खाय।
हे माँ! चार चोंच की चिड़िया समुद्र में गिरी, भरभर आवाज करे, मालपाणी सब खाये। पानी को अलग करे माल-माल खाये।
- रवई, छाछ, मक्खन।

काळी कराय धवळो पाणी वोमं नाचऽ घुमा राणी।

काली खाई में सफेद पानी, उसमें नाचे घुमा राणी।

– मटकी, रवई, छाछ, मक्खन।

अत्तीस डोंगर, बत्तीस डोंगर डोंगर मं दरवाजा।

आवगी छैल छबीली खोलगी दरवाजा।

अत्तीस डोंगर, बत्तीस डोंगर (मंजिल) डोंगर में दरवाजा। आयेगी छैल-छबीली खोलेगी दरवाजा।

– ताला और चाबी।

सबई लोग भागी गया, चौकीदार ख लटकाई गया।

सब लोग भाग गये और चौकीदार को लटका गये।

– ताला।

काळो न्हाख्यो ळाळ निकाल्यो।

दो पांय पऽ बठी न दनादन मार्‌यो।

काला डाला। लाल निकाला। दो पैर पर बैठकर दनादन मारा।

– लोहा, भट्टी और लोहार।

काळा खेत मं कड़ब को भारो, खैयचो डोरी चमकऽ तारो।

काले खेत में कड़बी का बोझ। डोरी खीचो चमके तारा।

– तलवार।

काळी थी कजरारी थी काळे वन मं रयती थी।

लाल पाणी पीती थी मर्दों के संग रयती थी।

काली थी कजरारी थी काले वन में रहती थी। लाल पानी पीती थी, मर्दों के संग रहती थी।

– म्यान और तलवार।

एक झाड़ प थारा सी बी नी चढ़ाय नऽ म्हारा सी बी।

एक पेड़ पर तुझसे भी नहीं चढ़ा जा सकता और न मुझसे।

– तलवार।

भुंजेल कुकड़ी, झाड़ पऽ चढ़ी।

भुंजी मुर्गी पेड़ पर चढ़े।

– कुल्हाड़ी।

नानी सी चीटी नऽ सारा जंगल मं पीटी।
छोटी सी चींटी सारे जंगल को पीटती है।
– कुल्हाड़ी।

नानी सी बैड़ी पऽ टिल्लू मिया नाचऽ।
छोटी सी पहाड़ी पर टिल्लू मियाँ नाचे।
– उस्तरा।

रात क अटकी नऽ। दिन क लटकी।
रात को अटके और दिन में लटके।
– साँकल।

एक नारी दो नर नऽ क मिळाव।
एक स्त्री दो पुरुषों को मिलाये।
– साँकल।

आर गांव, पार गांव, बीच मं हजार गांव।
इधर गाँव उधर गाँव, बीच में हजारों गाँव।
– चलनी।

एक रांड की सौ–सौ धार।
एक रांड उसकी सहस्त्र धार।
– चलनी।

एक नारी का सौ दात, भूख लगऽ तो लक्कड़ खाय।
एक नारी के सौ दाँत, भूख लगे तो खाये लक्कड़।
– करवत या आरी।

दुई पहाड़ का ईच मं दाता हुळी नाचऽ।
दो पहाड़ों के बीच में दाँतवाली नाचे।
– आरी।

छोटो सो मनीराम, हाथ भरी पूंछ।
कां गयो मनीराम, पकड़ लाओ पूंछ। छोटा सा मनीराम, हाथ भर की पूँछ।
कहाँ गया मनीराम, पकड़ लाओ पूँछ।
– सुई–धागा।

काळी गाय बुरका पाड़ऽ, धौली गया बुजती जाय।
काली गाय छेद करे। सफेद गाय बूजे।
– सुई–धागा।

गाय चलती जाय, पूंछ फंसती जाय।
गाय चलती जाती है और पूँछ फँसती जाती है।
– सुई–धागा।

काळो छे पण कृष्ण नी, चार मुंडा छे पण ब्रह्म नी, पाणी दे पण इन्द्र नी।
काला है पर कृष्ण नहीं। चार मुँह हैं पर ब्रह्मा नहीं। पानी दे पर इन्द्र नहीं।
– पखाल (चमड़े की मोट)।

एक रांड निस्सेड़ी वो कऽ तीन नन घिस्सेड़ी।
एक रांड निर्लज्ज उसे तीन प्राणी घिसते हैं।
– मोट (दो बैल एक आदमी खींचता है)।

काळी भैंसी लद बद, तीन माथा, दस पग।
काली भैंसी मोटी ताजी, तीन सिर और पैर दस।
– मोट, एक आदमी, दो बैल।

वाकी तेकी निमोळी सड़क पाणी जाय।
जो नी ताड़ वो ख भप्पन बाबो खाय।
बाँकी तिरछी निमोली में सड़क का पानी जाय। जो नहीं बूझे उसे भप्पन बाबा खाय।
– नाली।

दुई पाट, एक जाट, खैचऽ पारी खुस हुई न खाय व्यापारी।
दो पाट एक जाट उसको खींचे पारी। खुश होके खाये व्यापारी।
– चक्की और आटा।

गाय चलती जाय दूध पड़तो जाय।
गाय चलती जाय। दूध गिरता जाय।
– घट्टी (चक्की) और आटा

काळी गाय काटा खाय। पाणी ख देखी नऽ भड़की जाय।
काली गाय काँटे खाये। पानी को देखकर बिचक जाये।
– जूता।

नानी सी पोरी डोळा डबकावऽ, फाटली घाघरी को घेर घमकावऽ।
छोटी सी छोरी। आँखें चलावे। फटी घाघरी का घेर हिलावे।
– चीलम और स्यापी।

ताड़ बे ताड़ दो खम्ब गाड़, भप्पन बाबा ख भुई मं गाड़।
बूझ रे बूझ दो खम्बे गाड़। नहीं तो भप्पन बाबा को जमीन में गाड़।
– ऊखल और मूसल।

जा रे जा मखऽ दई तो जा
जा रे जा मुझे दे तो जा।
– दरवाजा।

अंगल बेड़ी, जंगल बेड़ी,जंगल का दरवाजा।
आवगी छैल छबीली, खोलगी दरवाजा।
अंगल बैड़ी, जंगल बैड़ी, जंगल का दरवाजा। आयेगी छैल छबीली। खोलेगी दरवाजा।
– दरवाजे में लगा ताला और चाबी।

सबई लोग भागी गया नऽ दाजी ख लटकई गया।
सब लोग भाग गये और बूढ़े को लटका गये।
– ताला।

गोळ–गोळ राणी पेळो रंग पाई।
ताड़ी देव काणी, छोड़ी देव लुगाई।
गोल–गोल रानी, पीला रंग पाई। बूझो कहानी, छोड़ दो लुगाई।
– नथ।

भोमला मं झोमलो, झोमलो रिकामो।
छेद में झूमका, झूमका रहे फालतू।
– टोड़ी (कर्ण फूल)।

बारा माथा को बोकड़ो गगाय सेरी माय।
बारह सिर वाला बकरा गली में चिल्लाता है।
– बजने वाले बिछिया।

माथा पऽ दग्गड़ धरऽ, मुंडा मं ऊंगळी भरऽ।
सिर पर पत्थर रखे। मुँह में ऊंगली।
– नगवाली अंगूठी।

जा बे जा मेरी सूरत का आदमी ळा।
जा रे जा मेरी सूरत का आदमी ला।
– दर्पण (काँच)।

वाकी तेकी लाकड़ी, कांधा प धर्‌यो जाय।
असो कसो भूतड़ो पुकार कर्‌यो जाय।
बाँकी तिरछी लकड़ी, कंधे पर रखकर जाये। ऐसा कैसा भूत जो आवाज करते जाये।
– तुरही बाजा।

लक्कड़ को बोकड़ो, काचो आटो खाय।
धीरऽ सी मारऽ तो जोर सी गग्गाय।
लकड़ी का बकरा, कच्चा आटा खाय। धीरे से मारे तो जोर से चिल्लाय।
– मृदंग।

हरा वांस की पोरी, फूँक मारऽ तो बोमदे।
फूक नी मारऽ सोई जाय।
हरे बाँस की छोरी, फूक मारे तो बोम दे। फूँक नहीं मारे तो सो जाये।
– बाँसुरी।

बाको तेको लक्कड़, ओका पऽ बठ्यो होलगो।
जो नी ताड़ऽ वोको बाप ढोल्गो।
बाँकी तिरछी लकड़ी। उस पर बैठी होलगी। जो नहीं बूझे उसका बाप ढोली।
– सिंगाड़िया।

काळो छे कोळसो नी, बोळज पण मनुस नी।
काला है पर कोयला नहीं, बोलता है पर मनुष्य नहीं।
– रेकार्ड (चूड़ी)।

औंधो कुओ बोम मारऽ, औंधा कुँआ बोम मारे।
– घण्टा।

ऊप्पर सी पड़ी लाट, तेली छूट्‌या तीन सौ साठ।
वोका बारा बाप, बाप का अलग-अलग नाम।
ऊपर से पड़ी लाट, तेली लपके तीन सौ साठ। उनके बारह बाप। बाप के अलग-अलग नाम।
– साल, दिन, महीने।

अद्‌भुत डांगरो, वोका तीस-तीस बीज। बारा-बारा चीर।
अनोखा खरबूजा उसके तीस-तीस बीज। बारह-बारह चीर।
– साल, महीने, दिन।

एक लक्कड़ ख काटी नऽ, बणाया चरखा तीन सौ साठ।
एक-एक घन मं दो-दो लाट।
एक लकड़ी को काटकर चरखे बनाये तीन सौ साठ। एक-एक घन में दो-दो लाट।
- वर्ष-दिन-महीने-पक्ष।

अत्तीस नाड़ा, बत्तीस नाड़ा, बिगर बैल सी जोत्या गाड़ा।
अत्तीस नाड़ा, बत्तीस नाड़ा, बिना बैल के जोती गाड़ी।
- नाव या रेलगाड़ी।

एक माय का बारा छोरा, छे छोरी।
बाप को कबी हिटतोज नी।
एक माँ के बारह लड़के छः लड़कियाँ, बाप कभी निकलता नहीं।
- गाड़ी की आरा पुट्ठी चाक और आखा।

काळी मुर्गी लाल बच्चा, जां जाय मुर्गी व्हां जाय बच्चा।
काली मुर्गी लाल बच्चे, जहाँ जाय मुर्गी वहाँ जाये बच्चे।
- रेल इंजन और डिब्बे।

काळा-काळा पिताजी, लाल-लाल बच्चा।
जहाँ जाय पिताजी, व्हां जाय बच्चा।
काले-काले पिताजी, लाल-लाल बच्चे। जहाँ जाय पिताजी वहाँ जाय बच्चे।
- रेल इंजन और यात्री।

एक बाई असी सरकतीज नी।
एक बाई ऐसी जो सरकती नहीं।
- दीवाल।

आठ अठंगड़, बारा बंगड, चार चवंगड़, दुई दवंगड़।
आठ अठंगड़, बारह बंगड़, चार चवंगड़, दुई दवंगड़।
- स्तन (आठ सूअरनी के, बारह कुतिया के, भैंसी के चार और दो बकरी के)।

दो तुरैया, चार चाकू, आठ अठम्बर, बारा बेंगन।
दो तुरई जैसे, चाकू जैसे चार, आठ अठम्बर, बारह बेंगन से।
- स्तन (दो बकरी, चार गाय, बारह कुतिया, आठ सुअर)।

चार भाई चवरंग्या, फूल पड़े एकरंग्या।
चार भाई चार प्रकार के, फूल गिरे एक रंग के।
- गाय के थन।

चार चरवा अमृत भर्‌या, बिना ढक्कण का औंधा धर्‌या।
चार चरवे अमृत भरे। बिना ढक्कण के औंधे धरे।
– गाय के चार थन।

नीचे लाल, ऊपर गयो फाळऽ, नीच्च पड़्यो भट, नद्दी नाळा डट।
नीचे का लाल, ऊपर गया दौड़। नीचे गिरा जब नदी नाले भरपूर।
– बादल, वर्षा का पानी।

हऊं ळेणऽ आई तूख, पण घेरी ली तूनऽ
तू छोड़ मकऽ हऊं लई जाऊ तूकऽ।
मैं लेने आई तुझे, पर घेर ली तूने। तू मुझे छोड़ दे, मैं ले जाऊँगी तुझे।
– पानी और पनिहारी।

नौसौ आड़ा, नौ सौ तेड़ा, नौ सौ बाबन बीर।
जो नी ताड़ वोकी नाक मं सौ सौ तीर।
नौ सौ उल्टे, नौ सौ सीधे, नौ सौ आड़े तिरछे वीर। जो नहीं बूझे उसकी नाक में सौ–सौ तीर।
– कवेलू।

तू चल हऊं आयो
तू चल मैं आता हूँ।
– निवाला।

चार खूंट की वावड़ी, सोळा पणिहार।
चार बठ्‌या एक सात, अळग–अळग करऽ विचार।
चार कोनी बावड़ी, सोलह पनिहारिनी, चार बैठे किन्तु विचार अलग–अलग।
– चौपड़ का खेल।

चार यार चल्या बजार, सोळा कोठड़ी सात दळाळ।
चार मित्र चले बाजार। सोलह कमरे सात दलाल।
– चौपड़ का खेल।

काकी का कान, काका का काननऽ नी।
काकी के कान पर काका के कान नहीं।
– कड़ाही और तवा।

बाप बठी रय, बेटो उळ–उळ करऽ।
पिता बैठा रहे, बेटा उल–उल करे।
– मटका, उलीचना।

बाप बठी रय, बेटी डूबऽ।
बाप बैठा रहे, लड़की डूबती है।
– कुआँ और बाल्टी।

उप्पर जाय, नीच्च आवऽ घड़ी–घड़ी मं पाणी लावऽ।
ऊपर जाये नीचे आये, बार–बार पानी लाये।
– बाल्टी।

एक म्हारो मामो एक सौ साठ म्हारी मामी।
असो म्हारो मामो, जिन्न सबख निभायी।
एक मेरा मामा, एक सौ साठ मेरी मामियाँ। ऐसा मेरा मामा जिसने सबको निभाया।
– कुँआ।

घामं मं पैदा होय, छांव देखि नऽ मुरझई जाय।
ओ माय थारा सी पूछू, हवा लगऽ तो मरी जाय।
धूप में पैदा हो। छाँव में मुरझाये। हे माँ तुझसे पूछूँ, हवा लगते ही मर जाय।
– पसीना।

एक डांडा, दो झोपड़ी, निकळ रांड खेखड़ी।
थारा बाप की आय झोपड़ी।
एक डंडा, दो झोपड़ी, निकल जा निर्लज्ज। तेरे बाप की है झोपड़ी।
– नाक और नाक का मल।

सबई लोग भागि गया, गांव का भायर खुटो गाड़ी गया।
सब लोग भाग गये। गाँव बाहर खूँटा गाड़ गये।
– खेड़ापति हनुमान।

सबई लोग भागि गया, भोंगळई रांड ख कोंडी गया।
सब लोग भाग गये, मोटी रांड को कमरे में बन्द कर गये।
– कोठी।

एक छोरो बागड़ मं गड़ाय।
एक लड़का बागड़ में गाड़ा जाता है।
– ऊप (बागड़ लगाने का यंत्र)।

चार भाई हट्टा कट्टा, उनका माथा मं दो–दो डट्टा।
चार भाई मोटे ताजे, उनके माथे में दो–दो डट्टे।
– खाट के पाये।

चार भाई मिळूं-मिळूं करऽ, पण मिळताज नी।
चार भाई मिलने को करे पर मिलते ही नहीं।
- खाट के पाये।

एक छोरो बागड़ मं माथो भरऽ।
एक लड़का बागड़ में सिर डालता है।
- डोलिया (बागड़ लगाने का लकड़ी का यंत्र)।

काका-काका कौओ देख्यो, कओ भतीजा कसो देख्यो।
पंख छे पण उड़तो नी, चोंच छे पण चुगतो नी।
काका-काका कौआ देखा, कहो भतीजा कैसा देखा। पंख हैं पर उड़ता नहीं। चोंच है पर चुगता नहीं।
- चरखा।

संख सरीखो धवळो, चांद सरीखो गोरो।
सोंदी मीठी आव वास, जल्दी तोळ वाण्या नई तो मारगी सासू।
शंख सरीखा सफेद, चाँद सरीखा गोरा, सोंधी मीठी सुगन्ध। जल्दी तोल बनिया नहीं तो मारेगी सास।
- कपूर।

दूर सी आई हँसती, पास आई नऽ फँसती।
दूर से आई हँसती, पास आके फँसती।
- कंघी या कांगसी।

रात भर सोवाड़ी नऽ दिन भर उबाड़ी।
रात भर सुलाई दिन में खड़ी रही।
- खटिया या चारपाई।

पोकळा वड़ मं पांच अण्डा।
पोले बड़ के पेड़ में पाँच अण्डे।
- जूते में पैर की अंगुलियाँ।

अंधेरा घर मं ऊँट बळबळाय।
अँधेरे घर में ऊँट बलबलाये।
- कड़ाही के तेल में पूरी।

एक बाई रोज भमसारा सी नांगा घुसाई कऽ जगाड़ी दे।
एक बाई रोज सुबह से नंगे गुसाई को जगाये।
- चूल्हा।

सबई लोग भागी गया, घुसाई खऽ छोड़ी गया।
सब लोग भाग गये और घुसाई को छोड़ गये।
– चूल्हा।

नानी सी खोळी मं पचास लक्कड़।
छोटी सी खोली में पचास लकड़ियाँ।
– माचिस।

काळो छे पण कागळो नी, नई कोयळ म्हारो नांव।
काम सबका आऊंज पण, नी वादल नी छांव।
काला है पर कौआ नहीं, नहीं कोयल मेरा नाम। काम सबके आता हूँ, नहीं बादल नहीं छाँव।
– कोयला।

दुई भाई मिळूं-मिळूं करऽपण मिलताज नी।
दो भाई मिलने की इच्छा करे पर मिलते ही नहीं।
– घोल्ला (दरवाजे के चौखट के ऊपरी भाग)।

कहूं तो कवाय नी, कुण बड़ो ठूंठ।
नानी सी किड़ी क धावो बड़ो ऊंट।
कहूँ पर कहा नहीं जाय, कौन बड़ा ठूँठ। छोटी सी चीटी को पकड़ने दौड़ा ऊँट।
– तेल का घाना और बैल।

देखणऽ की काळी, उठाणऽ की भारी।
मसकी दे तो चिल्लाई उठऽ दारी।
देखने में काली, उठाने में भारी। मसक दें तो चिल्ला उठे दारी।
– पिस्तौल।

लाल गाय लाकड़ी खाय, पाणी पीयऽ तो मरी जाय।
लाल गाय लकड़ी खाये। पानी पीये तो मर जाये।
– अंगार।

एक काणी हंऊ-कऊं एक काणी तू कऽ।
तू सुणजे म्हारा पूत, बिना पर उड़ऽ, बाँध गळा मं सूत।
हे माँ मैं एक कहानी कहूँ, एक कहानी तू कह। माँ ने कहा- बेटा तू तो सुन, बिना पंख के उड़े गले में बाँधे सूत।
– पतंग और धागा।

सौ नखी, पांच मुखी, चार दुखी एक सुखी।
सौ नाखून, पाँच मुँह, चार दुखी, एक सुखी।
– मुर्दा उठाने वालों सहित (सौ नाखून, पाँच मुख)।

सौ ऊंगली दस गोड़, पांच मुंडा, जीव चार।

पीठ का बळ जाय वो पंडित करो विचार।

सौ अंगुलियाँ, दस पैर, पाँच मुँह, चार जीवित, एक पीठ के बल जाये, पंडित इस बात का विचार करो।

– मुर्दा उठाने वालों सहित।

दो लग, दो थग, छव पग दो पाँव मं खासड़ी, नऽ दोई आगऽ मुंदड़ी।

दो लग, दो थग, छः पग, दो पाँवों में जूते, इसके आगे मुंदड़ी।

– कुम्हारन और लदा हुआ गधा।

ऐ... जी सोया, बाई जी सोया, पण ससरा जी तम नी सोया।

अमुक सो गये। बाई जी भी सोई। पर ससुर जी तुम नहीं सोये।

– खम्बा।

अईं सी गई माय बेटी, वई सी आया ससरो जंवई।

कुण केका गळा मिल्यो – बताओ रिश्तो?

इधर से गई माँ बेटी, उधर आये ससुर जँवाई। कौन किसके गले मिले। बताओ।

– बाप और बेटी।

अटक–मटक दही चटक, पांच चीज पिरथी पर नी।

अटक–मटक दही चटक, पाँच चीजें इस पृथ्वी पर नहीं।

– (1) हथेली पर बाल (2) चिड़िया के स्तन (3) आकाश के खम्भे (4) घोड़े के सींग (5) केले में काँटा।

हिरण चलऽ, दूध गळ

हिरन चले, दूध गले।

– चक्की और आटा।

राजवंसी मरी गयो, रोवणो वाळो नई।

कांच कटोरो फूटी गयो जोड़ण वाळो नई।

छप्पर पळ्ळंग पऽ सोवण वाळो नई।

सुन्दर चली सासरऽ मनावण वाळो नई।

राजवंशी मर गया, रोने वाला नहीं। काँच कटोरा फूट गया, जोड़ने वाला नहीं। छघर पलंग पड़ा है, सोने वाला नहीं। सुन्दर चली सासरे, मनाने वाला नहीं।

– क्रमशः सर्प, आँख, बर्फ, नदी।

काळई माथणी, भोरो पाणी, ते मंऽ नाचऽ टेमा राणी।
काली मटकी, भूरा पानी, उसमें नाचे टेमा रानी।
– मथानी में रवई।

आगऽ नाग चलऽ, पीछऽ गोप चलऽ, ईच मं तोप चलऽ।
आगे नाग चले, पीछे गोप चले, बीच में तोप चले।
– सूँड नाग, पूँछ गोप, शरीर तोप।

दिन ख भरेल, रात ख खाली।
दिन में भरी हुई, रात में खाली।
– बिस्तर रखने की अर्गली।

धवळी धरती काळो बीज, वावणोऽ वालो गावऽ गीत।
सफेद धरती, काले बीज, बोने वाला गाये गीत।
– कागज, अक्षर, कवि और कविता।

एक जानवर असो चलतो चलतो रुकी जाय।
लाओ चाकू काटो मुंडी, फिर सी चलनऽ लगी जाय।
एक जानवर ऐसा जो चलते–चलते रुक जाय। लाओ चाकू काटो मुंडी फिर से चलने लग जाय।
– पेन्सिल।

एक घोड़ो उत्तर जाय, दक्खण जाय, पाणी पीयऽ तो मरीऽ जाय।
एक घोड़ा उत्तर जाये, दक्षिण जाये, पानी पीये तो मर जाये।
– पत्र।

रमेशचन्द्र तोमर 'निमाड़ी'

रक्षाबंधन का पर्व भाई-बहन के पवित्र स्नेह का प्रतीक है। अपने भाई को बहन राखी बाँधने जा रही है। पहेली में जिज्ञासा है- बहन अपने पैर कहाँ रखती है।

धरती की आरती चांद सूरीज का दिया।
भाई की बईण पूजण चली पाँय काँय पऽ दिया॥
इसका उत्तर है- 'हवा'।

किसी लड़की के माता-पिता काम करने गये हैं। कोई व्यक्ति आकर उस लड़की से पूछता है- तुम्हारे माता-पिता कहाँ गये हैं, तुम क्या कर रही हो। लड़की ने पहेली में उत्तर दिया- 'म्हारो बाप सरग को पाणी वालनऽ गयोज', 'म्हारी माय एक-एक का दो-दो करनऽ गईज', न, 'हाँऊ सोन्ना क चाँदी में ढालई रईज'। लड़की का पिता कवेलू चालने छप्पर छाने गया था। लड़की की माता अरहर (तुवर) की दाल बनाने गई थी और लड़की स्वयं धान से चावल बना रही थी।

एक औरत अपने पड़ोसी के घर एक वस्तु माँगने के लिए गई थी, पड़ोसी के घर मेहमान बैठे थे और औरत को संकोच हुआ तो उसने पहेली में बड़ी चतुराई से वस्तु की माँग की है, यह देखना है-

जल मऽ उपज, जल मऽ निपज जल मऽ छाई प्रेमलता
छत्तीस गोरी को सायबो सासु जी दिजो मोय।

उसे नमक चाहिए था, नमक समुद्र के पानी में पैदा होता है और उसके बिना छत्तीस प्रकार के पकवानों में स्वाद नहीं आता है। इसलिए उसे 'छत्तीस गोरी का सायबा' कहा गया। पड़ोसन ने नमक दे दिया, मेहमान देखते रहे। और वह अपनी इच्छित वस्तु लेकर चली गई।

पहेलियाँ हास्य और व्यंग्य का भी एक साधन हैं-

पान लावजे फूल लावजे अरू लावजे काकड़ी।
म्हारा पैसा पछा लावजे अरू लावजे लाकड़ी॥

पान लाना, फूल लाना और उसके साथ में ककड़ी भी लाना तथा ककड़ी के साथ ही लकड़ी भी लाना, पैसा एक भी खर्च नहीं करना, मेरे पैसे भी पूरे वापस लाना।

- अकाव का वृक्ष, जिसमें पत्ते फूल फल (ककड़ी जैसा) और लकड़ी भी उपलब्ध होती है और पैसे भी वापस मिल जाते हैं।

सिरपुर मऽ ढूँढा पड़्या, चिमटापुर मऽ पकड़ा गया।
हतनापुर में न्याव हुआ, नकनापुर में मारा गया।

सिर में लगा कि कुछ चल रहा है, खोजबीन हुई, हाथ की चिमटी से पकड़कर उसे बाहर निकाला गया और हाथ पर रखा गया और देखा- अरे! यह तो 'जूँ' है, तत्काल उसे नाखून से मार दिया।

- जूँ।

लाकड़ा को बोकड़ो काचो आटो खायो।
धीरऽ सी मारो जोर सी गग्गाय।

मृदंग लकड़ी से बनी होती है। उस पर बकरे का चमड़ा चढ़ा होता है, बजाने से पहले उस पर कच्चा आटा लगाया जाता है। ताल बजाने वाला बजाता तो धीरे से, लेकिन आवाज जोर की होती है।

- मृदंग।

जबरयो सो कुवो, झबकती वाड़ी
ढोर ढंकर पाणी पे पंछी से पाणी नी पेवाय।

कुँए में खूब पानी भरा है। बाड़ी में गाय-भैंस पानी पी रही हैं। लेकिन पक्षियों से पानी नहीं पीया जाता है। भावार्थ यह है कि यहाँ पर गाय-भैंस के दूध की बात कही जा रही है। गाय-भैंस को दूध आता है और उसके बछड़े दूध पीते हैं। गाय के शरीर की तुलना कुँए से की गई है। पक्षियों को दूध नहीं आता, अत: वे पानी पीने में असमर्थ हैं। अत: पक्षियों के बच्चे अन्न कण खाते हैं और अपना पेट पालते हैं।

- माँ का दूध।

चार भाई अक्कड़ बक्कड़ दो भाई सूखा लक्कड़।
चार भाई तो तरोताजा हैं और दो भाई सूखी लकड़ी के समान हैं।
- गाय के चार थन और दो सींग।

नानी सी होलगीं डाबरयो सो पेट
काँ जाज होलगी राजाजी का देश।
आवसे राणाजी, फोड़से पेट, बच्चा हुसे देश-देश।

होलगी (एक पक्षी का नाम) छोटी-सी होती है, जिसका उदर भी छोटा-सा होता है। हे होलगी! तू कहाँ जा रही है? आयेंगे राणाजी तेर पेट फाड़कर भक्षण करेंगे। मुख के रास्ते तू कहीं और पहुँच जायेगी या दूसरे देश चली जायेगी।

- संजोरी (गुजिया)।

आकाश मऽ मारयो बोकड़ो, पाताल उतारी खाल।
हाय, हाय रे लाल, तेरी छाती में बाल॥

आकाश में बकरे को मारा गया है। जिसकी चमड़ी (खाल) पाताल अर्थात् धरती पर उतारी गई है और वाह रे लाल तुम्हारी छाती में बाल है।

- पका हुआ आम।

नीलई गोटी, हिन्दलऽ बठी।
ल रे सगा थारी बेटी॥

हरी-हरी गोरी की तरह जो हवा के झूले पर झूल रही है। हे सगे समधियों! लो तुम्हारी बेटी को लो, ले जाओ।

- कच्ची कैरी जो पेड़ पर लटकी है।

जवानी मऽ झुलो झुल बुढ़ापा मऽ बजार जाय।

जवानी में झूला झूलती है फिर प्रसूति की तरह सोती है और बुढ़ापा आने पर बाजार में बिकने जाती है।

- आम।

चार भाई हट्टा-कट्टा, उनका माथा पर दुई-दुई गट्टा।

चार भाई बलवान हैं, लेकिन उनके सिर पर दो-दो लट्ठे (लकड़ी के टुकड़े) हैं।

- चारपाई के चार पैर।

चार भाई चौरंग्या फूल पणऽ एक रंग्या।

चार भाई चार प्रकार के हैं, लेकिन उनके फूल एक समान खिलते हैं।

- गाय-भैंस के चार थन।

माय को बबु नी, बेटी को बबु॥

माँ के स्तन ही नहीं हैं और बेटी के स्तन हैं।

- मिट्टी की हंडिया और ढक्कन।

माय कुवारी न बेटी पनेली।

माँ बिना विवाह की है और बेटी विवाहित है।

– झाड़ू। (झाड़ू छिन्द के पेड़ से बनती है। छिन्द के पेड़ का विवाह नहीं होता है। जब नई झाड़ू घर में लाते हैं तो उसको उपयोग में लाने से पहले कुमकुम से पूजा करके कपड़ा ओढ़ाकर उसे खम्बे के आसपास सात बार फेरे लगवाकर उसका विवाह सम्पन्न करते हैं, तब काम में लेते हैं।)

बाप जंगल मऽ माय पंगत मऽ बेटा–बेटी रंगत मऽ॥

पिता जंगल में हैं तथा माता पंगती में बैठती है और लड़के–लड़कियाँ घूरे पर हैं।

– पलाश का पेड़ जंगल में खड़ा रहता है, उसके पत्तों से बनायी जाने वाली पत्तल पंगती में भोजन के बाद घूरे पर फेंक दी जाती है। वही पलाश के फूल प्रकृति में रंगत बिखेरते हैं।

बाप बठन्या करऽ छौरो थिगल्या भरऽ, नात्या–पोत्या दौंड़ लगाव।

पिता बैठा रहता है, पुत्र चलना सीख रहे हैं और उसके पुत्र–पुत्रियाँ घर–आँगन में दौड़ लगाते हैं।

– मटका, ढोल, गिलास और लोटे।

थारी माय को गोल–गोल, न थारा बाप को लम्बो–लम्बो।

तेरी माता का टीका तो गोल है और पिता का टीका लम्बा है।

– कुमकुम का तिलक, टीका।

नानी सी झारी म बत्तीस लाडु, छोटे से बर्तन में बत्तीस लड्डू हैं।

– दाँत।

नानी सी बयड़ी प टल्लू मियाँ नाचऽ।

छोटी–सी पहाड़ी पर टिल्लू मिया नाचता है।

– उस्तरा।

नानी सी बाई चली बजार, ओका पोर्या पारई एक हजार।

छोटी–सी अलमस्त–सी स्त्री बाजार जा रही है, जिसके हजार बच्चे हैं।

– मिर्ची।

नानी सी डब्बी मऽ रम्भा बाई नाच।

छोटी डिबिया में एक रम्भा जैसी अलमस्त स्त्री नाच रही है।

– जीभ।

नानी सी लाड़ी ओकऽ पेरई साड़ी। करी लियो काम, पटकी दी आड़ी॥

छोटी–सी दुल्हन को साड़ी पहनाई काम निकालने के बाद जमीन पर सुला दिया।

– चिलम और स्यापी।

नानी सी डब्बी म हाय-हा का बीज।

छोटी-सी डिबिया में हाय-हाय करने के बीज हैं।

- मिर्ची।

नानी सी गाय तुरूक-तुरूक जाय। देखजो ओ माय म्हारा गऊ नी खाय॥

छोटी गाय धीमी चाल से जा रही है। हे भाई! जरा ध्यान रखना मेरे गेहूँ ना खाने पाये।

- धंधोरिया (घुन)।

नानी सी छड़ी भुई म गड़ी। रूमझूम करती मयल चढ़ी॥

धवलई खड़ी भुई म पड़ी। रूमझुम करती मयल चढ़ी॥

छोटी-सी सफेद खड़ी (सफेद मिट्टी) जैसी है, जो रुनझुन की आवाज से महल तक जा बैठी।

- जुवार।

काली गाय कांटा खाय, पाणी कऽ देखी नऽ भड़की जाय।

काले रंग की गाय है जो काँटे तक का भक्षण कर जाती है, लेकिन पानी के पास जाकर भड़क जाती है।

- चमड़े के जूते।

काली नदी कलुटा पाणी, डूब मरी चन्द्रावती राणी।

काली नदी में काला सा पानी, उसमें चन्द्रावती रानी डूबकर मर गई।

- कड़ाही का तेल, संजोरी या पूरी बनती है।

कालो माथणो भोरो पाणी, तेका मऽ नाच रम्भा राणी।

काले मटके में भूरे रंग का पानी है, जिसमें रम्भा जैसी अप्सरा नृत्य कर रही है।

- मथनी या रवई।

लाल माथणो कालो ढाकनो, जो नी वार्ता ताड़ऽ ओ को बाप डाकणो।

लाल रंग का मटका है, उस पर काले रंग का ढक्कन है, जो इस पहेली का उत्तर नहीं बतायेगा, उसका पिता पेटू होगा।

- जुरंग अथवा रत्ती।

आलंती झूलन्ती, टेड़ी चले क्यों?

अकनी पे ढकनी, म तेरा बिच्छू काला क्यों?

हवा के साथ झूलने वाली तेरी चाल टेढ़ी क्यों है? दोनों परत बराबर है, पर बीज काला-काला क्यों है?

- इमली।

झाड़ ओका थामक थैया पान ओका थालई।

देखण म श्याम सुन्दर, बैठक ओकी कालई॥

पेड़ उसका सुन्दर है। पत्ते उसके थाली के आकार के हैं। देखने में वह सुन्दर है, पर उसका निचला हिस्सा काला है।

– टेसू का फूल।

गोड़ थम्बा, पान लम्बा। फल खायो पण बीज नी पायो॥

उस वृक्ष का तना चिकना, सुडौल और खम्बे के आकार का है। उसके पत्ते काफी चिकने और लम्बे हैं। फल भी मीठा और स्वादिष्ट है। फल खाया लेकिन बीज का कहीं पता नहीं है।

– केला।

पच्चीस पैढ़ी, पचास घाट, सिर पर घड़ा कम्मर पर हाथ।

कैसी चढ़ूँ हऊँ औघड़ घाट॥

पच्चीस सीढ़ियाँ हैं, पचास घाट हैं, सिर पर घड़ा है, कमर पर हाथ हैं, कैसे चढ़ूँ।

– छिन्द का पेड़ और उसके फल।

घर मऽ ठोकी, अँगणा मऽ ठोकी, ठोकम ठोक मचाई, घर वाला न।

असी ठोकी पर घर ठोकावा गई॥

– कुम्हार ठोंक-पीटकर मटके बनाने के लिए मिट्टी तैयार करता है। मटके के छोटे रूप को पीटकर कुछ बड़ा करके आँगन में सूखने रखता है। थोड़ा सूखने के बाद में उसे पुनः पीटकर बड़ा करता है। मटका बनने के बाद में बाजार में ले जाकर पीटकर ग्राहक को बताता है। ग्राहक भी मटके को बजाकर देखता है, तब खरीदता है।

– मिट्टी से निर्मित मटका।

वाको तेको बोबल्यो, ते पर बठ्यो होलगो।

जो नी वार्ता ताड़ऽ, ओको बाप ढोलगो॥

टेढ़े-मेढ़े आकार का बबूल का वृक्ष है, जिस पर एक छोटा-सा पक्षी होलगा बैठा है। जो मेरी पहेली का अर्थ नहीं बतायेगा, उसका पिता ढोली होगा।

– सुपारी और सरोता।

दूर देश सी आयो जुवान, सिर पर टोपी चार कान।

दूर देश से एक आदमी आया है, जिसके सिर पर टोपी है और उसके चार कान हैं।

– लौंग।

हाँऊ गोरी, म्हारो बेटो कालो। मखऽ छोड़ी द म्हारा बेटा का खाई जा॥

मैं गोरी हूँ, मेरा बेटा काला है। मुझे छोड़ दे, मेरे बेटे को खा ले।

– इलायची और छिलका।

हरी हासुबाई, काली कसुबाई।

धवला रामा जी नऽ लाल दामा जी॥

हरे रंग की हसुबाई, काले रंग की कसुबाई है। सफेद रंग के रामा जी हैं, लाल रंग के दामा जी हैं।

– हरा पान, सफेद चूना, लाल कत्था, काले रंग के लौंग और सुपारी हैं।

आरकस बारकस, खैर को खूटो। गाय छे मारकणी दूध छे मीठो॥

इधर भी घर है, उधर भी घर है। उस जंगल में गाय रहती है, गाय मारने वाली है, लेकिन उसका दूध बहुत ही मीठा है।

– मधुमक्खी का छत्ता।

कवु तो कवाय नी, कवु बड़ो ठूँट। कीड़ी क पानो छूटयो धावऽ बड़ो ऊँट॥

आश्चर्यजनक बात है। कहते नहीं बनता है, फिर भी कह रहा हूँ। चींटी को दूध आ रहा है और ऊँट जैसा लम्बा जानवर चींटी के दूध को पी रहा है।

– तिल्ली और घाणा।

आल्या में गोपाल्यो, झिगड़या की झांई।

बारा बरस मऽ कुंवर हुयो, ओको नाव काई॥

वह बारह वर्ष में एक बार लगता है, जिसकी धूम सारी दुनिया में होती है। उसका नाम क्या है?

– सिंहस्थ अथवा कुंभ का मेला।

पटेल जाय मेर-मेर। पटलेण जाय हेर-हेर॥

पटेल मेढ़-मेढ़ जा रहे हैं और पटेलन पैर रखते पीछे-पीछे आ रही है।

– सुई और धागा।

ऐत्तो बड़ो लम्बीराम, ऐत्ती बड़ी पूँछ।

भागी गयो लम्बीराम, पकड़ी ला ओकी पूँछ॥

इतना बड़ा लम्बीराम है, इतनी बड़ी उसकी पूँछ है। भाग गया लम्बीराम, पकड़ लाओ उसकी पूँछ।

– सुई और धागा।

आरती मारती टाँगड़ा फँसाड़ती, भोरो-भोरा पाड़ती॥

चक्की चलाते समय दोनों पैर चक्की के आसपास हैं। आलकी-पालकी मारकर चक्की नहीं पीसी जाती है। जब चक्की चलती है, तब भूरे रंग (सफेद) का आटा गिरता है।

- चक्की और घट्टी।

नानो सो पेर्या तल बतूल। टोंगल्या ऐतरी धोती माथा पऽ फूल॥

छोटा-सा लड़का है, जो बहुत ही शैतान है, उसकी घुटने तक धोती है और जिसके सिर पर फूल है।

- मुर्गा।

वाका तेका बालम तिखा घणा, हरी-हरी चरिया घास।
घम-घम घमकऽ, दादूर जसा चमकऽ॥

टेढ़े-मेढ़े बालम बड़े ही तीखे स्वभाव के हैं। हरी-हरी घास खाते हैं। बिजली की तरह चमकदार हैं।

- दराता और हँसिया।

राजा मोहन सेठ की उँटडी, कान मिल न पूछड़ी।

राजा मोहन सेठ की ऊँटनी जिसके न तो कान हैं, न ही पूँछ है।

- मेंढक।

धवलो घोड़ा नीलई पूँछ, तूक नी आव तो थारा बाप कऽ पूछ॥

सफेद घोड़ा है जिसकी पूँछ हरे रंग की है। यदि तुम्हें इसका उत्तर नहीं आता हो तो तुम्हारे पिता से पूछ लो।

- प्याज।

सब भाई न को एक जुग।

सभी भाइयों का एक दिल है, जो एकजुट है।

- लहसुन।

जा तो जा बिगर डेड को लिम्बू ला।

जाने वाले तू जा रहा है, पर बिना डंठन का निम्बू लाना।

-अंडा।

जा तो जा पर म्हारी सूरत को आदमी ला।

जाने वाले मेरी शकल-सूरत का आदमी लाना।

- दर्पण या काँच।

जा तो जा पण मक देखी नऽ जा।

जाने वाले जा तो रहा है, पर अपनी सूरत मुझमें देख के जा।

- काँच।

जा तो जा मकऽ दई तो जा।

जाने वाले जा रहा है, मुझे बन्द तो कर जा।

– दरवाजा या किवाड़।

आँई सी गया ससरो जँवई, वँई सी आई माय बेटी।

वा ओका बाप कऽ मिली, नऽ वा ओका बाप कऽ मिली॥

इधर से ससुर और दामाद गए उधर से माँ और बेटी आई। दोनों अपने–अपने पिता को मिली।

– ससुर–दामाद, पत्नी (माँ) और बेटी।

माय बेटा दो, रोटा करया तीन। केत्ता, केत्ता वाट आया॥

माँ बेटे दो हैं, रोटी तीन बनाई गई हैं, कितनी–कितनी हिस्से में आई हैं।

– एक–एक रोटी।

एक कऽ मारी नऽ हजार को भेद लिया।

चावल या दाल सीजती है, एक चावल को तपेली से निकालकर देखा जाता है कि पक गये या कच्चे हैं। चावल सीज गये होंगे तो एक चावल या दाल भेद बता देगा कि चावल सीज गये या नहीं।

– चावल।

टीटोड़ी की टाँय–टाँय। तीन मनुस नऽ दस पाय॥

आश्चर्यजनक बात है, तीन मनुष्य हैं, उनके दस पैर हैं। चड़स अथवा मोट में दो बैल जुते होते हैं और चड़स चलाने वाला मिलकर तीन की संख्या, दो बैल के आठ पैर और एक मनुष्य के दो पैर मिलकर दस पैर हो जाते हैं।

– मोट या उसका चड़स।

पटेलण माय गाभणी, पटेल दाजी बोम दे।

पटेल की पत्नी गर्भवती है और पटेल जोर–जोर से चिल्लाता है।

– मोट और कणा।

एक राँड निसड़ी ओकऽ तीन नन घिसड़ी।

एक बेशर्म औरत को तीन आदमियों ने घसीटा है।

– मोट या चड़स।

फर फंदा यो, सगड़ बम यो। वो को फल यो न ओको बीज यो॥

जो फुग्गे जैसा फूल जाता है, उसका वजन भी है। फल इतना बड़ा है कि उसका बीज एकदम छोटा है।

– कद्दू।

बईल बठी रय नऽ रास चलती जाय।

बैल तो बैठा रहता है, लेकिन उसकी रस्सी चलती चली जा रही है।

– तरबूज और बेल।

बईल पाणी नी पे रास पाणी पे।

बैल तो प्यासा है पर पानी नहीं पीता है, लेकिन उसकी रस्सी है, वह पानी पीती है।

– चिमनी।

सूखा तलाव म होलगा फड़–फड़।

सूखे हुए तालाब में होलगा नामक पक्षी फड़फड़ा रहा है।

– मक्का–जुवार की धानी (फूली)।

अत्तीस नाड़ा बत्तीस नाड़ा, बिगर बइल का जोत्या गाड़ा।

तीस बत्तीस रस्से हैं, फिर भी बिना बैलों के गाड़ी हाँकी जा रही है।

– नाव।

अत्तीस डोंगर, बत्तीस डोंगर, डोंगर में दरवाजा।
आयेगी छैल छबिली खोलेगी दरवाजा॥

तीस–बत्तीस दरवाजे हैं, जो सभी बन्द हैं। नखराली औरत आएगी, तब दरवाजा खोलेगी।

– ताला–कूची (चाबी)।

वाकी तेकी नद्दी थारा सी भी नी कुदाय, न म्हारा सी कुदाय।

एक टेढ़ी–मेढ़ी नदी है, जिसे ना मैं कूदकर पार कर सकता हूँ और ना ही तुम उसे कूदकर पार कर सकते हो।

– साँप।

गड्डु भर दूध थारा सी भी नी पेवाय, नी म्हारा सी पेवाय।

एक लोटा दूध है, ना तो तुमसे पीया जायेगा, ना ही मुझसे पीया जायेगा।

– अकाव का दूध।

एक फकीर ओका पेट मऽ लकीर।

एक फकीर उसके पेट पर लकीर है।

– गेहूँ।

यायण जी का घाघरा मऽ ब्याई जी को माथो।

समधन के घाघरे में समधी का सिर है।

– मक्का और भुट्टा।

माटी को घोड़ो काली लगाम, ओका पऽ बठयो गुलगुलो जवान।

मिट्टी का घोड़ा है, उसे काली लगाम लगी है और उस पर गुलगुल करता जवान बैठा है।

– चूल्हा, तवा, रोटी।

ऊपर सी कयड़ो, भीरत सी नरम, जेकऽ दान करण को बड़ो धरम।

ऊपर से सख्त कठोर है, अन्दर से नर्म, जिसको दान–पुण्य करने से बड़ा पुण्य लगता है।

– नारियल।

गिड़गिड़ गुपूत, किलकिल कपूत। काई थारा मन मऽ क म्हारा कान म॥

गड़गड़ करने वाले तू अच्छा है या बुरा है, तेरे मन में क्या है? चुपके से मेरे कान में कह दे।

– नारियल।

कहे गजपति सुण रहे हलपति, धरणी धर किन्ने मारा।
चार खम्ब ऊप्पर–छत्तर, छत्तर मऽ छाया, छाया मऽ नर।
नर का बगल मऽ नारी, नारी का मुँह मऽ नर॥
उन्ने मारा धरणी धर॥

हे हलवाड़े! पृथ्वी पर रहने वाले सूअर को किसने मारा? चार खम्बों के ऊपर छत है, उस पर छाया है। उस छाया में मनुष्य बैठा है, मनुष्य के बगल में एक नारी है, (गोफन) उस नारी के मुँह में एक पत्थर है, उसी पत्थर ने सूअर को मारा है।

– गोफन का पत्थर।

दो राणी न, कुण?

– (1) देवराणी, (2) राजा की राणी। इन सभी में रानी शब्द का प्रयोग हुआ है। ये बिना मान–सम्मान के रानी बन गयी है।

आठ अटगर, बारा बलगर। चार चऊक, दुई तोरण॥

आठ थन किसके, बारह थन किसके, चार थन किसके, दो स्तन किसके हैं?

– आठ थन सूअरनी के हैं। कुतिया के बारह थन हैं। चार थन गाय के हैं या भैंस के। दो थन बकरी के हैं।

एक पोरयो रखोड़ा मऽ लोटऽ।

एक लड़का राख में लोटता है।

– बाटी या बाफले।

एक पोरयो वागड् मऽ माथो भरऽ।

एक लड़का बागड़ में सिर देता है।

– डोलिया।

एक नारी पलंग पऽ सूती, सूती-सूती अपने पति पर मूती।
उसका पति अति सुख पावे, पंडित होय तो अर्थ बतावे॥

एक सती नारी पलंग पर सोये-सोये अपने पति पर मूत्र त्याग करती है। उसका पति आनन्दित होता है। पंडित हो तो अर्थ बतावे।

- महादेवजी के ऊपर की जलाधारी।

भइसी बठी पाणी मऽ पूछ बड़वानी मऽ।

भैंस तो पानी में बैठी है और उसकी पूँछ बड़वानी गई है।

- बिजली।

दुई भइसी का मुंडा मऽ एक टौटो।

दो भैंसों के मुँह में एक डण्ठल है।

- बैलगाड़ी के चाक और आखा।

नानी सी डब्बी, डबडब कर।

छोटी-सी डिबिया पानी से भरी है।

- आँख।

रतन तलई, पाँच पलई।
जो नी वार्ता ताड़ऽ ओको बाप कसई॥

रतन तलाई के आसपास पाँच पेड़ हैं, जो इसका उत्तर नहीं देगा, उसका पिता नीची जाति का होगा।

- हथेली, चार अंगुलियाँ और अंगूठा मिलकर पाँच की संख्या हो जाती है।

माय झापड़ई, बेटी वाकड़ई, जेका पोर्या पारी काला भुस।

माता के केश बिखरे हैं, बेटी तेड़ी-मेड़ी है और उसके बच्चे काले हैं।

- इमली।

हाथ म छे पण हथेली म नी।

हाथ में है पर हथेली में नहीं है।

- बाल।

नाना सा पोर्या क पट दिन आपटयो।

छोटे से बच्चे को फट से पटक दिया।

- सेमुड़।

सब लोग भागी गया, भोंगलई राँड क छोड़ी गया।

सब लोग भाग गये और बिना कपड़े की स्त्री को कमरे में बन्द कर गये हैं।

- मिट्टी की कोठी।

सब चीज को ढाकणो, एक चीज को ढाकणो नी।

सभी वस्तुओं के ढक्कन है, संसार में ऐसी कौन-सी वस्तु है, जिसका ढक्कन नहीं है।

- समुद्र या सागर।

सोन्ना की गडु, देखी-देखी नऽ रडु।

सोने का लोटा है जिसे देखकर रोना आता है।

- प्याज।

गोल-मोल चकरी, पीला रंग पाई। जल्दी सी क ओको नाव काई॥

गोल-गोल चकरी के समान उसका आकार है, जो सोने से निर्मित है, जरा उसका नाम बताना वह वस्तु क्या है।

- नाक में पहनने की सोने की नथ।

वाकड़ी तेकड़ी बाई, ओका भीतर काई।

टेड़ी-मेड़ी एक स्त्री है। उस स्त्री के अन्दर क्या है?

- इमली और उसके बीज।

माय ठोकाय, न बेटी फेकाय।

माँ तो मार खाती है और बेटी को फेंक दी जाती है।

- तूअर और काठी।

पाँच माथा नऽ पन्द्रह पाय। चल तवं एक साथ।

पाँच सिर हैं, पन्द्रह पाँव हैं, जो सभी एक साथ चलते हैं।

- तिफन सिंगाड़ तथा बोने वाले।

तक-तक बगल्यो, पाणी म को बगल्यो। धरयो हाथ म न चल साथ म॥

धीमे-धीमे चलने वाले पानी में रहने वाले बगुले को रखो हाथ में, जो साथ में चलता है।

- लालटेन या कंडील।

चार चक्र चलऽ, दुई भक चलऽ। आगऽ नाग चलऽ पाछऽ गोप चलऽ॥

चार भारी पहिये (चाक) चलते हैं, दो भक्र अर्थात् टुकड़े करने वाले (दाँत) चलते हैं। आगे नाग जा रहा है, पीछे गोप (कनखजूरा) चल रही है।

- हाथी (उसके विभिन्न अंगों को पहेली में कहा गया है)।

उप्पर सी पट्ट, ओको सरी लाल चट्ट।

ऊपर से टपक कर गिर पड़ा है, उसके शरीर का रंग लाल हो गया है।

- जामुन का फल।

चाचा का दुई कान, चाची का कान नी,
चाची चतुर सुजान, चाचा कऽ कई नी आवऽ ॥
चाची के दो कान हैं और चाचा के कान नहीं हैं। चाची चतुर है, चाचा कुछ नहीं जानते हैं।
– कड़ाही और तवा।

दिन मऽ भरेली, नऽ रात कऽ खाली।
दिन में भरी रहती है, लेकिन रात को खाली रहती है।
– घटौंची या मॉची।

नानी सी दड़ी, दग्गड़ सी लड़ी।
छोटी–सी है, लेकिन उसमें पत्थर–सी कठोरता है और लड़ने की शक्ति है।
– सुपारी।

एक कटोरी रूप्या, थारा सी भी नी गिणाय, नऽ म्हारा सी गिणाय।
एक कटोरी में रुपये रखे हैं, लेकिन उन्हें न तो तुम गिन सकते हो और ना मैं।
– तारों का समूह।

साकड़ी सी सेरी सोन्ना की ढेरी।
एक सकड़ी सी गली में सोने का ढेर लगा है।
– चूल्हे में रखे अंगारे।

सब लोग भागी गया घर म सोन्नो डाटी गया।
सब लोग भाग गये और घर में सोना छिपा गये हैं।
– चूल्हे में अंगारे या आग।

सब लोग भागी गया घर मऽ उड़दीया बगलई गया।
सब लोग भाग गये हैं, घर में उड़द बिखेर गये हैं।
– मक्खियाँ।

पाड़छी (एक प्रकार की पहेली)

विवाह में समधी और समधिन में गीतों की पहेली या निवाली का चलन है। भोजन करते समय समधिन–समधियों की बुद्धि परीक्षा लेती है। ऐसी बूझने वाली पहेलियों को निमाड़ी में 'पाड़छी' या पारसी कहते हैं, जो गीत रूप में गाई जाती है। पाड़छी की परम्परा अब प्रायः लुप्त हो रही है।

सारंग ले सारंग चली, कर सारंग री ओट।
झीना हो सारंग देखिया॥
सारंग कर गई चोट गाड़ा मारूजी।
कहो नी यायजी म्हारी पाड़छी॥
नहीं तो हारो घर की नार गाड़ा मारूजी।
चातुर होय तो कई दिजो॥
मूरख भसाभस खाय गाड़ा मारूजी॥

एक स्त्री हाथ में दीपक लेकर जा रही है, हवा चलने लगी तो स्त्री ने दीपक को अपने पल्ले से ढाँक लिया। साड़ी झीनी थी इसलिए हवा ने दीपक बुझा दिया। समधीजी! आप चतुर हो तो पहेली का अर्थ बता दीजिये, नहीं बता सके तो अपनी पत्नी को हार जाइए। आप मूर्ख होंगे तो उत्तर नहीं दोगे और भसाभस खाते रहोगे। समधी चतुर थे, उन्होंने सारंग शब्द के चार अर्थ बता दिये- (1) स्त्री, (2) दीपक, (3) साड़ी का पल्ला और (4) हवा।

नारी मरी नऽ नर कटिया
नर की भई फिर नारी गाड़ा मारूजी॥
वो ही नारी ने नर मारिया
सुरता करो नऽ विचार गाड़ा मारूजी॥
कहो नी यायजी म्हारी पारसी,
नहीं तो गदड़ा रा गुवाल गाड़ा मारूजी॥

एक भैंस मर गई, उस मरी भैंस के सींगों को काटा गया। सींग (पुरुषवाची है) फिर उस पुरुष रूपी सींग से कांगसी रूपी नारी का निर्माण किया गया है। कांगसी रूपी नारी सिर में जूँ और लीक मारती है। कहिये ब्याईजी! मेरी पारसी का उत्तर नहीं बता सकते हो तो गधों को चराने जाइए।

- कांगसी।

मुट्ठी भर सिरो लचलचो,
ऐचाय ते मयसर का हाट गाड़ा मारूजी।
चातुर होय तो कई दीजो,
नहीं तो खेड़ा रा हनुमान गाड़ा मारूजी॥

एक मुट्ठी में आ जाए इतना हलवा है, जो मुलायम है और वह महेश्वर के बाजार में बिकता है। कहिए समधी जी! क्या चीज है? समधी ने उत्तर दिया-

- रेशम।

डाँवा जो कवला की नागेणी।
नमी-नमी झोला खाय गाड़ा मारूजी।
कहो नी यायजी म्हारी पारसी।
नहीं तो हारो घर की नार गाड़ा मारूजी॥

दाहिने हिस्से की ओर एक नागिन बैठी है, जो बार-बार झूल रही है। झकोले खा रही है। हे समधीजी! क्या वस्तु है? वह बताइए। समधी ने उत्तर दिया-

- नाक की नथ।

बारा जो माथा को बोकड़ो
सेरी गली रमवा जाय गाड़ा मारूजी।
कहो नी यायजी म्हारी पारसी
नहीं तो गदड़ा का गुवाल गाड़ा मारूजी॥

आश्चर्यजनक बात है। एक बारह सिर का बकरा है, जो गलियों में घूम रहा है। वह क्या है समधीजी? बताइए। समधी चतुर थे, उन्होंने उत्तर दिया।

- पाँव में बजने वाले बिछिया।

धूर गाजऽ धरती थरहरऽ
नदिया जाय भरपूर गाड़ा मारूजी।
दोय नारी नऽ नर जलमिया
सुरता करो नी विचार गाड़ा मारूजी।
कहो नी यायजी म्हारी पारसी।
मूरख भसाभस खाय गाड़ा मारूजी॥

ध्रुव (दक्षिण) दिशा से गरज के साथ पानी की बदली उठी गड़गड़ाहट से पृथ्वी कम्पायमान हो गई, नदियों में पानी भरपूर आ गया, ऐसे में दो नारियों ने मिलकर एक नर बच्चे को जन्म दिया। श्रोता विचार करो कि वह क्या है?

- सीप से मोती उत्पन्न हुआ।

ऊँची गोरी लगऽ पातली
जमना न्हावण जाय गाड़ा मारूजी।
चातुर होय तो कई दिजो
नई तो हारो घर की नार गाड़ा मारूजी॥

एक पतली-सी कामिनी स्त्री है, जो जमुना स्नान करने जा रही है। उस स्त्री का क्या नाम है? समधी जी बताइए। समधी ने उत्तर दिया-

निवाली-पिवालई

'निवाली पिवालई' पहेली का ही एक रूप है। पहेलियाँ पूछी जाती हैं। निवाली-पिवाली गाई जाती है। निवाली-पिवालई गीत रूप में गाते हैं। जब लड़की शादी होकर ससुराल चली जाती है और समधी लोग बेटी को लेने उसकी ससुराल जाते हैं, जहाँ समधियों का सत्कार करके खाना खिलाते समय यह गीत गाये जाते हैं, जिसका उत्तर समधी लोगों को देना होता है। उत्तर नहीं देने पर उन्हें नेग स्वरूप रुपये देने होते हैं-

ऊची धेच को कुकड़ो
जाई बठ्यो जाजम का माय
कहो नी 'अशोक' यायी म्हारी पारसी
नही तो हारो घर की नार
गाड़ा मारूजी
चातुर होय तो कई दिजो
मूरख भसा भस खाय
गाडा मारूजी।

ऊँची गर्दन का एक मुर्गा है, जो समधी लोगों के बीच में जाकर बैठ गया है। हे अशोक समधी! तुम मेरी पहेली का अर्थ बतलाओ। नहीं बता पाये तो अपनी पत्नी को यहीं रख जाओ। चतुर होगे तो अर्थ बता दोगे और मूर्ख होगे तो खाना खाते रहोगे। अशोक समधी चतुर सुजान थे। उन्होंने उत्तर दिया- अरे ये तो 'शराब' की बोतल है।

- शराब की बोतल।

धवली मुच्छी को डोकरो
ऐचाय ते हाट बजार
कहो नी 'बसंत' यायी म्हारी पारसी
गाडा मारुजी
चातुर होय तो कई दिजो
मूरख भसा भस खाय
गाडा मारुजी

एक सफेद मूँछो वाला बूढ़ा बाजार में बिकने आया है। हे बसन्त समधी! तुम मुझे उसका नाम बताओ। नहीं बता पाये तो गधे चराने जाओ। चतुर हो तो बता देना, मूर्ख हो तो खाना खाते रहना। बसन्त समधी भी चतुर सुजान थे और उन्होंने अपनी समधनों को बताया कि यह तो 'प्याज' है।

- प्याज।

नव सौ सीधा नव सौ अवधा
नव सौ की लगी लंगार
कहो नी रमेश यायी म्हारी पारसी
नही तो हारो घर की नार
गाड़ा मारुजी
चतुर होय तो कही दिजो
मूरख भसा भस खाय
गाडा मारुजी

नौ सौ सीधे रखे हैं, नौ सौ उल्टे रखे हैं, नौ सौ की लाईन लगी है। हे रमेश समधी! मेरी पहेली का क्या अर्थ हुआ? बताओ। नहीं बता पाये तो अपनी पत्नी को यहीं छोड़ जाना। यदि तुम बुद्धिमान होगे तो मेरी पहेली का अर्थ बता दोगे। रमेश समधी चतुर तो थे ही। उन्होंने उत्तर दिया- यह तो हमारी छत पर रखे गये 'कवेलू' हैं।

- कवेलू।

बाप कय म्हारो उपर को देख।
माय कय म्हारो नीचऽ को देख॥

पिता कहता है- मैंने ऊपर कवेलू जमाये हैं, वह ठीक हैं या नहीं। देखो, मैंने ऊपर का काम ठीक किया या नहीं। तभी माता कहती है- मैंने जो घर-आँगन को लीपा है, उसे देखो, कितना सुन्दर लगता है।

- छप्पर छाना, घर लीपना।

थारो बाप फाड़, न थारी माय लगावऽ।

तेरा पिता तो लकड़ियाँ फाड़ रहा है और माता उसे चूल्हे में जलाकर रोटी बना रही है।

- लकड़ी फाड़ना और रोटी बनाना।

अत्रा नाचे तत्रा नाचे, तत्रा कि दोरी नाचे।
दोरी को बाबो नाचे, बाबा कि छोरी नाचे॥

इधर-उधर घूम-घूमकर पूरा शरीर नृत्य कर रहा है, शरीर के साथ ही रस्सी भी नृत्य कर रही है। रस्सी के साथ मथनी में जो फूल लगा है, वह बाबा भी नृत्य कर रहा है। बाबा के साथ मथनी भी पूर्ण रूप से नृत्य कर रही है।

- छाछ बनाने की क्रिया में यह सब होता है।

आईजी सोई गया, भाईजी सोई गया।
काकीजी तुम क्यों नी सोया॥

बड़ी माँ सो गयी, पिताजी सो गये। काकीजी! तुम क्यों नहीं सो रही हो?

- मकान में जो लकड़ियाँ और पटा रखा हैं वह सोने (लेटने) की मुद्रा है। खम्बा जिस

पर पाट आड़ा टिका है, वह तो खड़ा है। खम्बा कैसे सो सकता है? खम्बा सोया तो घर धराशायी हो जायेगा।

काळो खेत तरबुज एक, डागरा घणा सारा।
काले रंग का खेत है, उसमें एक तरबूज है और खरबूजे बहुत सारे हैं।
– आकाश खेत है, तरबूज चन्द्रमा है और तारे बहुत से खरबूजे हैं।

काका–काका कव्वा देखा, कहो भतीजे कैसा देखा।
चौंच हे पर चुगता नहीं, पंख हे पर उड़ता नहीं।
वो जानवर ऐसा है, जो कभी मरता नहीं॥
काका! मैंने एक कौआ देखा। कहो भतीजे! कैसा देखा? चोंच है पर चुगता नहीं, पंख हैं पर उड़ता नहीं, वह जानवर ऐसा है जो कभी मरता नहीं है।
– किसानी बैलगाड़ी।

कसका मसकी कब कि, हाथ पकड़ा जब कि, दर्द हुआ कब।
आदा गया जब, सुख हुआ कब, पुरा गया जब॥
चूड़ी पहनाने वाला पहले औरत का हाथ पकड़कर दबाकर देखेगा, फिर अनुमान लगाकर देखेगा कि कितने नम्बर की चूड़ी इस हाथ पर चढ़ेगी। चूड़ियाँ छोटी होने के कारण हाथ में आने से दर्द होता है। जब चूड़ियाँ कलाई में चली जाती हैं, तब सुख का अनुभव होता है।
– चूड़ी पहनाने की क्रिया।

एक जानवर ऐसा जिसकी दुम पर पैसा,
सिर पर ताज बादशाह जैसा।
एक जानवर ऐसा है, जिसकी पूँछ पर सिक्के के निशान जैसा है। सिर पर मुकुट राजा जैसा दिखाई देता है।
– राष्ट्रीय पक्षी मयूर (मोर)।

नानो सो बटवो बावन बीर उठई ली कामठी मारी दियो तीर।
एक छोटा–सा बटवे जैसा जानवर है, जिसके डंक पर बावन आंकड़े हैं। उसने धनुष–बाण चढ़ाकर तीर मार दिया।
– बिच्छू।

हाऊ आई रयथो, तुम जाय रयाथा,
मनऽ मजाक करी तुम रड़ी क्यों आया।
मैं आ रहा था, तुम जा रहे थे। मैंने मजाक किया और तुम रो क्यों आये?
– बिच्छू।

दुर सी आई झबर गाँव मऽ हुई खबर,
जो हुता उनऽ खुब खाया, बाद मऽ बीज नी पाया।

दूर से पानी तेज गति से आया और उसके साथ ओले भी गिरे, जो वहाँ पर मौजूद था, उसने ओले खाये। बाद में जाने वाले को कुछ नहीं मिला।

– बर्फ या ओले।

बिना पग डोंगर चढ़े, बिना मुख चारो खाय।
राम कहे लक्ष्मण से कोण जनावर जाय॥

बिना पैर के वह पहाड़ पर चढ़ जाती है, बिना मुँह के वह घास को खाती है। राम ने लक्ष्मण से पूछा– वह कौन–सा जानवर है, जो ऐसा काम करता है?

– लक्ष्मण ने उत्तर दिया अग्नि या आग।

ऊब–ऊब करऽ निवड–निवड देखऽ, बठ–बठ हेडऽ।

खड़े–खड़े मथनी से दही को बिलोया जाता है या मंथन किया जाता है, फिर झुककर देखती हैं मक्खन आया कि नहीं, जब मक्खन आ जाता है तब बैठकर मक्खन निकालते हैं।

– छाछ बनाने की क्रिया।

बाप बड़ा बेटा बड़ा, नाती हे आनमोल।
पै नाती ऐसे पैदा हुआँ, दो कोड़ी का मोल॥

बाप बड़ा है दूध, बेटा बड़ा है दही, उनका नाती यानी लड़के का लड़का घी है, जो अमूल्य है। चौथी पीढ़ी पर नाती पैदा हुआ, यानी छाछ जिसका मूल्य दो कौड़ी के बराबर है।

– दूध, दही, घी और छाछ।

पयले जनमा में बाद में बड़े भाई।
धूमधाम से पिताजी जन्में, बाद में हमारी माई॥

पहले मेरा जन्म हुआ दूध, बाद में बड़े भाई यानी दही का जन्म हुआ। धूमधाम से पिताजी जन्मे यानी मक्खन निकला, बाद में हमारी माता का जन्म हुआ यानी छाछ बनी।

– दूध, दही, मक्खन, छाछ।

जल गई जाली, जला न एक धागा।
आऐ तो मारी, नहीं तो कंधा धर भागा॥

मछली मारने के लिए केवट ने जाल को जल में डाला। यहाँ जल का अर्थ पानी से है न कि अग्नि से। जलने का सुनते समय ऐसा आभास होता है। जलने पर एक धागा भी नहीं जला – आश्चर्य होता है। केवट ने जाल को जल में डाला। जैसे ही जाल पानी में गया, मछलियाँ डरकर इधर–उधर भाग गयीं। जाल फेंकने पर केवट को जाल में कुछ नहीं मिला। निराश होकर उसने जाल को कन्धे पर रखा और चल दिया घर की ओर।

– मछली पकड़ने की क्रिया।

निली छे निलोड़ी छे, सौ–सौ काड़ी जड़ी छे।
रूखड़ा धडऽ पड़ी छे॥

हरे रंग की है, हरे रंग के पत्तों से पत्तल बनायी गयी है। उसमें नीम की डालियों से प्राप्त बारीक काड़ियाँ करीब सौ के लगभग लगी हैं और वह घूरे पर पड़ी हैं।

– पत्तल पुराने में जब पलाश, बड़ के पत्ते तोड़कर बनायी जाने वाली पत्तल।

पानी नहीं छानी नहीं, जंगल हरा कच्छ।
कत्था नहीं चूना नहीं, मुँह लाल चट्ट॥

पानी नहीं है, फिर भी जंगल हरा है। कत्था–चूना नहीं है, फिर भी मुँह लाल है।

– तोता।

अग्गड़ फोडू, दग्गड़ फोडू, आरू तोडू सागम शीशा।
बिना पाणी का घर बना, वो कारीगर कैसा?

पत्थर, सागवान, शीशे के बिना चूना–सीमेंट का घर बनाया गया है। वह कारीगर कैसा?

– नाग की बाँबी।

छः छोरी बारह जवई, डोकरी का मुड़ा मऽ डोकरो।

छः लड़कियाँ हैं बारह दामाद हैं, बुढ़िया के मुँह में बूढ़ा है पुराने जमाने के चाक लकड़ी से बनते हैं जिनमें छः पुठियाँ होती हैं, जो लड़कियाँ हैं। उनमें लगने वाले आरों की संख्या बारह होती है, जो दामाद हैं। इन सबको जोड़ने वाले केन्द्र को नाय कहते हैं, जो बुढ़िया है। नाय में एक छेद होता है, जिसमें लोहे का आखा डाला जाता है, जो बूढ़ा है।

– गाड़ी का पुठियाँ, आरे, नाय और आखा।

एक राँड का खीड़ी भरा आतड़ा।

एक औरत की आँतड़ियाँ एक टोकरी भरकर हैं। बताओ कौन है?

– खटिया की रस्सी।

साप चलऽ सर–सर, गोप चलऽ पांगलई।
माय करऽ मुठ्या, बाप करऽ आंगलई॥

साँप तो सर–सर करके चलता है। यानी तिफन (बीज बोने का यंत्र) से किसान बीज बो रहा है, लेकिन किसान की पत्नी मुठ्ठी से अनाज बो रही है और किसान हाथ में लकड़ी लेकर अंगुली से इशारा करके बैलों को हाँक रहा है।

– बीज बोने की क्रिया।

दुल्व को माथो नी, वराती का पाय नी।
आरती वालई को पेंदो नी॥

दूल्हे का सिर नहीं है, बराती के पैर नहीं हैं, आरती वाली का पेंदा का नहीं है। बताओ, कौन है?

– केकड़ा दूल्हा है, उसका सिर नहीं होता है। डेंडू पानी का जानवर जिसका पैर नहीं है। चमगादड़ का निचला हिस्सा नहीं होता।

धणी जाड़ो न बयरू पातलई, धणी जसी धणी कि आवाज।
बयरू जसी बयरू की आवाज॥

पति तो मोटा है, परन्तु पत्नी पतली है। पति की आवाज पति जैसी है, पत्नी की आवाज पत्नी जैसी है।

– टपला–जोड़ी (डग्गा, नारी)।

चार भाई उब्याज, बयरू न सोईज।
दुई लम्बी न दुई छोटी।

चार भाई खड़े हैं, उनकी पत्नियाँ सोई हुई हैं। दो लम्बी और दो छोटी हैं। पलंग के चार पहिये चार भाई हैं। उनमें बैठने वाली लकड़ियाँ चार हैं। दो लम्बी और दो छोटी हैं, जो उनकी पत्नियाँ हैं।

– पलंग या चारपाई।

चार मिल्या चौसठ खिल्या, बीस को हुई गयो जोड़।
इनी वात को मतलब बताओ, नहीं तो गाँव दिजो छोड़॥

दो दोस्त आमने–सामने मिले, आँखें चार हुईं। दोनों खिलखिलाये, फिर दोनों के हाथ जुड़े तथा दोनों हाथ की अँगुलियों का गठबंधन हुआ।

– दोनों दोस्त परस्पर मिले, आँखें चार हुईं, हाथ जोड़ नमस्कार हुआ।

नख मऽ लाल, छाती मऽ बाल।
कुलड़ी मऽ दाणा, बिगर बीज फल खाणा॥

नाखून लाल क्यों है? छाती में बाल किसके हैं? कटोरी में दाने हैं, बिना बीज का फल कौन–सा है?

– नाखून मेहंदी के कारण लाल हैं। आम की गुठली में बाल हैं। कटोरी में अनार के दाने हैं। बिना बीज का फल केला है।

नी गाय को नी माय को, नी वनस्पति राय को।
सवा पहर दिन दुध चढ़, वो दुध काय को॥

न गाय का दूध है, न माता का दूध है, न ही वनस्पति का दूध है। सवा पहर दिन चढ़ने पर वह दूध भगवान को चढ़ता है। बताओ, वह दूध कौन–सा है?

– ओस की बूँदें।

ग्यारह अक्षर को म्हारो नाव, उल्टो–सीधो एक समान।

ग्यारह अक्षरों का मेरा नाम है, बोलने, सुनने में एक समान है।

– परस राम से मरा सरप।

वाकी तेकी पावलई वजाडणऽ वालो कुणऽ।

सुन्दर चली सासर मनावण वालो कुणऽ॥

टेढ़ी-मेढ़ी बाँसुरी है, उसको बजाने वाला कौन है? सुन्दर ससुराल जा रही है, उसे कौन मना सकता है?

- नदी।

पाँच कबूतर पाँच रंग, महेला मऽ जाय एक रंग।

पाँच कबूतर अलग-अलग रंग के हैं, महल में जाने के बाद उनका एक ही रंग हो जाता है।

- पान, सुपारी, कत्था, चूना, लौंग मुँह में जाने के बाद लाल रंग में बदल जाते हैं।

एक दाजी दसऐक धोती नऽ पेरऽ।

एक आदमी दस, ग्यारह धोतियाँ पहनता है।

- मक्का का भुट्टा।

एक जानवर ऐसा, उसकी दुम पर पैसा।

सिर पर ताज बादशा जेसा, बादल देक पीऊ-पीऊ बोलता॥

एक जानवर ऐसा है, जिसकी पूँछ पर पैसे जैसा निशान है। सिर पर मुकुट बादशाह जैसा है। बादलों को देखकर पीऊ-पीऊ रट लगाता है। बताओ, वह जानवर कौन है?

- मयूर या मोर (जो हमारा राष्ट्रीय पक्षी है)।

एक कय मक रात कऽ सुख नी, एक कय मक दिन क सुख नी।

एक कय मक कदी नी सुख॥

एक कहता है मुझे रात्रि में सुख नहीं है। एक कहता है मुझे दिन में सुख नहीं है। एक कहता है मुझे कभी भी सुख नहीं है।

- खटिया को रात्रि में सुख नहीं है। माची या घड़ोंची को दिन में सुख नहीं है। मटके को कभी सुख नहीं है (दिन-रात सभी मटके से पानी पीते हैं, इसलिए मटके को कभी सुख नहीं है)।

एक दोयड़ो आसो, थारा सी नी बँधाय,

म्हारा सी भी नी बँधाय।

एक रस्सी ऐसी है, जिसे न तो तुम बाँध सकते हो और न मैं बाँध सकता हूँ।

- नाग (सर्प)।

खड़े तो भी खड़े, बैठे तब भी खड़े,

सोये तब भी खड़े।

गाय, बैल के सींग हमेशा खड़े ही रहते हैं। बैल खड़ा रहे तब भी खड़े और बैल बैठ जाये तब भी खड़े रहते हैं। बैल सोये तब भी सींग खड़े रहते हैं।

- गाय, बैल के सींग।

दो चलऽन एक लट्कऽ।

गाड़ी के दो पहिये चलते रहते हैं। उसमें लगी डही (टेकी) गाड़ी में लटकी रहती है।

– गाड़ी के चाक और डही।

गोल घूमेंरी चक्कर फेरी, नली–नली में रस।
जो भी इसका भेद बताएँ, रुपये लगे दस॥

गोल–गोल चक्कर से बनी हैं, जिसकी प्रत्येक नली में रस भरा है। बताओ, वह वस्तु क्या है? उत्तर नहीं बता पाये तो दस रुपये लगेंगे।

– जलेबी।

दुल्व जाती रहयो, माय–बाप कऽ छोड़ी गयो।

दूल्हा तो चला गया और माता–पिता को छोड़ गया है।

– चूल्हा और बुहारी।

सब लोग भागी गया, झापड़ी राँड़ कऽ कोंड़ी गया।

सब लोग चले गये और एक बदसूरत औरत को घर में बंद कर गये हैं।

– झाड़ू।

एक आदमी बठियो नाक पऽ पकड़ दुई कान।

एक आदमी नाक पर बैठकर दोनों कान पकड़ता है।

– ऐनक या चश्मा।

या गई न वा आई।

– अर्थ स्पष्ट है– नजर या दृष्टि।

कालई सापलई लाल उंदरो खाय।

काली नागिन को लाल चूहा खा रहा है।

– अगरबत्ती।

मार तो मर नी, काट तो कट नी।

मारने पर मरती नहीं है, काटने पर कटती नहीं है।

– परछाँई।

थाठी मऽ टपकियो, देंवर लपकियो।

थाली में गिरते के साथ ही देवर खाने के लिए दौड़ पड़ा। भाभी ने पतला बनाया था।

– बेसन।

उची गोरी लगऽ पातलई, आड़ी रूलंता केस।
कहाँ का रसीया न रस लियो गोरी, दियो मरद को बेस॥

ऊँची पतली कमनीय गोरी है, जिसके घुटनों तक लम्बे केश हैं। किस रसिया ने तुम्हारा रस लिया और तुम्हें नारी से नर बना दिया?

– अम्बाड़ी।

सासु कुवारी बहू परणेली, घर नणदुल को याव।
पीयजी झुली रहो पालणा, सासरा गरब का माय।

सास कुँवारी हैं बहू विवाहित है। घर में ननद का विवाह है। पति तो झुले में झुल रहे हैं। ससुरजी गर्भवास में हैं।

– छींद का पेंड, फल, बीज, फड़िया (छींद की डालियाँ)।

नानी सी छोरी डोला मटकाव, बिगर नाड़ी कि घाघरी लटकाव।

एक छोटी लड़की आँखों से इशारे करती है, बिगर नाड़ी का लहंगा पहनती है।

– चीलम और सापी।

पयलऽ घड़ीया सुपड़ा टोपली, पाछ फाड़ीया वास।
पयलऽ आया छोरा छोरी, फिर आया माय और बाप॥

पहले सुपड़ा और टोकनी बनी, पीछे बाँसो को फाड़ा गया। पहले लड़का–लड़की आये। फिर माता–पिता का जन्म हुआ।

– बादल, बदली, नदी और नाले।

कालो खेत धवलो बीज, वावणऽ वालो गावऽ गीत।

काला खेत है सफेद बीज है, बोने वाला मधुर गीत गा रहा है।

– पट्टी पेम।

सिर पर कलगी गला मऽ कंठी। चार पाय न लम्बी छमटी।
सिर पर कलगी मोर नहीं, गला मऽ कंठी को रावण नहीं।
चार पाय को पशु नहीं, लम्बी छमटी को वांदरो नहीं।

सिर पर मुकुट जैसा है, गले में हार के जैसा निशान है, चार पाँव हैं और पूँछ लम्बी है। तुम उसे मोर मत समझना। गले में हार का निशान है, उसे रावण मत समझना। चार पाँव का है उसे पशु मत समझना, लम्बी पूँछ है– बन्दर मत समझना।

– गिरगिट (सईडीयो)।

बिना मुकड़ा को मुरदो, सरवर न्हावण जाय।
बिना छाल को घोटलो, कोई ग्यानी भेद बताय॥

बिना चहरे का मृत शरीर सरोवर स्नान करने जा रहा है, बिना छीलके का बिना बीज का है ज्ञानी ही इसका अर्थ बता सकता है।

– बर्फ।

पहले परण्यो छोरा क, पाछे परण्यो बाप।
अज्या दाजी का याव मऽ नात्यो परस भात॥

पहले बेटे का विवाह हुआ, बाद में पिता का विवाह हुआ। पर पिता के विवाह में नाती चावल परोस रहा है।

– गुलर का पेड़, फल और बीज।

तीन टेकऽ न एक धार मारऽ।

तीन पैर टिका कर एक पैर ऊँचा करके कुत्ता पेशाब करता है।

– कुत्ते की पेशाब करने की क्रिया।

आल्या मऽ गोपाल्यो नाचऽ।

आले में गोपाल नाच रहा है।

– जीभ।

बत्तीस चोर एक राणी।

बत्तीस चोरों के बीच में एक रानी है।

– दाँत और जीभ।

चार उठावणऽ वाला, एक सवारी।
जेका पछेड़ वरात सारी।

चार आदमी उठाने वाले हैं, एक सवारी है उसके पीछे बरात सारी है।

– मुर्दा (श्मशान जाने की क्रिया)।

सात वार सब कोई कहे, कोणा आठवाँ वार।
बिना पंथ का चालणा, खुटी मुसाफिरी वाट॥

सात वार तो सब कहते हैं आठवाँ वार कौनसा है। बिना रास्ते के चलना है, इस संसार से तुम्हारा रिश्ता टूट गया है।

– श्मशान में मुकाम (अन्तिम वार)।

लावणऽ वालो लायो, पैरन वाला न देखो नी।
लाने वाला लाया पर पहनने वाले ने देखा ही नहीं।

– कफन।

बिना ठाटी का घर बनाया, बिना टोसा का दाणा।
बिना नाम का स्वाद है, कोई भेदी भेद बताना॥

बिना ईंट चूने से घर बना है, बिना डंठल का दाना है। बिना स्वाद की वस्तु है, कोई ज्ञानी ही इसका अर्थ बता सकता है।

– नाग की बाँबी, धनिया, देशी घी।

पान सड़े, घोड़ा आड़े, विद्या बिसर जाय।
तवे पर कि रोटी जले, गुरुजी भेद बताये॥

पान सड़ रहा है, घोड़ा अड़ गया है, प्राप्त विद्या भूल जाय। तवे पर रोटी जल जाय, गुरुजी क्या करें?

– पल्टा देना।

काली पणऽ काग नी, बल खाती पण नाग नी।
लम्बी हे पण रस्सी नी, बनता कोई जानवर नी॥

काला है पर कौआ नहीं है, बल खाती है, पर नाग नहीं है। लम्बी है, पर रस्सी नहीं, रस्सी जैसी लम्बी होने के बाद भी उसमें कोई जानवर नहीं बाँधा जा सकता।

– औरत की चोटी।

माय घयड़ी नऽ दो–दो फाड़ करऽ।
माँ पीस कर दो–दो फाके करती है।
– चक्की (घट्टी)।

नीलई मच्छी का गोल बच्चा।
हरी मच्छी के गोल बच्चे हैं।
– मटर फली।

एक कटोरी एतरा चौखा, थारा सी भी नी खवाय म्हारा सी भी नी खवाय।
एक कटोरी चावल हैं ना तुम खा सकते हो ना मैं खा सकता हूँ।
– तारे।

बयड़ो छै पणऽ दगड़ा नी, नद्दी पणऽ पाणी नी।
गाँव छै पणऽ बसती नी, म्हारी वारता सस्ती नी॥

पहाड़ी है पर पत्थर नहीं हैं, नदी है पर पानी नहीं है। गाँव है पर मनुष्य नहीं हैं, मेरी कहानी इतनी सस्ती नहीं हैं।

– नक्शा।

चार बाई एक आदमी, उनका मऽ घणो परेम।
चार औरतें हैं एक आदमी है, उनमें घनिष्ट प्रेम है।
– चार उंगलियाँ चार औरतें हैं अंगूठा आदमी है।

सिर पर जटा नारद जसौ, तीन डोला शंकर जसौ।
उप्पर सी भारी, भीत्तर पानी कि झारी॥

सिर पर नारद जैसी जटा हैं, तीन नेत्र हैं शंकरजी जैसे। ऊपर से भारी है पर उसके अन्दर पानी से भरी झारी (कलश) है।

– नारियल।

पाव नी पर दवड़ज, हाथ नी पर मारऽ।
दुनिया उठी न वकऽ करऽ नमस्कार॥

पैर नहीं हैं पर दौड़ता है, हाथ नहीं पर बुरी तरह मारता है। सारी दुनिया उसकी पूजा करती है, नमस्कार करती है।

– नागदेवता।

वा छै स्वाद राणी, ओका सी उपजऽ वाणी।
जस आप जस कि वाणी, वा छै दुनिया मऽ स्याणी॥

वह स्वाद की रानी है, उससे ही वाणी उत्पन्न होती है। यश अपजस की भागीदार है वह दुनिया में चतुर सुजान है।

– जीभ (जुबान)।

दो शीशी, शीशी पर कोठी।
कोठी पर मटकी, मटकी मऽ जुग जुग॥

दो शीशियाँ दो पैर हैं, कोठी मनुष्य का पेट है। कोठी पर मटकी सिर है, मटकी जुग–जुग दो आँखें हैं।

– मनुष्य का शरीर।

हाउ मरूज थारा लेणऽ, तु मत मरऽ म्हारा लेणऽ।
तु मरऽ उपर वाला का लेणऽ॥

मछली पकड़ने के लिए केचुएँ को काटकर तार में फँसाया जाता है, उसे खाने के लिए मछलियाँ आती हैं, तब केंचुआ कहता है, मुझे खाने मत आ तू मर जाएगी और ऊपर बैठा आदमी तुझे खा जाएगा।

– मछली पकड़ने की क्रिया।

गणितीय पहेलियाँ

नानो सो लक्कड़ कुल घाट, रयटिया बण्या तीन सौ साठ।
बारह घाणा, तीस लाट॥

एक लकड़ी है जिसका नाम कुल घाट है उस लकड़ी से तीन सौ साठ चरखे बने। बारह तेल निकालने के घाणे बने, और उससे ही तीस लाटें बनी हैं।

– एक वर्ष, तीन सौ साठ दिन (चरखे), बारह महीने (बारह घाणे), तीस लाट एक माह के तीस दिन।

सौ उट नव खुट एकी संख्या मऽ बांधो।

सौ ऊँट हैं उन्हें नौ खूँटों से बाँधना है, शर्त है उन्हें विषम की संख्या में बाँधना है। नौ खूँटे हैं तो ग्यारह की संख्या में बाँधेंगे तो निन्नानवें ऊँट ही बँधेंगे, एक ऊँट बाकी रह जाएगा।

– ऊँट नहीं बँधेंगे।

एक तरबुज बारह चीर, एक चीर मऽ तीस बीज।

एक तरबूज है, जिसकी फाँकें हैं, उन बारह फाँकों में तीस बीज हैं।

धार्मिक पहेलियाँ

दशरत ससुर, राम मोरा साला। हम ही पितु, वह पुत्र हमारा॥

एक नाते से दशरथजी मेरे ससुर हैं और रामजी मेरे साले हैं। मैं उसका पिता हूँ और वह मेरा पुत्र भी है।

– श्रृंगी ऋषि को राजा दशरथ की धर्म बेटी ब्याही गई थी। श्रृंगी ऋषि ने पुत्र कामना हेतु यज्ञ करके राम को खीर से उत्पन्न किया।

बिना बाप कि बेटी, बिना माय को लाल।
बिना सासु कि ववर आई, बिना दुल्व कि बरात॥

– बिना बाप की बेटी सीता हैं, बिना माँ का पुत्र कुश है। बिना सास की बहू गौरी (पार्वती) हैं। रामजी ने जनकपुर में धनुष तोड़कर जनक की प्रतिज्ञा पूर्ण की थी। दूल्हा राम जनकपुर में हैं, बारात आयोध्या से बिना दूल्हे के आई थी।

टुट्यो तो एक बार टुट्टो, फिर नी टुट्यो।

– रामजी ने शिवजी का धनुष एक ही बार तोड़ा।

करार पे मदार, एक अन्दर दो बहार।

– लक्ष्मणजी ने कुटिया के बाहर मंत्र अभिशिक्त रेखा इस करार के साथ खींची थी कि सीता पर कोई खतरा न हो, सीता कुटिया के अन्दर हैं, राम लक्ष्मण बाहर हैं।

कुदियो तो एक बार कुदियो, फिर नी कुदियो।

– हनुमानजी ने लंका जाने हेतु एक बार ही समुद्र को लांघा।

बलई तो एक बार बलई, फिर नी बलई।

– लंका एक ही बार जली, फिर नहीं जली।

थारी माय न करियो वसो, तुन करियो आसो।
अब हाऊ जाऊ कसो, बठ एका पऽ पोचाई देउ वका पऽ॥

– कैकई ने भगवान राम को वनवास दिया। हनुमान संजीवनी बूटी का पर्वत लेकर जा रहे थे। भरत ने तीर मारकर उन्हें नीचे गिरा दिया। हनुमान ने भरत से कहा– अब मैं कैसे जाऊँ। भरत ने कहा बैठो मेरे तीर पर मैं तुम्हें श्रीराम के पास पहुँचा देता हूँ।

मैं थी, हरी क्यों?

– मन्दोदरी रावण से कह रही हैं मैं थी तो सीता का हरण क्यों किया।

यायी न यायी कऽ मारीयो, ससरा न जवई कऽ मारीयो।

– राम ने रावण को मारा, एक रिश्ते से दोनों समधी हुए। लक्ष्मण शेषनाग के अवतार और रामजी के भाई हैं। लक्ष्मणजी की पुत्री का विवाह मेघनाद के साथ हुआ, इसलिये लक्ष्मण मेघनाद के ससुर हुए। ससुर ने दामाद को मार दिया।

एक पोरिया का दो बापा और ढाई माय।

– भगवान कृष्ण को जन्म देने वाले पिता वासुदेवजी हैं। कृष्ण का लालन-पालन नन्दबाबा ने किया। ये दो पिता हो गए। माता देवकी ने कृष्ण को जन्म तो दिया लेकिन पालन-पोषण माता यशोदा ने किया। पूतना ने भगवान कृष्ण को स्तनपान करवाकर अपने प्राण त्यागे, ये हो गई अढ़ाई माता।

आध्यात्मिक पहेलियाँ

चार चोर बहोत्तर वाण्या मारता-मारता गॉव तक आण्या।
जवऽ उनकऽ जाण्या।

– काम, क्रोध, मोह, लोभ ये चार चोर हैं। बहोत्तर नाड़ियों को मार-मार कर जीवन पर्यन्त दुख दिया और आत्मा को परमात्मा के पास भेज दिया।

के हाथ पृथ्वी, के गगन में तारा।
विक्रम पूछे बेताल से, न्हाया कितनी बारा।

– कितने हाथ पृथ्वी है, कितने गगन में तारे हैं। विक्रम बेताल से पूछ रहा है कितनी बार स्नान किया।

साढ़े तीन हाथ पृथ्वी, दो गगन मऽ तारा।
बेताल कहे विक्रम से न्हाया दो बारा॥

– मनुष्य के शरीर को दफनाने के लिये खुद के हाथ की नाप से साढ़े तीन हाथ पृथ्वी चाहिए। मनुष्य के शरीर में आँखें ही अनमोल हैं, आँखें नहीं तो कुछ भी नहीं दिखाई देगा। आँखें ही दो तारे हैं। जन्म से मृत्यु उपरान्त दो बार स्नान कराया जाता है।

दो नारी सारकी, दुई न को स्वामी एक।
दोनों ने ललना जाया ओ ललना एक॥

– वृध्ददय मगध देश के राजा की दो पत्नियाँ थीं, जो सगी बहनें थीं। दोनों ने आधे-आधे भाग में एक पुत्र को जन्म दिया। जरासन्ध।

ऐजी कौन जगत में एक हैं, वीरा कौन जगत में दोय।
कौन जगत में जागता, कौन रहया पढ़ऽ सोय॥

बताइये संसार में एक कौन है, संसार में दो भाई कौन हैं। इस संसार में हमेशा कौन जागता है, इस संसार में कौन सोया रहता है।

ऐजी राम जगत में एक हैं, वीरा चँदा सुरज दो हैं।
ऐजी पाप जगत में जागता, धरम रहया पढ़ऽ सोय॥

– राम संसार में एक हैं। संसार में चँदा–सूरज दो भाई हैं। पाप हमेशा संसार में जाग्रत है। धर्म संसार में सोता रहता है।

पहले दही जमाया, पिछे गव्वा दुवाय।
बछवा तो गरभ में, माखण हाट बिकाय॥

– पहले दही जमाया याने मन को स्थिर किया भगवान के स्मरण के लिये। भक्ति रूपी गाय का दूध निकाला, कीर्ति रूपी माखन बाजार में बिक रहा है। नाम रूपी बछवा मन में है।

हुयो जगतपति का खोला मऽ सी, सागर का समान झकोला मऽ सी।
हुयो आग का गोला मऽ सी, एक रोला मऽ सी एक डोला मऽ सी॥

जिसका जन्म भगवान विष्णु की गोद से हुआ, सागर के समान बड़ा हुआ। जो अग्नि के समान तेजस्वी है, जिसे संग्राम में कोई नहीं जीत सकता। वह बलशाली जगतपति की आँखों से बहते हुए आँसूओं से हुआ है।

– जालन्धर।

एक दिया सी सब कऽ उजालो।
एक दीपक से सबको प्रकाश मिलता है।
– सूर्य।

बिना मुच्छी को पेहेलवान, कलंगी राखऽ शान।
एक बिना मूँछ का पहलवान है कलंगी उसकी शान है।
– मुर्गा।

काला खेत मऽ शेर को पंजो।
काले खेत में शेर के पंजे जैसा दिखाई देता है।
– अदरक।

काला खेत मऽ दही को छाटो।
काले खेत में दही के समान दिखाई देता है।
– कपास।

दो चीज दुनिया मऽ आसी छे कि वा गिणाय नी।
दो वस्तुएँ संसार में ऐसी हैं, जिनकी गिनती नहीं की जा सकती है।
– तारे और बाल।

भयसी का वाड़ा मऽ दुनिया का ज्ञान।

भैंस के रहने वाले स्थान में दुनिया भर का ज्ञान है।

– पुस्तक या किताब।

आभार – श्री टिकमराम धनगर– टिट्गारिया, श्री लालूराम धनगर– टिट्गारिया, श्री रामलालजी साद– डेवर, श्री छोगालाल कुमरावत, सुजस– बरूड़, सुश्री बसन्तीबाई– दवाना, देवेन्द्र चौहान– दवाना, श्री लछीराम धनगर– मंड़वाड़ा, कुमारी जान्हवी, कामिनी तोमर– दवाना, पूर्वेष तोमर– दवाना, श्री करणसिंह सिसोदिया– दवाना, श्री दौलत वर्मा (टेलर)– दवाना। अमरसिंह वास्के– दवाना।

कथा पहेली

(एक)

एक राजा था, उसकी एक रानी थी, और राजा का दोस्त मुसलमान था। दोनों में गहरी मित्रता थी, दोनों साथ–साथ ही शिकार पर जाते थे। साथ ही खाना खाते थे। एक दिन राजा–रानी और मुसलमान दोस्त चौपड़ का खेल खेल रहे थे। राजा को पेशाब लगी। राजा उठकर पेशाब करने चला गया।

इतने में मुसलमान दोस्त की नीयत खराब हुई और उसने रानी का हाथ पकड़कर दबा दिया। रानी को उसकी खराब नीयत का पता चला और उसने कटार निकालकर अपने सीने में घोंप ली और मर गई। मुसलमान दोस्त ने देखा कि मेरी मजाक का रानीजी को इतना बुरा लगा कि उन्होंने प्राण त्याग दिये।

मेरा जीवन धिक्कार है। ऐसा सोचकर उसने रानी के सीने से कटार निकालकर अपने सीने में घोंप ली और वह भी मर गया। राजा जब पेशाब करके वापस आया तो उसने देखा कि दोनों मर गए हैं। रानी रहती तो मैं उसके साथ उम्र गुजार देता। मेरा दोस्त रहता तो उसके सहारे उम्र गुजार देता। दोनों मर गए, अब मेरा जीना भी व्यर्थ है ऐसा सोच कर राजा ने मुसलमान दोस्त के सीने से कटार निकालकर अपने सीने में घोंप ली और वह भी मर गया।

राजा, रानी, मुसलमान दोस्त, कटार और चौपड़ के पाँसे ये पाँचों एक साथ हैं। बताओ वो कौन हैं?

– रानी बनी हैं पान का पत्ता, राजा बना है कत्था, मुसलमान दोस्त बना है चूना, चौपड़ की सारे बनी हैं सुपारी, पुराने जमाने में पान का बीड़ा बनाकर उसमें लोंग खोंसकर पान का बीड़ा देते थे। लोंग ही कटार का रूप है।

(दो)

एक लड़के के माता-पिता ने दस वर्ष की उम्र में उसका विवाह कर दिया और वे दोनों किसी बीमारी में एक साथ मर गये। वह लड़का अनाथ हो गया। उसके परिवार में अब कोई नहीं था। जमाने के थपेड़े खाकर वह लड़का गरीबी में बड़ा हुआ। जवान हुआ तो हाथ से रोटी बनाये और मेहनत मजदूरी करने वह रोज जाये।

गाँव वालों ने उसकी परेशानी देखकर उसे समझाया कि भाई! तू जवान हो गया है। हाथ से रोटी बनाते हो, अच्छा नहीं लगता। जा तू तेरी बहू को ले आ। तेरा ब्याह तो तेरे माता-पिता ही कर गये थे। लड़के ने कहा- मुझे तो कुछ पता नहीं है कि मेरा ब्याह कब हुआ? मेरा ससुराल किस गाँव में है? मेरा ससुर कौन है? उनका नाम क्या है? तब गाँव वालों ने कहा- भाई! तेरा विवाह तो दस-बारह साल की उम्र में ही हो गया था। हम तेरी बारात लेकर गये थे। तेरे ससुर का नाम गोपाल है। जा तू तेरे ससुराल जा और तेरी बहू को ले आ। लड़के ने कहा- ठीक है। मैं कल अपने ससुराल जाऊँगा। ससुराल जाकर मैं मेरी पत्नी को ले आऊँगा।

उस दिन लड़के ने अपने कपड़े-लत्ते धोये, सुखाये। रात की रात सोया और सुबह उठकर नहा-धोकर ससुराल की तरफ निकल पड़ा। दर कोस दर मुकाम करता-करता वह अपने ससुराल पहुँच गया। ससुराल जाकर उसने ससुर को प्रणाम किया और अपनी बात कही। ससुर ने लड़की को भेजने से इन्कार कर दिया। लड़का उदास मन से वापस घर आ गया। फिर गाँव वालों ने उसे समझाया कि भाई तेरा ससुर भूल गया होगा। तू तेरे बाप का नाम बताना। याद दिलाना और कहना- आज से दस वर्ष पूर्व आपने अपनी लड़की के साथ लग्न लगाये थे। लड़के ने फिर तैयारी की और फिर ससुराल पहुँचा। उसने पिता का नाम बताया। याद दिलाई कि मेरे साथ आपने अपनी लड़की के साथ लगन करवाये थे, दस साल पहले। ससुर ने उसकी कोई बात नहीं सुनी। उसे उल्टे पैर भगा दिया।

चार महीने तक अपने हाथ से रोटियाँ थेपकर लड़के ने खाई। चार महीने बाद गाँव वालों ने उसको फिर समझाया। भाई! तू और एक बार जा। अब यदि उनको याद आ गया हो तो तेरी पत्नी को भेज देंगे। लड़के को अब ससुराल के नाम से चिढ़ होने लगी। उसने कहा- बस भाईयों! मैं तीन बार चक्कर लगा आया हूँ। मैं अपनी इज्जत तीन टके की करवा के आ गया हूँ। अब मैं नहीं जाता। गाँव वालों ने उसे समझाया कि यदि पत्नी आ जायेगी तो तेरा घर संसार बस जायेगा। तेरे दो हाथ के चार हाथ हो जायेंगे। जा, एक बार और होकर आ जा। यह कहकर गाँव वाले चले गये। लड़के ने मन ही मन विचार किया कि गाँव वाले ठीक ही कह रहे हैं। यदि मेरी घरवाली आ गई तो रोटी बनाना छूट जायेगी। मुझे थोड़ा आराम मिल जायेगा। वह आयेगी तो वह भी मजदूरी धंधा करने जायेगी। तो दो पैसों की आवक भी हो जायेगी। ऐसा विचार करके दूसरे दिन लड़का नहा-धोकर तैयार होकर अपने ससुराल चल दिया।

उसके ससुराल के गाँव की सीमा पर एक जगदम्बा माता का मन्दिर था। जब-जब लड़का ससुराल आता था, तब वह यह मन्दिर देखता था। आज लड़का मन्दिर में गया। हाथ जोड़कर देवी जगदम्बा से प्रार्थना करता है- हे मातेश्वरी! आज कहीं मेरी घरवाली को मेरे साथ भेज दें तो मैं अपना सिर काटकर तुझे चढ़ा दूँगा। इस जिल्लत भरी जिन्दगी से मैं थक गया हूँ। बार-बार खाली हाथ जा रहा हूँ, मुझे शर्म आ रही है। देवी के चरणों में उसने शीश नवाया और माता के पैर में पड़े कुमकुम को माथे पर लगाया और चल पड़ा ससुराल की ओर।

देवी जगदम्बा की कृपा हुई और देवी ने उसके ससुर और सास की मति फेर दी। उनको सब याद आ गया। जैसे ही दामाद घर में आया। ससुर ने उठकर उसकी अगवानी की। साले ने खटिया बिछाई। जीजाजी को बैठाया। चाय पानी की। ससुर ने दामाद से माफी माँगी और कहा- दामाद साब! हमसे बड़ी भूल हुई है। हम तुम्हें पहचान नहीं पाये। अब तुम रोटी पानी खाओ-पिओ। रात की रात रहो और सुबह मैं मेरी लड़की को भेज दूँगा। लड़के को लगा कि यह चमत्कार जगदम्बा देवी का है। जो मुझसे बोलना नहीं मंजूर करते थे, आज आवभगत कर रहे हैं। लड़का मन ही मन खुश हुआ। रोटी पानी खाई और रात की रात सोया। सुबह से लड़की भी नहाई-धोई नये कपड़े पहने और तैयार हुई।

साले ने छकड़ा बैलगाड़ी धुराई कि चलो बहन जीजाजी को उनके गाँव तक छोड़ आऊँगा। सास-ससुर ने लड़की को बैलगाड़ी में बैठा दी। दामाद, बहन और साला छकड़े में बैठकर चले। गाँव बाहर आये तो जीजाजी ने साले से कहा- भाई! छकड़ा रोको। मैं माता के दर्शन करके आता हूँ। साले ने छकड़ा रोका। जीजाजी छकड़े से उतरे और देवी जगदम्बा के मन्दिर में गये। उसने देवी के चरणों में अपना माथा टेका। हाथ जोड़े- हे मातेश्वरी! तेरी कृपा से आज मेरी पत्नी को भेज दिया। अब मैं तेरी मान के अनुसार सिर काट कर तुझे चढ़ाऊँगा। लड़के ने देवी की वेदी से तलवार उठाई और सिर काटकर देवी को चढ़ा दिया। धड़ दूसरी तरफ तड़पकर गिर पड़ा।

बहुत देर तक जब पति मन्दिर से वापस नहीं आया तो उसकी पत्नी को चिन्ता हुई। बहन ने भाई से कहा- भाई जा देख, तेरे जीजाजी मन्दिर में कितनी देर पूजा करेंगे। घर कब जायेंगे। बुलाकर ला। भाई ने छकड़े की रस्सी बहन को थमाई और वह गाड़ी से नीचे उतरकर मन्दिर में गया और वह देखकर दंग रह गया।

जीजाजी तो मरे पड़े हैं। उनका सिर देवी के चरणों में पड़ा है और धड़ एक किनारे पर पड़ा है। साले ने मन ही मन विचार किया कि हमने बहुत दिनों तक लड़की नहीं भेजी थी। क्या इस रंज के कारण जीजाजी ने अपने माथे पर काल को बुला लिया? और अपना सिर काट कर देवी के चरणों में चढ़ा दिया। फिर विचार आया कि यहाँ मन्दिर में कोई नहीं है। कहीं बहन यह न सोच ले कि भाई ने जीजाजी को कत्ल कर दिया। बहन तो मुझे दोष लगायेगी। ऐसा विचार कर साले ने भी वेदी से तलवार उठाई और अपनी गर्दन काटकर सिर देवी को चढ़ा दिया। धड़

एक तरफ तड़पकर ठंडा हो गया। पूरा मन्दिर खून से लाल हो गया। पति और भाई को मन्दिर में बहुत देर हो गई। वह वापस ही नहीं आये। लड़की ने छकड़े से बैलों को छोड़ा। उनको एक तरफ बाँधा और वह भी मन्दिर की सीढ़ियाँ चढ़कर मन्दिर में गई। जाकर उसने देखा तो वह गश खाकर गिर पड़ी।

होश आया तो वह रोने लगी। हे मातेश्वरी! इन लोगों ने क्या गुनाह किया। तूने दोनों की बलि ले ली। हे मातेश्वरी! कुछ तो बोल। मेरा पति होता तो मैं जिन्दगी उसके साथ काट लेती। वह भी नहीं रहा। मेरा भाई रहता तो मैं उसके सहारे जी लेती। मातेश्वरी तूने दोनों को ले लिया। बता, अब मैं क्या करूँ? करुणा करके वह रोने लगी। रोते-रोते उसे विचार आया कि अब मेरी जिन्दगी निरर्थक हो गई। मुझे भी मर जाना चाहिए। मैं जी कर क्या करूँगी? ऐसा सोच उसने भी तलवार उठाई और सिर काटने को तैयार हुई।

उसी समय मन्दिर में आकाशवाणी हुई- बेटी! तू बलिदान मत दे। तेरे पति और भाई को मैं जीवित कर दूँगी। मातेश्वरी की वाणी सुनकर लड़की ने तलवार रख दी। दोनों के सिर उठाये और धड़ से जोड़ दिये तथा आँखें मींचकर बैठ गयी। मातेश्वरी की कृपा से दोनों जीवित हो गये और बैठ गये। मातेश्वरी ने कहा- बेटी! आँखें खोल और देख, दोनों जीवित हो गये। लड़की ने आँखें खोलीं और देखा तो दंग रह गयी। हे भगवान! यह क्या हो गया। धड़ तो भाई का है और सिर पति का जुड़ गया है। धड़ पति का है और सिर भाई का है। अब मैं किसे पति कहूँ? किसको भाई कहूँ? अरे! कोई बताओ, वे कौन हैं? आज की इस धरती पर वे पति-पत्नी की तरह व्यवहार कर रहे हैं या नहीं।

नहीं बता सकते तो सुनो, धड़ भाई का और सिर पति का - वह तो बना मोर। आज भी मोरनी मोर के आँसू पीकर गर्भवती होती है। धड़ पति का और सिर भाई का - वह बना सुबह से बाँग देने वाला मुर्गा। मुर्गा-मुर्गी समागम करते समय आज भी सिर से सिर नहीं मिलाते।

(तीन)

पति खेत से काम करके वापस आया और पत्नी से कहा- मुझे भूख लगी है, खाना दो। पत्नी ने भोजन थाली में परोसा और पति के सामने रख दिया और मटके के पास पानी लेने चली गई। मटके में पानी नहीं था। पत्नी ने घड़ा उठाया और पानी लेने जाने की तैयारी की और पति से कहा कि- आप मेरी पहेली का अर्थ बताना, फिर भोजन का कौर उठाना-

बाप और बेटा को नाव एक
बेटी को नाव और
इनी वात को भेद बताओ
फिर उठावजो कौर।

पति ने पत्नी से कहा– तुम ही पहेली कह सकती हो, पहेली मुझे भी आती है। तुम तभी पानी लेने जाना, जब मेरी पहेली का उत्तर दो–

अगुठ पे लगी घुघुट
घुघट में लगी झरीया
इनी वात को उत्तर दे बाई
फिर भरना घड़िया।

पहेली कहकर पति चुप हो गया। पति थाली पर बैठा है, भोजन नहीं कर रहा है। पत्नी पानी का खाली घड़ा लेकर बैठी है।

इतने में एक साधु भिक्षा माँगने हेतु आया और उसने दोनों को देखा और दोनों से पूछा। पति ने कहा– पत्नी ने मुझसे एक पहेली पूछी और कहा– उत्तर देना तो भोजन करना। मैं उत्तर नहीं दे पा रहा हूँ, इसलिए भोजन की थाली पर बैठा हूँ। पत्नी ने कहा– इन्होंने मुझसे भी एक पहेली पूछी, मैं उत्तर नहीं दे पाई, इसलिए खाली घड़ा लेकर बैठी हूँ। तब साधु ने कहा– जो बात तुमने पहेली में एक दूसरे से पूछी है, उन दोनों पहेलियों का उत्तर इस पहेली में है। सुनो–

कोई खाये कोई पीये।
कोई पाड़े तेल
उठा रे भाई तू कौल
भर ला राँड तू घड़िया।

पहली पहेली – महुआ का पेड़, महुआ फल, महुआ पेड़ की टोली।

दूसरी पहेली – महुआ पेड़ पर महुआ गुच्छों के रूप में लगता है और वे अपने आप पेड़ से झर जाते हैं। तोड़ना नहीं पड़ता। उन्हीं महुआ को पानी में सड़ाकर, टोंटीदार बर्तन में डालकर आग पर पकाते हैं। वाष्प रूप में शराब बनती है।

तीसरी पहेली – कोई महुआ की रोटी बनाकर खाता है, कोई उसकी शराब बनाकर पीता है। महुआ के पेड़ पर महुआ के बाद लगने वाला फल है, जिसे 'टोली' कहते हैं। ग्रामीण क्षेत्र के लोग इसका तेल निकालकर खाते हैं। तुम दोनों की पहेलियों का उत्तर ये है। अब हे भाई! तुम खाना खाओ और हे बाई! तुम पानी लेने जाओ।

छोगालाल कुमरावत 'सुजस'

वाकी तेकी पावळई, बजावणऽ वाळो कूण।
सुन्दर चली सासरऽ, मनावणऽ वाळो कूण॥

टेढ़ी-मेढ़ी बाँसुरी को कौन बजा सकता है? उसी प्रकार ससुराल जाते हुए सुन्दरी को कौन मना सकता है? कौन रोक सकता है? क्या है ऐसी वस्तु जो टेढ़ी-मेढ़ी है और उसे कोई रोक नहीं सकता?

- नदी।

धरती की आरती, चाँद-सूरज का दीया।
भाई कऽ बईण पूजणऽ चली, पाय का धरिया॥

बहन ने धरती की आरती सजाई और उसमें चन्द्र-सूर्य के दो दीपक रखे तथा अपने भैया की आरती उतारने को चली है, तो ऐसी विचित्र आरती लेकर उसने अपने पैरों को कहाँ रखा?

- वर्षा में आकाश में चमकने वाली बिजली।

पेळई गाय, ओका नाना-नाना सा पाय।
बड़ा-बड़ा महेल नकऽ, वा धक्का देती जाय॥

पीली गाय है। उसके नन्हे-नन्हे पैर हैं, परन्तु वह बड़े-बड़े महलों को सरका देती है। आखिर यह क्या है?

- अग्नि यानी आग। आग पीले रंग की होती है। जिन लकड़ी के कोयलों से निकलती है, वे कोयले लपटों से छोटे-छोटे होते हैं, जो उसके पैर हैं। जब आग कहीं महलों में भी लग जाती है तो उसके सामने जो भी आता, उसे जलाकर भस्म कर देती है और आगे बढ़ जाती है। उसे भी रोकना मुश्किल होता है।

वाटकी भरी रूप्या नसी, थारा सी बी नी गिणाय।
म्हारा सी बी नी गिणाय॥

एक कटोरी रुपयों-पैसों से भरी पड़ी है, जिसे न आप गिन सकते हैं, न ही मैं यानी वे चमकदार पैसे अनगिनत हैं। क्या है जिनकी गणना असम्भव है?

- आसमान के सितारे। रात्रि आकाश में रुपयों-पैसों जैसे चमकते तारों को कौन गिन सकता है? वे तो संख्या में असंख्य हैं।

कोरो कागज धड़धड़ऽ, मसरु झोळा खाय।
राजाजी की पटराणी, असी पूछऽ उ काई आय॥

कोरे कागज में से तड़तड़ाने की घोर आवाज होती है, तो उससे सबका मन काँपने लगता है, तब राजा से पटरानी भी डरकर पूछती है कि यह डरावनी आवाज किसकी है?

- वर्षा में बादलों में उत्पन्न होने वाली बिजली। बरसात में जब बिजली कड़कती है और भयंकर नाद होता है तो सबके मन थर्रा जाते हैं। डर जाते हैं। ऐसे में रानी-पटरानी कौन-से खेत की मूली है। उसे भी डरना पड़ता है।

काळा खेत मऽ, दही को छीटो।
जल्दी बताव, नी तो फूटो॥

काले खेत में दही जैसा क्या छिड़का हुआ है। इस पहेली का जवाब जल्दी दो, वरना हार मानकर भाग जाओ।

- खेत में तड़का कपास। खेत में जब कपास के पौधों पर घेटे तड़कते हैं, तो कपास दही जैसा ही प्रतीत होता है।

नानी सी छड़ी, जमीन मऽ गड़ी।
रुणझूण कती, महेल मऽ चड़ी॥

एक छोटी-सी छड़ी, जो जमीन में लगी रहती है। वह भी एक दिन झंकार करती राजमहल में पहुँच जाती है। क्या है?

- ज्वार। जो खेतों में पककर महलों तक पहुँच जाती है। निमाड़ में ज्वार को माता का दर्जा प्राप्त है। उसे जुगधरी माता या ज्वार माता कहकर पूजा जाता है। उससे शगुन मुहूर्त्त देखे जाते हैं। ज्वार लोकमाता है।

येक दाजी आठ-दस धोतीनऽ पेरज।
एक बुजुर्ग आठ-दस धोतियाँ पहनता है। कौन है?

- मक्की का भुट्टा। इस पर पत्तों की आठ-दस परतें होती हैं, जो धोती स्वरूप माने गये हैं।

येक फकीर, ओका पेट पऽ लकीर।
एक फकीर के पेट पर लकीर है।
- गेहूँ। इसके हर दाने पर रेखा होती है।

धवळो लाल घोड़ो हरी पूँछ।

तुकऽ नी आवऽ तो, थारा बाप कऽ पूछ॥

सफेद या लाल घोड़े की हरे रंग की पूँछ है। ऐसा विचित्र घोड़ा आपने देखा है। यदि नहीं देखा तो अपने पिता से पूछकर मुझे बताओ?

– सफेद या लाल प्याज। खेत में प्याज के हरे-हरे लूमदार पत्ते घोड़े की पूँछ सदृश्य ही होते हैं।

नानी सी गड़ू, काटू तो रड़ू॥

छोटा-सा लोटा, जिसे कोई भी काटता है, तो रोता है।

– प्याज। प्याज को काटते समय सबको अश्रु आते हैं।

काळा खेत मऽ शेर को पंजो।

काले खेत में शेर के पंजे के समान क्या फसल होती है।

– अदरक। अदरक खेत में शेर के पंजों की भाँति ही फैली होती है, जो सूखने पर सोंठ कहलाकर औषधीय उपयोग में आती है।

लाल थैली मऽ, हाय-हाय की बीजा।

लाल थैली में हाय-हाय के बीज हैं।

– मिर्च। जब मिर्च को हम खाते हैं, तो हाय-हाय कर उठते हैं।

लम्बी सी कोथळई मऽ, हाय-हाय का बीजा।

लम्बी-सी पोटली में हाय-हाय के बीज।

– मिर्च।

येक झाड़ पऽ,

डब्बीज डब्बी नऽ। काई आय?

एक पौधे पर बहुत सारी डिबियाएँ लगी होती हैं।

– तिलहन का पौधा।

पाँच पान पोथी मऽ,

असल माल धोती मऽ।

पाँच पत्तों की पुस्तक है, लेकिन असली वस्तु तो धोती में छिपी है।

– पत्तों भीतर मक्की का भुट्टा। उसके पौधे पर तो चार-पाँच पत्ते होते हैं, पर असली वस्तु यानी भुट्टा पत्तों में ही जकड़ा होता है।

नानू सो दाणू, छुम्मक दांणू।

काम पड़ऽ तवऽ, मांगीनऽ खाणू॥

छोटा-सा अन्न है। वह भी निराला है। हर कोई पास में नहीं रखता है। जब जरूरत होती है, तब कहीं से भी माँग कर खाना पड़ता है।

- अजवाईन। यह एक बहुपयोगी औषधि है। इसे कोई भी साथ में नहीं रखता, क्योंकि हर जगह सुलभता से मिल जाती है। जब भी इससे ठीक होने वाली पीड़ा होती है, तो तभी माँगकर खाना पड़ती है। अकेली अजवाईन ही सैकड़ों प्रकार के अन्न को पचाने में सक्षम है, इसलिए तो कहा गया है- 'एक यवानी शतम्न्नपातिका'।

नीळई गोटी, हिन्दा बठी।
लरे सगा, थारी बेटी॥

हरी (निमाड़ी में हरी को नीळई कहते हैं) गोटिया झूलों पर बैठी झूल रही है। जब वे पूर्ण विकसित हो जाती हैं, तो उनका वृक्ष उन्हें अपने मालिक को ले जाने हेतु आग्रह करता है।

- आम। जब आम वृक्ष पर झूलते-झूलते पूर्ण विकसित हो जाते हैं, तो वृक्ष अपने खेतीहर से कहता है कि- 'मेरे सगे-सम्बन्धी अपनी बेटियों को ले जाओ। ये खूब झूल ली हैं।'

आसी रांड निस्सयड़ी।
ओकऽ तीन ननऽ घिस्सयड़ी॥

इस पहेली के अर्थ में कामुकता है, परन्तु लोक का वाचिक मन पूर्णत: पवित्र होता है। उसके वाचन में भी अर्थ के भाव नहीं आयेंगे। वह परिजन के मध्य में भी निर्मल भाव से सहज ही पहेली को कह देता है, जिसका अर्थ है कि विधवा स्त्री को तीन पुरुषों ने घसीटा यानी काम करवाया।

- मशीन युग से पूर्व खेतों की सिंचाई हेतु कुँए से मोट के द्वारा पानी खींचा जाता था, जिसमें मोट को दो बैल और एक व्यक्ति यानी कुल तीन जनों द्वारा खींचा जाता था।

हरी गोरी गुदगुदी नऽ, हरा पेऱ्या भेष।
घुमटा मऽ लटको कऱ्यो नऽ, भायेर राख्या केश॥

एक हरे-भरे रंग की गोरी है, वह बहुत कोमल है। उसने हरे रंग के ही वस्त्र पहने हुए है एवं पूर्णत: घूँघट में रहती है, लेकिन उसने अपने बालों को घूँघट से बाहर करके लटका रखे हैं। ऐसी वस्तु क्या होती है?

- मक्की का पौधा। मक्की के पौधे पर जो भुट्टा लगता है, वह पत्तों के भीतर घूँघट में होता है एवं उसके बाल बाहर को लटकते रहते हैं।

गोरी उच्ची खप्प लग नऽ, पातळई सरवर न्हावणऽ जाय।
चार-आट दिन लगऽ न्हावणा मऽ, फिरी बी वा बुरीज गंधाय॥

एक ऊँचे कद-काठी की गोरी है तथा वह दुबली-पतली है। वह जब तालाब नदी में नहाने जाती है तो चार-आठ दिनों तक पानी में रहने पर भी, जब वह बाहर आती है तो उसके शरीर से फिर भी दुर्गन्ध ही आती है। ऐसी गोरी कौन-सी हो सकती है?

– सण या अमाड़ी के दुबले–पतले पौधों से रेशे निकालने के लिए उसे चार–आठ दिनों तक पानी में रखना पड़ता है, फिर भी उसमें बदबू रहती है।

राम गयो काम पऽ, सीता देण गई रोटा।
बिना जड़ को झाड़ देखजो, फिरी खाजो रोटा॥

जब राम खेत में काम करने गया तो सीता उन्हें रोटी देने गई और कहकर आई कि बिना जड़ का पौधा देखकर ही भोजन करना। अब राम ने ऐसे पौधे को देखा होगा तो खाना खाया होगा, वरना नहीं।

– अमरबेल। राम ने अमरबेल को देखकर भोजन किया, जिसकी कोई जड़ नहीं होती है। अमरबेल एक परजीवी पौधा है। इस परजीवी पौधे में औषधीय गुण भी होते हैं।

झामर झूलीनऽ, अद्धर फूल्लीनऽ।
तेका नीच्चऽ, लगीनऽ गुल्लीनऽ॥

झालरों के ऊपर फूल खिले हैं, पर उसके फल नीचे लगे हैं, जो गिल्लियों जैसे हैं।

– मूँगफली का पौधा।

वाकी तेकी बाई, वोका पेट मऽ काळो काई॥
टेढ़ी–मेढ़ी महिला के पेट में काला क्या है?

– इमली में काले बीज।

येक झाड़ पऽ, लेंडीज लेंडीनऽ।

एक वृक्ष पर बहुत सारी लेंडियाँ हैं।

– चने का पौधा।

लाल बाई लांगरी,
पेरऽ लाल घांगरी॥

एक नारी बहुत चटोरी है, लहँगा भी लाल ही पहनती है।

– लाल मिर्ची। जिसके बीज बहुत चटपटे तीखे तथा बाहरी परत लाल होती है। मिर्ची को पचाने में हमारा शरीर दस घण्टे लगाता है।

लाल माथणुऽ, नऽ काळो ढाकणु।

लाल मटके पर काला ढक्कन कैसा होता है?

– जुरुंग। यह एक औषधि है, जो हर किसान के घर होती है। इसे किसान प्रसव के बाद अपने पशु को खिलाता है, जिससे जहरीली जड़ शीघ्रता से बाहर गिर जाये तथा उनका पशु सुरक्षित रहे।

येक कटोरी म दूद, थारा सी बी नी पेवाय।
म्हारा सी बी नी पेवाय॥

एक कटोरी में दूध है, जिसे न मैं पी सकता, न तुम।

– अकाव का दूध। जो अपेय है, लेकिन कई बीमारियों पर काम में आता है।

येक का पेट मऽ बाल?

एक वस्तु के पेट में बाल होते हैं।

– आम। जिसकी गुठली बालों जैसी रेशेदार होती है।

बालपणा मऽ झूला झूलऽ, जुवानी मऽ सोवऽ।
बुढ़ापा मऽ सबई जोण, खोब चुम्मा लेवऽ॥

वह कौन है? जो बचपन में झूले झूलता और जवानी में सोता है एवं बुढ़ापे में सभी जन उसे खूब लाड़-प्यार करते हैं, खूब चूमते-चूसते हैं।

– आम फल। फलों का राजा का बालपन में वृक्ष पर झूलता एवं पूर्ण यौवन पर पकने हेतु माली उसे सुला देता है। जब वह पककर तैयार हो जाता है, तब उसकी आखिरी अवस्था में सभी उसे चाहते हैं, खूब चूम-चूमकर तथा चूस-चूसकर चाव के साथ खाते हैं।

गज-गज खम्बो, गजाधर लम्बो।
सोन्ना की साकळ, रूपा को खम्बो॥

पूरा खम्बा नरम है। हाथी की सूँड जैसा लम्बा है। जिस पर सोने की लड़ियाँ (साँकल) लटकी हैं तथा वह खम्बा चाँदी जैसा है।

– केले का पौधा। केले का पौधा तना रहित होता है। तना होता है, वह बहुत कोमल होता है। वह बहुत कोमल होता है। उस पर केले पीले-पीले रंग के सोने जैसे दिखते हैं। केले का पौधा बिकने पर चाँदी के सिक्कों में बिकता है, यानी केले का पौधा चाँदी का है।

येक का पेट मऽ दाँत घणा।

किसके पेट में बहुत सारे दाँत होते हैं?

– सीताफल। पूरे फल में दाँतों जैसे बहुत बीज होते हैं।

येक का पेट मऽ दूध।

किसके पेट में दूध होता है?

– नारियल। नारियल के भीतर का पानी दूध जैसा ही सफेद एवं मीठा होता है। नारियल की एक और पहेली देखिए-

कटोरा मऽ कटोरो, बेटो बाप सी बी गोरो॥

कटोरे के भीतर कटोरा रखा है और पुत्र अपने पिता से भी अधिक गौरवर्ण का है।

– नारियल। नारिलय में कटोरे जैसा बाहर का खोल व भीतर गीरी का खोल होता है। बाहरी खोल मटमैला जो पिता व अन्दर का गिरी खोपरा श्वेत-वर्ण का होता है, उसे पुत्र की संज्ञा दी गई है।

उच्ची सी बाई का, बड़ा-बड़ा दांत।

एक ऊँची महिला के बड़े-बड़े दाँत हैं।

- खजूर का पेड़। जिस पर खजूर बड़े-बड़े दाँतों के समान हैं।

माय लापड़ई बेटी झापड़ई, नऽ बेटो काळो भूस्स।

माँ बेढंगी, बेटी बदसूरत और बेटा काला-कलूटा। ऐसा परिवार कहीं देखा है?

- इमली। इसका वृक्ष बेढंगा होता है, जिस पर इमली भी टेढ़ी-मेढ़ी खुरदरी बदसूरत सी होती है तथा उसके भीतर का बीज काला होता है, जो बेटा है।

आटा जसी गिलबिली, नऽ शक्कर जसी मीठी।

गुँथे आटे जैसा कोमल और शक्कर जैसा मीठा होता है।

- मुनक्का। जो नर्म और मीठे होते हैं।

नानी बाई कऽ झूला झुलाड़ी, साऊड़ आई तो सोवाड़ी।
डोकरी हुई बजार बठाड़ी, चखाड़ी नऽ ओक हेचाड़ी॥

नन्हीं बालिका को खूब झुलाया, गर्भकाल में सुलाया तथा जरा में बाजार में बैठाया एवं लोगों को चखाकर बेचा।

- आमफल।

भीत फूटी नऽ भैरू निकळ्यो।

दीवार फूटने पर भैरवान जी प्रकट हुए।

- नारियल। इसे जब फोड़ते हैं तो इसका गोटा भैरवान बाबा जैसा होता है।

बाप को नाव, उ बेटा को नाव।
नात्या का नाव मऽ, हुयो बदलाव॥

पिता का नाम जो है वही पुत्र का नाम है, परन्तु नातिन का नाम परिवर्तित हो गया। कहीं ऐसा भी होता है?

- महुए का वृक्ष पिता और उसके फूल भी महुए कहलाते हैं, वे पुत्र हुए तथा इन्हीं महुए से जो पैदा होता है यानी नातिन को सब शराब कहते हैं।

कवई बी खोस। पण आऊगा पोष की पोष॥

मेरा बीजारोपण किसी भी समय करो, लेकिन फलूँगी-फूलूँगी सदैव पौष के महीने में ही।

- बलर। यह सदा पौष माह में ही फलती-फूलती है।

येक का पेट मऽ मांस।

किसके पेट में केवल मांस होता है?

- केला।

चार चक चले, दो भग चले।
आगे नाग चले, पीछे गोफ चले॥
चार चक्र, दो ध्वज, आगे नाग एवं पीछे गोफ चलती है।
– हाथी। चार चक्र पैर, दो ध्वज कान, आगे सूँड नाग जैसी तथा पीछे पूँछ गोफ जैसी होती है।

वाको तेको धावड़ो, वोका पऽ बठ्यो होल्गो।
जी नी येनी वार्ता ताड़ऽ,ओको बाप ढोल्गो॥
टेढ़ी–मेढ़ी लकड़ी पर एक पक्षी बैठा है। जो इस पहेली को नहीं बूझेगा, उसका पिता ढोल कहलायेगा, अतः जल्दी बूझो।
– रेगिस्तान का जहाज यानी ऊँट। सिर से पैर तक टेढ़ा–मेढ़ा होता है, उस पर कूबड़ पक्षी समान दिखता है।

आरकस बारकस नौ सौ खूटा।
गाय छे मारकणई, दूध छे मीठा॥
गायों के बाड़े में नौ सौ खूँटे हैं, पर उस बाड़े में रहने वाली गायें मारने वाली हैं, लेकिन उनका दूध मीठा है।
– मधुमक्खी का छत्ता और शहद। जब मधुमक्खी काटती है तो व्यक्ति तिलमिला जाता है, परन्तु उसका शहद बहुत मीठा एवं स्वादिष्ट होता है, जो औषधि है।

येक दोयड़ो असो, थारा सी बी नी कुदाय।
म्हारा सी बी नी कुदाय॥
एक रस्सी ऐसी है, जिसे कोई लाँघ नहीं सकता है।
– सर्प। साँप के ऊपर से कोई नहीं कूदता है।

नानी सी गाय, तुरुक तुरुक जाय।
देखजे ओ माय, म्हारा गंहू नी खाय॥
छोटी सी गाय बहुत तेज दौड़ती है। हे माँ! इस गाय से मेरे गेहुँओं की रक्षा करना।
– घुन। यदि गेहूँ में घुन लग जाता है तो सारे अनाज को चट कर देते हैं।

सबई जोण भागी गया।
घर मऽ उड़द्या बगळई गया॥
सभी लोग घर में उड़द बिखेरकर भाग गये।
– मक्खियाँ। जो उड़द जैसी काली होती हैं।

नानु सो जीव टुल्लम टुल।
पाय तक धोती नऽ माथा पऽ फूल॥

एक छोटा जीव गोल-मटोल हृष्ट-पुष्ट है। उसने सिर से लेकर पैरों तक धोती पहन रखी है। उसके सिर पर फूल खिला है। कौन-सा जीव है?

- मुर्गा। उसके पंख धोती है। सिर पर कलगी फूल जैसी शोभायमान रहती है।

सोना सरीखो चोक्टो, भपका सरीखी लाय।
चतरी चुम्मो दई जाय, तो मूरख फिरी पछताय॥

जिसका मुखड़ा सोने सा दमकता है, जो अग्नि के जैसा तेज है। वह चतुर सुन्दरी अगर किसी को चुम्मा दे देती है, तो वह नादान भी पछतावा करता है।

- मधुमक्खी। जिसका मुख स्वर्ण-सा उजला-उजला रहता है, वह किसी को चुम्मा यानी काटती है, डंक मारती है, अच्छे-अच्छे तिलमिला जाते हैं।

सगो रे सगो, भीत जोणऽ लग्यो।
जेकऽ बी चिमट्यो भर्‌यो, उ गग्गाणऽ लग्यो॥

वह दीवार एवं पत्थरों से भी इतना अपनापन रखता है कि उनसे चिपककर रहता है, परन्तु उसने जिसे भी चिकुटी भरी वह कराह उठता है। वह नातेदारी भी सच्ची निभाता है एवं शत्रुता भी।

- बिच्छू। पत्थरों से प्रेम में चिपककर रहता है तथा उसे कोई हाथ लगा देवे तो उसे डंक मार देता है, तो वह जोर से चिल्लाता है। कराह उठता है।

नानू सो बटवो, बावन बीर।
चढ़ई कामटी नऽ, मार्‌यो तीर॥

एक छोटा-सा पर्स है, पर उसमें बावन तीर रखे हैं। उसे जब भी खतरा महसूस हुआ, उठाया धनुष और तीर से साधा निशाना।

- बिच्छू। उसके डंक में कईयों को घायल करने का विष होता है। जब उसे खतरा लगता है, डंक उठाकर सामने वाले को मार देता है।

पाणी नऽ छाणी, जंगल नीळो कच।
कत्थो नी चूनो खायो, मुंडो लाल चट॥

पानी-वानी कुछ भी नहीं है, फिर भी हरी-हरी कंजी (नीलपी) जमी है। बिना कत्थे-चूने का ही उसका मुख लालम-लाल है। कौन है?

- तोता। पूरा शरीर जल थोड़े ही है, फिर भी हरा-भरा है। बिना पान यानी कत्थे-चूने का मुख सदैव लाली लिये रहता है। यह तो उसे प्रकृति प्रदत्त है। तोते की चोंच ऐसी लगती है, मानो उसने पान खाया हो।

चार माथणा अमरित सी भर्‌या।
बिना ढाकणा औधा लटक्या॥

चार मटके अमृत से भरे हुए उल्टे लटकते रहते हैं, फिर भी उनमें से अमृत नहीं गिरता है। उन पर ढक्कन भी नहीं लगे हैं। कैसा आश्चर्य?

– गाय या भैंस के चार थनों में दूध। दूध अमृत समान ही होता है।

चार भाई चौरंग्या, फूल पड़ऽ येक रंग्या॥

चारों भाइयों की विभिन्नता के बावजूद उनके फूल एक रंग के होते हैं।

– गाय–भैंस के चारों थन अलग–अलग होते हैं, फिर भी दूध एक रंग का होता है। यानी सभी स्तनधारियों के स्तन आकार भिन्न होने के बावजूद दूध का रंग तो एक ही होता है न।

काळई थी कजराळई थी, काळा बन मऽ रहीती थी।
लाल पाणी पीती थी, सब्क धोको दीती थी॥

जो काली और कजरारे नैनों वाली है तथा वह काले घने वन में ही रहती है, परन्तु वह पानी लाल रंग का पीती रहती है एवं सबको धोखा देती रहती है। ऐसी नैन–नक्श वाली धोखेबाज कौन हो सकती है?

– सिर में रहने वाली परजीवी जूँ। जो काली एवं कजरारी हमारे घने बालों में रहकर हमारा खून पीती है तथा हमें धोखा देकर छुपी रहती है। हमारा खून उसका लाल रंग का पानी है।

जा रे जा, बजार जा,बिना डेड को लिम्बू ला॥

बाजार जाओ और बिना डण्ठल का नींबू लाओ।

– अण्डा। जिसका कोई डण्ठल (डेड) नहीं होता है।

नानी सी डब्बी, डब–डब करऽ।

छोटी डिबियाएँ सदैव तर रहती हैं।

– आँखें। जो सदा गीली (तर) रहती हैं। तर आँखें स्वस्थ होती हैं।

येक आळ्या मऽ, गोपाळ्यो नाचऽ।

एक ताक में बाल–गोपाल सदा नाचता रहता है।

– जीभ। हमारी जुबान सदैव मुख में नाचती रहती है।

नानी सी डब्बी मऽ रम्भा माय नाचऽ।

छोटी डिबिया में एक रम्भा माँ नर्तन करती है।

– जीभ। में मुख जीभ का हिलना–डुलना उसका नृत्य कहलाता है।

येक आळ्या मऽ बत्तीस लोग।

एक ताक में बत्तीस पुरुष रहते हैं।

– हमारे मुँह में बत्तीस दाँत होते हैं।

चरर-वरर चाँय-वाँया,तीन माथा दस पाय॥

जो चर्र-चर्र और वर्र-वर्र की चाँ-चूँ आवाज करती है तथा उसके तीन सिर व दस पैर हैं, ऐसा कौन है?

- मोट। पुराने समय में खेतों में जब कुँओं के पानी से सिंचाई करते थे, उस यंत्र का नाम 'मोट' होता है, जिसे चलायमान करने हेतु दो बैल और एक व्यक्ति को भी कार्य करना पड़ता था। जब मोट चलती है तो चाँ-चूँ चर्र-वर्र की ध्वनि होती है तथा दो बैलों के दो सिर व एक व्यक्ति का एक सिर यानी तीन सिर और दो बैलों के आठ पैर तथा दो पैर व्यक्ति के लिए कुल दस पैर मोट खींचने में लगते हैं।

असो कसो पावणो ओ माय।
घर मऽ सोवऽ अंगणा मऽ पाय॥

- माता! तुम्हारा दामाद कैसा है, जो घर में शयन करता है तो पैर आँगन तक आ जाते हैं?

- चिमनी या कण्डील। जब रात्रि में घर में चिमनी जलती है, तो उसका प्रकाश आँगन तक आता है।

बइल्यो पाणी नी पेतो, रास पाणी पेज॥

बैल पानी नहीं पीता, लेकिन बैलों को बँधने वाली रस्सी पानी पीती है।

- चिमनी।

येक छोरो फिरतो जाय।
नऽ पागड़ी नकऽ बाँधतो जाय॥

एक लड़का चलता जाता है एवं साथ में पगड़ी भी बाँधता जाता है।

- घास काटकर उसके पुले बाँधता किसान। जब किसान घास काटता चलता है तो साथ में उसे बाँधता जाता है।

काळई कोठड़ी मऽ धवळो पाणी।
जेमऽ नाचऽ येक झामा राणी॥

एक काले कक्ष में सफेद पानी भरा है, उसमें एक झामा रानी नृत्य कर रही है। ऐसे पानी में कौन नाचता है?

- दही बिलौने की रवी। जब दही को मंथन करते हैं, उस यंत्र को रवी कहते हैं। इस मंथन क्रिया में रवी को खूब घुमाना पड़ता है, तब उस दही से छाछ व मक्खन बनता है।

लाखड़ा को कुकड़ो, काचो आटो खाय।
धीरऽ सी ओकऽ मारा तो, जोरऽ सी गग्गाय॥

एक प्रकार का काष्ठ का मुर्गा होता है, जो कच्चा आटा ही खाता है, लेकिन यदि कोई उसे धीरे से पीटता है तो वह बहुत तेज ध्वनि निकालता है।

– मृदंग। इसे एक तरफ कच्चा आटा ही गूँथकर लगाकर बजाया जाता है तथा यह लकड़ी का होता है। जो धीमी थाप पर भी घोर नाद करता है। निमाड़ में संतों के भक्ति–गीत इसी मृदंग की थाप पर गाते हैं।

गोळ–मोळ चकरी, हरो पेळो रंग।
येनी वार्ता सुणीनऽ, ताड़न्या हुईगा दंग॥

हरे–पीले रंग की गोल–मटोल चक्री है। सुनने वालों आश्चर्य मत करो। इस पहेली को बूझो।

– नाक में पहनने की नथ या नथनी, जो गोल तथा हरी पीली होती है।

येक पोर्‌यो रखोड़ी मऽ लोटऽ।

एक लड़का राख में लोट–पोट करता है।

– बाफलाया बाटी। इन्हें सेंकने के लिए कण्डे की आग में रखकर उलट–पुलट करना पड़ता है। उपलों में सीजी बाटियाँ स्वादिष्ट होती हैं।

पांच पळई, रतन तळई।
जीनी येनी वार्ता ताड़ऽ, ओको बाप भणई॥

एक ताल–तलैया के आसपास पाँच यंत्र नाप–तौल करने के लिए लगे हैं, जो सुनकर इस पहेली को नहीं बूझेगा, उसका पिता निम्न जाति का कहलायेगा।

– हथेली। हमारे हाथ में पाँचों अंगुलियाँ लगी हैं। वे सब नाप या माप तौल के साथ आती हैं। पुराने समय में व्यक्ति हाथ से या अपने अंगों से ही माप तौल करते थे।

येक बाई सरकतीज नी।

एक स्त्री स्थाई है।

– दीवार, जो जहाँ की तहाँ रहती है।

गाय चलती जाय, नऽ दूद देती जाय॥

गाय चलती जाती है तथा दूध देती जाती है। क्या है?

– आटा–चक्की या घट्टी। जब घट्टी में अन्न पीसते हैं तो वह घूमती जाती है एवं आटा गिराती जाती है।

अत्तीस नाड़ा बत्तीस नाड़ा।
बिना बईल्या का चलऽ गाड़ा॥

इस गाड़ी को चलाने हेतु आगे–पीछे रस्सियाँ बँधी हैं, मगर बिना बैलों को जोते ही यह गाड़ी चलती है।

– तिरपाल वाली नैया। नैया में भला बैल जोतने की क्या जरूरत है? तिरपाल की नाव तो हवा के रुख से ही चलती है।

दुई लटकऽ नऽ एक उटकऽ।

दो लटकते हैं तथा एक ऊपर उठता है।

– पलड़ों वाला तराजू, जिसमें दो पलड़े नीचे लटकते है तथा नाप देखने का काँटा ऊपर उठता है।

तीन पाय की चम्पा राणी, कांचो आटो खाय।
दाळ–भात को भोग लगावज, याणु संझा न्हाय॥

तीन पैरों की चम्पा रानी सदा कच्चा आटा खाती है, लेकिन स्नान सुबह–शाम करके दाल–चावल का भोग लगाती है।

– तख्ता बेलन। रोटी बनाने का तख्ता तीन पैरों का होता है, उसे सुबह–शाम स्नान कराना पड़ता है। उसके ऊपर रोटी बनती एवं उसके सामने दाल–चावल भी बनते, तब भी वह नहीं खाता है। उसके ऊपर सदा रोटियाँ बनती हैं।

ई गई, उ आई।

यह गई और तुरन्त आ गई। किसे आवागमन में समय नहीं लगता है?

– दृष्टि। हमारे सामने किसी भी जगह नजर डालने में समय नहीं लगता है।

येक बईड़ी पऽ, टल्लू मियां नाचऽ।

एक पहाड़ी पर टल्लू मियाँ नाचता है।

– उस्तरा। जब सिर का मुण्डन किया जाता है, उस समय नाई अपने उस्तरे को सिर पर इधर–उधर चारों तरफ घुमा–फिराकर केश काटता है। यही उस्तरे को पहेली में टल्लू मियाँ एवं सिर को पहाड़ी कहा गया है।

बारह भाई नकऽ, येक भाई सम्हाळई नऽ राखऽ।

एक अकेला भाई अपने बारह भाइयों को सहारा देकर के सँभालता है।

– बैलगाड़ी के चक्र (चाक) में कुल बारह आरों को बीच में लगा नाय सँभालता है, या फिर आरों के ऊपर का लोहे का पाटा उन्हें सहारा देता है।

नौ सौ आड़ा, नौ सौ टेड़ा, नौ सौ बावन वीर।
जीनी म्हारी वार्ता ताड़ऽ, ओकी नाक मऽ, सौ–सौ तीर॥

यह वीर कहीं भी नौ सौ हो या कम ज्यादा सदैव आधे–सीधे रखे होते हैं एवं आधे उल्टे रहेंगे। ऐसे वीरों को जो नहीं पहचानेगा, उनकी नाक में सौ–सौ तीर मारेंगे। अतः पहेली शीघ्र बूझो।

– छत पर डाले गये मिट्टी के कवेलू। इन कवेलुओं को वर्षा से सुरक्षा हेतु आधे सीधे रखकर उन पर आधों को उल्टा जमाना होता है, तब ये वीर वर्षा से घर में पानी नहीं रिसने देंगे।

तू चल, हऊ आयो।

तू चल मैं आया।

– दरवाजा। दो फाटक वाले दरवाजे में पहले एक आगे आता फिर दूसरा उसके पीछे आता है, तब पूरा दरवाजा बन्द होता है।

जा रे जा मकऽ दईनऽ जा।

तुम कहीं भी जाओ तो मुझे देकर या बन्द करके जाओ।

– दरवाजा। हम घर से कहीं भी बाहर जाते हैं तो दरवाजे को बन्द करके जाते हैं।

आमणी की हामणी, सुण म्हारा भाई।

बारा मसी तीस गया, बाकि बच्या काई॥

पहली पंक्ति तो पहेली में तुक मिलाने के लिये कही गयी है एवं पहेली तो दूसरे पंक्ति में है कि बारह में से तीस अंक घटाओ?

– ग्यारह। यहाँ गणित की भाषा में नहीं, जीवन की भाषा में जवाब देना होता है और ऐसे जवाब अनुभव से दिये जाते हैं। इस पहेली में बारह महीनों में से तीस दिन घटाये गये यानी एक महीना। अत: बारह में से एक महीना घटाया तो ग्यारह माह बचे।

येक तरबूज की बारा चीर।

हर चीर मऽ तीस बीज॥

एक तरबूजे के बारह टुकड़े करे तो एक टुकड़े में तीस–तीस बीज निकले?

– ये वर्ष, महीने व दिन हैं।

सर नी सवाद चाखऽ ते काई।

नजी फळ नजी फूल हाई॥

न फल है, न फूल है, न उसमें स्वाद है, फिर भी उसे चखते हैं। क्या आपने कभी ऐसे फल को चखा है?

– धागे में स्वाद नहीं होता है, तब भी उसे सुई में पिरोने के पहले चखते हैं, अर्थात् सुई में पिरोने हेतु गीला करना होता है।

देणऽ वाटऽ लेणऽ गई थी।

उ देती थी येकासी लाई नी॥

देने के लिए लेने गई, परन्तु वही दे रही थी, इसलिए नहीं लाई। कभी ऐसा उल्टा–पुल्टा होता है?

– एक स्त्री झाड़ू देने (बुहारने) के लिए पड़ोसन के घर झाड़ू लेने गई, लेकिन पड़ोसन ही खुद के घर में झाड़ू दे रही थी, यानी बुहार रही थी इसलिए नहीं ला सकी। निमाड़ी में झाड़ू बुहारने को झाड़ू देना कहते हैं।

येक लकीर पऽ फकीर, दुई भायेर येक भीत्तर॥

एक रेखा पर साधु है, उस रेखा के बाहर दो व्यक्ति एवं भीतर एक व्यक्ति है। ऐसा दृश्य कहीं देखा–सुना?

– यह दृश्य रामायण का है, उस समय का जब रावण सीताहरण करता है। उस समय रावण साधु भेष में लक्ष्मण रेखा के पास होता है, तब दो व्यक्ति रेखा के बाहर होते हैं। वे राम व लक्ष्मण एवं एक जो भीतर रहता है, वह सीता होती है।

जाळई जळ गई, बळियो नी येक धागो।
रहिवासी पकड़ाया, घर बान्नी नमऽ सी भाग्यो॥

जाली जल गई, परन्तु एक भी धागा नहीं जला। निवासी पकड़े गये, लेकिन घर खिड़कियों से निकल भागा। कैसे हुआ?

– जाली मछली पकड़ने वाली जल में फेंकी तो उसके धागे भला कैसे जलेंगे? उल्टी जल में रहने वाली मछलियाँ पकड़ी गयीं, पर उनके रहने का घर यानी पानी, जाली को ऊपर खींचने पर जाली के बीच से निकल जाता है।

झाँझ नी मिरदिंग, वाजऽ ते काई।

वह ना ही झाँझर है, ना ही मृदंग वाद्य, फिर भी नाद करता है। बजाने पर संगीत निकलता है।

– मटका। जब कुम्हार मटके का सृजन करता है तो उसे पीटता है। उसमें से संगीत, स्वर निकलता है। मटका कोई झाँझ-मृदंग नहीं है, परन्तु वर्तमान में संगीतकार उसका उपयोग करने लग गये हैं।

बाप बेटा दुई, रोटी बणई तीन।
वाटऽ केत्ती-केत्ती आई॥

पिता, पुत्र दो हैं, इनके लिए रोटी तीन बनायी तो हिस्से में कितनी-कितनी आई? हिसाब लगाओ?

– एक-एक रोटी। क्योंकि पिता एक है एवं पुत्र दो हैं। इस प्रकार कुल तीन सदस्य हैं। अत: तीनों को एक-एक रोटी हिस्से में आई।

येक खोदरी मऽ होतगी फड़-फड़ऽ।

एक नाले में पक्षी फड़फड़ाते हैं।

धानी को जब कड़ाही में सेंकते हैं तो खूब फड़फड़ाती है।

जा रे जा बजार जा, म्हारी सूरत को आदमी ला॥

जाओ, बाजार से मेरी शक्ल का व्यक्ति लाओ।

– आईना। जिसमें जो देखे उसकी शक्ल दिखती है।

लाखड़ा का घोड़ा कऽ, लुहा की लगाम।

काष्ठ के घोड़े को लोहे की लगाम लगाई है।

– लकड़ी के दरवाजे पर लोहे की साँकल लगाई जाती है।

नानो सो मणिराम, घणी लम्बी पूँछ।
उ गयो मणिराम, पकड़ी लायो पूँछ॥

छोटे से मनिराम की पूँछ लम्बी है। वह जब कार्य करता है, तो अपने भाई की पूँछ को हर बार पकड़ लाता है।

– सिलाई का सुई–धागा। जब सिलाई करते हैं, तो ऊपर का धागा नीचे के धागे को भी हर टाँके में खींचता है, तब सिलाई होती है।

येक जानवर असो, नद्दी धड़ रहितो थो।
सोन्ना की चोच पण, छमटी सी पाणी पेतो थो॥

एक जीव नदी के तट पर निवास करता है, उसकी चोंच सोने की है, पर वह पानी अपनी पूँछ से पीता था। ऐसा अचम्भा देखा?

– दीपक–बाती। दीपक, तेल की नदी है, उसके जलने की लौ सोने की चोंच तथा उसमें बाती उसकी पूँछ है।

बारा बरस को कुँवर कन्हाई।
ओको नाव काई छे भाई॥

बारह वर्ष का कुँवर कन्हैया है। उसका नाम बताओ भाई?

– सिंहस्थ मेला, जो पूरे बारह वर्षों के बाद ही पुनः उसी जगह लगता है।

नव्हाड़ी दियो धवाड़ी दियो।
गुद्धा मारीनऽ सोवाड़ी दियो॥

किसे स्नान कराकर, भोजन कराकर, फिर मार–पीट कर सुला दिया जाता है?

– रोटी बनाने हेतु आटा। आटा गूँथने हेतु पहले पानी डालना पड़ता है, फिर बच्चों जैसा बतैन में हौले–हौले मसलते हैं, फिर अन्त में मुक्कों से दाब देकर यानी मारपीट करके रख देते हैं रोटी बनाने के लिए।

गोल मोल दुई पैया, तेका अद्धर बठ्या सैया॥

गोल–मोल दो पैसों के ऊपर कोई विराजित है?

– साइकिल पर सवारी। साइकिल दो पहियों की ही सवारी होती है, जो ध्वनि प्रदूषण एवं वायु प्रदूषण नहीं करती है।

बाप जंगल मऽ, माय पंगत मऽ।
बेटो रय रंगम मऽ, रहिणु नी ओकी संगत मऽ।

पिता जंगल में रहता है, माता पंगत यानी भोजनशाला में रहती है तथा पुत्र रंगशाला अय्याशी आदि जगहों में रहता है। इस पुत्र की संगति हमें नहीं करना है।

– पिता महुए का वृक्ष है जो जंगल में रहता है। उसके पत्तों से बने पत्तल–दोने भोजन

करने हेतु पंगतों में होते हैं यानी पत्ते माता है एवं इस महुए से उत्पन्न हुए महुए के फूलों से शराब बनती है। यह महुए का पुत्र हुआ, जो मयशाला एवं कोठों आदि जगहों पर रहता है। अतः इस शराब से हमें दूर रहना है। इसकी संगति नहीं करना चाहिए।

चार भाई हट्टा-कट्टा।
उनका मुण्डा मऽ दुई-दुई कट्टा॥
चारों भाई हृष्ट-पुष्ट हैं, लेकिन उनके मुखों में दो-दो लकड़ी के टुकड़े ठूँसे हैं।
- चारपाई यानी खटिया। जिसके चारों पायों में दो-दो लकड़ियाँ लगी होती हैं। इनमें बड़ी लकड़ी को 'ईस' व छोटी लकड़ी को 'उपळा' कहते हैं। खटिया के चारों पैर हृष्ट-पुष्ट होते हैं।

येक बाई का, खीड़ी भरी नऽ आतड़ा।
एक महिला की पसलियाँ (अंतड़ियाँ) एक टोकरी भर कर हैं।
- खटिया में गुम्फित रस्सियाँ अंतड़ियों जैसी होती हैं। इन चारपाइयों में हर कोई रस्सी नहीं गुम्फित कर सकता है।

रात मऽ पड़ेल नऽ, दिन मऽ उबी।
येनी वार्ता की, कांई छे खूबी॥
रात्रि में आड़ी पड़ी रहती है। दिन में खड़ी रहती है। ऐसी पहेली को बूझो, क्या खूबी है?
- चारपाई। जिसे रात्रि में शयन हेतु बिछाया जाता है एवं दिन में उसे खड़ा करके रख देते हैं।

काळई बईड़ी पऽ चोर पकड़ायो।
काली पहाड़ी पर चोर को गिरफ्तार किया। उस चोर का नाम बताओ?
- जूँ। काली पहाड़ी हमार सिर है, जहाँ जूँ रूपी चोर को पकड़ा जाता है।

सिरपुर मऽ ढूँढा पड़िया, चिमटापुर मऽ पकड़ा गया।
हथनापुर मऽ न्याय हुयो, नऽ नखनापुर मऽ मारा गया॥
सिरपुर गाँव में उसकी खोजबीन हुई, पर वह चिमटापुर में गिरफ्तार हुआ, फिर उसका न्याय हथनापुर में हुआ और उसको मृत्युदण्ड नखनापुर में दिया। ऐसा अपराधी कौन होता है?
- जूँ। जो सिरपुर यानी हमारे सिर में उसे ढूँढना पड़ता, जो हमारी चिमटी से पकड़ में आती अर्थात् चिमटापुर। फिर उसे हथनापुर यानी हथेली पर रखकर देखा कि जूँ ही है। तब उसे नाखून से यानी नखनापुर में मारा। मृत्युदण्ड दिया।

सिरपुर में पकड़ाई, हथनापुर मऽ लाई गई।
नऽ नखनापुर मऽ मारी गई॥
सिरपुर में पकड़ाई। फिर उसे हथनापुर से लाकर नखनापुर में उसे मारा।
- जूँ।

भूत चुड़ैल की लड़ई हुई।
नऽ छोड़ावणऽ गई डाक्कण॥
भूत-चुड़ैलों की लड़ाई को बन्द करवाने एक डाकिन को आना पड़ा।
- ताला, चाबी व साँकल। साँकल में लगे ताले को चाबी ने ही अलग किया।

अत्तीस डोगर बत्तीस डोगर, डोगर मऽ बान्नू।
आवग छैल छबीली, खोलगऽ तवऽ बान्नू॥
इधर भी दीवारें उधर भी दीवारें तथा दीवार में दरवाजा लगा है, परन्तु वह भी नहीं खुल रहा है। उसे तो सिर्फ छैल-छबीली ही आकर स्वयं खोलेगी।
- दरवाजा इसलिए नहीं खुल रहा है कि उस पर ताला लगा है, जिसे उसी ताले की छैल-छबीली चाबी आकर खोलेगी।

वाको तेको लाखड़ो, अकाश चईढ़ी जाय।
बांका-टेढ़ा लकड़ा आकाश चढ़ जाता है।
- धुँआ। सदैव ऊपर ही उठता है।

येक डब्बी मऽ, मोती माणिक झर-झरऽ।
एक डिबिया से मोती-माणिक झरते रहते हैं।
- आँखें। जिनमें से सुख-दु:ख में अश्रु रूपी मोती-माणिक झरते रहते हैं।

कुकड़ी चलती जाय, अंडा देती जाय।
एक मुर्गी चलती जाती है एवं अण्डे देती जाती है।
- सिलाई मशीन से सिलाई होना।

डोकरो चलऽ मेर-मेरऽ, डोकरी राखऽ ओकी हेरऽ।
एक बुजुर्ग खेत की सीमा पर चलता है तो उसके पीछे एक बुजुर्ग स्त्री भी हम कदम चलती जाती है।
- सुई-धागा। वस्त्रों पर जब सिलाई करते हैं तो जिधर सुई जाती है, उधर ही धागा जाता है।

काणक्या सो जवान, छैल छबैयो।
छीलो नळ्ई तव उऽ चलैयो॥
दुबले-पतले छैल-छबीले जवान की गर्दन छीलो, तब वह चलता है।
- पेंसिल। जो बिना छिले नहीं चलती है।

नानी सी गड़ू मऽ बत्तीस लाड़ू।
छोटी लुटिया में बत्तीस लड्डू हैं।
- मुख में बत्तीस दाँत।

काळई गाय का लाल बच्चा।

छोड़ऽ नी उ अपणू रस्तो सच्चा॥

काली गाय के बछड़े लाल हैं। वे इतने सच्चे हैं कि अपनी माँ के पीछे ही चलते हैं। रास्ता नहीं छोड़ते हैं।

– लौह पथ गामिनी यानी रेल। रेल का इंजन काला एवं बाकी डिब्बे लाल होते हैं, जो सदा अपनी पटरी पर ही चलते हैं।

काळई गाय कांटा खाय।

पाणी कऽ देखीनऽ झरपी जाय॥

काली गाय काँटे ही खाती है, परन्तु पानी को देखकर झेंप जाती है, डर जाती है।

– चमड़े के जूते-चप्पल। जूते-चप्पलों में काँटे चुभते रहते हैं, पर पानी में वे जल्दी खराब हो जाते हैं।

चार पाय, आठ सींग, ओका अद्धर मकान।

मकान मऽ नर, नर का हाथ मऽ नारी॥

नारी का पेट मऽ नर कऽ धरी नऽ फेकी मार्‌यो।

चार पैरों के ऊपर आठ सींग। उसके ऊपर मकान। मकान में नर। नर के हाथ में नारी। नारी के पेट में नर को रखकर फेंक मारा।

– चार बल्लियों के ऊपरी सिरे पर कुल आठ सींग जैसे दिखते हैं, उस पर मकान जैसा 'माळ्या' बनाते हैं। तिस पर एक नर व्यक्ति खड़ा होकर हाथ में गोफन (नारी) में पत्थर (नर) रखकर पशु-पक्षी को मारकर फसल की रक्षा करता है।

पांच माथा पन्द्रह पांय, पांचई चलऽ येक सांय॥

पाँच सिर व पन्द्रह पैर एक साथ कार्य करते हैं।

– अनाज बोने की तिफन। यह जब चलती है तब उसमें पाँच सिर होते हैं, जिसमें दो बैलों के, एक किसान का, एक बोने वाली स्त्री का तथा एक स्वयं तिफन का होता है। इन पाँचों के कुल पन्द्रह पैर हो जाते हैं, जिसमें दो बैलों के आठ, एक किसान के दो, एक स्त्री के दो तथा तीन पैर तिफन सहित पन्द्रह हो जाते हैं। ऐसे जब खेत में अन्न की बुवाई करते हैं तब ये सभी पाँचों के पन्द्रह पैर एक साथ चलते हैं, तब सम्पूर्णता से सही बुआई होती है। यह पहेली बिहारी के दोहों जैसी छोटी है पर तिफन से बुवाई की सारी प्रक्रिया कह जाती है।

बाप बड़ो बेटो बड़ो, नात्यो बड़ो अमोल।

ओखऽ पैदा करी गया, दुई कौड़ी को मोल॥

बाप-बेटे दोनों महत्त्वपूर्ण हैं तथा नातिन तो सर्वाधिक अनमोल है, पर ये तीनों मिलकर जिसे पैदा कर गये वह वस्तु दो कौड़ी के भाव की रह गई है। उसे लेना कोई पसन्द नहीं करता है।

– दूध, दही, घी एवं छाछ। बाप–बेटे दूध–दही बड़े महत्त्व के हैं, इनका नातिन घी तो बड़ा अनमोल होता है, लेकिन इन तीनों के द्वारा जो आखिरी में छाछ बचा वह दो कौड़ी के भाव का रहता है।

अचकण, भटकण, बाजूबंद लटकण।
खायी करीनऽ फिरि मकऽ याद करजो तम॥

तितर–बितर नारी की भुजा पर बाजूबन्द बँधा है। भोजन कर लेने के बाद उसकी याद आती है।

– झाड़ू। इसमें फड़िये ही फड़िये होते हैं और पकड़ने की मूठ बड़ी सुन्दर होती है। जैसे झाड़ू ने बाजूबन्द बाँध लिया हो। हमें सदा भोजनोपरान्त ही झाड़ू लगाने की याद आती है।

चार भाई अक्कड़–मक्कड़।
दूई भाई सूखा लक्खड़॥

छः भाइयों में चार हृष्ट–पुष्ट हैं एवं दो भाई सूखे हैं।

– पशुओं के चार पैर और दो सींग।

हजार नकऽ चाळणु, नऽ येक कऽ दाबणु॥

हजारों को उलट–पलट करना, परन्तु दबाना सिर्फ एक को?

– चावलों को पकाते समय सरिये से सारे चावलों को उलट–पलट करना पड़ता है, परन्तु पके कि नहीं, यह देखने के लिए एक चावल को ही दबाकर देखना पड़ता है कि पके या नहीं?

दुई मुंडा साकड़ा, नऽ येक मुंडो चवड़ो।
ओखा मऽ आधो समई गयो, उ मुंडो केवड़ो॥

दो मुख सँकरे एवं एक मुख चौड़ा है, लेकिन वे दोनों मुख एक में ही समायोजित हो गये, वह मुखड़ा कितना बड़ा होगा?

– पायजामा। यह नीचे दो भाग एवं ऊपर एक भाग में बना होता है। इसे पहनने वाले व्यक्ति का शरीर आधा ढक जाता है।

नानी सी डेबरई, डेबर्‌यो सो पेट।
कां जाय डेबरई, राणा का देश॥
आवसे राणू फोड़से पेट।
आंतड़ा बगळावसे देशम् देश॥

छोटी–सी बालिका का छोटा–सा पेट है। कहाँ जा रही हो? राणा के देश में। राणाजी आयेंगे तो तेरे पेट को फोड़ डालेंगे। एवं तेरी अंतड़ियों को छारम–छार कर देंगे।

– संजोरी। यह दीवाली का विशेष पकवान है।

छोटी बड़ी तीन टांग,फिरी चलऽ याणी सांझ॥

उसकी छोटी तीन टाँगें हैं। वह सदा अनवरत चलायमान रहती है।

– घड़ी, जिसका नियम ही चरैवति–चरैवति।

माटी को घोड़ो, लखोण्डा की लगाम।

ओका पऽ बठ्या गद्–गद् राम॥

मिट्टी के घोड़े को लोहे की लगाम लगाई गई, उस पर गद्गद् राम विराजते हैं।

– चूल्हा, तवा एवं रोटी। मिट्टी का घोड़ा यानी चूल्हा, उस पर लोहे की लगाम तवा है तथा इस तवे पर जब रोटियाँ सेकते हैं, तो वे रोटियाँ नरम–मुलायम होती हैं। उसे परमात्मा से कम नहीं आँका जा सकता।

श्याम–वरण मुख उज्जवल केत्ता, रावण शीश मंदोदरी जेत्ता।

राम–पिता सी देवागा, पवन–सुत सी लेवागा॥

जिसका रंग काला एवं मुँह उज्ज्वल है, वह वस्तु क्या भाव दोगे? इस पर दुकानदार कहता है– रावण, मन्दोदरी के सिर के बराबर भाव हैं। इस पर ग्राहक ने कहा– कुछ कम ज्यादा होगा या नहीं? तब दुकानदार ने कहा– राम पिता के भाव से दे देंगे। तब ग्राहक ने कहा– हम पवनसुत से लेंगे। तुम दोगे। इस पहेली में दुकानदार एवं ग्राहक में पहेली की भाषा में ही वार्तालाप हुआ है।

– इस पहेली में दुकानदार सामान लेकर बैठा था। उनमें से उसने छिलके वाली उड़द की दाल का भाव पूछा, जो काले वर्ण की होती है एवं उसका मुख सफेद होता है। तब दुकानदार भी पहेली में जवाब देते हुए कहता है कि– रावण, मन्दोदरी शीश के बराबर भाव है, अर्थात् रावण के दस शीश एवं मन्दोदरी का एक यानी कुल ग्यारह रुपये किलो के भाव से दूँगा। इस पर ग्राहक ने और कम करने को कहा तो दुकानदार ने कहा– राम पिता अर्थात् दशरथ का भाव यानी दस रुपये किलो दे दूँगा।

तब ग्राहक ने कहा–पवनपुत्र याने हवा में साफ करके लूँगा, देना हो तो दो।

खेलऽ पांय फैलई नऽ खेलऽ।

येक हाथ सी फैरऽ नऽ दूसरा सी मेलऽ॥

यह खेल पैर पसार कर खेलती है, जिसमें एक हाथ से किसी वस्तु को घुमाते जाते एवं दूसरे हाथ से कुछ इस वस्तु में मिलाते जाते हैं।

– घट्टी में अनाज पीसना, जिसमें पैरों को फैलाकर बैठते एवं एक हाथ से घुमाते जाते एवं दूसरे हाथ से अन्न घट्टी में डालते जाते हैं।

काळई गाय गोळ्ई खाय।

ओकऽ देखीनऽ चोर भागी जाय॥

इस काली गाय को देखकर चोर भाग जाते हैं, जिसका भोजन गोली है।

– बन्दूक। जो गोली खाती भी है और खिलाती भी है। उसे देख चोर–डाकू नौ दो ग्यारह हो जाते हैं।

काजळ सी कचमच, कंकू सो सिंगार।
अहिल्या बाई छज्जऽ बठी, लोग देखऽ हजार॥

काजल सा कचमच और कंकू का शृंगार किया है, जिस पर ऐसा लगता है, जैसे अहिल्या माता अटारी पर बैठकर सबको देख रही है, निहार रही है।

– टेसू के फूल। जो कंकू जैसे लाल एवं उसके बीज काजल जैसे काले होते हैं। ऐसे सुन्दर फूलों की शोभा ऐसी है, जैसी निमाड़ की लोकमाता अहिल्या माँ किसी अटारी पर विराजित सबको निहार रही हों।

झाड़ ओका थामक–थैया, पान ओका थाळई।
देखणऽ मऽ श्याम सुन्दर लगऽ, बैठक ओकी काळई॥

यह वृक्ष 'ता–था–थैया' जैसा नृत्य करता सा टेढ़ा–मेढ़ा सुन्दर है। इसके पत्र थाली के समान हैं। इसके फूल सुन्दर हैं, जिनकी बैठक काली है।

– टेसू के फूल। इसके फूल औषधि भी है, जो शरीर का ताप कम करने के काम आते हैं।

पान लावजे फूल लावजे, अरु लावजे काकड़ी।
म्हारा पैसा पछा लावजे, अरु लावजे लाकड़ी॥

इस वृक्ष के पत्ते, फूल, फल एवं लकड़ियाँ भी लाना और मैंने जो पैसे दिये, वे भी वापस लाना यानी सब चीजें खोलकर वन से लाना जो सहज में मिल जायेगा।

– आक का वृक्ष। आक के पत्र, फूल, फल एवं लकड़ियाँ – सभी सामग्री बड़ी सरलता से पूरे निमाड़ में मिल जायेगी, जिसे लाने में कोई पैसे भी नहीं माँगेगा। इस आक का पंचांग औषधि है। इसके पुष्प महादेव को अर्पित होते हैं।

गोड़ थम्बो पान लम्बो।
फळ खायो पण बीजो नी पायो॥

इस पौधे के पत्ते लम्बे हैं, परन्तु फल तो सबने खाया, लेकिन किसी ने आज तक बीज नहीं देखा।

– केले का पौधा, जिसके पत्र लम्बे होते हैं पर बीज नहीं होते हैं।

सबई भाई नको येक जुग।
सभी भाइयों का एक मन है। इकट्ठे रहते हैं।
– लहसुन।

उप्पर सी कयड़ो, भीत्तर सी नरम।
जेकऽ दान करनऽ को, बड़ो छे धरम॥

यह ऊपर से कठोर एवं अन्दर से नरम है, जिसे दान करने का बड़ा पुण्य कार्य माना जाता है।

– श्रीफल अर्थात् नारियल।

नानी सी दड़ी, दग्गड़ सी लड़ी।
छोटी-सी है, पर पत्थर से लड़ने की शक्ति है।
- सुपारी।
जिसे गाँव वाले सरोंते के अभाव में पत्थर से फोड़कर खाते हैं।

अद्धर सी पड़्यो पट, ओको लाल चट।
ऊपर से पट से गिरता है, उसका लाल होता है।
- जामुन।

माय कुटाय, नऽ बेटी गड़बड़ऽ।
माय फुकाय, नऽ बेटी चुड़ऽ॥
जब माँ पिटाती है, तब बेटी गड़बड़ती है तथा जब माँ जलती है तब बेटी पकती है।
- जब तुअर को उसके पौधे से अलग करते हैं तो पौधे को पीटते मारते हैं, तब तुअर यानी बेटी इधर-उधर उड़ती-गड़बड़ती है तथा जब तुअर या उसकी दाल को पकाते हैं तब चूल्हे में उसी तुअर की काष्ठ को जलाते हैं।

यायेण का घांघरा मऽ, याई को माथो।
समधन के घाघरे में समधी का सिर है।
- मक्की का भुट्टा।

फुई फुस्सक नऽ कुवों फुद्दक।
एक कुँए में फुद्द-फुद्द एवं फुस्स-फुस्स की आवाज होती है।
- ऐसा तपेली में थूली पकाने की प्रक्रिया में होता है।

अलेग सी जाय धवळो बईल।
ओलेग सी आवऽ लाल बईल॥
इधर से सफेद बैल जाता है तथा उधर से लाल बैल आता है।
- कड़ाही में पुरिया तलना।

हाथ बाध्या पांय बाध्या, गळा मऽ नाखी फांसी।
बन्नम अद्धर चइढ़ी बठी, वा बाई छे कसी॥
हाथ बाँधे, पैर बाँधे और गले में रस्सी डालकर एक स्त्री मनुष्य के ऊपर चढ़कर बैठ गयी है, वह स्त्री कैसी होगी?
- मसक का बाजा। जिसे बजाने हेतु उसे पूरे शरीर से बाँधना होता है तथा एक रस्सी गले में भी रहती है, तब वह बजता है।

बीसई नका माथा काट्या।
नई मर्‌या नऽ नई रड़्या॥

बीसों के सिर काटे फिर भी वे न मरे, न ही रोये।

– हाथ–पैरों के बीस नाखून, जिन्हें काटने पर दर्द नहीं होता है।

खूंटी पऽ खेत, फळ अल्गग–अल्गग लगज।
पण पाकज येकट्ठा।

एक खूँटी के ऊपर खेत है, पर खेत में फल एक के बाद एक लगते हैं, पर वे पकते सभी इकट्ठे हैं।

– कुम्हार द्वारा अपने चाक पर मटके बनाना एवं पकाना। मटके बनते एक–एक हैं, पर पकाई एक साथ होती है। मटके पर एक पहेली और देखें–

घर मऽ ठोक्यो, अंगणा मऽ ठोक्यो।
नऽ ठोकम ठोक मचाई।
घरवाळा नऽ असो ठोक्यो, पर घर ठोकावा जाई॥

घर में ठोका, अँगने में ठोका। उसके साथ सदा ठोका–ठोकी होती रही। पराये घर पर जाकर भी वहाँ पर उसे सबने ठोका।

– कुम्हार द्वारा मटका बनाने से बेचने तक वह ठुकाता रहता है।

दिन मऽ भरेल रात मऽ खाली।
नई ताड़ो तो खोपड़ी खाली॥

दिन में भरी हुई एवं रात्रि में खाली हो जाती है। यदि वार्ता नहीं बूझी, तो तुम्हारा दिमाग भी रिक्त समझूँगा।

– मांची।

रात मऽ पड़ेल दिन मऽ उबी।
इनी वार्ता की कांई छे खूबी॥

ये रात्रि में उपयोगी रहती एवं दिन में उसे खड़ी करके रिक्त छोड़ देते हैं। इस पहेली का महत्त्व बताओ?

– चारपाई। जो रात्रि में शयन हेतु उपयोग करते एवं दिन में रिक्त छोड़ देते हैं।

इनी दुनिया का पाँच आश्चर्य बताव?

इस संसार के मुख्य पाँच अजूबे बताओ?

(1) जीभ में हड्डी नहीं होती है। (2) केले के बीज नहीं होते हैं। (3) आकाश बिना खम्बों के टिका है।

(4) पान के बीज नहीं होते हैं। (5) सर्प के कान नहीं होते हैं।

दुई बईड़ा नका बीच मऽ, नहार डकारज।

दो पहाड़ों के बीच में शेर दहाड़ता है।

– पादना।

देखऽ तो देखाय नी, पकड़ऽ तो पकड़ाय नी।
नऽ दाबऽ तो दबाय नी, नई समझ तो तड़ाय नी॥

देखें तो दिखे नहीं, पकड़ें तो पकड़ में नहीं आये एवं दबाव दे तो दबे भी नहीं। जरा ठीक से समझना वरना पहेली को बूझ नहीं पाओगे?

– हवा (वायु)।

अलेग गई, वलेग गई, काई मालम, कलेग गई॥

इधर गई, उधर गई, क्या पता किधर गई?

– निगाह (दृष्टि)।

हां सी फेकी रास, गई नरबदा पार।

यहाँ से रस्सी फेंकी तो तुरन्त नर्मदा पार चली गयी।

– दृष्टि यानी नजर।

येक डब्बी मऽ, आग का बीजा।

एक डिबिया में अग्नि के बीज हैं।

– माचिस।

तीन अच्छर को म्हारो नाव, उल्टो-सीधो एक समान॥

तीन अक्षर का मेरा नाम, जो उल्टा-सीधा दोनों तरफ से एक है।

– डालडा।

बर्फ का कट्टा पऽ लगी आग।

बर्फ के टुकड़े पर आग लगी है।

– कपूर।

काळो घोड़ो, सफेद सवारी।
येक का बाद, येक की वारी॥

काले घोड़े पर सफेद व्यक्तियों की सवारी एक के बाद एक चलती रहती है।

– काले तवे पर सफेद रोटियाँ एक के बाद एक सेंकना।

हऊ आई थी लेणऽ तुकऽ, तु लई बठ्यो मकऽ।
येक बार छोड़ी दऽ मकऽ, तो लई जाऊ घर तुकऽ॥

मैं जिसे लेने गई, उसने ही मुझे बिठा लिया। इस पर मैंने कहा एक बार मुझे छोड़ दे तो तुझे मैं अपने घर ले जाऊँ।

– पानी। एक बार एक महिला पनघट पर पानी लेने गयी तो वर्षा होने से वह वहीं बैठ गयी और कहने लगी– पानी बाबा! तू एक बार बन्द हो जा, तो मैं तुझे घर पीने हेतु ले जाऊँ।

मैं आई लेवण तन्ने, तू ले बठ्यो मन्ने।
येक बार मन्ने छोड़ दे, तो ले जाऊ घर तन्ने॥
– पानी।

येक कऽ मारीनऽ हजार को भेद लियो।
एक को मारकर हजार का भेद लिया।
– चावल या दाल पकाते हैं तो पूरे तपेले में से एक–दो दानों को दबाकर देख लेंगे एवं पता कर लेंगे कि चावल या दाल पके या नहीं।

पटेलण माय गाभणी, नऽ पटेल दाजी बोम दे।
पटेलन गर्भवती है, लेकिन चिल्लाता पटेल है।
– मोट और उसका कणा।

येक पोर्यो वोड़ूग मऽ भराया करज।
एक लड़का बागड़ में ही जाया करता है।
– डोळ्यो। बागड़ करने का यंत्र।

हाथ मऽ छे पण हथळई मऽ नी।
हाथ में है, पर हथेली में नहीं।
– बाल।

दुई भयसी नका मुंडा मऽ टोटो।
दो भैंसों के मुँह में एक डण्ठल है।
– बैलगाड़ी के आखे में दो तरफ के चाक।

सब लोग भागी गया, नऽ घर मऽ सोनो डाटी गया।
सभी लोग जाते समय घर में सोने को छुपा गये।
– चूल्हे में रखी आग।

नानो सो राजकुमार, कपड़ा पेरऽ ऊ हजार॥
छोटा–सा राजकुमार एक के ऊपर कई वस्त्र धारण करता है।
– प्याज।

माय आई पेळ्ो पेरीनऽ,
बाप आयो गोदड़ो वयड़ी नऽ।
बेटो आयो दांत हिचकावतो॥
माँ पीला वस्त्र पहनकर आती है, पिता गोदड़ी ओढ़कर आता है तथा पुत्र दाँत दिखाते हुए हँसते आता है।

– कपास का पौधा। कपास के पौधे पर पुष्प पीले रंग का खिलता है, जो माँ का प्रतीक है। फूल के बाद डेडू (घेटे) मोटी परत से बना होता है, वह पिता है तथा जो डेडू में से कपास खिलता है, वह दाँत दिखाता नजर आता है।

पोकळई गुलर मऽ पांच अण्डा।
खोखली गुलर में पांच अण्डे हैं।
– जूते में पैर की पाँचों अंगुलियाँ।

अथळई मऽ कोथळई, कोथळई मऽ कांटो।
यायेणजी का घाघरा मऽ, याईजी को माथो॥
इधर–उधर जाली है और उसमें एक काँटा लगा है तथा समधनजी के घाघरे में समधीजी का सिर है।
– छाता (छतरी)।

बाप भरऽ, नऽ माय पोमाळऽ।
वार्ता ताड़ो, पड़ो मत तम चाळऽ॥
पिता भरता है तथा माँ सहलाती है। इस पहेली को बूझो, इधर–उधर की बातें छोड़ो।
– टट्टा (कुड़) भरते हैं पिताजी तथा उस पर मिट्टी–गोबर से छबाई–लिपाई माँ करती है।

घोड़ो नाचऽ बांग मऽ, दोरो म्हारा हाथ मऽ।
घोड़ा बगीचे में खूब नृत्य कर रहा है, लेकिन उसको बँधी डोरी मेरे हाथ में थामी हुई है।
– पतंग। पतंग नाचती आकाश में है, परन्तु उसकी डोरी अपने हाथ में रहती है।

हित्तू मऽ नी, भाई मऽ नी।
सगा मऽ नी साई मऽ नी, मिल ते काई?
न वह हितैषी है, न ही वह दोनों भाई–भाई हैं, न ही वे सगे–सम्बन्धी हैं और न ही वे भगवान और भक्त हैं, फिर भी दोनों खूब मिलते हैं।
– ऊखल और मूसल। जब ऊखल में अनाज कूटते हैं तो मूसल को बार–बार ऊखल से मिलाना पड़ता है।

काळई कराड़ धवळो पाणी।
तेमऽ नाचऽ भामा राणी॥
काली खाई में सफेद पानी है एवं उसमें एक भामा रानी नाच रही है।
– काले मटके में रवी के द्वारा दही बिलौना।

तळाव भरा था हिरण खड़ा था।
तळाव सूखा था तो हिरण भगा था॥
तालाब भरा था, तब तक हिरण खड़ा रहा एवं जब तालाब सूख गया तो हिरण भाग गया।
– चिमनी। जब तक तेल रहता है तब तक जलती है एवं तब तक प्रकाश भी रहता है।

फटो पेट दरिद्र नाव, उत्तम घर में वाको ठाम।
श्री अनुज विष्णु को सहारो, पंडत होय तो अर्थ विचारो॥
उसका पेट फटा हुआ है, वह दरिद्र है। जिसका निवास उत्तम स्थान पर होता है, वह लक्ष्मी माता का छोटा भाई है तथा जिसे विष्णु का आश्रय यानी सहारा प्राप्त है। कौन है इतने गुणों से सम्पन्न? यदि तुम पंडित हो, तो इस पहेली का उत्तर बताओ।
– शंख। जिसका पेट फटा एवं दरिद्र है। वह उत्तम स्थान यानी पूजास्थलों पर होता है। समुद्र में से निकलने के कारण लक्ष्मी का भाई कहलाता है तथा जिसे भगवान विष्णु सदैव अपने एक हाथ में आश्रित रखते हैं।

झाड़ को नाव छे, उ जड़ को नाव।
जड़ को नाव छे, उ झाड़ को नाव॥
जो वृक्ष का नाम है, वही उसकी जड़ का नाम है एवं जो उसकी जड़ का नाम है, वही उस वृक्ष का नाम है।
– सौजड़ का वृक्ष।

आरती वाळई को पेंदो नी,
नऽ दुल्हो को माथो नी हाई।
नऽ वराती का पाय नी हाई॥
आरती वाली की बैठक नहीं है, दूल्हे का सिर नहीं है तथा बाराती के पैर नहीं हैं। ऐसी शादी देखी है?
– चमगादड़, मेंढक तथा साँप।

राजा मोहन सेठ की ऊँटड़ी।
कान मिल नऽ ओकी पूँछड़ी॥
राजा मोहन सेठ की ऊँटनी की पूँछ एवं कान नहीं हैं।
– मेंढक (डेडर)।

उल्टो कुंवो बोम दे।
उल्टा कुँआ ध्वनि करता है।
– मन्दिरों में टँगी घण्टी या घण्टा।

चार बोट को झाड़, बत्तीस सेर को पाटो।
फळ लगज अल्ग-अल्ग, पाकज येकट्ठा॥

चार इंच का वृक्ष है, उस पर बत्तीस सेर का पाटा है। उस पर फल एक-एक लगते हैं, पर पकते इकट्ठे हैं।

- मटके बनाने का चाक चार इंच के खीले पर घूमता है, जिस पर मटके एक-एक बनते हैं, पर उनकी पकाई इकट्ठी की जाती है।

अत्तन ऐत्तो पत्तन, पोथी एत्ता पान।
मत कांटजो राणाजी, स्याळा मऽ आऊगा काम॥

हाथों के बराबर उसके पत्ते हैं, उस पर पुस्तक जितने पत्ते हैं। हे राणाजी! मुझे काटना नहीं, मैं शीत ऋतु में पुनः काम आऊँगा।

- अभई या अभयी। इसका पौधा चवला जैसा होता है। इसकी फलियाँ सेमल जैसी एक-एक फीट तक की लम्बी होती हैं। निमाड़वासी इसकी चटनी बड़े चाव से खाते हैं।

कुत्तरा सरीखी बेठक बठऽ,
चिचल्या सरीखी खाल।
ओकी दूम मिलऽ नी बाल॥

श्वान जैसी बैठक बैठता है तथा उसकी चिचल्या जैसी चमड़ी है। उसकी न पूँछ है, न शरीर पर बाल।

- मण्डूक या मेंढक।

बईड़ा का आड़ मऽ भयसी जणी।
अंगठो मोड़ीनऽ खीर खाई॥

पहाड़ के पीछे भैंसी का प्रसव हुआ, परन्तु खीर अँगूठा मोड़कर खाई।

- टेमरु का फल। पहाड़ में अँगूठे को मोड़कर ही खाया जाता है।

हाथ हथळई, चम्पा कली।
समुन्दर मऽ छोड़ी तो तिरती चली॥

हाथों से बनाकर चम्पाकली को समुद्र में छोड़ा, तो वह तैरने लगी।

- कड़ाही में पूरियों को तलना।

येक पैसा पऽ टीम-टीम।

एक पैसा टिमटिमाता है।

- चिमनी।

आज्या का याव मऽ, नात्यो परसऽ दाळ।

दादा के विवाह में नातिन दाल परोसता है।

– उरचणा। दादा मटका होता तथा उसका ढक्कन पिता तथा उस मटके में से पीने हेतु जिस बर्तन द्वारा पानी उलीचते हैं उसे 'उरचणा' कहते हैं, जो नातिन कहलाता है।

येक बिल्लास को लाखड़ो।
साड़ा-आठ बुरका को काई आवज॥

एक लकड़ी एक बालिस्त की है, उसमें आठ पूरे छेद व एक आधा छेद यानी साड़े आठ छेद किये हुए हैं। ऐसा क्या होता है?

– कंट्या। यह निमाड़ी शब्द है, जिसे 'कंड्या' भी कहते हैं। यह लकड़ी की ढक्कनदार टोकनी है, जिसमें चार टोकनी में पूरे छेद आते एवं कुछ रखने हेतु एक आधा छेद बाकी चार छेद ढक्कन में आते हैं। ऐसे कुल साढ़े आठ छेद आते हैं। इसका बैलगाड़ी के चाकों में 'तेल-चिन्दे' देने में उपयोग करते हैं।

हां बी नी व्हां वी नी, लंदन का बजार मऽ नी।
छिलऽ तो छिलको नी, नऽ चूस तो गोटळई नी॥

वह यहाँ-वहाँ कहीं नहीं मिलती है। लंदन के बाजार में भी नहीं मिलती है। उसको छीलें तो छिलके भी नहीं होते हैं। उसे चूसते हैं, पर गुठली नहीं है।

– ओले। जो ओलावृष्टि में ही प्राप्त होते हैं।

हरी छे मन भरी छे, नौ सौ चुन्नी जड़ी छे।
राजा आगणऽ खड़ी छे, सावड़ जाई पड़ी छे॥

वह हरी भरी है, नौ सौ नगों से जड़ित है तथा राजा के आँगन में है। अभी तो वह गर्भवती स्त्री जैसी सोई है।

– पत्तल। जिसे बनाने में कई पत्तों को तिनकों से जोड़-जोड़कर बनाना पड़ता है। उपयोग करने के पूर्व इसे खराब न हो, इस हेतु गर्भवती स्त्री जैसे कपड़ा ढाँककर रखना पड़ता है।

माय घुम-घुमऽ, बेटी की छूटऽ घाणी।
पणिहारी जवाब दईनऽ, फिरी उतारसे पाणी॥

माँ घूमती है तथा बेटी की घाणी छूट रही है। हे पनिहारिन! पहले मेरी पहेली बूझना तब पानी के बर्तन सिर पर से उतारना।

– घाणा और तिल्ली। घाणा घूमता है तो तिल्ली से तेल निकलता है।

उबऽ-उबऽ करऽ, नऽ नीवड़-नीवड़ देखऽ।
नऽ बठऽ-बठऽ हेड़ऽ, दाबी-दाबी धरऽ॥

उसे खड़े-खड़े करते हैं, झुक-झुककर देखते हैं तथा नीचे बैठकर उसे निकालते हैं। दाब कर रखते हैं।

– दही बिलौने की पूरी प्रक्रिया। दही को खड़े-खड़े मथा (मंथन) जाता है, मक्खन बना कि नहीं झुककर देखते रहते हैं। अन्त में उसे नीचे बैठकर दाब-दाबकर निकालते हैं।

अव मकऽ घर मऽ बठाड़, नी तो म्हारो छत्तर बधाड़।
अब मैं पूरी बन गई, अतः मुझे घर में रखो या मेरा छत बनाओ।
– मिट्टी की कोठी।

सती नारी पलंग पऽ सूती, सवतऽ-सवतऽ पति पऽ मूति।
ओको पति अति सुख पावऽ, पंडित होय तो अर्थ बताव॥
एक सती नारी पलंग पर सोती है तथा सोते-सोते ही अपने पति पर जल चढ़ाती है। इससे उसके पति को सुख मिलता है। ज्ञानी हो तो पहेली बूझो?
– महादेव मन्दिर में शिव-लिंग के ऊपर पानी झरती झारी।

येक नारी असी भरकोळा, वोका छे सौ-सौ- डोळा॥
एक अलमस्त नारी की सौ-सौ आँखें हैं।
– आटा छन्नी।

दुई राणी नऽ कुण?
दो रानियाँ कौन हैं?
– (1) देवरानी और (2) राजा की रानी।

दूर देश सी आयो जवान। माथा पऽ टोपी, चार कान॥
दूर देश से एक जवान आया, जिसके सिर पर एक टोपी एवं चार कान हैं।
– लौंग।

सब लोग भागी गया, भोगळई रांड कऽ कोडी गया।
सभी लोग घर से गये, पर खोखली स्त्री को छोड़ गये।
– अनाज भरने की कोठी।

लम्बी-लम्बी गोळ छे, केशरियो छे रंग।
ग्यारऽ देवर छोड़ीनऽ, बठी जेठ का संग॥
वह लम्बी-लम्बी और गोल है। उसका रंग केशरिया है, परन्तु वह ग्यारह देवरो को छोड़कर जेष्ठ के साथ बैठ गई है।

– सिंडोळा। यह खजूर की जाति का वृक्ष है और फल भी। जो खजूर एवं ताड़ के वृक्ष के समान ही ऊँचा-लम्बा होता है तथा फल खजूर जैसे ही रंग के केशरिये व गोल होते हैं, पर आकार में खजूर से छोटे होते हैं। यह सिंडोळा के फल लम्बे-लम्बे एवं गोल-गोल होते हैं, जिनका रंग केशरिया होता है। यह सिंडोळा के फल सदैव वर्ष के ग्यारह महीनों को छोड़कर ज्येष्ठ माह में ही फलते-फूलते हैं। जेठ के महीने में ही सिंडोळा फल लगते हैं।

जळ मऽ उपजऽ, जळ मऽ निपजऽ, जळ मऽ छाई प्रेमलताय॥

छत्तीस गौरी को सायबो, सासुजी मकऽ देवो लाय॥

वह पानी में उत्पन्न होता है, पानी में ही बनता है, पानी में ही उसकी बेल चलती है। वह छत्तीस गोरियों का सायबा है। हे सासुजी! मुझे लाकर दे दो।

– नमक। नमक के बिना छत्तीसों प्रकार के पकवान बेस्वाद रहेंगे। वह जल में ही पनपता एवं पैदा होता है।

वात करूँ तो ओकी म्हारी पड़ऽ छटी।

जाणऽ वाळा की सासु नऽ म्हारी सासु सग्गी माय बेटी॥

एक स्त्री और एक पुरुष आगे–पीछे रास्ते से जा रहे थे, तो उस स्त्री को एक अन्य स्त्री ने पूछा– यह आगे जाने वाले आपके कौन हैं? तब उसने पहेली में कहा– इनसे बात मैं करूँ तो मेरी और इनकी नहीं जमती है, हमारी दूरी बढ़ जाती है तथा इनकी सास एवं मेरी सास सगी माँ–बेटी हैं। अब आप सोच लो कि ये आगे जाने वाले कौन हैं?

– ससुर और बहू। दोनों की सासें आपस में माँ–बेटी होती हैं।

अरवर गंगा परवर गंगा,बीच कमल की झारी।

शंकर जी नऽ जटा फैलई, पार्वती पणिहारी॥

इसके आजू–बाजू एवं अन्दर–बाहर गंगा ही गंगा है। उसके बीच में भी कमल पुष्प जैसी गंगा की झारी है। उसके ऊपर शंकरजी ने अपनी जटाएँ फैला रखी हैं एवं पार्वती माता पनिहारिन बनी हैं।

– खेत में फलित प्याज। प्याज है। इसके हर छिलके में गंगा यानी पानी होता है तथा प्याज के भीतर बीचोंबीच का भाग भी तर–बतर कमल जैसी झारी जैसा प्रतीत होता है। प्याज के ऊपर उसके लम्बे–लम्बे पत्ते जटाओं जैसे ही दिखते हैं तथा नीचे जड़ें जमीन से पानी खींचकर पूरे प्याज को भेजती हैं। वह पार्वती पनिहारी कहलाई।

बाप बठन्या करऽ, बेटो थिगल्या भरऽ।

नात्या–पोत्या खेल–दवड़ऽ॥

पिता स्थाई है, बेटा वहीं का वहीं खड़ा होता एवं बैठता है तथा नात्ये–पोते खेलते–दौड़ते हैं।

– मटका, उसका ढक्कन एवं लोटा–गिलास। मटका स्थाई रहता है, ढक्कन खुलता–लगता रहता है एवं लोटे–गिलास पानी पीने–पिलाने हेतु पूरे घर में घूमते हैं।

कहे गजपति सुन रे हलपति, धरनीधर किन्ने मारा?

चार खम्ब ऊपर छत्तर, छत्तर मऽ छाया–छाया मऽ नर।

नर का बगल मऽ नारी, नारी का मुँह मऽ नर, उन्ने मारा धरनीधर॥

गजपति ने हलपति को पूछा– किसने धरनीधर को मारा? इस पर हलपति ने कहा– चार

खम्बों पर छत बना, उस छत की छाया में एक नर खड़ा था। उस नर के बाजू में एक नारी थी। उस नारी के मुख में एक नर था। उसी नर ने मारा इस धरनीधर को।

– गोफन का पत्थर। गजपति (महावत) ने हलपति (हल चलाने वाला किसान) से पूछा– इस धरनीधर यानी सूअर (वराह अवतार के कारण सुअर का एक नाम धरनीधर हुआ) को मारा है? इस पर किसान ने कहा– चार खम्बों के मचान पर उसकी छाया में एक मनुष्य ने अपने हाथ में गोफन (नारी) के मुँह में पत्थर (नर) रखकर इस फसल को नुकसान करने वाले सूअर को मारा था।

कांच की शीशी मऽ, कंचन का दाणा।
काँच की बोतल में कंचन के दाने हैं।
– अनार के चमकीले कंचन जैसे दाने होते हैं।

घेरदार घांघरो, गुलाबदार बूटी।
बजार मऽ गई, तो राणाजी नऽ लूटी॥
घेरदार घाघरे पर गुलाबदार बेल–बूटे हैं। वह बाजार गई तो राणाजी ने लूट लिया।
– अधपकी हरी मिर्च।

चार रंग चौरंग्या, फूल पड़ऽ येक रंग्या॥
चार चीजें अलग–अलग रंगों की हैं, लेकिन मिलने पर उनका रंग जो खिलता है वह एक ही प्रकार का होता है।

– पान का बीड़ा। पान के बीड़े में पान, कत्था, चूना एवं सुपारी – यह चार चीजें होती हैं। सबका रंग भी भिन्न–भिन्न होती है, परन्तु पूरे पान को चबाने पर केवल मुख में एक ही रंग लाल खिलता है या निकलता है।

हम आवता था, तम जाता था।
हमनऽ हँसी करी तो, तम रड़्या क्यों?
हम आते थे, तुम जाते थे। हमने आपको थोड़ा हाथ लगाकर हँसी–मजाक किया, तो तुम रोने क्यों लगे?

– बिच्छू। इसके द्वारा जरा भी डंक मारने पर हम उसके विष से तिलमिलाते हैं, रोने लगते हैं।

सेर भरीनऽ शक्कर,
थारा सी बी नी खवाय, नऽ म्हारा सी बी खवाय।
सेर भरकर शक्कर है, उसे न आप खा सकते हैं और न ही मैं।
– धूल, जिसे कोई नहीं खाता है।

गिड़भिड़ गुपूत, किलकिल कपूत।

काई छे थारा मऽ, कऽ म्हारा कान मऽ॥

उसके गड़गड़ाने की आवाज को हम सुनते व उसके मन की बात को जानना चाहते हैं।

– श्रीफल। नारियल खरीदने में हम उसे खूब हिलाकर एवं ठोककर देखते हैं। कान के पास हिलाकर उसके पानी की आवाज से पता लगाना चाहते हैं कि नारियल अच्छा है या अन्दर से खोटा।

गोल–मटोळ पर गेंद नी, लाल–लाल पर कुल नी।

हऊ आऊन खाणऽ का काम, सब जोण जाणज म्हारो नाव॥

गोल है, पर गेंद नहीं। लाल रंग है, पर फूल नहीं। मैं खाने के काम में आता हूँ, मुझे सभी जानते हैं।

– टमाटर।

गोल–गोल चकरी, गली–गली मऽ रस।

जी बी येनी वार्ता ताड़ऽ, पैसा मिलगऽ दस॥

बच्चों! गोल–गोल चकरी है, उसकी गली–गली में रस है। जो भी इस पहेली को बूझेगा, उसे दस पैसे मिलेंगे?

– जलेबी।

काळई, सफेद, लाल, रोटी, चार मुंडा सी खाऊ।

चार नकऽ बठाड़ीनऽ, अपणु भेद बताऊ॥

काली, सफेद, लाल रोटियाँ हैं जिन्हें मैं चार मुखों से खाता हूँ तथा चार व्यक्तियों को पास बैठाकर अपना भेद बताता हूँ।

– कैरम बोर्ड। कैरम बोर्ड में लाल, सफेद एवं काले रंग की गोटियाँ होती हैं, जिसमें उन्हें खाने के लिए चारों कोनों पर चार मुँह होते हैं।

कांटान, पिसान, वाटान, पण खाता नी।

उन्हें काटते हैं, पीसते हैं एवं बाँटते भी हैं, पर खाते नहीं।

– ताश के पत्ते।

हरी–हरी मच्छी का, हरा–हरा अंडा।

जल्दी म्हारी वार्ता ताड़ो, नी तो पड़गऽ डंडा॥

हरी–हरी मछली के हरे–हरे अण्डे हैं। यह पहेली बूझो वरना डण्डे पड़ेंगे।

– मटर की हरी–हरी फलियाँ।

जटा छे पण, जोगी नी, दूध छे पण मलई नी।

झाड़ पऽ रहूज पण पंछी नी, तीन डोळा पण शंकर नी।

मेरी जटाएँ हैं, परन्तु योगी नहीं हूँ। मुझमें दूध है, परन्तु उसमें मलाई नहीं है। वृक्ष पर रहता हूँ, पर पक्षी नहीं हूँ। मेरी तीन आँखें हैं, फिर भी शंकरजी नहीं हूँ। आखिर कौन हूँ?

– नारियल। नारियल जटाधारी, जिसमें दूध जैसा पानी है। उसकी आँखें भी तीन होती हैं। वह पेड़ पर फलता है।

येक धणी–बयरो का पांच डोळा।

एक दम्पत्ति की पाँच आँखें हैं।

– शिव–पार्वती। शंकरजी त्रिनेत्रधारी एवं पार्वती माँ की दो आँखें।

नाक पऽ बठीनऽ कान पकड़ूं।

कान नकऽ पकड़ीनऽ हऊ खूब अकड़ूं॥

मैं नाक पर बैठकर कानों को पकड़ता हूँ तथा खूब अकड़ता हूँ।

– चश्मा अर्थात् ऐनक।

आकाश मऽ माथो उठई नऽ, धरती मऽ दपड़ाव पाय।

येक कदम बी जिंगी मऽ, ओका सी चल्यो नी जाय॥

वह आकाश में सिर उठाकर धरती में अपने पैरों को छुपाता है। पूरे जीवन में वह एक कदम भी नहीं चलता है।

– वृक्ष, जो जिन्दगी भर स्थाई रहता है।

लाल–लाल डब्बा मऽ, छोटो सो छेद छे।

बंद करीनऽ ताळो लगज, ओका भीतर कांई भेद छे॥

लाल–लाल डिब्बे में छेद है। उसको बन्द करके उस पर ताला लगाया जाता है। उसके भीतर कैसे भेद होते हैं?

– लैटर–बॉक्स। जिसमें कई तरह की चिट्ठियाँ होती हैं।

आगर देख्या, सागर देख्या।

फळ का अद्धर पान्टो॥

ताल–तलैयों में मैंने फलों के ऊपर पत्ते देखे।

– सिंघाड़ा, जो पत्तों के नीचे लगे होते हैं।

उ देव नको छे सेनापति, दुई माथा नपऽ सिंग चार छे।

ओका सी अवखी दुनिया चलऽ, बकरा पऽ असवार छे॥

वे देवताओं का सेनापति है। उनके दो सिरों पर चार सींग शोभायमान हैं। उनकी सहायता

से ही दुनिया चलती है। वे ऐसे देव हैं, जो बकरे पर सवारी करते हैं। बताइए, ऐसे देव कौन हैं?

– अग्निदेव। उनके बिना यह दुनिया नहीं चल सकती है। यहाँ तक कि हमारा पेट भी जठराग्नि के बिना कुछ पचा नहीं सकता है।

तीन पाय की तितली, न्हाई–धोई नऽ निकली॥

तीन पैरों की तितली तालाब में नहा–धोकर निकलती है।

– समोसा। इसके तीन कोने होते हैं।

उ चलज सदा साथ मऽ, कदि हाथ मऽ आव नी।
घाम चांदणी मऽ घट–बढ़ऽ, इंधारा मऽ पाव नी॥

वह सदैव अपने संग चलती–फिरती है। कभी हाथों में पकड़ में नहीं आती है। धूप और चाँदनी में हर समय घटती–बढ़ती रहती है तथा अँधेरे में वह दिखती नहीं है, गायब हो जाती है।

– छाया। इस प्रहेलिका में छाया के सौन्दर्य की क्या खूब बेजोड़ कल्पना की गई है।

मालवी पारसी

श्रीमती निर्मला राजपुरोहित

श्रीमती निर्मला राजपुरोहित

अगण कुवा में घर कर्यो, पाणी माय करे रे निवास।
अजिया सुत को सबद ले, गज को पाछलो अंक॥
– कुम्हार का मटका।

वा तरकारी लावजो, चतर नार का कंत।
– मैथी।

अगवाड़े वाई तूमड़ी जी कई पछवाड़े गई वेल।
– कंचुकी (काँचली)।

इतरो सो मनीराम, इतरी बड़ी पूँछ।
ऊ जई रियो मनीराम बता म्हारी पूँछ॥
– सुई–धागा।

ओरा पे ओरो, जी का ऊपर घोड़ो।
छाती वे तो छोड़ो, नी तो उब्बा करम फोड़ो॥
– बन्दूक।

आम्बा की डारे दिवो बरे काजल पड़े रे खंडार।
आँजण वाली पातली ने निरखण वालो गँवार॥
– दवात–कलम।

आप कुँवारा बाप कुँवारा और कुँवारी मेहतारी।
पुत्र पिता ने गोद खिला रयो देख्यो ने वेदाचारी॥
– हनुमान।

आठ पग नो आँख, तीन सींग दो पूँछ।
इको अरथ बतावे, वाँके मूँड़े मूँछ॥
– नंदी पर बैठै शिव–पार्वती।

अन्दारा घर में ऊँट अयड़ाय।
– घट्टी–चक्की।

आकास ती उतर्‌यो हेमरो, जी ने माँस ने लोई कई नी।
– हवाई जहाज।

अन्दारा घर में घी को टपको।
– चाँदी का रुपया।

असो कसो पामणो माय, घर में सूतो आँगणा में पाँव।
– दीपक।

अरस परस दो बेनाँजी, वी तो मगरे चखा जाय।
एक खावे खारक खोपरो, दूजी खावेजी टोर॥
– तराजू।

अस्सी तोला को साँकलो, पड्यो बीच बजार।
चतर होय तो मोलवे, मूरख गोता खाय॥
– साँप।

अंदारी ओरी में मूँग वेराणा।
– मक्खियाँ।

एक अचम्भो में सुण्योजी, पिंडली ग्याबण होय।
पिंडली बेटा जण लिया जी, दूध काँ से होय॥
– वारू, नारूरोग।

एक अचम्भो में सुण्योजी, बेटी जायो बाप।
सिल डूबे बत्तो तरे जी, जल में छायो पाप॥
– घी, छाछ।

उज्जवल वरन् अधीनगत एक चरन दो म्यान।
दिखत में साधू लगे निरा कपट की खान॥
– बगुला।

ऊपर तासा नीचे सासा, बीच में लाल तमासा।
– मसूर।

एक ईंट चोसट कुवा–कुवे कुवे पणीयार।
– चोपड़।

एक अचम्भो में सुण्योजी, मुर्दो आटो खाय।
वतरावे बोले नई, मारे तो चिल्लाय।
– मृदंग।

एक कहानी में कूँ सुणले म्हारा पूत।
वना परोयो उड़ गयो बाँध गला में सूत॥
– पतंग।

एक टोपलो टोपला में कीणो।
जो म्हारा अरथाँ नी बतावे, वीको बाप मीणो।
– अफीम के डोडे।

एक जानवर ऐसो, जिकी दूम पे पैसो।
– मोर।

एक छोरो फरतो जाय, ने माथे पागड़ी बाँधतो जाय।
– चर्खे की अटेर।

ऊगतो ऊगे तो तराव भरे। डूबताँ ऊगे तो काल पड़े।
– इन्द्रधनुष।

एक खूँटापे बारा गाय, इन गायां के दो चरवाय।
– घड़ी।

एक थाल मोती से भर्यो, सबका माथे ऊँदो धर्यो।
– आकाश।

एक लुगई के बारा बोबा।
– सूअरनी, शूकरी।

एक लुगई ए बेल को सींग पकड़्यो।
– घट्टी का हत्था।

एक नाल का दो रखवाला।
– मूँछ।

एक नार दो के लई बेठी।
– पजामा।

एक लुगई का भारा भर गट्टा।
– खजूर का पेड़।

एक बयरा रोज दर में हाथ ल्हाके।
– काँचली पहनना।

एक बाई एसी के सरकेज नी।
– दीवाल।

एक नार सासरे जाय, आती जाती रोती जाय।
– चड़स का आना–जाना।

एक थी कुकड़ी चालता चालता थाकी गी।
लाओ छुरी काटो गर्दन, फेर ती चालवा लागीगी।
– पेन्सिल।

एक पछेड़ी में सो जणा, सबकी न्यारी सोड़।
– लहसुन।

गरमी में वो पेदा वे, धूप पड़े लेराए।
हे सजनी इत्तो कोमल हवा लगे कुमलाए॥
– पसीना।

गंगा गोदावरी चूला पाछे वावड़ी।
– स्त्री के गुप्तांग।

काली रोटी, धोरी दाल।
– मालफा व खीर।

काला खेत में दई को छाँटो।
– कपास।

गगन गगन रेंट्यो गत्रावे, तीन पगाँ को घोड़लो अकासे जावे।
– चीलगाड़ी, वायुयान।

काथो चूनो नागरपान, नर नारी के बावीस कान।
– रावण, मन्दोदरी।

कीड़ी चाली सासरे नो मण सुरमो सार।
– मेहन्दी।

कटोरा में कटोरो, बेटा बाप ती भी गोरो।
– नारियल।

काली कुतरी अगझग, तीन माथा दस पग।
– चड़स।

काला कुवा को पाणी हम काला हुई जावाँ जी।
– जामुन।

खापरी राँड को खालड़ो, लागे रे बड़ो हवाद।
– खारक।

कूड़ा पछाड़ी जनावरी बोले, विका अंडा बोल।
– अफीम के डोड़े।

काली थी कलगारी थी, काला वन में रेती थी।
लाल पाणी पीती थी, मरदानी चाल चालती थी॥
– तलवार।

काली कुतरी कबरा कान, काँ जाय कुतरी गामे गाम।
– पोस्टकार्ड।

कालो खेत कड़ब को भारो, खेंचूँ डोरी चलके तारो।
– दियासलाई।

काची केरी कचपची, पाकण दे दिन चार।
काची ने मत तोड़जो, म्हारो जीवन अकारथ जाय॥
– अवयस्क लड़की का विवाह।

काली गाय कोदो खाय, जीपे पादे ऊ मर जाय।
– बन्दूक।

काली गाय कमल को खूँटो, लात मारे दूध मीठो।
– शहद।

एक लुगई खाड़ा में कूदी।
– घाघरा।

काका के तो कान नई जी, काकी की तो सरदा नई हे।
तो बी काकी जात जिमाय॥
– तवा एवं मटकी।

काली गाय काँटा खाय। पाणी देखी ने भड़की जाय।
– जूता।

काली डाँड तोकाय कोनी, बूढ़ो बल्द्यो हँकाय कोनी।

– साँप, शेर।

एक सखी यूँ उठबोली म्हारा पियाजी गया परदेस।
वी लाया सुगन भर्या फूल वी फूल म्हारा पास धर्‌या था
जिका माय अगन भरी थी।
– लहसुन।

घेरदार घाघरो गुलाब दार साड़ी नाकादार लूटी।
– दीपक।

गाड़ी पड़ी उजाड़ में, काँटो लागे पाँव।
गोरी सूखे सेज पे, कह चेली किण दाय।
– जूड़ी नहीं।

गेरो फूल गुलाब को झलमल झोला खाय।
किके आदो, किके आखो किके हेई कोनी॥
– माँ–बाप।

घट्टी नीचे ऊँदरो ने माथे हे रूमाल।
– माकड़ी।

चम्पा की डोली म्हारे सिराने धरी।
सारी–सारी रात हूँ तो बासा मरी॥
– घासलेट।

घर से नागो निसर्यो, गोयरे कर्यो सिगनार।
– कपास।

गोल मोल चकरी, पीलो रंग पायो।
जणी लोगई ने हामे करी, वणी ने घणो भायो॥
– नथ।

चार कबूतर चार रंग। मेल में जाके एक रंग।
– पान।

घाघरो विको घेरदार, चोली विकी तंग।
बारा देवर छोड़के, गई जेठ के संग॥
– अरहर की फली।

घर में पीयर घर में सासरो,रोती आवे रोती जाय॥
– किवाड़ का पल्ला।

चार खूँट चोबारा, जीमें खेले दो वणजारा।
– चाँद, सूरज।

चार अँगार का थें भाभीजी, आठ अंगार का म्हे।
घणा रसीला थें भाभीजी घणा रंगीला में।
– आम और तोता।

चार हवेली सोला घर चौसठ कन्या एक ही वर।
– पुराना रुपया, आना पैसा।

चार खुण्या की बावड़ी भरी झकोला खाय।
हाथी जैसा डूबी मरे, मूरख गोता खाय॥
– ओस।

छे पग ने कमर कूबड़ी।
– मकोड़ा।

चार पगाँ को खोटलो लार्यो (बिछायो) बीच बजार।
– बावड़ी।

जरासो घी ने आखो घर लिपई जाय।
– दीपक।

चार भई चौरास्या, फूल पड़े एक रास्या।
– गाय के स्तन।

चार आँगर की वा, बाल वारी वा, यूँ मत जाणजो के वाळी वा।
– उम्बी, गेहूँ की बाली।

चार गरम चार नरम चार पिचकदानी।
बताओ तो बताओ नी तो मरे तमारी नानी॥
– गर्मी, सर्दी, चौमासा।

चाँद सरीको ऊजरो, रहे मीर के पास।
बनिया पुड़की बाँध दे, लेन पठाई सास॥
– कपूर।

चारी भई भोमर भट, वणा का मूँडा पे एक एक लट्ठ।
– पलंग या चारपाई।

छोटी सी छोकरी लाल बाई नाम, पेने हे घाघरो एक पइसा दाम।
– मिर्ची।

जूता के जलेबी लागी, हमने तोड़ी ने तमने चाखी।
– जूते की नाल।

जदी विका पियूजी दुकाने चाल्या उठ गोरी कमर पे बेठी।
– चाबी।

डाकण भूत लड़ी पड़्या, चुड़ेल छोड़ावा जाय।
– ताला, चाबी।

जाजम बिछइ चन्दण चोक में, म्हारा से समेटी नी जाय।
– धरती।

जदी नाक पे हूँ चढ़ जाऊँ, कान पकड़ तमें पढ़ाऊँ।
– चश्मा।

जल भरी झारी म्हारा सिराने धरी।
सारी-सारी रात हूँ तो प्यासा मरी।
– इत्र की शीशी।

टाँची ने सोनी घड़्यो, घड़्यो रे अजब सुनार।
निरख्यो पण देख्यो नई, रे गयो धरती माय।
– माँडने।

डाबे जो कँवरे नागणी, नम नम झोला खाय।
– स्त्री के नाक की नथ।

तले बिछाई गोदड़ी टाँगा वच ले।
माय घाल्यो पपैयो ऊपर पटापट दे।
– कुम्हार का बर्तन बनाना।

तीन पगाँ की टीपू राणी, खावे लकड़्या काड़े पाणी।
– चरखी।

तू चाल म्हूँ आयो।
– द्वार, कपाट।

डेली में बेठो नी सायबा डोकरो।
पामणा ने नगे आवे बाप जी॥
– कुत्ता।

तुरताँ-तुरताँ की डावड़ी ने तुरताँ रइग्यो पेट।
– रोटी।

तीन मईना की डावड़ी, लिकरी छबक छिनार।
– मिर्ची।

तीन पगाँ रो घोड़ल्यो, गयो जी सरवर पाल।
सरवर का पाछे फरिल्यो, फेर धणी खई जाय।
– सिंघाड़े।

थारी टीकी मिटे, थारो मंगल सुत्तर टूटे।
– बच्चा होने का आशीष। सास जब यह आशीर्वाद बहू को देती है तो वह दुखी होती है, क्रोध करती है। तब सास समझाती है कि तेरे बच्चा हो जो टीकी मिटाए और मंगलसूत्र तोड़े। यह अर्थ है। तो वह क्षमा माँगती है।

तुम ने तुल की चोरी करी, लीनी मेख चुराय।
मिथुन राशि ऐसी करी नगरी दीन जलाय॥
– राम, रावण, सीता, हनुमान।

तोड़े तो तोड़ाय नी, छबल्यो भराय नी।
– आकाश के तारे।

धनेरिया ने धाँसी वी, लिकर्‌यो खड़े बजार।
धमड़ धमड़ वा फरे, उड़धंगी विको नाम॥
– ढोल।

दन भरी रे ने रात खाली हुवे।
– रजाई की मांची, या गोदड़ मच्ची।

दो अजड़ किमाड़, दो बजड़ किमाड़, दो नाग लड़े।
दो दीवा बरे राजा की कँवरी न्याव करे॥
– मुँह, दाँत, कान, आँख और जिह्वा।

दूधाँ भर्‌यो वाटको, दे जमई के हाथ।
भावे तो पी लीजो, नी तो पाछो दो पोंचाय॥
– कन्या।

नाक काटी नीचे मेल्यो या कई हुई रे पंडित।
– घट्टी, खीला, माकड़ी।

धोली डाढ़ी को डोकरो, बास्ती पे करवट दे सजनियाँ।
– भुट्टा।

धोरो घोड़ो झरमर पूँछ।
– मूली।

नाना सा आल्या में गोपाल्यो नाचे।
– जीभ।

धोला कुवा को धोलो पाणी, धोली भवर की सेंजाणी जी।
सिल्ला ऊपर धरी सिलबटी, हम धोला हो जावाँ जी॥
– साबुन।

नदी जई ने पाणी लाओ, वेती नी लाणो बंधो नी लाणो।
– असो।

नऊ सो जण्या नऊ सो पेट में।
ने नऊ सो रम्मे गोद्याँ माय जी॥
– महुआ।

नानी सी छड़ी जमीन में गड़ी। रुमझुम करती मेल में चढ़ी॥
– जुवार।

नानी सी डब्बी में रम्भा बाई नाचे।
– जीभ।

नीचे फाटी ने ऊपर फाटली।
बीच में जड़्यो जड़ाव जी॥
– काँगसी, कँघी।

नानी सी छोरी राजा ने रोवाड़े।
– मिर्ची।

नानी सी गाय गुर-गुर दोड़े। देख रे भई म्हारी मक्की नी खाय।
– धनेरिया।

पत्थरे पतासा लगाओ जमई जी। हमने तोड़या ने तमने चाख्या।
– आकाश।

नानी सी डावड़ी, फूला बाई नाम। चड़ी गई डँगरी मारी अई गाम।
– बन्दूक।

नानीसी छोरी ने डेबरियो पेट, क्यूँ जाय वो छोरी गूँदी वाला खेत।
– खुरपी।

नाजुक नारी पिया संग सोए, अंग से अंग मिलाए।
पिय को बिछड़त जानि के संग सती हो जाय॥
– दीपक और बाती।

पन्दरे आया पामणा, पोली पोई रे एक।
आदी-आदी सबे खई, पन्दरमो आखी खाय॥
– चन्द्रमा।

धोली डाढ़ी को डोकरो, हाटे हाट बिकाय।
– प्याज।

परदे ओ सायबा वा चाली, अपणा पियूजी का लार।
– म्यान, तलवार।

फूलाँ भर्‌यो टोपलो, छाँटो दियो कुमलाय।
– बताशा।

पान सड़े घोड़ो अड़े, विद्या बिसर जाय।
रोटी जले अंगार पे, कइ चेला किण दाय॥
– फेरा नहीं, पलटाया नहीं।

फूलाँ भर्‌यो वाटको, छाँटो दे मुरझाय।
– आग।

बाप पोलो ने माँ पातली, बेटी घणी खराब।
– बन्दूक की गोली।

बामण प्यासो क्यूँ, ने गदो उदासो क्यूँ।
– लोटा नहीं था।

बाप भँडारियो, बेटो लखपति, पोतो खोज खोवण।
– बड़ा कलसा,मटका, लोटा।

बिन सुइजी के बिन तागो, पद्मणी गुँथे रूमाल ओ सजनियाँ।
– मकड़ी।

बाप विचे, बेटा विचे, दोयाँ विचे एक नार।
– छतरी।

बीसों का सिर काट लिया, ना मारा ना खून किया।
– नाखून।

बिना रे पगाँ को घोड़ल्यो, ढाल्यो ढोल बजाय।
उचकावो उचके नई जी, सुरताँ करो विचार॥
– माँडणा।

भैंस जणी पाड़ो पेट में चीको गयो गुजरात।
– अफीम के डोडे।

भींत फोड़ी ने भेरु निकल्यो।
– नारियल।

भरी तलई में हेल्यो लोटे।
– मक्खन।

माँ बेटी को एक नाम।
– इमली।

माँ जगल में, बाप पंगत में, बेटी रंगत में।
– खाँकरा, खाँकरे (पलाश) बाज–दोने, केसूड़ी का रंग।

म्हारा पीयर की असी बढ़ई, के बाँस पे कोड़ी चढ़ई।
– अफीम के डोडे।

माँ जाड़ी ने बेटी पतली, बेटो आग जंजाल।
– बन्दूक।

माँ बोड़ी, बेटी झींतरी, दोई को एक भरतार।
– आम।

मेवा की छाब म्हारे सिराने धरी।
सारी–सारी रात हूँ तो भूखाँ मरी॥
– पुष्पहार।

मूँड़ो कोनी तो बोलूँ पग कोनी तो चालूँ।
म्हने देखी काम पे जाय म्हने देखी पाछा घर आय॥
– घड़ी।

मोड़ जणी को रमधम, पत्ता जणी का थाली।
फूल जणीका सुन्दर पिन्दा जणीका काला॥
– केवड़े का पत्ता, पलाश का फूल।

रातो चूड़ो ने राती काँचली, रातो मारुणी रो भेस।
– मिर्ची।

रघु चाल्या रग पग, तीन माथा दस पग।
– हल चलाता किसान।

रंग्यो चंग्यो केवड़ो, धर्‌यो हे तखत बजार।
– चूड़ा।

राते खई लापसी, हवेरे आयो हवाद।
– मेहन्दी।

राँड की राँड भटकती जाय, गज का डोरा लटकाती जाय।
– सुई–धागा।

राती गोरी लीलो लुगड़ो।
– मिर्ची।

राधा वर के कर बसे, पाँच अक्खर गण लेवो।
पेलो अक्खर छोड़के, बचे जो हम के देवो॥
– सुदर्शन।

रूप रंग ने रस भरी, किरण करजो मोय।
ऐसी नारी भेज जो, भोर भए नर होय।।
–मोगरे की कली

राजन जाओ देसावर जी लावजो हल्दी ने हींग।
एक ऐसी चीज लाव जो, जीके वे चारी सींग॥
– लोंग।

रे सरदाराँ उठ सिद करो, रंग बिगड़ियो राँड।
आवडुताँ दिखे नई, जाताँ लागे वार॥
– नींद।

रुपया भरी वाटकी थारा ती भी नी गणाय।
ने म्हारा ती भी नी गणाय॥
– तारे।

लाय लागी ने घर बल्यो, घरधणी बेठो घर के माय।
– होला।

लाल छड़ी जमीन में गड़ी।
– गाजर।

लाल थारो घाघरो हरी थारी तोई।
बले थारो घाघरो सगला दन रोई॥
– मिर्ची।

लाल गाय लक्कड़ खाय। पाणी पीये तो मर जाय।
– आग।

लाल पीरी धोरी रोटी, चार मूँडा खऊँ।
चार पामणा कने बुलई ने सबका भेद हमजऊँ॥
– केरम बोर्ड।

लाल मूँजजी पेलो बारणो। हींगलू ढलाई हो देल।
के वो चतर म्हारी पारसी॥
– नथ।

लीलो चूड़ो लीली काँचली, लीलो मारुणी को भेस।
– हरी केरी।

लीली दाख जंगल को मेवो, जीको बड़ो रे हवाद।
जीमण बेठ्या शक्कर मिठाई, गुठली बायर काड़ो राज॥
– कुल्हाड़ी।

वाड़ी सूखे बाथलो कुए सुखे कचनार।
गोरी सूखे बाप के हीन पुरुष की नार॥
– अयोग्य पति की पत्नी।

वेंत भर लिमड़ी लिम्बोरियाँ लागी लटा लूम।
– चने का पौधा।

वन में गया लकड़ी काटी खाँची खाँची के सुतार धरे।
नो सो केलू, नो सो लाट, चरखा बनेगा तीन सो साठ॥
– रेलगाड़ी।

वी लाया डावा आली सोड़, वा सोड़ म्हारे सिराने धरी।
सारी-सारी रेन हूँ तो धरत्याँ पड़ी॥
– पलंग।

वाँकी थारी वाँसरी वजावा वारो कूण।
सुन्दर चाली सासरे मनावा वारो कूण॥
– नदी।

वात कूँ तो वार लागे हुँकारो दूँ तो पड़ूँ छेटी।
इकी सासू ने म्हारी सासू सग्गी माँ बेटी॥

– माम्या सास और भानजा दामाद। एक पुरुष के पीछे-पीछे एक महिला जा रही थी। राहगीर ने पूछा– अरी! यह जाने वाला पुरुष तुम्हारा क्या लगता है? तब उसने पहेली के माध्यम

से यह उत्तर दिया– बात कूँ तो वार लागे हुंकारा दूँ तो पड़ूँ छेटी। अणी की सासू ने म्हारी सासू सगी माँ बेटी। वास्तव में जाने वाला उसकी ससुराल पक्ष से भाञ्जा दामाद लगता था।

सबका पेलाँ हम हुआ।
– दूध।

सरग सीताफल लाग्या, म्हारा से तोड्या नी जाय।
– तारा।

सूर्या साँड घड़ुकियो, सिंगड़ा बीच वीकी पूँछ।
सोना सरकी पूतली, जीरा सरकी आँख॥
– बिच्छू।

सगग–सगग वा उड़े, सर सग्गी वीको नाम।
उड़ी ने आसमान तोले, वा कई हुई रे पंडताँ॥
– पतंग।

ससरा सूता, वऊ हलरावे, सोई जा सुसरा बागड़ बोले॥
– छाछ करना।

सुन्ना तो सरकी हो बेवई जी उल्ली।
चटक चुम्मा दई गई हो॥
– पीली भँवरी।

सब जगे टेड़ो चाले, अपणा बिल में सीदो जाय।
– साँप।

असी चटकारे के रोवणो नी आवे।
– भँवरी।

मैं तो अतरो छोटो सो, तम इतरा बड़ा।
में जरा सो अड़ी गयो, तम रोई पड़्या॥
– बिच्छू।

हरी थी मन भरी थी, लाख मोती जड़ी थी।
राजाजी के बाग में दुसाला ओड़े खड़ी थी॥
– भुट्टा।

हरी मैं कालो बच्चो, म्हने छोड़ म्हारा बच्चा ने खईजा॥
– इलायची।

हाट जाय बजार जाय, डेढ़को लटकाई जाय।
– ताला।

हँसी की हँसी ठिठोली की ठिठोली।
मरद की गाँठ लुगई ने खोली॥
– ताला, चाबी।

हा हा की थेली में हू हू का बीज।
– मिर्ची।

हाथ खइड़्या की काँचरी, पेरूँ वार तेवार।
– पत्तल।

हील–हील होलड़ी, अकास माथे खोलड़ी।
ऊका मूँडे पड़े लार ऊका पेट में पड़्या जमाल॥
– आम का टपकता रस।

गोरी ने काजल काली ने टीकी, कुप्यारी ने पान सुप्यारी ने मेंदी।
– विशेषता।

धरती की आरती चाँद सूरज का दीया।
बेन भई ने पूजन चाली पाँव का दिया॥
– आकाश में चमकने वाली बिजली।

पीली गाय विका नाना सा पग।
बड़ा–बड़ा मेलाँ में धक्का देती जाय॥
– आग

एक आदमी दस धोतियाँ पेरे।
– भुट्टा।

एक फकीर विका पेट में लकीर।
– गेहूँ।

लाल सफेद घोड़ो हरी विकी पूँछ।
थने नी आवे तो थारा बाप ने पूछ॥
– लाल सफेद प्याज।

काला खेत में शेर को पंजो।
– अदरक।

लाल थैली में हाय-हाय का बीज।
- लाल मिर्ची।

एक झाड़ पे डब्बी ज डब्बी।
- तिलहन का वृक्ष।

एक का पेट में बाल।
- आम।

गज-गज खम्बो, गजाधार लम्बो।
सोना की साँकल रुपा को खम्बो॥
- केला।

एक का पेट में दाँत घणा।
- सीताफल।

एक का पेट में दूध।
- नारियल।

ऊँची सी बाई का बड़ा-बड़ा दाँत।
- खजूर का पेड़।

चार चक्र चले दो भग चले।
आगे नाग चले, पीछे गोप चले॥
- हाथी।

एक डोयड़ो असो, नी थारा ती कुदाय, नी म्हारा ती कुदाय।
- साँप।

नानी सी डब्बी डब डब करे।
- आँखें।

खड़ा से खड़ा, ने बैठा तो इ खड़ा।
- पशुओं के सींग।

असो कसो पामणो, घर में हुवे ने आँगणे पग।
- दीपक।

एक पोर्‌यो राखोड़ा में लोटीर्‌यो।
- बाटी।

काली जावणी में धोरो पाणी, जीमे नाचे झाली राणी।
– छाछ मथने की रवई।

बलद्यो पाणी ने पीये, रस पाणी जी जाय।
– चिमनी।

पाँच पलई रतन तलई, जो या पारसी नी के विको बाप बलई।
– हथेली और पाँच उँगलियाँ।

गाय घूमती जाय, ने दूध देती जाय।
– घट्टी।

तीन पग की चम्पाराणी काचो आटो खाय।
दाल भात को भोग लगावे, सुबे साम न्हाय॥
– चकला–बेलन।

एक टेकरी पे टूल्लू मियाँ नाचे।
– उस्तरा।

नौ सो आड़ा ने नौ सौ टेड़ा, नौ सो बावन वीर।
जणे म्हारी पारसी नी बूझी, वणी का नाक में सौ सौ तीर॥
– छत पर कवेलू जो बराबर आड़े तिरछे होते हैं।

आमणी की भामणी सुन म्हारा भई,
बारा मासी तीस ग्या, बाकी वँचा काई।
– ग्यारह बचे, बारह महीने में से तीस दिन गये।

एक तरबूज की बारा चीर, हर चीर में तीस बीज।
– साल (तरबूज) मास (चीर) दिन (बीज)।

बाप बेटा दोई रोटी पकाई तीन, वाँटे कतरी कतरी आई।
– एक–एक क्योंकि बाप एक व बेटे दो हैं।

जारे जा बजार म्हारी सूरत को आदमी लाव।
– दर्पण।

आरकस बारकस सौ–सौ खूँटा।
गाय हे मारकणी दे मीठा॥
– शहद, मधुमक्खी का छत्ता।

काली गाय काटी खाय, पाणी देती ने डरी जाय।
– जूता।

अत्तीस नाड़ा बत्तीस नाड़ा, बना बलद्या का चल गाड़ा॥
– नाव, पाल की नाव में रस्सी बँधी होती है।

काली तरई में हेल्यो लोटे।
– मिट्टी की थाली में गुँथा हुआ आटा।

उल्टा-उल्टा म्हे चालाँ, उल्टी म्हाकी रीत।
ऐसो वजन मेलाँ के खाँदा लागे ने पीठ॥
– गोबर का लड्डू बनाने वाला कीड़ा।

धोरो खेत कारो बीज, वावा वारो गावे गीत।
– कागज-कलम।

छोटी सी डाबी रतन जड़ी उज्जेण्या में खबर पड़ी।
– चिट्ठी पत्री।

गाय को घोड़ो लोवा की लगाम।
वणी पे लाट्यो गिल-गिल्यो पठान॥
– चूल्हा तवा और रोटी।

बारा लुगई, घाघरो एक, विके बाजु-बाजु नाड़ा।
– बीड़ी का बंडल।

एक पड़ी एक उब्बी एक छमाछम नाची री।
– रोटी, पटले पर, तवे पर और अंगारे पर।

बीस मरद की मुँडी कटी।
– नाखून।

चारो पूळो लकड़ी खऊँ, पाणी पीता इ मरी जऊँ।
– आग।

तलवार से कटूँनी, गोली से मरूँनी।
उजाला से पैदा होऊँ, अंदारो देखो ने मरी जाऊँ।
– परछाई।

चालताँ–चालताँ बूड़ा बइग्या, चाल्या नी एक कोस।
नाती पोता एसा विया, तो चाल्या सो सो कोस।
– कुम्हार का चाक और बर्तन।

पीरो पोखर पीरा अंडा, वेगी वताओ नी तो दूँ दो डंडा।
– कढ़ी पकोड़े।

होट कनारे मोर नाचे।
– नथनी।

दादो खरदरो, बाप चीकणो, दोयता की मूँछाँ पे बाल।

– आम का पेड़ खुरदुरा, फल चिकना, गुठली की जटाएँ।

वच खेत में वायो ने मेढ़ पे उगो।
– घट्टी।

नीचे चोंटी ऊपर गठाण।
– चमगादड़।

माली का वाग में नी, राजा का राज में नी।
फोड़ो तो गुठली नी खाओ तो हवाद नी॥
– ओले, गार।

पाणी ती पतलो कुण, धरती ती बड़ो कुण?
अगन (अग्नि) से तेज कुण? ने काजर से कारो कुण?
– सत्य, पाप, क्रोध, कलंक।

घर मोटा टोटा घणा, बड़ा पियू का नाम।
अणी दुख से दूबरी मारग माथे गाम॥
– घर तो बड़ा है, परन्तु व्यापार में घाटा और हानि अधिक है, पति का नाम बड़ा है, घर मुख्य मार्ग पर होने से आगन्तुक अधिक आते जाते हैं। इन विभिन्न कारणों के दुख से दुबली हूँ।

पाँच पीपल ने पदम तरई।
– पाँचों उँगलियाँ और हथेली।

गाम में तो निकली गरब।
जीके दो हाथ ने एक पग॥
– ओब।

हऊ जो हड़े, पड़े जो हऊ के, फूटे जो हऊ के।
– खाद, पानी, चड़स।

बिंदा पाती की दऊँ रे आसीस, बेटा हो जो घर–घर बीस।
– अंगुलियाँ।

नानीसी इल्लड़ आखी तलई को पाणी पीगी।
– चिमनी।

मारवाड़ से अई ऊँटड़ी, दो मुँडा ने चार पूँछड़ी।
– कंचुली।

बोड़्यो बलद्यो हंकाय कोनी, ने काली डाँड उठाय कोनी।
– साँप और शेर।

सोवे ने सरकावे।
– दरवाजा।

लू चल मैं आयो।
– किवाड़।

नानी सी डावड़ी ए राजा की पाग उतारी।
– जूँ।

थारी माँ पे एक चड़्यो ने एक उतरे।
– सिर पर रखा पानी का बेड़ा।

नानी सी डावड़ी ने राधा ए रोवाड़ी।
– मिर्ची।

एक पछेड़ी में सो जणा, सबकी न्यारी–न्यारी सोड़।
– गेहूँ की बाली।

सबको ले बाप को नी ले।
– घूँघट।

मोती वेराणा चंदन चोक में, म्हारा से सोर्‌या नी जाय।
– तारे।

बाप बिचे बेटा बीचे, दोई बीचे एक नार।
– छतरी।

सरग सीताफल लाग्या, म्हारा से तोड़्या नी जाय।
– तारे।

काली गाय पूँछ ती पाणी पीये।
– चिमनी।

आठ पग ने कम्मर का बीच पूँछड़ी।
– तराजू।

एक भई हीदो ने एक भई उँदो।
– कवेलू।

गीला–गीला गोल मटोला, ऊपर हरिया डोरा।
– खरबूजा।

तलाव सुक्यो, हिरण भाग्यो।
– चिमनी।

तालाव भर्या था, हिरण खड़्या था।
– दीपक और ज्योति।

काली गाय कालजो मीठो।
– शहद का छत्ता।

नानी सीक डाबी में बत्तीस बाबा।
– दाँत।

राती गोरी लीलो लुगड़ो।
– मिर्ची।

जनम लइने, नी हाले नी डोले, नी बोले।
– अण्डे।

वन माता को बोकड़ो, मगरा पे चरवा जाय।
– कुल्हाड़ी।

आकास ती उतरी हेमरी, जीमे मास इज कोनी।
– हवाई जहाज।

घमड़–घमड़ वा फरे, उड़धँगी विको नाम।
– घट्टी।

एक चीज ऐसी लाजो जी, विके चारी सींग।
– लोंग।

लीलो आटो लाल पराठो।
– मेहंदी।

एक गोदड़ी ऐसी जो बारा मइना गीली रे।
– जीभ।

छोटी सी दड़ी जमीन में गड़ी।
– आलू।

टेड़ी–मेड़ी लाकड़ी पहाड़ चढ़ी जाय रे।
– धुँआ।

नाना सा झाड़का पे कालू बा लटकी रिया।
– बेंगन।

नानी सी फूलाँबाई ताड़ी में लोटे।
– बाटी।

गोरी थारा–थारा हाँते चार जणा।
– गोरी नागर वेल, चार जणा–कत्था, सुपारी, चूना, लोंग।

काली भैंस कोयलो ऊगले।
– बन्दूक।

एक तड़के बीस दौड़े।
– आम, आग।

आठ अठिंगन, बारा बेंगन चार चक्कू, दो तोर्‌या।
– कुत्ती, सूअरनी, गाय और बकरी के थन।

वा पछाड़ी, जनावरी, वा नी बोले विका अंडा बोले।
– अफीम के डोडे।

नानी सी गाय, गुर–गुर जाय।
देख गुवाळ जुवार नी खइ जाय॥
– धनेरिया।

जीमण बेठा शक्कर मिठई, गुठली बायर काड़ो।
पीली दाख जंगल को मेवो, जिको बड़ो रे हवाद॥
– खिरनी, खजूर और पेमली बेर।

आठ पगाँ ती आड़ो चाले।
माथो नी रे धड़ ई चाले॥
– केकड़ा।

भेरु चाल्यो डग–डग, तीन माथा ने दस पग॥
– हल हाँकता किसान।

नानी सी जनावरी ने सौ मनखाँ ने रोकी दे।
– बीड़ी।

बल्द्यो बेठो ने बाँधणी चरे, बोलो बेवइजी हरे–हरे॥
– कद्दू और बेलड़ा।

कानपुर को राजो, चाँदपुर में पकड़्यो।
हाथपुर में सजा दी, नखपुर में मार्‌यो॥
– जूँ।

काली–काली बकरी लाल–लाल बच्चा।
जाँ–जाँ जाय बकरी, वाँ–वाँ जाय बच्चा॥
– रेलगाड़ी।

छोटी सी डाबी आग की भारी।
– माचिस।

हरी थी मन भरी थी, लाख पत्ता जड़ी थी।
राजा ए होकम दीदो उकेड़े पड़ी थी॥
– पत्तल।

चार गाड़ी ने एक सवारी।
बल्द्या बदले, राम रे कतरी भारी॥
– मुर्दा।

डूँगर वायो वालरो, उगो घेर घुमेर।
आई बकरी चरी गई, वना दाँत बिन दाढ़॥
– बाल और उस्तरा।

दन भर चाले ने फेर भी वाँ को वँई।
बोलो तो म्हारा गुंगा जमईजी कँई॥
– पंखा।

एक तराव का दस किनारा।
विमे डोले रे दो वणजारां॥
– चाँद, सूरज।

लकड़ी का घोड़ा पे लोवा की लगाम।
– दरवाजा।

नानीसी छोरी घरे, हाथ भर की चोटी करे।
– सुई–धागा।

चार मिल्या चौसठ खिल्या, बीस रिया हे जोड़।
सज्जन ती सज्जन मिल्या, खिलिग्या सात करोड़॥
– दो–दो आँखें, बत्तीस–बत्तीस दाँत, दस–दस ऊँगली और सज्जन 3–1/2 + 3–1/2 = 7 करोड़।

धोली कुकड़ी ने वाँकी पूँछड़ी, गलो पकड़ी ने बेठी बाकड़ी।
– गले का आभूषण खंगाली।

म्हारा पियूजी गया परदेस, वी लाया गंगाजल झारी।
उका माय सुगन भरी थी॥
– इत्र की शीशी।

एक बइरा का दो नाना, दोई एक रंग।
एक फरे एक उब्बो रे, फेर भी रे संग॥
– चक्की का पाट।

कालो घोड़ो धोरी सवारी, एक का बाद एक की बारी॥
– रोटी।

भेंसोला से आयो भोपो, चार कान ने एक ज टोपो॥
– लोंग।

लाल घोड़ो हरी–हरी पूँछ, थने नी मालम तो काकाजी ने पूछ॥
– गाजर।

सात कबूतर ने सात रंग, दड़बा का मायते एक इज रंग॥
– पान को बीड़ो।

नावी घरे नी बजे, वण के नामे नाम।
सेजाँ भूली सुंदरी, मोकल दीजो शाम॥
– बाजूबंद।

दन चाले रात चाले चाले सवा हाथ।
– दरवाजा।

कान बरोबर कामणी, अंग से आँख मिलाय।
घोड़ो दबते कामणी को, जीव परायो जाय॥
– बन्दूक।

नानीसी डावड़ी फूलाँ बाई नाम।
चड़ी गई डुँगरी मारी लई गाम॥
– बन्दूक।

काली थी कंकाली थी, काला वन में रहती थी।
लाल पानी पीती थी, मरदाँ का चोगा लेती थी॥
– तलवार की म्यान।

लाल दरोब की काँचली पेरुँ वार तेवार।
– मेहंदी।

पेला जन्म्यो बेटो, पाछे जन्मी माय।
पाछे धक्काम धक्का में जन्म्यो म्हारो बाप॥
– दूध, दही, मक्खन।

खूँटा पे खेती करी, खला में लगई लाय।
असी अई माता पादरी, सूता बैठा खाय॥
– निमाड़ा, भट्टी।

एक हवेली लाखों बारी, बेठी चमेली डाली।
– शहद का छत्ता।

रात दन पाणी में रेवै, जिके हाड नी माँस।
काम करे तलवारी को, फेर पाणी में वास॥
– कुम्हार के चाक के पास कुंडे का धागा।

खड़–खड़ कागज वाजे, मिसरु झोला खाय।
बूझो राणा रावजी, कईं जनावर जाय॥
– उड़न खटोला।

पान सरीको पातलो, चन्दा सरको गोल।
जो या पारसी नी बूझे, ऊ भाटा को तोल॥
– पापड़।

खड़-खड़ कागद वाजे, सर-सर सरकी गाय।
बोलो राणा रावजी, यो कुण सरकतों जाय॥
– बादल।

एक लुगई हाट जाय, बजार जाय।
सेर सोनो गाड़ती जाय॥
– चूल्हे में अंगारा भरना।

सुसरा सुत्ता, वऊ हलरावे।
सुई जाओ सुसरा या बागड़ बोले॥
– छाछ बनाना।

गज गंतो, भमर मतो, उगतो भाण जसो।
को हो भईजी, माल में को फूल कसो॥
– गुलर का फूल।

ऊँची गोरी पातली नम-नम झोला खाय।
शीश काट ने समन्दर, प्यारी न्हावा जाय।
– अम्बाड़ी।

घड़ा नी डूबे, घड़ी नी डूबे, हाथी मल-मल न्हाय।
कोट कँगूरा पाणी चढ़्यो, चील तरसी जाय॥
– ओस।

सासू जाड़ी, बऊ पातली, नणद छबक छिनाल।
– बन्दूक।

थाल भरी मोती की, उँदी दी लटकाय।
पड़े नी मोती नीचे एक, म्हारे अचरज आय॥
– आकाश के तारे।

सुन्ना सरकी उजली, चटक चुम्मा दईगी।
– पीली भँवरी।

बिना हाड़का की डोकरी, सरवर न्हावा जाय।
– जोक।

धड़ जाड़ो ने सीस पातलो, डगमग झोला खाय।
– सारस पक्षी।

दोई जणा बावीस कान, कतरे सुपारी खावे पान।
– रावण–मन्दोदरी।

खड़–खड़ खड़िया नो पे जड़िया।
मार पराणी वड़ले चड़्या॥
– बैलगाड़ी।

छे मईना की माँ, बारे मईना को बाप, ने रात दन को बेटो।
– दिन और रात।

धरती थल आकास फल, माँ तो वणी की कुँवारी।
ने बेटो परणवा जाय॥
– खजूर।

लाकड़ी में काकड़ी लागी।
– आकड़े का डोडा।

जंगल जाजे लकड़ी लाजे, गीली मत लाजे सूकी लाजे।
लकड़ी लई ने जल्दी आजे॥
– साँप।

गाँम में ती नागों लिकर्‌यो, काँकड़ कर्‌यो सिणगार॥
– हल।

आट–पाट को घाघरो, ने चार आँगल को नेपो।
समज में नी आवे तो वणीने तोकी ने फेंको।
– तराजू।

ऊँची गोरी पातली, सरवर न्हावा जाय।
कुडवा तो सेड़े पड़्या, खाल बजाराँ जाय।
चतर वर देखो जी, नैनाँ में घुळ रई नींद॥
– सण, जूट।

एक तो सूँड हाथी की, दूजी सूँड गजानन की।
तीजी आप वतावो ने अरथ समझावो॥
– चड़स।

एक तो चाक कुमार को दूजो घट्टी को।
तीजो आप वतइ दो, ने इको अरथ लगई दो॥
– चँद्रमा।

अलख्या की बावड़ी, ने गलख्या का फूल।
नऊ सौ हाथ ती नी टूटे, गलख्या का फूल॥
– तारे।

वड़ले बोकड़ो मार्‌यो, पाँती करी रे पचास।
आदी में तो एकलो ने आदी में संसार॥
– नारियल।

तुल ने तुल की चोरी करी, ने कुंभ लियो रे चुराय॥
– रावण ने सीता को चुराया।

मेलाँ बैठी पदमणी, सब को मन लुभाय।
– केसूड़ी।

चार यार चाल्या बजार, एक का माथा पे टोपी एक के बाल।
एक का पेट में दलियो ने एक का पेट में दाल॥
– भुट्टा।

अताल लागी जड़ पताल लागी जड़।
राजा रूँखड़ी पे चड़, घुघरा वाजे छम–छम॥
– सण।

बाल पणा में चटक चारा, भर जवानी फूल माला।
बुढ़ापा में घूघर माला॥
– छोड़ के घेघरे, चना।

आँछर गुछर वाटकी, वाँको म्हारो गाम।
बूझो म्हारी पारसी, नी तो जाओ थाँका गाम॥
– जलेबी।

काका केताँ कईं नी लागे, माया केताँ लागे वार।
केला खजूर कईं नी लागे, जाम्बू केताँ लागे वार॥
– होठ।

राजा का राज में नी, माली का बाग में नी।
मनखाँ का हाथ में नी नें पीयो तो पाणी नी।
– ओले (गार)।

एरे मेरे फरतो फरे, घड़ी–घड़ी जलतो फरे।
आग में जले, मरे कोनी, सबको मन लुभातो फरे॥
– जुगनू।

एक झाड़ी में तीस डाली, आदी सफेद आदी काली।
– महीने के तीस दिन।

बऊवाँ आजो डेढ़ सो, जमइ आजो एक,
बेटा की वदजो बेलड़ी, बेटी का लाँबा केस।
अरल खरल नदियाँ बहे, ऊबी पींड खजूर,
जठे झाली राणी माथो न्हावे, ऊबी नणद हजूर॥
– छाछ बनाने की रवई, मथनी और मटका।

कुड़ा पाछे कुकी व्याणी, कुकी तो नी बोले।
पण बच्चा–बच्ची बोले॥
– अफीम के डोडे।

अईं लकड़ो वईं लकड़ो, चारी मेर लकड़ा।
बीच में जमी जाली, नी तो हारो घरवाली।
– खटिया।

चार थाँबा पे चालतो देख्यो,
सामे अजगर लटक्यो देख्यो,
वणी पे बेठा रे राजा राम।
– हाथी।

नीचे फाटी ने ऊपर फाटी, वच में जड़्यो रे जड़ाव।
– कंगी (काँगसी)।

तारा तोड़ी ने भाजी राँदी, विजली को दीदो वगार।
– बारहमासी के फूल।

दस नख धरती चले, ऊपर चले नख तीस।
तीन लोक की सम्पदा, चल्या धर सीस।
– वसुदेव कृष्ण को टोकरे में रखकर शीश पर धरकर वृन्दावन ले जा रहे हैं।

दस नख धरती चाले, ऊपर चाले नख पचास।
तीन सीस, दो आँख हे, सुरताँ करो विचार।
– श्रवणकुमार और उसके माता–पिता।

चालीस नख धरती चाले, ऊपर चाले नख साठ।
पाँच माथा, आठ आँख, सुरताँ करो विचार।
– अर्थी को ले जाते हुए चार मनुष्य।

राधा वर का कर बसे, पाँच आखर गण लेवो।
पेलो आखर छोड़ के, बचे जो हमको देवो।
– सुदर्शन।

दईं सुत रा नीचे बसे, मोती सुत रा बीच।
ऊ माँगे ब्रज राधिका, कृष्ण करो बकसीस।
– शुद्ध घी।

कीड़ी चाली सासरे नो मण काजल सार।
हत्थी–घोड़ा लिया खाँक में, ऊँट ने लियो लटकाय।
– दस्तरी, कलम, दवात।

वतरावे से बोले नइ जी, मारे से घेंगाय।
– मृदंग।

सरवर पान सुवावणा उबा नागफणा।
गोरी थारा साथ में मुआ चार जणा।
– गोरी = नागरवेल, मुआ चार जणा = कत्था, चूना, लौंग और सुपारी।

गोला–गोला गोल मटोला, ऊपर हरिया डोरा।
– खरबूजा।

नऊ सो ऊँदा ने नऊ सौ सूदा, नव से बावन बीस,
अणी प्याली रो अरथ बताओ तो गायाँ देवाडूँ तीस।
– कवेलू, खपरैल।

मारवाड़ से आई ऊँटड़ी, दो मुँडा ने चार पूँछड़ी।
– काँचली।

हरी थी मन भरी थी लाख चौंपा जड़ी थी।
राजा ए हुकम दीदो, उखले जा पड़ी थी।
– पत्तल।

बाप बेठो ने बेटो थड़ी करे, नाती दोड़्यो जाय।
– मटका, ढक्कन और उलचना।

पाँच पीपल पदम तळई।
– पाँच अंगुलियाँ और हथेली।

दन चाले रात चाले, चाले सवा हाथ।
अणी पारसी को अरथ वतावो जमई राज।
– किवाड़।

वा गई वा आई।
– दृष्टि या नजर।

तल भर ताला रज भर कूँची।
– ज्ञान के ताले की ज्ञान की बारीक चाबी।

धोली करे सवाल।
– सूर्यास्त होने पर अकाल नहीं होता। वर्षा होती है। उत्तम शकुन।

जल थामे ने हाथ गेणा रेण प्यारी होय।
वन-वन ने भेजियो देस तमारो होय।
– लाठी।

चार बेल चितकबरा चारी देस रमाय।
राजा से बातां करे, पानी देख मुरझाय।
– चिट्ठी।

एक अचम्भो हमने सुण्यो, कुवा में बरसी आग।
पानी-पानी जली गयो, मछली खेले फाग।
– लालटेन।

खड़ा-खड़ा कड़कड़ करे, अन खाय नी पाणी पीये।
– किवाड़।

सांकड़ी कुड़ी सिकनी जाय, खड़ी पाणी पी-पी जाय।
– आग।

घड़ा नी डूबे नीर में पंछी प्यासा जाय।
– ओस।

ब्रह्म नहीं नगर में डोले, दाँत दोय मुख चार।
वाहन बैल नहीं शिव-शंकर जल में करे विहार।
– तरसा।

बिना पाँव परबत चढ़े, बिन मुख भोजन खाय।
एक अचम्भो हम सुणा, जल पीवे मर जाय।
– आग।

लाल घोड़ी घास खाय, पाणी पीवे तो मर जाय।
– आग।

गागर में थारे जल भर्‌यो, माथे लागी आग।
या तो बाजे बाँसुरी लिकरने लग्या नाग।
– हुक्का।

रात समय तक मेवा आया फूले पांती सबको भाया।
आग दिये तो झल्लाए पानी दे तो वो सुख जाय॥
– आतिश के अनार।

धरती री नी पग धर्‌यो, नी पाणी का पास।
चंदा सूरज देखे नहीं मैं पंछी की जात।
– कुसेरे की चिड़िया।

जल थांबे बेरी दहे, स्वान उखाड़े दंत।
कान बरोबर कामणी कहाँ बिसारे कंत।
– लाठी।

चार पड़े चंदूवा चारी दिसा मे जाय।
बादशाह से बात करे, पानी देख डर जाय।
– सफेद कागज।

गई थी मरने अमर हो आई, बिन पानी के दो फल लाई।
– लव-कुश।

दस नख तो धरणी धरे, आगे जले पचास।
पणहारी को दोहरा, पंडत करो विचार॥
– श्रवणकुमार।

बिल पत्तर साखा नहीं, पंछी बसे नी डार।
वी फल हमको भेज जो, सियाराम रखवार।
– बिल्ला फल।

माता उनकी जल बसे, पिता बसे आकास।
जूना को तो भेज दां, नवा तो कातक मास।
– कमल और कमल गट्टे।

चोर आवे तो, लई नी सके।
– विद्या।

पाणी ती पतलो कूण, धरती ती भारी कूण?
अगन से तेज कुण, ने काजर से कारो कूण?
– सत्य, पाप, क्रोध, कलंक।

खाती थी कोदरा ने ओढ़ती थी टाट।
खावा ने मिलीग्यो तो करवा लागी ठाठ।
– अहंकार।

कंचा तो कुंजर चढ़े कनक कटोरा हाथ।
माँग्या से मोती मिले, अन्त भिकारी जात।
– याचक।

हांक दे हलकार दे हिंडी बैल म्हारो।
– भेज दे, दुत्कार दे, क्योंकि यह बुरी लत वाला बैल मेरा पति है। परस्त्रीगामी के लिए लताड़।

होवे ने हरकावे।
– फाटक द्वार, दरवाजा भिड़ाना (लगाना)।

वगर कठई को सीरो रांद्यो।
जीमे नाजुक नार घड़ा माय।
– शहद।

बुन्देली पहेलियाँ

डॉ. ओमप्रकाश चौबे
डॉ. कुंजीलाल पटेल

डॉ. ओमप्रकाश चौबे

फरै ने फूलै, छबलों टूटे।
– राख।

पेड़ ने पत्ता ऊपर छत्ता।
– अमरबेल।

वईती मिर्च, भईती दरिया।
फूलीती कचनार, फरेते नरियल।
– बैगन।

भरे कुंआ में कण्डा अतराय।
– नैनू (मक्खन)।

एक खड़ी, एक पड़ी, एक छमाछम होय।
– रोटी।

अपन तौ कारीं केवला सीं, विटिये जाई पठोला सीं।
– कड़ाही, पूड़ी।

एक लरका बम्मन कौ, तिलक लगाये चंदन कौ।
– उड़द।

बाबा सोवे ई घर में, पाँव पसारें ऊ घर में।
– लंगड़।

आंगे–आंगे वैने आई, पाछें–पाछें भैया।
दांत निकारें दादा आये, चुनरी ओढ़े मैया।
– भुट्टा।

नाना-नानी सुनो कहानी, एक घड़ा में दो रंग पानी।
- अंडा।

सर्र-सर्र सूतरी सरकावे बारो कौन।
गौरा चलीं मायकें लौटावे बारो कौन।
- नदी।

रींग-रींगा, तीन सींगा, गाय काली, दूध मीठा॥
- सिंघाड़ा।

कारे पहार पै रकत कौ बूंदा।
- गुमची।

भरे तला में रामबाई लोटें।
- जीभ।

तन्नक सी मन्नक सी, हरदी कैसी गांठ।
चटाक चूंमा हौगई, तो अरे मोरे राम॥
- ततैया (बर्र)।

एक गांव में ऐसा हुआ, आधा वगला आधा सुआ।
- मूली।

तीन अक्षर का मेरा नाम, उल्टा-सीधा एक समान।
- डालडा।

हरीरी डब्बी, पीला मकान, ओमें बैठे कल्लूराम।
- पपीते के बीज।

नांय गई, मांय गई, चौखटो सो टांग गई।
- ताला।

तनक सी विलैया, बड़ी सी पूंछ।
जहां जाय विलैया, तहां जाय पूंछ।
- सुई, धागा।

मारे सें वो जी उठे, विन मारे मर जाय।
विना पांव जग-जग फिरै, हातो हांत विकाय॥
- तबला।

एक पकन्ना, दो लटकन्ना।
– तराजू।

विना पांव परवत चढ़े, विन मुख भोजन खाय।
एक अचंभो मैने सुनो, जल पियत मर जाय॥
– आग।

दोई जगां सें मरन हमारी, खसम करन गई बैन तुम्हारी।
– मारीच रावण से कहता है।

ऐसो पेड़ो कायको होय, जाकी पाती झरत न होय।
– खजूर।

धरती रही ने पग धरे, ने पानी के पास।
चन्दा–सूरज देखे नहीं, मैं पक्षी की जात।
– कुथेरे की चिरइया।

कुत्ता की पूँछ मोरे पास, कुत्ता भोंके इलाहाबाद।
– बन्दूक।

नांय गई मांय गई, लाल बीजा गाड़ गई।
– आग।

एक थाल मोती से भरा, सबके सिर के ऊपर खड़ा।
चारऊ तरपे थाल फिरै, मोती ओसें एक नें गिरे।
– आकाश–तारे।

तीन अक्षर का मेरा नाम, गरमी में आता हूँ काम,
प्रथम बिना राही कहलाऊँ, बिना अन्त के नाश कराऊँ।
– सुराही।

तीन अक्षर का मेरा नाम, आता हूँ खाने के काम।
अन्त कटे बन जाऊँ खग, प्रथम कटे हो जाऊँ कम।
– बाजरा।

छोटो फकीर ऊके परी लकीर।
– गेहूँ।

हरा चोर लाल मकान, इसमें बैठा काला पठान।
– तरबूज।

तीन खूँट की तितली, नहा-धोकें निकली।
- समोसा।

हरीरी झंडी लाल कमान, तौबा-तौबा करे पठान।
- लाल मिर्च।

लाल मोरो लेंगा, हरी री मोरी लोई।
बरै मोरी अक्कल मैं रात भर रोई।
- लाल मिर्च।

राम के बैन, भरत की सारी, भओ न ब्याव, रही न क्वाँरी।
- राजगद्दी।

ठट्टा कौ ठट्टा, ठट्टा की ठिठोली।
मर्द की गाँठ, औरत ने खोली।
- ताला-चाबी।

एक जन्तु इत्तो जन्ट, जाकी पूँछ में करन्ट।
- जुगनू।

पैले आई बैने, फिर आयेते भईया
जीके पाछे बाप अयेते, फिर आई मतईया।
- महुआ।

जल थम्मन बैरी दमन, स्वान उखारत दंत।
कान विरोवर कामनी, कहां विसारी कंत।
-लाठी।

चार जनें सोरा जनीं, एक खाट पै कैसें बनी।
- अंगुलियाँ, अंगूठा।

एक फूल है कारे रंग का, सिर पर सदा सुहाय
वर्षा धूप में खिल-खिल जावै, छाया में मुरझाय।
- छाता।

एक पेड़ को आदो नाव, जल्दी ऊको नाव बताव।
- अदरक।

बाप बड़ो, बेटा बड़ो, नाती बड़ो अमोल।
जिनके पन्ती बे भये, दो कौड़ी को मोल।
- दूध, दही, घी, मठा।

एक अचंबो हमने देखो, मुरदा रोटी खाय,
टेरे सें ऊतर ने देवै, मारे सें चिल्याय।
– मृदंग।

आठ कटाकट नौ पंचारी, सोरा बैल अठारा नारी।
आव पांड़े करो विचार, सोरा घर को एक दुवार।
– रहट।

तन्नक से जगदीश, उन्नां पैरे एक सौ बीस।
–प्याज
घोड़े के सामान में, कुल अक्षर हैं तीन।
पहलो अक्षर छोड़कें, ब्याह राम को कीन।
– गांसिया।

सूदो सटका बीच में गांठ, पीका पूरे फूटे पाँच।
– हाथ।

चार खूँट की चकरी, पड़िया सी अफरी।
– बोरा।

दस जनन के बीच में, पकरी गई इक नार।
अपनो काम समार कें, पाछें डारी मार।
– रोटी।

साँप सरके, ग्वाय सटके, तीतुरिया मन्नाय।
– रहट।

दो पग चले, चार लटकावें, चला जाय मन चैना।
ऐरी सखी में तोसे पूछूँ, तीन शीश दो मैना।
– श्रवणकुमार।

वर माँगन वर कें गईं, वर पाये तत्काल।
वर पाये वेवर भई, हुईये कौन हवाल।
– कैकेयी।

रात में खाली, दिन में भरी।
– अरगनी।

क्यारी उपजे हाट बिकाय, गूदो फैके बकला खाय।
– आटे की चलनी।

घेर–घेर बाटी, बीच में घुन्चू कारी।
– आँख।

पान कैसो पत्ता, सुपारी कैसो रंग।
देवरा खों छोड़कें, चली जेठ के संग।
– राहर।

टूटे ने वारी, ऐरो ने होय।
पतरैया निकर गये, छेड़ो ने कोय।
– सुई–धागा।

कारी पौनी सेत तगा, नचाबे तोरो बाप ददा।
– भैंस का थन।

पैलें हते हम मर्द, फटे सें नार कहाये।
कर गंगा अस्नान, जटा सब दूर बहाये।
कर पत्थर सें चोट, अगन के ताव सहाये।
कर मक्खन सें मेल, मर्द के मर्द कहाये॥
– दही बड़ा।

रूख विरख तुम टेड़े काये।
दै टोपी तुम रोये काये॥
– रमतूला।

घरे पुजे ने हाट बिकाय, जिनको देखें पिया रिसांय।
– ओले।

मुँह पर पत्थर, पेट में अंगुली।
– अंगूठी।

आँखन देखी मुँह की खाई, चीखी होय तो रामदुहाई।
– खाई।

चोरी की न खून किया, उसका सिर क्यों काट लिया?
– नाखून।

आगर देखी सागर देखी, और देखो कलकत्ता।
ऐसो रूख कवऊँ ने देखो, फल के ऊपर पत्ता॥
– सिंघाड़ा।

बयेते ककरा, उपजे जार, फरे नीम, फूले कचनार॥
– चना।

काकी के कान, कक्का के नैयां।
काकी चतुर सुजान, कक्का कछू जानत नैयां॥
– कड़ाही–झारा।

एक फूल गुलाब का, न राजा के राज का।
ना माली के बाप का।
– मुर्गे की कलगी।

तन्नक सी कुइया सींकन छाई, ठुमक–ठुमककें जल भर लाई।
– आँखें।

एक चिरैया रंग–विरंगी, बैठी वर की डार।
कश्मीरी कौ लेंगा पैरें, मोती की झलकार॥
– पलाश का फूल।

एक चिरैया दुरगादासी, जीके अंडा एक सौ पचासी।
– ज्वार का भुट्टा।

चार पड़ा चंदुआ, चारऊ देसें जांय।
बादशाह से जुवाप करें, पानी देख डराँय॥
– सफेद कागज।

पच्छम से आई तीतरी, दक्षिण सें आया सुआ।
पूरब सें आये दो जनें, जब एक रंग हुआ॥
– कत्था, सुपारी, पान एवं चूना।

मोटे की माटी, पतरौन की तिली।
कहौ जा कपास में कैसें मिली॥
– दिया, तेल और बाती।

पैल हती में बारी भोरी, खूब सही मैने मार।
अब पैरी मेंने लाल घंगरिया, अब न सेंहों मार।
– गागर।

कारे पहार पै रकत कौ बूँदा।
– गुमची।

एक झाड़ पै गलगल ब्यानी, जेकी तेली खूब मिठानी।
– शहद।

लबरो नोई सांसो आय।
– ईंट का साँचा।

बर्धा पै असवार हैं, गौरा को पत नाह।
खेती के सामान में कुल अक्षर हैं तीन।
– रहट।

एक लकड़ी की ऐसी कहानी, ऊमें लुको है मीठो पानी।
– गन्ना।

एक थाली में दो अण्डा, एक गरम एक ठण्डा।
– सूरज, चाँद।

तुमाई घरवारी हमें देत, तुमें देत नैयां।
– घूँघट।

ऐचक–बेचक घोड़े को, तीन मूंड़ दस गोड़े को।
– हल, बैल, हलवाहा।

आठ पहर बत्तीस घड़ी, ठाकुर पै ठकरान चढ़ी।
– तुलसी।

उठकें घींच मसकी।
– लोटा।

बीस हांत को लोग, दो हात की लुगाई।
लावरी नोई सांसी आय रामदुहाई।
– मन्दोदरी–रावण।

पांच नग धरनी धरें, पचपन चले अकाश।
तीन लोक की संपदा, धरें कंदा पै जात॥
– हनुमान, राम, लक्ष्मण।

ओड़ू–खोड़ू गईया, नाक गई नरैया भींजी ने पगैया।
– मकड़ी।

गंग शीश ऊपर बहै, गरे मुण्ड की माल।
बधो पै असवार है, गौरा को पति नाह॥
– रहट।

एक भुजा धारन करे, बैठो आसनमार।
सब जग खाँ बस में करे, तन पै नैया चाय।
– जांतो।

गोल–गोल जीमें सात पोल।
– मूँड़।

हाय–हाय हायरी, बरै तोरी कायरी।
लरका है पेट में झालर है बायरी।
– भुट्टा।

सुरका के नेंचें भरका ऊंमें पिड़े बत्तीसक लरका।
– दाँत।

तनक सो लरका लंयें गुटान, घर मसके तो हले जबान।
– बिच्छू।

चलते जोगी चलते जाँय, नौ मन फूल बिखरते जाँय।
– बकरी की लैंड़ी।

हरी थी मन भरी थी, नौ लाख मोती जड़ी थी।
राजा के बाग में, दुशाला ओढ़े खड़ी थी॥
– ज्वार का भुट्टा।

उठो जिजी मोय परन दो।
– तवा से उतरी रोटी।

एक विचत्तर ऐसी आई, रातन आई विटिया गाई।
भोर भुन्सरां टोने पायो, बा बिटिया ने बेटा जायो॥
– महुआ।

रूख एक ऐसो वरयानो, तरें सेत ऊपर हरयानो।
– मूली।

डोर चली गई बैला रै गओ।
– कुम्हड़ा।

चाँद सी चौड़ी, फूल सी हरई।
पिया परदेश चले, तो नीम सी करई॥
– टिकली।

पाँच पंडवा घने खजूर, तुम लौटो हम जैहें दूर।
– रोटी का कौर।

बीजा बकला भौमें सींगा मोटे मों में।
– सीताफल।

हाथ न पाँव गोरी बऊ पेट सें।
– रोटी।

गागर तरें जल भरा, सिर पर लागी आग।
बाजन लागी बांसरी, निकसन लग्गे नाग॥
– हुक्का।

लाल छड़ी मैदान गड़ी।
– गाजर।

हाथ की हथेली, चंपे की कली।
भरे दरियाव में पैरती चली।
– जलेबी।

लाल कुठरिया देवलन भरी।
– लाल मिर्च।

अजगर ताल भुवन मछरी, भौ जरै पै पूंछ सपरी।
– दीपक की बाती।

आई नदी भर्रात गई, चंदन चौक पूरग गई।
– चकिया।

एक अचंबो हमने देखो, कुआ में लग गई आग।
पानी–पानी जर गयो, मछरी खेले फाग॥
– दीपक।

एक नकरिया अंगुरा चार, दोई बगल में डारी फार।
– कंघी।

कच्ची फूटे पकी बिकाय, गांव की गोरी लै-लै जाय।
– गगरी।

नदी किनारे बुम्को चरें, नदी सूके बुम्को मरें।
– दीपक।

तनक सो सोनो सब घर नोनो।
– दीपक।

तनक सी टुकिया टुक-टुक करे, लाख टका को बंज करे।
– सुई।

ठांड़े हिन्ना खिस-खिस करें, अन्न खाँय ने पानी पियें।
– किवाड़।

ठांड़े जाय न बैठे जाय, गोड़े उठा के सबरो जाय।
– पजामा।

जल थम्मन और कर गहन, रैन प्यारी होय।
सो हमखों पठवाइयो, देस तुमारे होय।
– लकड़ी (लाठी)।

गैल चलत इक देखी वात, जोरे मरद नारी के हांत।
– चिलम।

एक रूख अदबरो, जीके नेचे जल भरो।
– दीया।

गैल चलत दो राँड़ें जाय, घैरा घूँसा करती जाय।
– जूता।

एक लई दो मेंक दई।
– दातौन।

तन्नक से टिल्लू मियां बड्डी-सी पूँछ।
जहाँ जाय टिल्लू मियाँ, जहाँ जाय पूँछ।
– सुई-धागा।

हल्की जनी और बड़ी जनी, बड़ी जनी ने खोली तनी।
नाचन लागी तीन जनी।
– मथनी।

चार पावने चार लुचई, एक-एक के मौं में दो-दो दई।
- चारपाई।

बड़ी बऊ नें जी करो, फरा पै घी धरो।
- अत्यधिक कृपण होना।

पिया बजारे जात हो, ल्यईयो चीजें चार।
सुआ, परेबा किलकिला, बगला की उनहार।
- पान, सुपारी, चूना, कत्था।

छै गोड़े पतरी करयाई, बन के आ गये बड़े सिपायी।
- चींटा।

खेती के सामान में, कुल अक्षर हैं तीन।
पैलो अक्षर छोड़कें, ब्याह राम खों दीन।
- हँसिया।

एक गाँव में ऐसी रीत, आधे उल्टे-आधे सीध।
- खपरा।

एक भटा में दो नरूवा, जो ने वता पाये ऊको वाप मरूवा।
- बेलन।

कारे पहार से भागा चोर, कानपुर में पकड़ा गया।
गदम्बपुर में हुआ मुकदमा, नौपुर में मारा गया।
- जुँआ।

एक गाँव में ऐसा वीर, गाना गाकें मारै तीर।
- मच्छर।

अटक चली मटक चली, पैर चली सैयाँ।
बड़ी खसम की लाड़ली, सो चढ़ चली कैयाँ।
- तलवार।

पेट में लरका, ऊपर झलरिया।
- नारियल।

नाँय तकिया माँय तकिया, बीच में बैठी गोरी बिटिया।
- अचार की चिंरौजी।

चार जने सोरा जनी, एक खाट पै कैसे बनी।
– अंगूठा, अंगुलियाँ।

बीमार नहीं फिर भी खाती हूँ गोली।
बच्चे बूढ़े डर जाते, सुनके मेरी बोली॥
– बन्दूक।

पानी जैसा मेरा रूप, सुखा न पाये मुझको धूप।
– पसीना।

तनक सो भात, खा नें सकें तोरो बाप।
– नमक।

चार नरम चार गरम, चार बालूसाई
जो कोऊ हमारी किसा वतैहे, ऊँहे सेर भर मिठाई।
– ऋतुएँ।

घरे पूजें ने हाट बिंकाय, जिनखों देखें पिया रिसांय।
– ओले।

चार खूँट को चौंतरा, ऊपै जेठ की लेट।
जेठ के आँगू बहू निकर गई, रैगव ऊकों पेट।
– रोटी।

तनक सौ लरका लंये गुटान, बासें हल-हल कंपै जुवान।
– बिच्छू।

बन की लकड़ी हाथ सफाई, बनी ठनी एक जोड़ी आई।
– पटा-बेलन।

चार डबलियाँ रस भरीं, बिन ढक्कन औंदी डरीं।
– गाय, भैंस के थन।

तनक सी लठिया जीमें फूल गुठों, हो गवो स्वागत चलो उठो।
– लौंग।

सर्रा रुख सियानों झोंरौ, बिना डार के पत्ता कौंरौ।
– केले का पेड़।

सांकर टोर समंदर नाकौ, कारे पठा पै बैल दलीकौ।
– बन्दूक।

हारे जाय हरीरौ खाय, सबके भारी कामें आय।
– हँसिया।

ठांड़े हिन्नाँ खिस-खिस करें, अन्न खाँय ने पानी पियें।
– किवाड़।

ठांड़े तो ठांड़े, बैठे तो ठांड़े।
– सींग।

अली कौ लरका भौत बली, खपरन में से कटी गली।
– धुँआ।

करिया मटका में कुदई भरी, पूछो काऊ सें कितै धरी।
– भटा।

नौ सौ कोलू, नौ सौ लाठ, रांटा गड़े तीन सौ साठ।
– मधुमक्खी का छत्ता।

राम के वेंन भरत की सारी, ने भव ब्याव ने रई कुँवारी।
– अयोध्या का राजसिंहासन।

रोगी, सोखी, सूम, सठ, ब्यभिचारी, मतिहीन।
चुगल चवारी चूतिया, ये नौ पाछें कीन॥
– इन्हें पीछे ही रखना अच्छा है।

मुंस करो सुख सोवे खां, लग गए कंडा ढोवे खो।
– सही लाभ न होना।

परनारी प्यारी लगै, सभी लगावें अंग।
सवके पुरखा तर गए, परनारी के संग॥
– तुलसी की माला।

न घर कौ मुंस मरै, न भर पेट कुदई मिलै।
– मेहनत से काम करना।

भैंस के आगे घुँघरू वाजै मर्र-मर्र रौंभाय।
– किसी की बात न सुनना यानी अपनी मनमानी करना।

आव भए आदर भए भौत भए सनमान।
लै लूगर आगें करे खुशी रहो जजमान॥
– बीड़ी।

मूसर सें दार कुदई लटा कुटें, मूसर से वेरन को विरचुन बन जात है।
मूसर से ब्याव काज नैंग करें, फेर फार सजना के ऊपर कड़ जात है।
मूसर सें दिवारो की दौज पुजै, जरू-वरू सौतन के मौं कुचरे जात है।
कहें कवि देवराज तो भी लोग हमें मूसर कात है॥
- मूसर से इतने काम होने के बाद भी इसका नाम मूसर रखा गया है।

पड़ा कौ मूंड, डड़ा के ठौको।
- बात पक्की कर लेना।

दो रुपया की हंडी सें गम्म खामी, कुत्ता की जात पैचानी।
- सतर्क हो जाना।

धोबी कौ गधा घर कौ न घाट कौ।
- काम बिगाड़ कर पछताना।

संगत सें गुन ऊपजें, संगत सें गुन जांय।
वांस फांस में नीसरी एकई भाव बिकाय॥
- अच्छी संगति के कारण बाँस की लड़की भी नीसरी के साथ बिक जाती है।

एक रुख अधकर फरो, यत्ता ऊफे सुवा खाँय।
माता उनकी कुँवारी बैठी, पूत वरातै जाँय॥
- गुन्चू।

नहाया धुलाया, घूँसा मार के सुलामा।
- आटा।

फरै न फूलै डलियन टूटै।
- राख।

चिकनी कुइया चिकना घाट।
हिरना पानी पी-पी जात।
- गाय का बछड़ा, गाय के धन।

बाप बड़ो बेटा बड़ो, नाती बड़ो अमोल।
जिनके सुत ऐसे भए गए टका के मोल।
- दूध, दही, घी एवं छाछ।

ऊँट चढ़े की लालो लालौ।
- आजादी का गलत फायदा लेना।

जैसी हिरनी वैसी बछिया।
जैसी मताई वैसी बिटिया॥
– सही विवेक न होना।

शुक्रवार को वादरी रही शनीचर छाय।
कहें घाघ सुन घाघिनी, विन वरसे न जाय॥
– शुक्रवार को आया बादल, शनिवार तक छाया रहे, तो निश्चित पानी बरसेगा।

वायु चलेगी उत्तरा तो मांड़ पियेंगे कुत्तरा।
– बरसात में यदि उत्तर दिशा की हवा चले, तो पानी गिरेगा एवं फसल अच्छी होगी।

वादर ऊपर वादर जावे, कहें भडडरी जल आर आवै।
– वदरी एक के एक जावे तो पानी जल्दी बरसेगा।

दाल भात में मूसर चंद।
– बना काम बिगाड़ना।

नंगी नाचे पूते खाय, बेटा की सों जेई आय।
– बार–बार झूठ बोलना।

भोंदू लला की उल्टी रीत, भर वसकारें उठावें भीत।
– उल्टे काम करना।

बाप बेटा कौ एकऊ नाम, मताई कौ औरई।
पाडें जी उत्तर दे दो, फिर उठावो कौरई॥
– महुवा का पेड़ एवं फल का एक नाम होता है एवं गुली का नाम अलग होता है।

भरे समुद्र में घोघा पियासौ।
– समय का सदुपयोग न करना।

तीन दिना कौ तीनक तीना फिर अधियारी रात।
– अपना रौब जमाना।

पिया वजारै जात हौ वस्तें लै अइयो चार।
सुवा परेवा किलकिला वगुला की उनहार॥
– पान।

तरें फोरी ऊपर फोरी, फोरम फोर मचायी।
घर कौ संइया फोर न जानें, पइसा दै फुरवायी॥
– चक्की के पाटों को टाँकना।

हर हाँकै और पसर चरावै अन्न भुसा सौ खाय।
ओड़ कें कथरी सो गए पादें और वर्राय॥
– अज्ञानी पुरुष।

वीस अकल की खुन–खुन वाजै अद्‌भुत डरी मुतान।
एक अकल की भली चलायी सामू नाला जान॥
– हमेशा ज्यादा अक्ल न लगाकर स्थिर बुद्धि से काम लेना चाहिए।

सिंह लगन समरथ वचन कदल फतै एक वार।
तिरिया तेल हमेल चढै न दूजी वार॥
– शेर शेरनी से एक ही बार मिलता है, सज्जन पुरुष एक ही बात बोलते हैं, केले का पेड़ एक ही बार फल देता है एवं स्त्री की शादी एक ही बार होती है।

वारे खाँ मैं वोलत नइयाँ, जवान लगै मोरो भइया।
वूढ़े खाँ मैं छोडत नइयाँ, हा–हा करै चाय दइया॥
– ठण्ड।

आठ अठैनी वारह वेनी चार चपोका दो हरैंनी।
– कुतिया के आठ स्तन होते हैं, सुंगरी के बारह होते हैं, चार गाय के होते हैं एवं दो थन बकरी के होते हैं।

चलतू सें गाड़ी कहें, गढ़ी से कात उखरी।
चौबीस घंटा खड़ी रात है ऊसें कात परी॥
– बैलगाड़ी चलती है लेकिन कहते हैं गाड़ी। उखरी हमेशा जमीन में गड़ी रहती है, उसका नाम उखरी है। जो हमेशा खड़ी रहती है, उसको परी कहते हैं।

हरी थी मन भरी थी, नौ लाख मोती जड़ी थी।
वावाजी के वाग में दुशाला ओढ़ें खड़ी थी॥
– मक्का का भुट्टा।

नांय मांय गयी चोखरो सौ टांग गयी।
– ताला।

गेर–गेर बारी लगी वीच में कुइया।
– आँख।

स्वेत वर्ण के वे रहें, आवै वास सुवास।
दो आना को दे दियो, आज मगायी सास।
– कपूर।

लम्बी पूँछ वड़ दंत लंक बिथोरन होय।
रामायण न ढूंढियो हनुमान न होय॥
– खेंटन (लांकरी)।

चार चरन छोटी भुजा नहि पीठ न शीश।
वालम मोय मंगवा दियो जेई वड़ी वकसीस॥
– अंगिया।

जल थोवन हाथी हतन रैन प्यारी होय।
साजन मोय पठवा दियो देश तुम्हारे होय॥
– लाठी।

एक अचम्भा हमने देखो मुर्दा रोटी खाय।
टेरे से उत्तर न देवे मारे से चिल्लाय॥
– मृदंग।

एक अचम्भा हमने देखो कुआ में लग गयी आग।
पानी–पानी सवरु जल गवो मछली खेले फाग॥
– दीपक और बत्ती।

दो ब्याहीं, दो क्वाँरी, दो विधवाँ दो बाँझ।
जो आठई प्यारी लगै, ज्यौं–ज्यौं होवै साँझ।
बारा घर पाखे चौबीस, अच्छे कुटवा लागे तीस।
बारा घर कौ एकई द्वार, पंडत जू तुम करौ विचार॥
– बारह मास, चौबीस पखवाड़े, बारह महीनों का एक साल।

काला कग्गा धोरा बग्गा, हरे पाँख का सुआ।
ऐरी सखी मैं तोसों पूँछों, लाल कहाँ से हुआ॥
– काला कौवे के समान, धौरा बगुले के समान, हरे पंख यानी तोते के समान यह पान ही है।

मड़ भीतर देवरा बसे, ननद बसे आकाश।
पिया हमारे वन रहें, जेठा जल के पास॥
– पान।

दृश्यकूटक

श्याम वरन मुख उज्जवल कित्ते, रावण शीश मन्दोदर जित्ते।
– एक ग्राहक बाजार में उड़द खरीदने गया, उसने व्यापारी से दाम पूछा। व्यापारी ने कहा

कि 10+1 (रावण के दस और एक मन्दोदरी) अर्थात् ग्यारह रुपये सेर है। ग्राहक ने कहा- तो हम पवनसुता कर लैहें, अर्थात् हम इनका मूड़ा करकट हवा से उड़ाकर लेंगे। व्यापारी ने कहा- तो हम राम-पिता कर देंहें अथवा फिर इसके दाम दस रुपया सेर लेंगे।

ऊँची जात पपीहरा, पियत न नीचो नीर।
या-याचे घनश्याम सों, या दुख सहे शरीर॥

पपीहा बड़े ऊँचे कुल का है, वह कभी भी धरती में अर्थात् नीचे पानी नहीं पीता। वह तो ईश्वर को रटता रहता है और स्वाति नक्षत्र में ईश्वर उसकी प्यास बुझाते हैं, नहीं तो वह कष्ट सहता रहता है।

केसव केसन अस करी, जस अरि हूं न कराय।
श्याम बदन मृगलोचनी, का वावा कह जाय॥

केशव के बाल सफेद हो गये थे, तो उन्हें देखकर एक युवती उनसे बाबा का सम्बोधन करने लगी, यह सुनकर उन्होंने यह बात कही।

सारंग लै सारंग चली, सारंग पहुचो आय।

जो सारंग आदर करें, मुंह कौ सारंग जाय॥

- सारंग = मोर, सारंग = साँप, सारंग = बादल। मोर साँप को मुँह में दबाकर ले जा रहा था कि बादल की गर्जना होने लगी। बादल की गर्जना होने पर मोर बोलता है। अगर मोर बोलेगा, तो उसके मुँह में दबा हुआ साँप गिर जायेगा।

सारंग लै सारंग चली, कर सारंग की ओट।
सारंग ओट बचायकें, सारंग माटी चोट॥

- सारंग = हत्ती, सारंग = दीया, सारंग = हवा, सारंग = साड़ी। एक स्त्री दीया लेकर जा रही थी, हवा चलने लगी तो वह अपनी साड़ी के पल्लू की ओट करने जाने लगी, लेकिन एक हवा का ऐसा झौंका आया जिससे दीपक बुझ गया।

हरियाई रेटे नहीं, पीराई घट जाय।
गये मेघ लौटें नहीं, कोटन करो उपाय॥

- मन्दोदरी रावण से कहती है कि- हे नाथ! आप जो हरि की पत्नी अर्थात् सीता का अपहरण करके लाये हैं, वह नहीं रहेंगी। तुम्हारी सोने की लंका (पीली) वह भी नष्ट हो जायेगी। मेघनाद आज शेषावतार लक्ष्मण से युद्ध करते हुए मारा जायेगा। चाहे आप कितने ही जतन क्यों न कर लें।

अहि बल्ली रिपू की सुता, ताके पति कौ हार।
ता अरि पति की भामनी सदा बसो तुम द्वार॥

– अहि बलि अर्थात् नागवेल, नाग का रिपु हिम, हिम की सुता यानी पार्वती, उनके पति का हार अर्थात् नाग, उसका अरि (शत्रु) गरूड़ उनका स्वामी विष्णु, उनकी भामनी यानी लक्ष्मी – लक्ष्मी सदा मेरे द्वार में वास करें।

चंदा कैसी चाँदनी, सूरज कैसी जोत।
तोरें होय तो दे सावी, मोरें आय संत॥
– एक स्त्री पड़ोस में आग लेने गई, तो उसने इस तरह से आग माँगी।

नर बत्तीस एक है नारी, जग में सबके देखी भाली।
मन में करियो सोच विचार, पुरुष मरे पर जीवै नार॥
– जीभ।

मीन राशि मीनई की बैठक, तामें वृषभ रहाई।
तुला राशि है वाको जीवन वा विन वा मर जाई॥
– दिया–बाती और तेल।

एक नार नरबर सें आई, पाँच पूत दस नाती लाई।
जाके पंती कहिये बीस, और कन्या हैं चालीस॥
– पंसेरी = पाँच सेर, दस आधे सेर, बीस पाव, चालीस आधा पाव।

सीस जवा पोथी लिये, स्वेत वस्त्र गल मांहीं।
जोगी जंगम है नहीं, ब्राह्मण पंडित नाहीं॥
– लहसुन।

पैलें लाल, पीछे हरा, पीछे से लाल जो होय।
पिया पठौनी भेजियो, देस तुमारे होय॥
– अनार

लंक का चोर लंक में रहे, निशदिन लंक विनासत रहे।
पवनपूत हनुमान न होई, जाको अर्थ लगावै कोई।
लंक याने गेहूँ की लांक (अर्थात् गेहूँ काटकर गट्ठों के रूप में इकट्ठे किये जाते हैं, उन्हें लांक कहते हैं) में पचा रहता है और गेहूँ की फसल को इधर–उधर पचा द्वारा किया जाना है। (पचा अर्थात् फसल को आगे–पीछे करने का औजार जो लोहे के पाँच फलों को एक बाँस के बेंट में लगाया जाता है।) वह हनुमान नहीं है, वह तो पचा है।

बनमाली अरु श्याम हैं, हैं कालो के काल।
माथें उनके मुकट है, पर वे नोही नंदलाल॥

वन के प्रेमी कृष्ण और वन में रहने वाला मोर श्याम (कृष्ण) है, तो मोर भी श्याम रंग है। कृष्ण के माथे मुकुट है, मोर के माथे पर भी मुकुट है।

कृष्ण जी के हांथ में, पांच अक्षर गिन लेव।
आद का अक्षर छोड़कर, सो तुम हमको देव।

– कृष्ण के हाथ में सुदर्शन होता है, उसमें से पहला शब्द अर्थात् सु निकाल देने से दर्शन रह जाता है, जिसे सभी भक्त चाहते हैं।

राधे जू के हाथ में, अजब फूल इक सेत।
राधे पूंछे कृष्ण से, कृष्ण नाम नहीं लेत।
जवाब कृष्ण का–

जड़ जाकी पाताल में, बेल जाय आकाश।
सुन राधे तोसों कहूँ, सन्तों के रहे पास।

– राधा तूमा का फूल लिये थीं, कृष्ण से उस फूल का नाम पूछ रही थीं। कृष्ण अगर तूमा कहते तो राधा उनकी माँ बन जाती, जो कहना सम्भव नहीं था। कृष्ण ने उसे इस प्रकार विश्लेषित किया– उसकी जड़ जमीन के नीचे होती है, बेल आकाश की तरफ होती है, सो हे राधे! यह (तूमा) साधु–संतों के पास रहता है।

राशियों से सम्बन्धित दृश्यकूट

मीन रास मीनई की बैठक, ता पर वृषव जमाई।
तुला रास है उसका जीवन, ओ विन ओ मर जाई।

– दीया एवं दिपट मीन राशि है, बत्ती वृषभ, तेल तुला राशि है। तेल खत्म होते ही बाती बुझ जायेगी।

कुंभ ने कुंभ करे दोई फारा, मीन कहे कुछ अन्त हमारा।
कर्क कहे कुछ हमें मिलाओ, तो कन्या की लाली पाओ।

– सुपारी–सरोता कुंभ राशि है, चूना मीन राशि, खैर मकर राशि, पान कन्या राशि है। इन सबके मिलने से पान की लाली आती है।

तुला–तुला मिलाय कें, विरसभ ले गव चोर।
कर्क रास ऐसी करी, की मेसें डारी टोर।

– राम–रावण की एक ही राशि है तुला, जानकी की वृष राशि है। तुला राशि वाला वृषभ को चोरी करके ले गया, तो कर्क राशि वाले हनुमान ने मेष राशि लंका को जला दी।

आनंद में आनंद भयो, आनंद नहीं समाय।
बिना बाप लरका भयो, महतारी घर नाय।

– सीताजी के लव का जन्म हुआ, वे एक बार आश्रम से पानी भरने गईं तो लव उनके पीछे-पीछे चले गये, इधर ऋषि पूजन में व्यस्त थे। पूजनोपरान्त उन्होंने देखा कि बच्चा आश्रम में नहीं है, तो उन्होंने एक कुशा उठाकर उसका बच्चा बना दिया, वे कुश के नाम से जाने गये। तात्पर्य यह कि कुश के पिता भी नहीं हैं और माँ भी नहीं थीं।

गईंती मख अमर हो आंई, विन पानी के दो फल लाईं।

– सीताजी वन में गईं तो यह सोचकर कि वे अपनी जीवन लीला समाप्त कर लेंगी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ और वापस आईं तो उनके साथ में दो पुत्र लव और कुश थे।

दस नख तो धरनी चलें, अत्पर चलें पचास।
पनहारी को दोहरा, पंडित करो विचार।

– श्रवण कुमार माता-पिता को काँवर में बैठाकर चले तो उनके दस नख अर्थात् पैरों की अंगुलियाँ धरती पर थीं। ऊपर पचास बीस-बीस माता-पिता के और दस श्रवण के, कुल पचास ऊपर थे।

बारा मास में छै ऋतु, घरी एक के बीच।
वो दिन मोह बता सखी, जब पिया ने भावै कंथ।

– जब नृसिंह अवतार में मल मास बनाकर हिरण्यकश्यप को मारा था।

ब्याह भयो दूला मरो, दुलहिन भई ऐवात।
नर-नारी सब मंगल गावै, रोवे सभी बरात।

– धनुष यज्ञ में धनुष रूपी दूल्हा टूटा तो सीता सुहागिन बन गई, अर्थात् श्रीराम से विवाह हुआ। जनकपुर की नारियाँ मंगलगीत गा रही हैं और धनुष-यज्ञ में आये राजे-महाराजे (बाराती) निराश हैं।

ये तपसी दो आवहीं, करें डार पै रार।
ऊमर पूरी हो गई, पीपर लाये नार॥

– मन्दोदरी कहती है कि ये जो दो तपस्वी लंका में आये हैं, इनका लंकेश से युद्ध चल रहा है। अब लगता है कि उनकी उम्र पूरी हो गई है, क्योंकि वे परनारी का अपहरण करके लाये हैं।

धरती-माड़न मेघ झर, सभा लजावन कन्त।
तुम्हरें हो तो देव सखी, हमरें आये सन्त॥

– एक घर में अचानक मेहमान आ जाते हैं, उनके लिए कम्बल की जरूरत थी, तो गृहिणी पड़ोस में जाकर पड़ोसन से कहती है और कम्बल माँग लाती है। कम्बल पृथ्वी को ढँकता है। कम्बल मेघ झर से बचाता है। कम्बल को ओढ़कर अगर कोई सभा में चला जाये तो उसकी हँसी होती है।

डॉ. कुंजीलाल पटेल

अबुझ बुझौआ गाँव के, ज्ञान गठरियन देत।
मौका पै करलो कछु, चेत सकौ तौ चेत॥

ग्रामीण लोग उलझे बुझौवलों को सुलझायें, इनसे ज्ञान की गठरियाँ खुलती हैं, मौका मिलते ही इनका ज्ञान प्राप्त कर लें, अचेतन मन में चेतना प्रस्फुटित करने के लिये, अज्ञात को ज्ञात करने के लिये अथाईयों में पहेलियाँ कही जाती हैं।

ग्रामीण क्षेत्रों के लोग अशिक्षित होते हुए भी कितना ज्ञान रखते थे, इसका अंदाजा चौपालों में होने वाली किस्सा कहानियों से लगाया जा सकता है। वाचिक परम्परा किसी साहित्यिक परम्परा से कमजोर नहीं है, क्योंकि लोकपरम्परा के प्रकीर्ण साहित्य से ही हमारी खानदानी पीढ़ियों की पहचान होती है–

सुनों कहानी गाँव की, गूढ़ ज्ञान की खान।
इन्हें समझकें फिर करौ, पुरखन की पहचान॥

इतना तो निर्विवाद सत्य है कि ग्रामीण क्षेत्रों में पहेलियाँ केवल मनोरंजन के लिये ही नहीं, अपितु ज्ञान बढ़ाने के लिये प्रचलित की गई होंगी और इन्हीं पहेलियों से प्रभावित होकर अलंकार शास्त्र में वक्रोक्ति सम्प्रदाय का जन्म हुआ होगा। चाहे वह संस्कृत साहित्य के आधार पर हो अथवा लोकमानस में प्रचलित पहेलियों के आधार पर। शोधयात्रा में संकलित की गई पहेलियों में से काव्यात्मक लक्षणों को पूर्ण करती कुछ प्रमुख पहेलियाँ यहाँ प्रस्तुत हैं–

सुत अपने के लैकें गोद, पति अपने संग करत बिनोद।
वेद-पुरान बतावें साखी, तीन जनन की उन्तिस आँखी॥

अपने पुत्र को गोद में लेकर अपने पति के साथ मनोविनोद करती है। सभी वेद और पुरान इसके साक्षी हैं। तीन लोगों की उन्तीस आँखें हैं। इस पहेली में पंचमुखी शंकरजी की पन्द्रह आँखें, षटमुखी कार्तिकेय की बारह आँखें तथा उनकी माता पार्वती की दो आँखें कुल मिलाकर उन्तीस आँखें होती हैं।

वर माँगन वर लौ गई, वर माँगे फिर दोय।
वर पाये बेवर भई, जानत जग सब कोय॥

वरदान माँगने के लिये अपने पति के पास गई, फिर पति से दो वरदान माँगे। उसे पति से वरदान तो मिल गये, लेकिन वह बिना वर के अर्थात् विधवा हो गई। ऐसा करने वाली स्त्री संसार में सब कोई जानता है। अर्थात् कैकेयी वरदान माँगने अपने पति दशरथ के पास जाकर दो वरदान एक में राम का वनवास और दूसरा भरत का राजतिलक माँगती है। वरदान तो उसे मिल जाते हैं, लेकिन दशरथ के दिवंगत हो जाने से बिना पति के वह विधवा हो जाती है।

तुला-तुला कौ बैर भओ, कुंभै लै गयो चोर।
करक रास ढूंड़न चलौ, करबे टोर मरोर॥

दो तुला राशि वालों में दुश्मनी हो गई। एक तुला राशि वाला दूसरे तुला राशि वाले की कुंभ राशि वाली पत्नी को चोरी से लेकर चला गया। चोरी गई स्त्री और चोरी करने वाले दुश्मन का पता लगाकर उसको तोड़ने-मरोड़ने के लिये कर्क राशि वाला चल दिया। इस पहेली में राम और रावण की तुला राशि, सीताजी की कुंभ राशि तथा रामदूत हनुमानजी की कर्क राशि है।

रारकरत ते दो जनें, देखत ती इक नार।
जिनके नैना चाइये, दो हजार उर चार॥

दो लोगों में लड़ाई हो रही थी, लड़ाई को एक स्त्री देख रही थी। लड़ाई करने वालों की देखने वाली सहित तीनों की आँखें, दो हजार चार होना चाहिये। बताइये ये तीनों कौन हैं? इस पहेली में कालिया नाग जो हजार फनवाला है उसकी आँखें दो हजार, उससे लड़ने वाले श्रीकृष्ण की दो आँखें और देखने वाली नागिन की दो आँखें इस प्रकार तीनों की मिलाकर कुल आँखें दो हजार चार होती हैं।

जितै हवा नईं जा सकत, रविराशि उदय न होये।
जीको बिरमा नईं रचो, लेत आइयौ सोये॥

जिस जगह पर हवा नहीं जा सकती, उस जगह पर कभी सूरज-चन्द्रमा उदय-अस्त नहीं होते। ऐसी जगह एक ऐसी वस्तु पैदा होती है, जिसकी रचना ब्रह्मा द्वारा नहीं की गई। ऐसी वस्तु बाजार से जरूर लेते आना। इस पहेली का उत्तर मुरार अर्थात् कमल की जड़ है। वह तालाब के अन्दर कीचड़ में होती है, वहाँ हवा नहीं पहुँचती और कीचड़ के अन्दर न ही सूरज-चन्द्रमा के प्रभाव की पहुँच होती है।

सिव के सुत की माँत के, आखर चार सुरेश।
बीच-बीच के छोड़के, भेजो करे हमेश॥

शंकरजी के पुत्र गणेश, उनकी माता का चार अक्षर वाला नाम जिसे सारे देवता तक जानते हैं, उस नाम के बीच-बीच के अक्षर छोड़कर हमेशा भेजते रहा करें। इस पहेली के उत्तर में शंकरजी की पत्नी का चार अक्षर वाला नाम 'पारवती' (पार्वती) है। उसके मध्याक्षर र एवं व अलग कर देने पर दो अक्षर पा और ती अर्थात् पाती रह जाते हैं। जिसका अर्थ चिट्ठी- पाती अर्थात् पत्र होता है।

छिकर कना दो पूछियाँ, दस गोड़े मुख चार।
एक मुख में जिभ्या नहीं, का है करौ विचार॥

जिनके हिरण जैसे कान हो, दो पूँछ हो, दस पैर हो, चार मुख हो, एक मुख जीभ रहित हो, यह सब क्या है? सोच विचार कर इसका मतलब बताइये। इस पहेली में गाय तथा बछड़े के हिरण जैसे कान, दोनों की दो पूँछ तथा आठ पैर, दोहनी का जीभ रहित एक मुख, दोहनी करने वाले के दो पैर, इस प्रकार दो पूँछ, दस पैर, चार मुख होते हैं।

सुआ परेवा किलकिला, संग बगलन की नार।
पिया बजारै जायकें, चीजें लाइयौ चार॥

तोता, कबूतर, किलकिला और बगला के रूप या रंग वाली चार वस्तुएँ के रंग का कत्था तथा बगला के रंग का चूना होता है। पत्नी पान मँगाने के लिये सीधे न कहकर पहेली के माध्यम से अपने पति से कहती है।

पन्द्रा आये पांवने, बरा बनाओ एक।
सबखां परसो आदौ-आदौ, दूलै परसो एक॥

पन्द्रह मेहमान आये हैं, उनके लिये एक बरा बनाया गया है। सभी मेहमानों को आधा-आधा और दूल्हा को एक पूरा परोसा गया है। यह कैसे हुआ? पहेली का आशय महीने के पखवाड़े के पन्द्रह दिनों से है, जिनमें चन्द्रमा आधा-आधा रहता है और पूर्णमासी अर्थात् दूल्हा के लिये है। इस दिन चन्द्रमा पूरा उदित होता है।

चलत-चलत बूढ़े भये, चले न एकऊ कोस।
लरका बारे बेंच खाये सब, तऊँ न आओ होस॥

चलते-चलते बुढ़ापा आ गया है, लेकिन एक कोस अर्थात् दो मील भी नहीं चल पाये। सभी बाल-बच्चे बेंच डाले लेकिन फिर भी होश नहीं आया। इस पहेली का उत्तर कुम्हार का मिट्टी के बर्तन ढालने के लिये चलाने वाला लकड़ी का पहिया या चका है और मिट्टी के बर्तन उसके बच्चे हैं।

एकई बखरी एकई गाँव, दो बिटियन के एकई नाँव।
मिले जुरे कौ रै गओ पेट, दोनन कें भओ लरका एक॥

एक ही घर है, एक ही गाँव है। दो लड़कियों का एक ही नाम है। दोनों को मिलाजुला एक ही गर्भ ठहर गया है और दोनों लड़कियों के गर्भ से एक ही लड़का पैदा हुआ है। इस पहेली का उत्तर समुद्र या जलाशय में होने वाली छिपनी या सीप है। सीप के दोनों भागों को बिटियाँ और मोती को एक लरका और समुद्र या तालाब को बखरी एवं गाँव कहा गया है।

झट नाहाँ झट माँहाँ, छै गोड़े दो बाँहाँ।
पीठ के ऊपर पूँछ लटके, जौ तमासौ काँ है॥

तुरत इधर और तुरत उधर हो जाती है। उसके छह पैर और दो बाँहें अर्थात् हाथ हैं। उसकी पूँछ पीठ के ऊपर लटक रही है। यह तमाशा कहाँ है। इस पहेली का उत्तर सामग्री तोलने वाली तराजू है। जिसके पलड़े वजन के आधार पर ऊपर नीचे होते रहते हैं। उसमें लगी छह जंजीरें उसके छः पैर हैं। तराजू की डंडी उसके दो हाथ और पकड़ने वाली उसकी गठान लगी रस्सी पूँछ हैं।

तीन पाँव धरनी धरै, एक करे अम्बार।
बिन बादर बिन मेघके, बरसे मूसरा धार॥

तीन पैर धरती पर रखता है, एक पैर आकाश की तरफ ऊपर उठाता है। बिना बादल उठे और बिना मेघ के छाये मूसलाधार बारिश करता है। बताओ यह क्या है। इस पहेली का उत्तर कुत्ता हुआ, क्योंकि जब भी वह किसी जगह पर पेशाब करता है तो उसके तीन पैर धरती पर और चौथा पैर आकाश की ओर उठ जाता है।

दिल्ली देखी बम्बई देखी, फिर देखो कलकत्ता।
ऐसौ पेड़ौ कहूँ ना देखो, फल के ऊपर पत्ता॥

दिल्ली, बम्बई और कलकत्ता सभी देख लिये, लेकिन कहीं ऐसा पेड़ नहीं देखा, जिसके फल के ऊपर पत्ते लगे हों। इस पहेली का उत्तर सिंघाड़े का पेड़ है, क्योंकि उसमें नीचे फल अर्थात् सिंघाड़े लगते हैं और फलों के ऊपर पत्ते उगे होते हैं।

लम्ब पूँछ बड़ दंत है, लंक विनाशन कीन।
रामायन न मिलै, हनुमान नहिं चीन॥

उसकी लम्बी पूँछ है, बड़े-बड़े दाँत हैं, और वह लंकविनाशी है। वह रामायण में नहीं मिलेगा। वह हनुमान भी नहीं है, बताइये वह कौन है। इस पहेली का उत्तर किसान का एक उपकरण है, जिसे पचा कहते हैं। इसके बड़े-बड़े दाँत तथा लम्बी पूँछ होती है। इससे किसान खलियान में फसल जिसे लंक या लांक कहते हैं। उसे तोड़ता है।

लम्पा से हांत गोड़े, सूते सी करयाई।
मूछन पै हांत फेरै, सांवरौ सिपाई॥

लम्पा जैसे पतले उसके हाथ पैर हैं, सूत सी पतली उसकी कमर है। मूँछों पर हमेशा अपना हाथ फेरता रहता है। यह साँवले रंग वाला सिपाही कौन है। यह पहेली चींटी से बड़ी चींटे

पर कही गयी है, क्योंकि उसके हाथ पैर लम्पा जैसे पतले तथा कमर सूत सी पतली और कमजोर होती है। जो अपनी मूँछों पर हाथ सा फेरता चलता है।

खेती के समान में, आखर पूरे तीन।
पैलो आखर छोड़कें, ब्याह राम को दीन॥

खेती के उपकरण के एक पुर्जे का नाम तीन अक्षर का है। उस उपकरण का पहला अक्षर छोड़कर शेष बचे दो अक्षर वाले नामधारी का विवाह राम के साथ किया गया है। इस पहेली का उत्तर सिया अर्थात् सीता है। हल में कुसिया लगता है। इसका प्रथम अक्षर हटाने से सिया शब्द बनता है, जिसका अर्थ सीता होता है।

एक बैलवा अजरा-कजरा, चारु देश रमांय।

बादशाह से बातें करत, पानू देख डराय॥

एक वस्तु सफेद एवं श्याम रंग की है। वह देश के चारों दिशाओं में आती-जाती है। वह बादशाह तक से बातें करने में सक्षम है। लेकिन पानी से उसे डर लगता है। इस पहेली का उत्तर कागज है। जिस पर चिट्ठी-पाती या संदेश लिखकर भेजा जाता है।

मैं लैन आई ती तोय, तैनें लै लओ मोय।
जब तें छोड़बै मोय, तब में लै जैहौं तोय॥

मैं तुझे लेने के लिये आई थी, लेकिन तू ने ही मुझे ले लिया है। जब तुम मुझे छोड़ोगे तभी मैं तुम्हें लेकर जाऊँगी। इस पहेली में एक पनिहारी पानी लेने के लिये पनघट पर गई, तभी पानी बरसने लगा इसीलिये वह कहती है कि मैं तुझे अर्थात् पानी को भरकर घर ले जाने के लिये आई थी, लेकिन पानी ने मुझे ले लिया अर्थात् पानी बरसने लगा। जब पानी बरसना रुकेगा, तब वह कुँए का पानी भरकर ले जायेगी।

बारे में बगला बनी, जबानी में सुआ।
सांसी बताव ऊकौ, बुढ़ापै में का हुआ॥

बचपन में बगला की तरह सफेद रंग और जवानी में तोता की तरह हरा एवं लाल रंग हो जाता है। सही-सही बताइये उसका बुढ़ापे में क्या होता है। इस पहेली का उत्तर मिर्च है। उसका फूल सफेद, फल पहले हरा फिर लाल रंग का हो जाता है और बुढ़ापे में सूख जाने पर मसाले में पीसी जाती है।

एक भुजा धारन करें, बैठी एकई ठाम।
सब जग की चिन्ता करें, तन पै नइयां चाम॥

वह एक ही भुजा धारण करती है। एक ही जगह स्थापित रहती है। संसार के सभी लोगों की उसे चिन्ता रहती है। उसके शरीर में चमड़ी नहीं है। बताइये वह क्या है? इस पहेली का

उत्तर अनाज पीसने के लिये हाथ से चलने वाली देशी आटा चक्की है। जो घर में एक ही जगह स्थित होती है।

तीन नेत्र शंकर नहीं, दूध देत नहिं गाय।
पेड़ चड़ो पंछी नहीं, ईकौ अरथ बताय॥

तीन नेत्रवाला है लेकिन शंकरजी नहीं है। दूध देता है लेकिन गाय नहीं है। पेड़ पर चढ़ा है लेकिन पक्षी नहीं है। तो फिर क्या है इसका उत्तर बताइये? इस पहेली का उत्तर नारियल है, क्योकि उसमें तीन आँखें होती हैं, कच्चे नारियल का पानी दूध जैसा होता है तथा पेड़ के ऊपर फलता है।

दस नख धरनी पै चलैं, अतफर चलें पचास।
तीन मूड़ दो आँखियाँ, पतौ लगा दो खास।

अंगूठा और आठ उगलियों के नाखून सहित दस धरती पर और पचास अधर में चलते हैं। इनके तीन सिर और दो आँखें हैं। इनका सही पता कर बताइये। प्रस्तुत पहेली श्रवण कुमार तथा उनके माता-पिता पर रची गई है, अंधे माता-पिता को काँवर में बैठाकर श्रवण कुमार उन्हें लिये जा रहे हैं।

तेली लौ कौ तेल, कुमार की हण्डी।
हांती कैसी सूंड, नबाब की झण्डी॥

तेल बेचने वाले के घर का तेल और कुम्हार के घर बना मिट्टी का बर्तन है। हाथी के समान उसकी सूँड है। वह नबाब की झण्डी के समान है। बताइये यह क्या है? इस पहेली का मतलब दीपक और उसकी लौ है।

बीस हांत कौ लुगवा, दो हांत की लुगाई।
जग जाहिर भओ, कौन है ऐंसौ भाई॥

सारे संसार में प्रसिद्ध बीस हाथ का मर्द और दो हाथ की औरत कौन है? इस पहेली का उत्तर बीस हाथ वाला रावण और दो हाथ वाली उसकी पत्नी मंदोदरी है।

पांच नखन धरती चलै, पचमन अधर लखात।
तीन लोक की संपदा, धरैं कंदन पै जात॥

पाँच नखवाला अर्थात् एक पाँव धरती पर तथा पचपन नख अर्थात् पाँच पाँव और छः हाथ अधर में दिखाई दे रहे हैं। तीन लोक की सम्पदा को कंधों पर धारण कर जा रहा है, वह कौन है। प्रस्तुत पहेली में पाताल लोक में अहिरावण को मार कर राम-लक्ष्मण को कंधों पर बैठाकर हनुमानजी रामदल में ला रहे हैं। अर्थात् हनुमान, राम और लक्ष्मण इस पहेली का उत्तर हैं।

ऊँट कैसी बैठक बैठो, चीता कैसी खाल।
एक अचंभौ हमने देखो, तन में नइयां बाल॥

ऊँट के समान बैठता है, चीता जैसी उसकी खाल है, उसके शरीर में बाल नहीं है। एक ऐसा आश्चर्य हमने देखा है। बताइये कौन है? इस पहेली का उत्तर मेंढक है, क्योंकि वह ऊँट के समान बैठता है, चीता जैसे रंग की उसकी खाल होती है तथा उसके शरीर में बाल नहीं होते।

दस जनन के बीच में, पकरी गई इकनार।
अपनो काम समार कें, पाछूँ डारो-मार॥

दस के द्वारा एक स्त्री पकड़ी गई। अपना काम पूरा करके बाद में उसे मार दिया या पटक दिया। इस पहेली का उत्तर हाथ की दसों अंगुलियाँ तथा रोटी है। रोटी को अंगारों से सेक कर उसको बर्तन में पटक देते हैं।

गंगा सिर ऊपर बहत, गरें मुण्ड की माल।
बरधा पै असबार है, गौरा कौ पति नाय॥

सिर के ऊपर गंगा बहती है, गले में मुण्डों की माला धारण किये हैं। बैल उसको ढोते हैं, वह पार्वती का पति शंकर नहीं है, तो और क्या है? इस पहेली का उत्तर रहट है। जो कुँए से पानी खींचता है। उसकी घरियाँ मुण्डमाल जैसी लगती हैं, रहट को बैल खींचते हैं।

हार से आई बन्दरों, धरै छिदाये कान।
बीस पाँव से निग चली, छै मौं बारह कान॥

जंगल से काट-बाँधकर लाई गई, घर में उसके कान छिदाये गये। बीस पाँव से चलती है, छः मुख और बारह कान उसके साथ चलते हैं। प्रस्तुत पहेली का उत्तर पारम्परिक खेती का एक उपकरण कोपर है, जिसे चार बैल खींचते हैं। दो किसान बैलों को पीछे से हाँकते हैं। सोलह बैलों के चार किसानों के कुल बीस पैर, चार बैलों के दो किसानों के कुल छः मुख तथा आठ बैलों के एवं चार किसानों के कुल बारह कान होते हैं।

नीर छीर की उठें हिलोरे, बोले हाँ-हूँ बानी।
भरे कुआ में बुड़की दैबे, और मुगावै पानी॥

पानी और दूध की हिलोरें उठ रही हैं। हाँ-हूँ जैसी आवाज सुनाई देती है। भरे कुँए में डुबकी लगाने वाला पानी और माँग रहा है। प्रस्तुत पहेली का उत्तर नवनीत का लोंदा है, जो दही मथते समय मटकी में डूबता-उतराता है।

टेड़ी-मेड़ी बाँसुरी, बजावे बारौ कौन।
सीता चली मायके, लौटाबे बारौ कौन॥

टेढ़ी-टापटी बाँसुरी कोई नहीं बजा सकता। सीता मायके जाये तो उसे कोई लौटा नहीं सकता। इस पहेली का उत्तर बाँसुरी और सीता से न होकर नदी से है। क्योंकि नदी की धारा को कोई रोक नहीं सकता।

बाप-बेटा कौ एकई नांव, मताई कौ और।
इसकौ अरथ बताइयौ, फिर टोरियौ कौर॥

पिता और पुत्र का नाम एक ही है, लेकिन माता का नाम दूसरा है। इस पहेली का अर्थ और सही उत्तर बताना, इसके बाद भोजन के लिये रोटी का निवाला तोड़ना। यह पहेली महुआ पर रची गई है। महुआ बाप और बेटा दोनों को कहा जाता है और उसके फल को गुली कहते हैं।

आकास बाकौ घोंचुआ, पाताल बाकौ अड़ा।
ईसकौ अर्थ बता पनिहारी, फिर उठाइये घड़ा॥

धरती के ऊपर पेड़ की डाल में घोंसला सा लटका है। उसमें धरती पर अण्डा सा गिरता है। इस पहेली का अर्थ बताने के बाद ही पनिहारी तुम अपने घड़े उठाना। इस पहेली का उत्तर भी महुआ ही है। उसका लौंचा घोंसला सा तथा फूल अण्डे जैसा होता है।

ओई के लाने मंगल घूमें, ओई की उतरै घानी।
पंडित जू तुम करौ कलेबा, तुम बहू उठाओ पानी॥

उसके लिये मंगल चक्कर लगा रहा है। उसी की घानी उतरती है। पंडितजी तुम भोजन करो और बहू तुम पानी लेकर घर चलो। इस पहेली का उत्तर भी महुआ ही है। महुआ से बनी दारू के लिये पियक्कड़ घूमता है। कोल्हू में तेल निकालने के लिये उसी की घानी उतरती है। पहेली की पंचायत निपटने पर सास कहती है कि पंडितजी तुम भोजन करो और बहू तुम पानी के घड़े उठाकर अपने घर चलो।

जल थम्मन उर तरधिसन, सभा सजावन कंत।
बे मुझको दै दो जिजी, मो घर आये महंत॥

एक स्त्री दूसरी स्त्री के घर जाकर कहती है कि जल को थामने वाले, जमीन पर बिछाने वाले और सभा की शोभा बढ़ाने वाले तुम्हारे पास हैं, वे मुझको दे दीजिये। मेरे घर संत आये हुए हैं। प्रस्तुत पहेली में एक गृहणी दूसरी गृहणी से पहेली के माध्यम से सन्तों को बैठने के लिये बिछाने हेतु कम्बल माँगने के निमित्त ऐसी बात करती है।

बरे बराये जां बरें, मरें उसासें लैंय।
उन घर बैठे वे सखी, पूँछ आऊ सो दैंय॥

घर आई दूसरे घर की गृहणी से घर मालकिन अपने पति का तथा जिसके यहाँ पति गये हैं, उसका नाम न लेकर पहेली में कहती है कि जहाँ पर जले जलाये अर्थात् कोयला जलाते हैं, मरे सांस लेते हैं, उनके घर वे अर्थात् मेरे पति बैठे हैं। उनसे जाकर पूछ आओ तभी कम्बल दूँगी। प्रस्तुत पहेली में उसका पति लोहार के घर गया है। उसकी धोकनी में जला कोयला जलता है और मरे हुए जानवर की खाल की धोंकनी सांस लेती है।

पानू कैसौ मटका, पेड़े ऊपर लटका।
हवा हो चय झटका, उसको न खटका॥

पानी के घड़े जैसा पेड़ की डाल पर लटक रहा है। हवा और साधारण झटके में गिरने की चिन्ता उसको नहीं रहती है। इस पहेली का उत्तर टमाटर है। जो अपने पेड़ पर छोटे घड़े की तरह लटका रहता है और हवा के झटके में वह टूटकर गिरता नहीं है।

चार खूँट कौ चौंतरा, ऊपर बैठो जेठ।
जेठ के सामू बहू निकरी, ऊकें रै गओ पेट।

चार खूँट का अर्थात् एक चौकोर चबूतरा के ऊपर जेठ बैठा है। जेठ के सामने बहू निकली तो उसको पेट रह गया अर्थात् बहू गर्भवती हो गई। इस पहेली में चूल्हा चौकोर चबूतरा है, चूल्हे पर चढ़ा तवा जेठ है और बहू फूली हुई रोटी है। पहेली का उत्तर रोटी है।

राजन के राज में नहीं, माली के बाग में नहीं।
फोरौ तो गुठली नहीं, खाओ तो स्वाद नहीं॥

एक ऐसी वस्तु है जो किसी राजा के राज्य में और किसी माली के बाग में पैदा नहीं होती। फोड़ने पर उसमें गुठली नहीं निकलती तथा खाने पर उसका कोई स्वाद नहीं मिलता। प्रस्तुत पहेली ओले अर्थात् उपलवृष्टि वाले बर्फ के छोटे-छोटे गोल टुकड़े, जिससे बुन्देली में ओरौं कहते हैं, पर गढ़ी गई है।

जबलौ रई में भोरी-भारी, तबलौ सै लई मार।
जबसे ओढ़ी लाल घंघरिया, अबना सैहौं तोरी मार॥

जब तक मैं भोली-भाली अर्थात् अपरिपक्व थी, तब तक तुम्हारी मार-पीट बरदाश्त करती रही। अब मैंने लाल रंग की घंघरिया धारण कर ली है, अर्थात् परिपक्व हो गई हूँ। अब मैं तुम्हारी मारपीट सहन नहीं करूँगी। यह पहेली मिट्टी के घड़े पर गढ़ी गई है। घड़ा जब तक कच्ची और गीली मिट्टी का होता है, तब तक कुम्हार उसे ठोक पीटकर अपने अनुकूल आकार देता है। आग में पकने के बाद वह लाल रंग का मजबूत और परिपक्व हो जाता है। फिर ठोकने पीटने पर वह फूट जायेगा।

घर में बावन चोर घुसे हैं, सबरन कौ मौं कारौ।
पूँछ पकर के तनक रगड़ दो, करन लगत उजयारौ॥

एक घर में बावन चोर घुसे हैं। सभी के मुँह काले हैं। उनकी पूँछ पकड़कर रगड़ने या घिसने से वे उजेला देने लगते हैं। यह पहेली माचिस और उसकी तीलियों पर गढ़ी गई है।

एक रंग के हैं दो भइया, गैरो उनमें नाता।
एक-एक से बिछुर जाय तौ, दूजौ काम न आता॥

दो भाई एक रंग के हैं। दोनों में बहुत ही गहरा सम्बन्ध है। एक दूसरे से बिछुड़ जाने पर कोई भी किसी काम का नहीं रहता। यह पहेली जूतों की जोड़ी पर गढ़ी गई है।

बिरछा ठांड़ो खेत में, नर-पंछी सब खांय।
बाप घुसे खुद पेट में, पूत बरातै जांय॥

एक वृक्ष ऐसा है जो स्वयं खेत में खड़ा है। उसके फल मनुष्य और पक्षी सभी चाव से खाते हैं। पिता गर्भ में हैं और उसके पुत्र बारात में जाते हैं। प्रस्तुत पहेली खजूर के ऊपर विरचित है। उसके फल सब खाते हैं। खजूर के गर्भ का पिण्डा उसके अन्दर रहता है तथा उसके खबनों से मौर अर्थात् दूल्हे का सेहरा बनकर वरयात्रा में जाता है।

तनक सी मनक सी, हरदी कैसी बाम।
चटाक चूमा लै गई तौ, हाय मोरे राम॥

हल्दी जैसे पीले रंग वाली कोई बड़ी न होकर बहुत छोटी अर्थात् हल्दी की गाँठ जैसी है। अगर किसी को तनक चूम लेती है तो वह हाय राम कहकर चीखने लगता है। इस पहेली का उत्तर बर्र या बरैया है।

लाल मूड़ मुरगा नहीं, लम्ब पूँछ नहिं मोर।
नीलकंठ शंकर नहीं, चार पाँव नहिं ढोर॥

लाल सिर है लेकिन मुर्गा नहीं है। लम्बी पूँछ है लेकिन मोर नहीं है। नीला कंठ है लेकिन शंकरजी नहीं हैं। चार पैर हैं लेकिन जानवर नहीं है। इस पहेली का उत्तर गिरदौना अर्थात् गिरगिट है।

सैंगे में हम मरद, फटे से नार कहायें।
कर गंगा असनान, जटा सब दूर बहायें॥
कर पथरा से मेल, अगन के ताव सहाये।
करो दही से मेल, मरद के मरद कहाये॥

सेंगी और साबुत अवस्था में मर्द थे। फाड़ देने पर नारी कहाने लगे। पानी में नहाकर जटा धोकर पानी में बहा दिये। इसके बाद पत्थर पर पीस कर अग्नि में हमें पकाया गया। इसके बाद दही-मही में डुबोने के बाद हम मर्द के मर्द कहलाने लगे। इस पहेली का उत्तर उड़द और उसकी दाल से बनने वाले बरा या बड़ा हैं। उड़द पुरुष वाची है। दलने से दार या दाल स्त्री वाची हो जाती है। पानी में फुलाकर धोते समय छिलका जल में बहा दिये हैं। दाल पत्थर पर पीसकर उसकी फिटी से बरा बनाकर कड़ाही में तेल डालकर उन्हें तलकर पकाया जाता है। इसके बाद दही मक्खन में या मट्ठा में उन्हें फूलने को डाल देते हैं। बड़ा फूलकर मर्द पुरुष वाची होकर मर्द के मर्द कहाने लगते हैं।

करिया है पर कौआ नहीं, हाला है पर हौआ नहीं।
करै नाक से अपने काम, बताओ तुम ऊकौ नाम॥

काले रंग का है लेकिन कौवा नहीं। हाला फूला अर्थात् मोटे शरीर वाला है, लेकिन हौआ या भूत नहीं है। अपने सारे काम वह नाक से करता है। उसका नाम बताइये। इस पहेली का उत्तर हाथी है जो सूँड अर्थात् नाक से अपने सभी काम करता है।

आठ कटाकट नौ पंचारी, सोरा बेंट अठारा नारी।
आओ पांडे करे विचार, सोरा घरकौ एकई द्वार॥

उसके आठ उपकरण लकड़ी काटकर बनाये जाते हैं। नौ पटिया सोलह बेंत और अठारा अरा बनाये जाते हैं। पांडेजी विचार कर बतायें कि सोलह घर का एक ही द्वार वाला वह क्या है। यह पहेली लकड़ी के पुर्जों से निर्मित बुन्देली किसान का पारम्परिक सिंचाई का उपकरण रहट है।

काकी कें दो कान, कका कें कानई नइयां।
काकी चतुर सुजान, कका कछू जानत नइयां॥

चाची के दो कान हैं लेकिन चाचा के वे भी नहीं हैं। चाची चतुर और बहुत कुछ जानने वाली है लेकिन चाचा कुछ भी नहीं जानता। यह पहेली कड़ाही तथा झारौ अर्थात् झारा पर रची गई है।

एक चिरैया रंग विरंगी, बैठी वर की डार।
काश्मीर कौ लांगा पहरें, मोती की झलकार॥

एक चिड़िया रंग-बिरंगी है। वह बरगद जैसे पेड़ की डाल पर स्थित है। कश्मीरी रंग का लहँगा धारण किये है। उस पर मोती जैसे दाने झलक रहे हैं। उक्त पहेली पलाश के पेड़ तथा उसके फूल पर रची गई है।

एक अचंभौ हमने देखो, लगी कुँआ में आग।
पानी ऊकौ सबरौ बर गओ, मछली खेलत फाग॥

हमने एक आश्चर्य देखा है। कुँआ में आग लगी है। उस आग से कुँए का पानी धीरे-धीरे जल रहा है। मछली फाग खेल रही है। यह पहेली लोकमानस ने लालटेन के ऊपर रची है।

एक तिरिया छैल छवीली, छैलन ऊपर चड़ती है।
अपने ऊपर छैल चड़ावै, फिर छैलन पर चड़ती है॥

छैल छबीली एक स्त्री है जो मर्दों के ऊपर सवार होती है। अपने ऊपर छैल चढ़ा लेती है और फिर मर्दों के ऊपर सवार हो जाती है। इस पहेली का उत्तर पालकी है। जिस पर दूल्हा सवार होता है और पालकी कहारौं अर्थात् मर्दों के ऊपर सवार होती है।

पैलां आई बैनें-बैनें, पांछे आये भइया।
कथरी ओढ़ें दादुर आये, टीका दैकें मइया॥

पहले बहिनें आती हैं फिर उनका भाई आता है। फिर कथरी ओढ़कर मेंढक आता है। इसके बाद तिलक लगाकर माता आती है। इस पहेली का उत्तर लोकमानस में महुआ है। इसमें बहिनें महुआ की कौचियाँ और करीं हैं, भाई उसका फूल महुआ है। मेंढक गुलैंदा है और माता उसकी गुली है।

कऊं से आई तीतरी, कऊं से आओ सुआ।
कऊं से आये दो जनें, सबकौ एक रंग हुआ॥

कहीं से तीतर के रंग वाला आया, कहीं से तोता के रंग वाला आया, कहीं से दो रंग वाले आये, लेकिन इकट्ठे करने पर सबका एक रंग हो गया। बताओ यह पहेली क्या है? इस पहेली का उत्तर पान का बीरा है, जिसमें तीतर रंग का कत्था, सुआ रंग का पत्ता, बगला रंग का चूना और कबूतर के रंग की सुपाड़ी डाली जाती है।

कुमार की माटी, पतरोना की तिली।
कोरी के कपास में, किस तरांसे मिली॥

कुम्हार के घर की मिट्टी, पतरोनी जमीन में पैदा हुई तिलहन, कोरी के कपास में किस तरह से मिल गई। इस पहेली का उत्तर दीपक, तेल और बाती है, क्योंकि कुम्हार दीपक बनाता है, तिलहन से तेल बनता है और कपास से बाती बनती है।

मैं लाल-लाल गुटकों, मैं हांत डारूँ तुझको।
तू काट खाय मुझको, मैं लप्प उड़ाऊँ तुझको॥

मैं लाल-लाल खाता हूँ, इसीलिए तुझ पर हाथ डालता हूँ। तुम मुझे काटोगे तो मैं तुझे लप्प से जल्दी खा जाऊँगा। इस पहेली का उत्तर बेरी का फल अर्थात् बेर है। वह बेर की जिस डाल में लगा होता है उसमें काँटे होते हैं, इसलिए तोड़ते समय काँटों के चुभने का डर रहता है।

एक नकरिया अँगरा चार, लैकें गये बढ़हई के द्वार।
बढ़हई दद्दा करत विचार, नाप नूप कें करो विचार।
खाट-पिंड़ी और मांची, तऊँ नकरिया बाची॥

चार अंगुल की एक लकड़ी लेकर कोई बढ़ई के घर कुछ लकड़ी की वस्तुएँ बनवाने पहुँचा। बढ़ई दादा ने नापानापी करके विचार किया तथा खटिया, पीढ़ी और मचिया बनाकर तैयार की। इसके बाद भी लकड़ी बची रही। इस पहेली का उत्तर लकड़ी के पटियों पर लकीर या रेखायें खीचने वाली शीश अर्थात् पेन्सिल है।

देखी एक अनोखी नार, जी के कैऊ हजारन यार।
पल में सबसे करबै प्यार, सबसे पल में हौबे न्यार॥

हमने एक विचित्र स्त्री देखी है। जिसके हजारों यार हैं, वह स्त्री क्षण भर में सभी यारों से प्यार करती है तथा क्षण भर में सबसे अलग हो जाती है। इस पहेली का उत्तर कंघी और बाल हैं। कंघी स्त्री-वाची है तथा बाल यार अर्थात् पुरुष-वाची संज्ञा है।

नभ से गिरो न भुईं उठो, जननी जनो न ताय।
देख उजेरौ जो भगै, पकर कें ल्याव वाय॥

जो न आकाश से गिरा हो, न जिसे माता ने जन्म दिया हो, उजाले को देख जो भागता हो,

उसे पकड़कर ले आइये। इस पहेली का उत्तर अँधेरा है। जो न ऊपर से गिरता है, न कोई माँ जन्म देती है, प्रकाश देखकर वह भाग जाता है।

बे हांत कौ बे पाँव कौ, पहार चड़ो जाय।
देखौ बनखंडी बाबा, कौन जनावर आय॥

बिना हाथ पैर का है और पहाड़ों पर चढ़ जाता है। वनखण्ड में भी दिखाई देता है, लेकिन वह कौन सा जानवर है, बताइये। इस पहेली का उत्तर धुँआ और बादल है।

बरसा बरसे रात भर, भींजे सब बनराय।
गगर न डूबै न गड़ई, पंछी प्यासौ जाय॥

रात भर बरसात बरसती है, सब वनराई भीग जाती है, लेकिन उस बरसात के पानी में न गगरी डूबती है और न लोटा डूबता है। पक्षियों तक की प्यास उससे नहीं बुझती। प्रस्तुत पहेली का उत्तर रात में गिरने वाली ओस है।

संजा कें पैदा भई, आधी रात जवान।
होत भुँसरा मर गई, घर हो गओ मसान॥

संध्या के समय पैदा होकर अर्धनिशा में जवान हो जाती है। सुबह होते ही मर जाती है और उसका घर शमशान हो जाता है। यह पहेली भी ओस पर रची गई है।

एक सहर ऊचौ बनो, एक-एक घर में एक-एक जनों।
चिना न परै पुरुस कै नारी, पैहरें सबई बसंती सारी॥

एक शहर ऊँचाई पर बसा है। एक-एक घर में एक-एक प्राणी है। कौन पुरुष है और कौन स्त्री पहचान से परे है। सभी बसन्ती रंग की साड़ी धारण किये हैं। प्रस्तुत पहेली का उत्तर बर्र तथा उनका छतिया है।

कारे वन में रहता है बौ, कारे तिल सौ कारौ।
कानपुर में पकरो गओ कयें, हत्तनपुर में मारौ॥

वह काले जंगल में रहता है, काली तिलहन जैसा काला है। कानपुर के आस-पास पकड़ा जाता है। हस्तनापुर में मार दिया जाता है। प्रस्तुत पहेली का उत्तर जूं अर्थात् जुँआ है, जो सिर के बालों में रहता है। कान के आस-पास पकड़ा जाता है और हाथ की हथेली पर रखकर उसे मार देते हैं।

कर बोलै कर ही सुनें, कान सुनें न ताह।
कहैं बुझौवल वीरवल, बूझौ अकबर साह॥

हाथ बोलता है और हाथ ही सुनता है, उसे कान नहीं सुन सकता। बीरबल जैसे लोग ऐसे बुझौवल पूछते हैं और अकबर जैसे बादशाह उसका उत्तर देते हैं। इस पहेली का उत्तर मुनष्य की नाड़ी है, जिसे टटोल कर उसकी बीमारी की तासीर का अन्दाज लगाते हैं।

कुकरा जैसी कलगी, बुकरा जैसे कान।
मोरी किसा बताव तुम, नहिं तो लगे मसान॥

मुर्गा की तरह उसकी कलगी तथा बकरा जैसे कान वाला क्या है? हमारी पहेली बताओ। न बताने वाले को मशान लग जायेगा। इस पहेली का उत्तर पलाश का फूल तथा पत्ता है। क्योंकि पलाश का पुष्प मुर्गा की कलगी तथा फल बकरा के कान की आकृति के होते हैं।

सोने की वह है नहीं, सोने की है नार।
खाती पीती कुछ नहीं, बूझौ बूझन हार॥

उस स्त्री वाची संज्ञा का नाम बताइये जो स्वर्णधातु से निर्मित नहीं है। सोने के काम आती है। कुछ खाती पीती भी नहीं है। इस पहेली का उत्तर खटिया है, जिस पर लोग सोते हैं और सोने से नहीं बनी है।

फूंसा फांसी कबसें, आदौ चलो गओ जब सें।
राजीबाजी कबसें, पूरौ चलो गओ जब सें॥

यह पहेली वास्तव में अन्यार्थक नहीं है, बल्कि चूड़ियाँ पहनने वाली तथा चूड़ियों पर केन्द्रित है। जब तक चूड़ियों में पहनने वाली का आधा हाथ जाता है, तब तक दर्द के कारण वह आह-ऊह करती है और जब चूड़ियाँ कुँहचा के अन्दर पहुँच जाती हैं, तब वह प्रसन्न हो जाती है। पहेली पूर्णत: चूड़ियों और पहनने वाली के हाथ पर केन्द्रित है।

चार खूंट कौ नगर बसो है, चार कुँआ बिन पानी।
चारे अठारा ऊके अंदर, संग में लयें एक रानी॥

एक चौकोर नगर में बिना पानी के चार कुँआ हैं। नगर के अन्दर अठारह चोर एक रानी सहित घुसे हुये हैं। यह पहेली कैरम बोर्ड पर रची गई है।

चार खूंट कौ चपटुआ, आदे हाँत कौ डंडा।
ऊ डंडा को तनक घुमा दो, होय करेजौ ठंडा॥

एक वस्तु चौकोर और चपटे आकार की है। उसमें आधे हाथ की डंडी लगी हुई है। डंडी को पकड़कर थोड़ी देर घुमाने पर कलेजा ठंडा हो जाता है। पहेली का उत्तर हाथ से हवा करने वाला विजना अथवा पंखा है।

बाप बड़े बेटा बड़े, नाती बड़े अमोल।
उनके पंती हो गये, दो कोंडी के मोल॥

बाप, बेटा और नाती का समाज में अनमोल अर्थात् साखदार और कीमती बड़प्पन है, लेकिन उनके पनाती अर्थात् नाती के पुत्र ऐसे हुये जिनकी दो कौड़ी की इज्जत नहीं है। इस पहेली के उत्तर में दूध को बाप, दही को बेटा, मक्खन को नाती और मट्ठा को पंती कहा गया है।

एक अचंभौ हमने देखो, मुरदा रोटी खाय।
टेरे सें ऊतर न दैबै, मारे से चिल्लाय॥

हमने एक आश्चर्य देखा है। मुरदा रोटी खा रहा है। टेरने पर वह कोई उत्तर नहीं देता। लेकिन मारने-पीटने पर वह चिल्लाता है। इस पहेली का उत्तर मृदंग नाम एक वाद्य है, जो ढोलक के आकार का बना होता है।

पहार हैं पर पथरा नइयां, नदी है पर पानी नइयां।
सहर है पर आदमी नइयां, जंगल है पर पेड़ नइयां॥

पहाड़ है लेकिन उसमें पत्थर नहीं है, नदी है लेकिन उसमें पानी नहीं है, शहर है लेकिन उसमें मनुष्य नहीं है और जंगल है लेकिन उसमें पेड़-पौधे नहीं हैं। इस पहेली का उत्तर नक्शा है।

कागद को घुरवा, डोरा की लगाम।
ढिलया दो डोरा, उड़जाय कर सलाम॥

कागज का एक घोड़ा है, उसे धागा की लगाम लगी है। लगाम को ढीला करने पर घोड़ा सलाम कर उड़ जाता है। इस पहेली का उत्तर कागज की पतंग है।

अन्न जानवर बन्न जानवर, कारौ चारौ खाय।
पथरा पै पौंद घिसत, झोली में घुस जाय॥

अजब-गजब का एक निर्जीव जानवर है जो काली घास खाता है। पत्थर पर अपने नितम्ब घिसता और थैली में घुस जाता है। प्रस्तुत पहेली बाल बनाने वाले नाई के उस्तरा अर्थात् छुरा पर गढ़ी गई है।

पंछी एक देखो अलबेलौ, बिन पंखन उड़ जात अकेलौ।
बांधें गरे में लम्बी डोर, नाप रहो अम्बर कौ छोर॥

हमने एक विचित्र पक्षी देखा जो बिना पंख के अकेला ही उड़ जाता है। गले में लम्बी रस्सी बाँधकर आकाश की सीमा नाप रहा है। इस पहेली का उत्तर कागज की पतंग है।

दो पग चलै चार लटकायें, तीन मूड़ दो नैन।
कौन भओ संसार में, कह दो सांसे बैन॥

दो पाँवों से चलता है। चार पाँव लटकाये है। तीन सिर है लेकिन आँखें केवल दो हैं। ऐसा इस संसार में कौन हुआ, सही-सही बताना। इस पहेली का उत्तर श्रवण कुमार तथा उनके अंधे माता-पिता हैं।

पैलाँ डारो कारौ, फिर डारौ सटकारौ।
तनक अँगरिया छुवा दई, हो गओ वारौन्यारौ।

पहले उसमें कुछ काला-काला फिर लम्बा सटकने वाला डाला गया। इसके बाद उसके मुहाने पर छोटा आग का अंगारा रख दिया तो उसने वारा न्यारा कर दिया। प्रस्तुत पहेली तोप और बन्दूक पर रची गई है।

तनक सौ सोनो, सब घर नौनो।
भग गओ सोनों, मिट गओ नौनों॥

थोड़े सुनहले पन से पूरा घर अच्छा लगता है, उसके चले जाने से सुन्दरता मिट जाती है। इस पहेली का उत्तर दीपक, मोमबत्ती, लालटेन कुछ भी हो सकता है। इनके प्रकाश से घर अच्छा लगता है।

गेर-गेर बारी लगी, बीच में कुँआ।
सेत रंग ओरौ सौ मूत गओ सुआ॥

एक जगह चारों ओर से बाड़ लगी और बीच में कुँआ है। सफेद रंग का ओले जैसा जैसे कोई तोता पेशाब कर गया हो। इस पहेली का उत्तर महुआ का फूल है, जो ओले की तरह जमीन पर टपकता है।

चार बैलवा चार ठठेरे, एक-एक के मौं मे दो-दो घुसे॥

चार पुर्जे बैल की तरह खड़े हैं और चार ठठरी की आकृति में चौकोर आड़े हैं। एक खड़े के अन्दर दो-दो घुसेड़े गये हैं। यह पहेली खटिया पर रची गई है।

तनक सी सुज्जो गज भर पूंछ, नहीं बने तो बऊ से पूंछ॥

कोई सुज्जो नामक उपकरण बहुत छोटा है, लेकिन उसकी पूँछ एक गज से कम लम्बी नहीं है। यह क्या है? अगर तुमसे न बने तो अपनी दादी से पूछिये। इस पहेली का उत्तर सुई-धागा है।

पाँच जनी पहुँचावें जांय, घाटी उतर अकेली जांय॥

किसी के भेजने के लिये पाँच जनी घाटी तक पहुँचाने जाती हैं। घाटी पार करने के बाद जाने वाले को अकेला जाना पड़ता है। इस पहेली का उत्तर पाँच जनी अर्थात् दाहने हाथ की उंगलियाँ तथा जाने वाला निवाला है।

आँखन देखी मौंसें खाई, चींखी हो तो राम दुहाई॥

आँखों से देखी है और मुँह से खाई है, लेकिन चखी नहीं है। राम की कसम खा सकते हैं। इस पहेली का उत्तर पहेली में ही है- खाई। जिसका अर्थ खाने से नहीं खदान से लगाया जाता है। खाई पाँव से लेकर मुँह तक गहरी है।

फरै न फूलै नगैना डार, ऊ खाँ खाबै सब संसार॥

न फलता है न फूलता है और न किसी पेड़ की डाल में लगता है। उसको संसार में सब कोई खाता है। इस पहेली का उत्तर नमक है।

धरो-धरो धुंधकत अदबरो, ओई के नैंचे समुंदर भरो॥

एक जगह रखा-रखा आग में अधजला धुँधक रहा है और उसी के नीचे समुद्र की तरह पानी भरा हुआ है। इस पहेली का उत्तर हुक्का है।

सरके लल्ला उलटे लल्ला, साल भरे में लौटत लल्ला॥

आधे सीधे और आधे उलटे ललना एक साल में लोटते और पलटते हैं। पहेली का उत्तर कच्चे घरों पर छाये जाने वाले खपरा या कवेलू हैं। जिनको बरसात के समय पलटा जाता है।

गली-गली दो सौतें जायें। घैरा घूंसा करती जायें॥

दो सौतें गली में एक साथ चलती हैं और ऐसी लगती जैसे एक दूसरे से कुछ नोंकझोंक करती जा रही हैं। इस पहेली का उत्तर चमड़ा की देशी जूतियाँ अर्थात् पनहियाँ हैं।

एक लड़का बम्मन कौ। तिलक लगाये चंदन कौ॥

एक लड़का ब्राह्मण का है जो माथे पर चंदन का टीका लगाये है। इस पहेली का उत्तर उड़द का दाना है।

बली को लरका महाबली। खपरा फोरै करत गली॥

बलवान का लड़का महा बलवान है जो बिना ताकत लगाये घर के खपरों में ही गली कर निकल जाता है। इस पहेली का उत्तर धुँआ है।

तनक सी टुकिया टुक-टुक करै। लाख टका कौ काम करै॥

छोटी सी एक स्त्री-वाची टुकिया टुक-टुक करते हुये लाखों टकों का काम करती है पहेली का उत्तर सुई है।

चार खूंट को जरयानों। ऊमें परो कोऊ गुड़यानो॥

चार खूँट का अर्थात् चौकोर कोई जालीदार उपकरण, जिसमें कोई लेटा हुआ है। पहेली का उत्तर खटिया है।

कारी कुतिया झब्बे कान। चलरी कुत्तो लुच्चू खान॥

एक काली कुतिया के बड़े-बड़े झब्बा से कान हैं। चलो कुत्तो लुचई या पूड़ी खाने के लिये चलिये। इस पहेली का उत्तर कड़ाही है।

कटोरा के भीतर कटोरा। बेटा बाप से गोरा॥

बड़े कटोरा के अन्दर छोटा कटोरा है, बेटा बाप से भी ज्यादा गोरा है। पहेली का उत्तर नारियल है।

नायें तक्का मांये तक्का। बीच में लेटे लम्बे कक्का।

इधर ताक या तक्का है उधर ताक या आला है और बीचों बीच लम्बे काका लेटे हुये हैं। पहेली का उत्तर लकड़ी का बेंड़ा या आड़िया है, जो किवाड़ न खुलने के लिये लगाया जाता है।

अन्न खांय न पानी पियें। ठांड़े हिन्ना चें-चें करें॥

न अन्न खाते हैं और न पानी पीते हैं। दरवाजे में खड़े-खड़े चें-चें करते रहते हैं। पहेली का उत्तर किवाड़ या फाटक है।

एक अचंभौ सुना सुजान। तरें मेंड़ी ऊपर खरयान॥

एक आश्चर्य सुनिये तथा अच्छी तरह से जानिये। खलियान ऊपर है और मेड़ी का लकड़ा उसके नीचे है। अर्थात् नीचे वाला ऊपर और ऊपर वाला नीचे है। इस पहेली का उत्तर सिंघाड़े का छत्ता है।

एक डबला कुदई भरो। बऊ से पूछौ कहाँ धरो॥

एक गोल बर्तन में कोदों जैसे चावल भरे हैं, दादी से पूछिये वह कहाँ रखा है, पहेली का उत्तर भटा है।

कारे पहार पै गलगल व्यानी। ऊकी तेली बड़ी मिठानी॥

काले पहाड़ पर गलगल अर्थात् एक पक्षी ने जननकार्य किया है। उसका तैलीय दूध बहुत ही मीठा और स्वादिष्ट है। पहेली का उत्तर शहद तथा उसका छतिया है।

फँदी कँदा पै खालें डाटे। ओई को पहरे ओई को काटे॥

कँधा पर लटकी हुई नीचे की ओर देखती है। उसी का पहनावा धारण करती है और उसी को काटती है। इस पहेली का उत्तर कुल्हाड़ी है।

भुरी बिलैया हरीरी पूँछ। ना जानों तो बऊ से पूँछ॥

सफेद रंग की बिल्ली की हरे रंग की पूँछ है। नहीं जानते तो अपनी दादी से पूछिये। इस पहेली का उत्तर मूली है।

सुरका के खालें भरका। ऊमें बिड़े बत्तीस लरका॥

नाक के नीचे एक गड्ढा है उसके अन्दर बत्तीस लड़के घुसे हुये हैं। इस पहेली का उत्तर आदमी का मुख तथा उसके बत्तीस दाँत हैं।

देत होय तौ न लाइयौ। न देत होय तौ लेत आइयौ॥

दे रहे हों तो नहीं लाना और न दे रहे हों तो लेते आना। इस पहेली का उत्तर खेत के डीला फोरने के लिये लगाने वाला कोपर या पाटा है।

तनक सौ लरका लयें घुटान। तनक छुबादे हले जुआन॥

छोटा सा लड़का घुटनियाँ लिये है। किसी को अपनी घुटनियाँ थोड़ी सी छुबा दे तो अच्छा जवान भी हिल जाता है। इस पहेली का उत्तर बिच्छू है।

दिन भर सपरै दिन पर खाय। लबरौ नइयां सांसौ आय॥

पूरे दिन नहाता है और पूरे दिन खाता भी है। यह तथ्य झूठा नहीं बिलकुल सच्चा और सही है। इस पहेली का उत्तर ईंट बनाने वाला या ढालने वाला साँचा है।

तनक सौ लरका थूलमथूल। करया धोती माँथे फूल॥

एक छोटा सा लड़का मोटा ताजा है। कमर में धोती तथा माथे पर फूल धारण किये है। इस पहेली का उत्तर मुर्गा है।

रूख विरूख तुम टेड़े काये। चौद उठा कें रोये काये॥

हे वृक्ष! तुम रूखे-सूखे क्यों हो? ऊपर को अपना मुँह उठाकर तुम किस कारण रोते हो। प्रस्तुत पहेली का उत्तर रमतूला नामक एक पुराना बुन्देली बाजा है। जो शुभ-शकुन के अवसर पर बजाया जाता था।

बैइये ककरा उपजत झार। फरत नीम फूलत कचनार॥

कंकड़ बोये जाते हैं तो झाड़ अर्थात् पेड़ उग आता है। उसमें निम्बोली फलती है तथा कचनार जैसे फूल फूलते हैं। इस पहेली का उत्तर चना तथा उसके पेड़ हैं।

हुबनारी कें होय, नाऊ को पेट पिराबै।
दिखनारी कौ लरका भओ, कुंवारी दूध पिबाबै॥

गर्भवती बच्चे को जन्म दे रही है। नाई के पेट में दर्द हो रहा है। देखने वाली का लड़का हुआ। कुँआरी अर्थात् अविवाहिता ने दूध पिलाया। इस पहेली का उत्तर पूतना नाम की राक्षसी है, क्योंकि देवकी ने बच्चे को जन्म दिया, कंस को कष्ट हुआ और यशोदा का लड़का कहलाया, उसे मारने के लिये पूतना ने दूध पिलाया।

सकरी कुइया सींक न जाय। हिन्ना पानी पी-पी जाय॥

संकीर्ण कुइया में सींक तक नहीं जाती, लेकिन हिरन पानी हर बार पी जाता है। इस पहेली का उत्तर सँकरी कुइया गाय का थन तथा हिरन उसका बछड़ा है।

एक भुजा धारन करें, बैठी आसन डार।
सारौ जग बस में करै, तन में नइयां बार॥

वह केवल एक हाथ की है। एक जगह आसन डाल कर बैठी है। सारे संसार को बस में किये है। उसके शरीर में बाल नहीं है। इस पहेली का उत्तर हाथ से चलाने वाली आटा चक्की है।

कारी गाय करंगा बच्छा। उचकी गाय बिचक गओ बच्छा॥

एक गाय जो काले रंग की है और काले रंग का ही उसका बच्चा है। जब गाय उचकती है तो उसका बच्चा बिदक कर दूर चला जाता है। इस पहेली में काली गाय बन्दूक को तथा काला बच्छा उसकी गोली को कहा गया है।

दिन में सोबै रात में रोबै। जितनौ रोबै उतनौ खोबै॥

दिन में सोती है और रात में रोती है। जितना रोती है उतना खोती है। इस पहेली का उत्तर मोमबत्ती है। जितनी जलती है उतनी पिघलती और नष्ट होती है।

बघेली पहेलियाँ

बाबूलाल दाहिया

बाबूलाल दाहिया

अइसन सुंदर अस सुकुमार, बीच म चीकन कगर म बार।

एक अत्यंत सुंदर और सुकुमार है, जिसके बीच वाले हिस्से में साफ मैदान है और किनारे-किनारे बाल हैं।

– आँख।

अग्नि कुंड से निकर के, जल कुंडी म जाय।

अग्निकुंड के निकलकर वह जलकुंड में चला जा रहा है।

– उड़द का बड़ा।

अटपट घुटरी के पुट्ठा म सींग,

एक अटपटा फल है, जिसके पर्स भाग में कांटे हैं।

– सिंघाड़े का फल।

अड़बड़ बिलारी के पूछ म सींग।

एक अद्‌भुत ढंग की बिल्ली है, जिसके पूँछ में सींग है।

–बिच्छू।

अत्थर पर पत्थर पत्थर पर कूंडी, पाँचौ भइया लउटिजा हम जइत लाग हन दूरी।

जमीन के ऊपर पत्थर और पत्थर के ऊपर एक कुंड है, अब तुम पाँचों भाई लौट जाओ, क्योंकि मैं उस कुंड में दूर तक गोता लगाऊँगा।

– पाँचों उंगली और भोजन का ग्रास।

अत्थर पर पत्थर पत्थर पर जंजाल, मोर किहानी कोऊ न जानै जानै भइया लाल।

पेड़ के ऊपर पत्थर और उस पत्थर के ऊपर जंगल उगा हुआ है, पर मेरी इस पहेली को भइया लाल के सिवाय कोई नहीं जानता है।

– नारियल का फल

अक्कास केर परबा धरती केर दिया, सगला दिन चक्र चला धूर कहाँ गिरा।

आकाश का ढक्कन और धरती का दीपक है। सारे दिन चक्र चला पर धूल कही नहीं गिरी।

– सूर्य।

अन जरै बन जरै जरै सिलीपट घात, तोरे होय त दइदे कहौ एकठे बात।
रही सही पहिले मगर गई पिता के साथ, गोद गाद बिद्दा जहां हुआ गये मिल जात।।

जिस से जंगल पहाड़ जल जाते हैं, धातु भी गल जाती है, वह अगर तुम्हारे पास हो तो दे दो। पहले तो थी, पर पिता जी वहाँ ले गये, जहाँ संसी हथौड़ा से काटने कूटने का काम करते हैं।

– अग्नि।

अन्न खाय ना पानी पियै, ठाढ़े मिरगा चूंचूं करै।

न तो वह अन्न खाता है न पानी पीता है। वह मृग खड़े-खड़े चूं-चूं करता रहता है।

– किवाड़।

अरिया मा लोलरिया नाचै।

आले में बैठी एक पुतली नाच रही है।

– जीभ।

अली क लड़का महाबली, खपड़ा फोर के करै गली।

अली का पुत्र महाबलवान है, वह छप्पर के कबेलू फोड़कर रास्ता बना लेता है।

– धुँआ ।

अस्सी भइंस पचासी अड़बा, फिरगै भइंस कचर गे अड़बा।

अस्सी भैंस और पचासी अण्डे हैं। जैसे ही भैंस घूमती है, सभी अण्डे फूट जाते हैं।

– चक्की ।

अहारै गयौं पहारै गयौं, लाल बीजा गाड़े गयौं।

मैं अहाड़ पहाड़ जाता हूँ और घर में लाल रंग के बीज को गाड़ देता हूँ।

– आग।

अहारै गयौं पहारै गयौं, झुलनी झुलाये गयौं।

मैं पहाड़ जंगल जाता हूँ, तो घर में झुलनी झुलाकर जाता हूँ।

– ताला।

आई होई त न अई, न आई होई त आय जई।

किसी ने पूछा जाता है कि तुम्हारी पत्नी आ रही है, उसने उत्तर दिया कि अगर नदी आई होगी, तो वह न आयेगी और अगर नहीं आई होगी, तो आ जायेगी।

– नदी।

आंख कटै बाख कटै कटै बम्म का गोला।
बीच नदी मा चउपड़ खेलै हनुमान का चेला

उसके घूमने से अगल–बगल के कचरा और बम्म का गोला बराबर हो जाता है, क्योंकि बीच नदी में हनुमान का शिष्य घूमता रहता है।

– मथानी।

आठ खटाखट नौ खिंचारी, स्वारा बैल अठारा नारी।

उसमें आठ खटखटे और नौ घुमाने वाले लगे होते हैं, जिसमें सोलह बैल और अठारह नारिया हैं।

– रहट और उसके उपकरण।

आठ कुल्हारी नौ तरबार, कटै न कटी कइमा कै डार।

आठ कुल्हाड़ी और नौ तलवार साथ–साथ चली, पर कैंमा की डाल नहीं कट पाई।

– छाया।

आठ गोड़ नौ आंखी तीन सींग दुइ पूंछ।
मोर किहानी जान जा नहीं मुड़ाय ले मूंड़।

आठ पैर नौ आँख तीन पूँछ और दो सींग हैं। मेरी पहेली बूझो या अपनी मूँछ मुड़ा लो।

– शिव–पार्वती, नंदी।

आठ ज्वारै आठ ब्यार, जोड़ आबै एक हजार।

आठ अंक को आठ बार जोड़िये, पर योग 1000 होना चाहिए।

– 888+88+8+8+8 =1000 ।

आपट का बिरबा चापट फरै, समन करहै चइत फरै।

अटपटे पेड़ के वृक्ष में चपटा आकार का फल फलता है, पर सावन में फूलता है और फल चैत्र मास में आते हैं।

– बबूल।

आव नेरे मोरे त डारदेंव तोरे, अगर होत मोरे न का डरत्यौं तोरे।

तुम मेरे पास आओ तो तुम्हारे गले में डाल दूँ, अगर मेरे पास सिर होता तो तुम्हारे गले में क्यों डालता।

– एक केकड़े को हार मिल गया तो उसने बगले से कहा।

आहा-आहा के छै बाहा, पींठ म पखना लोंटय यतर सजुआ काहां?

एक जन्तु है, जिसे छः हाथ हैं और उसके पीठ में पंख है, बताओ वह कौन सा जन्तु है।

- मक्खी।

उजर बिलइया हरियर पूंछ, तुम जाना महतारी पूत।

सफेद बिल्ली है, जिसकी हरी पूँछ है। अगर तुमसे उत्तर नहीं बनता तो अपनी माँ से पूछ लो।

- मूली।

उड़ै तहां खन खन करै बइठ डंख फइलाय।
लाखन जिउ मारैं मगर, अपनौं कुछू न खांय।

जब वह उड़ता है, तब खन-खन की आवाज आती है। फिर पंख फैलाकर बैठ जाता है। खुद तो लाखों जीवों का वध करता है, पर खाता कुछ नहीं।

- मछली फँसाने का जाल।

ऊँचे खेरे गलगल बियान, ओकर तेली बहुत मिठान।

ऊँचे खैर में गलरी पक्षी ने बच्चे दिये और उसकी तेली बहुत अच्छी लगी।

- मधुमक्खी।

ऊपर दउरिया तरे दउरिया, बीच म बइठी लाल बहुरिया।

ऊपर भी टोकनी और नीचे भी टोकनी है और उसके अंदर लाल बहू बैठी है।

- मसूर।

ऊपर से डारै तरे निकारै।

ऊपर से डालकर नीचे उतार दिया।

- पेटीकोट।

ऊपर से चीकन तरे रोमार, तेही चाटैं बाप तोंहार।

ऊपर का आवरण चिकना है और अंदर रोयें हैं, पर उसको तुम्हारा पिता चाट रहा है।

- पका आम।

ऊपर टेंठ तरे घुचकुल, आय परी पै जनिहे ना?

ऊपर टेढ़ी और नीचे गड्ढेदार है।

- तेल का मापक (परी)।

उड़द कपास कमल रेरूआ, फर लागै एकै नेरूआ।

उड़द कपास कमल और गिलकी एक ही ठंठल में लगते हैं।

- सेंवर का फल।

एक अचम्भा सुना सुजान, तरे ताल ऊपर खरिहान।

एक आश्चर्य तो सुनिये कि नीचे तालाब है और उसके ऊपर खलिहान है।

– सिंघाड़ा तोड़ने की छोटी नाव (डोडा)।

एक काठ म बत्तिस बोकला, बतियां लगी हजार।

एक काठ में बत्तिस छाल है और उसमें एक हजार छोटे–छोटे फल लगे हैं।

– केला ।

एक गइल दुई बाबा जांय, ओसरी पहरा पादत जांय।

एक रास्ते से दो बुड्ढे जा रहे हैं और बारी–बारी शोर करते जा रहे हैं।

– जूते (पनही)

एक चिरइया लेद्दी फेद्दी रात भर पिरवाई।

बड़े सकारे ऊँची परोसिन झउआ भर बिन लाई।

एक बेडौल चिड़िया को सारी रात्रि प्रसव पीड़ा हुई और सुबह पड़ोसिन गई तो एक टोकनी में बीनकर ले आई।

– महुआ ।

एक कहानी सुना सुजान, मेहरी मनुस के बाइस कान।

एक कहानी तो सुनिये कि पति–पत्नी को मिलाकर बाइस कान थे।

– रावण, मन्दोदरी।

एक चिरइया लेद्दी फेद्दी पेट भर भूसा खाय।

तपत कुंड बुड़कइयां मारै पेटे मा घुस जाय।

एक चिड़िया बेडौल है, जो भरपेट भूसा खाती है, वह गरम कुण्ड में बुड़की लगाकर निकलती है और लोगों के पेट में घुस जाती है।

– गुझिया।

एक चिरइया लेद्दी फेद्दी बीच म दुर्गाई।

ओखे बाप क टेटुआ दाबै नीचे से बहि आई।

एक अनगढ़ चिड़िया है, जिसके बीच में भारी भरकम लाठ है, जब उसके बाप का गला दबाया जाता है, तो नीचे से तरल पदार्थ बहने लगता है।

– कोल्हू।

एक चीप व सब मा परै।

एक वस्तु है जो सबके ऊपर पड़ जाती है।

– नजर।

एक चीज व सब का होय।
एक चीज है जो सबके ऊपर लागू है।
– नाम ।

एक कोठवा म सुमर गुर्राय।
एक कोठे में सुअर गुर्रा रहा है।
– चक्की।

एक कोठवा म ऊंट भलभलाय।
एक कोठे में ऊँट भलभला रहा है।
– धान दलने का चकरा।

एक डबुला म कोदई भरी, दीदी से पूंछा कघैं धरी।
एक मिट्टी के चुकरे में कोदो के दाने भरे रखे हैं। माँ से पूछो की वह कहाँ है?
– बैगन का फल।

एक देव पर दूसर दानव, ओइसन आंही दूनौं मानव।
एक दूसरे दर दर भटकामै, अपनौ पांच साल मा आवै।।
एक देवता है और एक दानव– वैसे दोनों मनुष्य हैं, पर एक दूसरे को दर–दर भटकने को मजबूर कर रहा है और खुद पाँच वर्ष में लौटता है।

– नेता और मतदाता।

एक दिया सबतर उंजियार।
एक दीपक है, जिसका चारों ओर प्रकाश है।
– सूर्य ।

एक टठिया मा दुइठे अण्डा, एक गरम पै दूसर ठण्डा।
एक थाली में दो अण्डे रखे हैं, उनमें एक गरम और दूसरा ठण्डा है।
– सूर्य–चन्द्रमा।

एक नार नौरंगी तउऔ नार कहाबै, मेर मेर के ओढ़ना मा सब का ललचाबै।
एक नौ रंग की नारी है, जो तरह–तरह के कपड़े बदलती है और लोगों को ललचाती है।
– बदली।

एक थरिया अंजुरी भर राई।
एक थाली में अंजुली भर राई के दानें हैं।
– आकाश में तारे।

एक पेड़ लदर फदर फरा, ओखे तरे समुंदर भरा।
एक पेड़ बेतरतीब फलों से लदा हुआ है और उसके नीचे समुद्र भरा हुआ है।
– नारियल।

एक पेड़ अइसन पतियान, तरे सेंत ऊपर हरियान।
एक पेड़ में इतने पत्ते हैं कि वह नीचे से सफेद है और ऊपर हरा दिख रहा है।
– अमरबेल।

एक पेड़ सरउंआ, बइठैं चील न कउआ।
एक पेड़ ऐसा सीधा लम्बा है कि उसमें चील–कौवे नहीं बैठते।
– धुँआ।

एक पेड़ दम–दम लगै, बतिया लगी हजार।
एक पेड़ बेडौल दिख रहा है, उसमें एक हजार छोटे फल लगे हैं।
– केला।

एक पेड है थापक थइया, नाम हबै बंगाली।
खाये से गुर सांकर लागै, भावै बहुत गोपाली।
एक वृक्ष मोटा बेडौल है, उसका नाम बंगाली है, उसका फल बहुत मीठा लगता है, जो भगवान के भोग में चढ़ता है।
– केला।

एक पकड़ दुइ हल्लर हल्लर।
अगर एक को पकड़ लिया जाय, तो उसके दो पल्ले हिलने लगते हैं।
–तराजू।

एक बाली मां घर भर भूसा।
एक बाल में इतना भूसा निकलता है कि सारा घर भर जाय।
– सूर्य की किरणें।

एक बरा मा बत्तिस पहुना।
एक बड़ा ऐसा है जिसके इधर–उधर बत्तिस रिश्तेदार खड़े हैं कि मैं पा लूँ।
– जीभ।

एक बिरबा दम्मदार, बत्तियां लगीं सौ हजार।
सुआ आबा सोय गा, गिल्ली आई रोय गै ।
मनई आबा टोरागा ।

एक इतना बलशाली पौधा हैं जिसमें लाखों फल लगे हैं, उन्हें खाने के लिये तोता आया और मन मारकर रह गया। गिलहारी आई और असफल होकर रोती लौट गई। पर मनुष्य आया और तोड़ लिया।

– तालाब का सिंघाड़ा ।

एक बंदरबा चढ़ा पहार, जेखे नाक म एकठे बार।

एक बंदर पहाड़ में चढ़ा हुआ है, जिसके नाक में सिर्फ एक ही बाल है

– कुल्हाड़ी।

एक मेहरिया दुई मनसेरू अन क दाबे परी।

एक नारी दो पुरुषों को दबाये हुये है।

– दो खपरों के ऊपर घरिया।

एक मोरे माई पचास मोरे मामा।

झूलि आई माई लटक गें हैं मामा।

एक मेरे यहाँ मामी है, जिसके पचास मामा हैं, जब मामी नीचे झूलने लगी तो मामा भी लटक आये।

– केले के फलों का गुच्छा।

एकठे राजा मरगा पै कोऊ न रोओं।

एक राजा मर गया, पर कोई नहीं रोया।

– सूर्य का अस्त हो जाना।

एक लड़िका कै नेरे ससुराल, आवत जात देंह खियान।

एक लड़के की नजदीक ही ससुराल है, पर आते–जाते उसका शरीर ही घिसा जा रहा है।

– धान दलने का मिट्टी का चकरा।

एक लड़िका कैटेढुिंक नाक।

एक लड़के की नाक टेढ़ी है।

– बटरा, मटरा।

एक लेय दुई फेंकै।

एक को लिया और दो बनाकर फेंक दिया।

– दातून।

एक लड़िका हार म करिहां बाधें परा।

एक लड़का खेत में कमर बांधे पड़ा है।

– कटे अनाज के डंठल।

एक लड़िका क पेट फटा।

एक लड़के का पेट फटा हुआ है।

– गेहूँ का दाना।

एक लड़िका नहि बाम्हन का, तिलक लगाये चंदन का।

एक लड़का है जो ब्राह्मण नहीं है, पर शरीर में चंदन का लेपन किया है।

– उड़द।

एक सींग कै गोल्ली गाय, ज्यतनैं पावै वतनैं खाय।

एक सींग वाली गोल्ली नामक गाय है, जिसके मुँह में जितना भोजन डाल दिया जाय, सब खा जाती है।

– चकिया।

ओल ही गोल ही पै लोहे से लड़ाथी।

देखने में गोल आकार की है, पर लोहे से मुकाबला करती है।

– सुपाड़ी।

अंडित पंडित सौ पंडित, बिना लकड़ी क पेड़ बतावा पंडित।

आप लोग सैकड़ों विद्वान बैठे हो, पर बगैर लकड़ी का पेड़ बताओ।

– केला का पेड़।

कउन फूल निस दिन खिलै कउन पन्द्रहे रोज।
कउन फूल छै मास मा कउन बरखहें रोंज।

ऐसे कौन–कौन से फूल हैं, जो प्रतिदिन, 15 दिन में, 6 माह में और एक वर्ष में खिलते हैं।

– सूर्य, चन्द्रमा, तुरूइया, होली।

कक्का कहे तना जुरै, बब्बा कहे गुरजांय।

वह कौन सा अंग है जो कक्का कहने से नहीं जुड़ता, पर बब्बा कहने से जुड़ जाता है।

– होंठ।

कनियां मा बइठाय के चउथरियाये रोबै।
खूंटी मा लटकांय देंय ता परे परे वा सोवैं।

अगर उसे गोद में बैठाकर तमाचे लगाये जायें, तो वह रोने लगती है। पर अगर खूंटी में लटका दिया जाय, तो चुपचाप सो जाती है।

– ढोलक।

करिया पहार मा रकत कै बूंद।

काले पहाड़ में रक्त की बूंद हैं।

– घुनची।

करिया बरदा पोंकत जाय, तोर बाप सरपोंटत जाय।

काले रंग की एक कुतिया है, जिसके झबरे-झबरे कान हैं, पर वह पूड़ी खाने जा रही है।

- करछुली से परोसी जा रही कढ़ी।

करिया कुकरा झब्बे कान, पगड़ी बांधे चला उतान।

काले रंग का एक कुत्ता है, जिसके झबरे कान हैं, पर वह पगड़ी बाँध बड़े शौक से चल रहा है।

- बैगन ।

करिया गऊ कबूतर बछड़ा, तिड़िक गै नोई उदिक ग बझड़ा।

काले रंग की गाय है, जिसका बछड़ा कबूतर के रंग का मटमैला है, पर जैसे ही रस्सी टूटी की बछड़ा उछलकर दूर चला जाता है।

- उड़द की फली।

करिया सीसी म उजर दबाई।

काले रंग की डिब्बी में सफेद रंग की दवा भरी है।

- सिंघाड़ा का फल।

करिया कूकुर वन वन बागै, वन कै पाती खाय।
अरबार करै दरबार करै सरकार दुआरे जाय।

काले रंग का कुत्ता है जो जंगल की पत्तियाँ खाता है, वह तमाम बैठकों और राजाओं के निवास में भी पहुँचता है।

- हाथी।

करै लड़ई दुइ जने औ देखैं एक नार।
सगलेन कै नयना रहै दुइ हजार और चार।।

दो पुरुषों का युद्ध हो रहा है, जिसे एक स्त्री भी देख रही है, पर अगर सभी के नेत्रों की गणना की जाये तो वे दो हजार चार हो जाते है।

- कालिया नाग, उसकी पत्नी और श्री कृष्ण।

केहि कारण भइंस बमूर चढ़ी?

भैंस किस कारण से बबूल के पेड़ में चढ़ी थी।

- नदी में बाढ़ आने से भैंस बहकर बबूल के पेड़ में अटक गई है।

काका के कानै नहि, काकी के दुइकान।
काका कुछ नहीं काकी चतुर सुजान।

काका के एक भी कान नहीं है, पर काकी के दो-दो कान हैं। काका बेचारा अत्यंत सीधा साधा है, पर काकी बड़ी होशियार हैं।

- तवा और कड़ाही।

कांधा धरे तीर कमठान, कहां चल्या दिल्ली सुल्तान।
बड़ेन कै बात बड़ेन पहिचान, न तुम कहा आन न हम कही आन।

- एक धुनिया अपना पिंजरा (रूई धुनने की धनुही) कंधे में रखकर बड़े भोर में जंगल के रास्ते जा रहा था, दूसरी ओर से एक शियार चला आ रहा है। शियार ने उसे शिकारी जान खुशामद में दिल्ली के बादशाह कहकर सम्बोधित किया और वह सियार को शेर समझकर कुछ कहता, तभी दोनों एक दूसरे को पहचान गये, इसलिये धुनिये ने कहा कि बड़ों की बात बड़े ही जानते हैं। इसलिये अब दोनों बगैर कुछ विचार किये अपने-अपने रास्ते चले जायें।

काला हूं कलूटा हूं, डाल नवा के बैठा हूं।
मेरा रंग काला कलूटा है, पर मैं डाल को झुकाकर बैठा हूँ।
- बैगन।

काका हूं कलूटा हूं, लाल पानी पीता हूं।
मेरा रंग काला कलूटा है, पर मैं लाल रंग का पानी पीता हूँ।
- जूँ।

काली हूं कलूटी हूं, लाल पानी पीती हूं।
कारे वन में रहती हूं पछाड़ी ज्वाव देती हूं।
मैं काले कलूटे रंग की हूँ मेरा निवास काले वन में है, पर में लाल पानी पीकर फिर जवाब भी देती हूँ।

- बन्दूक की गोली।

का सड़ा नीक का गला नीक, का टूट नीक का फूट नीक।
क्या सड़ा हुआ, क्या गला हुआ, क्या टूटा हुआ और क्या फूटा हुआ अच्छा लगता है?
- अवारी सन, अचार, कर्ज, ककड़ी।

खम्ह खम्ह के ऊपर डहरी, डहरी के ऊपर तुड़क्की।
तुड़क्की के ऊपर पलकिया, पलकिया के ऊपर बिंज पहार।
एक खम्हा है, जिसके ऊपर कुठली रखी हुई है, उस कुठली के ऊपर चबाने वाला उसके पलक लेने वाली और उसके ऊपर घनघोर जंगल है।

- मनुष्य का शरीर।

खूंटी मा खेती करै सइका देय जराय।

ठोंक-ठोंक भीतर धरै, बेंच-बेंच के खाय।

एक खूंटी के ऊपर खेती करता है और खलिहान का सारा अनाज जला देता है। फिर ठोंक-ठोंक कर कुछ को अंदर रख लेता है और बेच-बेच कर खाना खाता रहता है।

- कुम्हार और उसके घड़े।

खोलिन डब्बा खाइन पान, मेहरी मनुस के बाइस कान।

खोलकर डिब्बा पान खाने लगे, पर देखो की पति-पत्नी के बाइस कान हैं।

- रावण, मन्दोदरी।

गली-गली चला जाय, टटबा सम्हारत जाय।

एक व्यक्ति रास्ते-रास्ते चल रहा था और टटबा को सम्हालता जा रहा था।

- मूंछ को बार-बार चढ़ाना।

गहिर कुण्ड गमराज घाट, बत्तिस पीपर एक पात।

एक गहरा कुण्ड है, जिसमें सुंदर घाट बना है, उसमें बत्तीस पीपल के पेड़ हैं, पर पत्ता सिर्फ एक है।

- मुँह में बत्तीस दाँत और एक जीभ।

गुड़ तेल भांटा औ जीरा लागै एकै डार।

हमी बताबा पेड़ या है काहू के हार।

गुड़, तेल, जीरा, बैगन एक ही पेड़ में लगे हैं, क्या इस तरह का पेड़ किसी के जंगल में है।

- महुआ।

गुडुर-गुडुर करके बजै जब सिर लागै आग।

बाजन लागै बांसुरी निकसन लागै नाग।

जब उसके सिर में आग लगाई जाये तो वह गुड़-गुड़ करने लगता है। फिर बाँसुरी की आवाज आती है। और नाग निकलने लगते है।

- हुक्का।

गुरू आये गुरूआइन आईं आये नब्बें चेला।

पूड़ी तीन बनाइन एकै एकठे खाइन।

गुरूजी आये गुरुआइन जी आई और नब्बे चेला भी आये, उनमें तीन उड़द के बड़े बनाये, पर खाते समय सभी को एक-एक बड़ा मिला।

- गुरूजी, गुरूआइन जी और उनका नब्बा नाम का चेला कुल तीन ही आये थे।

गाड़े कहै टागे से झन्नर मन्नर अउती हैं।

आज चलेन कि काल्ह।

जमीन में गड़े हुये ने डाल में लटके हुये से कहा कि झन्न-झन्न पैजने की आवाज करती खेत की मालकन आ रही है। पता नहीं हम दोनों आज बाजार ले जाये जायेंगे या कल।

- मूली और बैगन की बातचीत।

गाय बियान हड्डा हड्डा बियान बच्छा।

जा पंडित से पूंछि आव की का पियै व बच्छा।

गाय ने हड्डी को जना और उस हड्डी से बछड़ा पैदा हुआ, अब तू जा और किसी विद्वान से पूछ की वह बछड़ा क्या पिये।

- मुर्गी और उसका अण्डा।

गाँव क होइहे त जनतेन होइहे, अन्तै क होइहे त चगड़ के मरिहौं।

यदि गाँव का होगा तो मेरे बारे में जानता ही होगा, पर अगर बाहर का होगा तो दौड़ा-दौड़ा कर मारूँगा।

- एक लगड़ें खेत के तकवाह ने चोरों को ललकारते हुये कहा कि अगर गाँव के होगे तो जानते ही होगे कि मैं दौड़ नहीं सकता। पर अगर बाहर के होगे तो तुम्हें दौड़ा-दौड़ा कर मारूँगा।

गेर-गेर बारी लगी बीच म कुंआ, सेत रंग ओरिया म मूत ग सुआ।

चारों ओर से बाड़ लगी है और बीच में एक कूप है, उस सफेद रंग की मोरी में तोते ने पेशाब कर दी।

- महुआ का फूल।

घर रहैत दुवार से निकरगा, मैं कहां से जांव।

मेरा घर था, वह दरवाजे से होकर निकल गया, अब मैं कहाँ जाऊँ?

- जाल में फंसी मछली।

घाट घटा घट घड़ा न मीजैं, हाथी डाढ़ नहांय।

बहुत बड़ा तालाब है, जिसके घाट में घड़ा नहीं भरता, पर हाथी खड़ा-खड़ा स्नान कर लेता है।

- ओस ।

चक्र भवन से तुम बच्या सिलाजीत संग्राम।

तपत कुण्ड से तुम बच्या कहां तुम्हारो धाम।

तुम चक्र भवन में भी फँसकर समूचा निकल आये। शिलाजीत से भी युद्ध किया और बच गये। तपा हुआ कुण्ड भी तुम्हारा कुछ नहीं बिगाड़ पाया। तुम कौन हो और कहाँ रहते हो?

- वड़े से साबुत निकला उड़द का दाना।

चक्र सुदर्शन भुईं परे कुम्हकरण गे सोय।
वहैं से आये मेघनन्द कहा कि कइसन होय।

चक्र सुदर्शन जमीन में रखे हैं और कुम्भकरण सो गया है, उधर से मेघनंद ने आक्रमण कर दिया। भला बताओ अब क्या होगा?

– *सूख रहे घड़ों में मेघों का बरसने लगना।*

चढ़ै नाक पै पकड़ै कान, धौं तुम ल्या किहानी जान।

वह नाक में चढ़कर दोनों कान पकड़ लेता है, मेरी पहेली को बूझो कि वह क्या है।

– चश्मा।

चार ग्वाड़ उपरंगा आठ ग्वाड़ तरहंगा।
कहे से मनिया झूंठ पांच मूड़ एक पूंछ।

चार पैर ऊपर की ओर हैं आठ पैर नीचे जमीन की ओर हैं। तुम बताने से विश्वास नहीं करोगे, पर उसके पाँच और सिर और एक पूँछ भी है।

– मृत पशु को उठाकर ले जा रहे चार लोग।

चार घड़ा अमरित से भरे, पै चारौ अउंधाये धरे।

चार घड़े हैं, जिसमें अमृत भरा हुआ है, पर चारों औंधे रखे हुये है।

– गाय के थान।

चार जने के बारा ग्वाड़।

चार लोग हैं, जिनके बारह पैर हैं।

– हल–बैल किसान और बीज बो रही उसकी पत्नी।

चार डरेवर एक सवारी, जेखे पाछू जनता सारी।

चार ड्राइवर एक गाड़ी को चला रहे हैं, जिसके पीछे सैकड़ों लोग चल रहे है।

– मृत व्यक्ति का जनाजा।

चार चंदन के चउदा गोड़, मेहरी मनुस कै लग गै होड़।

एक घोड़ी पर चढ़कर पति–पत्नी जा रहे थे। घोड़ी के पीछे एक बछेड़ा भी था। पत्नी ने कहा कि हम जितने लोग साथ–साथ चल रहे है, उनके चौदह पैर होते हैं। पति ने कहा– पैर तो बारह ही हैं तुम चाहो तो बाजी मार लो।

– पत्नी गर्भवती थी, इसलिये उसके पेट के बच्चे सहित चौदह पैर हो जाते हैं। पति शर्त हार गया, क्योंकि उसे नहीं मालूम था कि पत्नी गर्भवती है।

चार आंगुर का वा, बर लपेटे वा।
नात भाइन का वा, ज्वात बाइत का वा।

उसका शरीर मात्र अंगुल का है, जिसमें चारों ओर बाल लिपटे हुए हैं। वह जुताई-बुवाई के समय भी काम में आता है और नाते रिश्तेदार के आने पर भी उसका उपयोग होता है।

- गेहूँ के बाल में लगा दाना।

चार ठे बरदा चार टटेर, एक के मुँह म दुइ-दुइ घुसेर।

चार बैल और चार ही ज्वार के डंठल है, पर बैल के दो-दो डंठल पड़े हैं।

- चारपाई के पाँव।

चार ग्वाड़ कै चम्पा चिरई, बोले मधरी बानी।
बीच समुद्र डुबुकियां ख्यालै, पियै क मागैं पानी।

चार पैर की चम्पा चिड़िया है, जिसका बहुत ही मधुर स्वर है। वह समुद्र के बीच में डुबकी लगाती है और बार-बार पीने के लिये पानी मांगती है।

- मथानी।

चार खुट चउखट दरवाजा, हेरे न पामै सोहावल के राजा।

चार खूँट के चौखाटे में एक द्वार है, जिसे सोहावल के राजा नहीं ढूंढ पाते।

- आइना।

चार चिरइया चंगन मंगन चारौ हैं सुखदाई।
एक क मूसर टूट गये जै बोला सीता माई।

चारों ओर चार चिड़िया बैठी हैं, जो बड़ा सुख देने वाली हैं, पर यदि एक का मूसल टूट जाता है तो सीता माता का सुमिरण करना पड़ता है। क्योंकि सबकुछ बेकार हो जाता है।

- खाट के चारों पाये।

चार पुरुष जे मुण्डै मुण्डा, उनके मुहैं म डण्डै डण्डा।

चार ऐसे पुरुष हैं, जिसके सिर चिकने हैं, पर चारों के मुँह में दो-दो डण्डे पड़े हुये है।

- खाट के चारों पाये।

चार मोरे आऊ जाऊ चार है कमाऊ।
दुई हैं मोरे झूर लकड़िया एक है उड़ाऊ।

चार मेरे आने जाने के लिये है और चार से धनोपार्जन होता है, दो मेरे पास सूखी लकड़ी है और एक मक्खी उड़ाने के लिये है।

- गाय के पैर, थन, सींग और पूँछ।

चांदी क बटुआ सोने कै डोर, चला जाय बटुआ पक्षिम कि ओर।

एक चाँदी का बटुआ है जिसमें सोने की डोर लगी है और वह पश्चिम की ओर जा रहा है।

- सूर्य और उसकी किरणें।

चलैं कहिन तै चल दुख रहती, होत नयन मुख तौ कुछ कहती।

बिन अपराध पिया मोंही त्यागिन, प्राण होत ता काहे क मरती।

मुझे चलने के लिये कह रही हो, पर मैं कैसे चल सकती हूँ। अगर मेरे नेत्र और मुँह होते तो कुछ कहती और देखती। बगैर अपराध मुझे मेरे प्रीतम ने त्याग दिया है। अगर मेरे प्राण ही होते तो मैं भला क्यों मरती।

– साँप की केंचुल।

चीकन खेत महीकन बिरबा, जउने म बइठा काला किरबा।

चिकना खेत है, जिसमें खुरदरा पेड़ है और उसमें काला कीड़ा बैठा हुआ है।

– कागज–कलम और अक्षर।

चौबिस बिगहा खेत, शैला फिरै अकेल।

चौबीस बीघे का खेत जिसमें शैला अकेले फिर रहा है।

– सूर्य और 24 घण्टे।

छक्क छक्क मुण्ड कटै रूण्ड पनियै जाय।

हाड़न कै दिया बरै खाल उधेरी जाय।

उसका सिर छक्क–छक्क आवाज के साथ काटा जा रहा है और धड़ को पानी में ले जाया जा रहा है। फिर उसके हड्डियों का दीपक जलता है और उसकी खाल को उधेड़ लिया जाता है।

– सन अंबारी।

छिनक यहैं छिनमा वहै आठ ग्वाड़ दुई वाहाँ।

पींठ के ऊपर पूंछ जमी ही यंतर संजुआ काहां।

एक क्षण वह इधर और दूसरे क्षण दूसरी ओर चली जाती है और उसके आठ पैर दो भुजायें है, साथ ही उसके पीठ में एक पूँछ है। क्या आपने इस तरह का जानवर कहीं देखा है?

– तराजू।

छेरिया कस कान मुरगा कस केश।

मोर किहानी जान जा नहि तोर बाप दरबेस।

उसके बकरी की तरह कान और मुर्गा की तरह केश हैं, अगर मेरी पहेली नहीं जानोगे तो तुम दरवेश के लड़के हो।

– पलास का फूल (टेसू)

छै भइंस एक पाड़ा, बरा पूरा चारा।

दुइ–दुइ पूरा भइंस के, बारा पूरा पड़ा के।

भैंस छः है और भैंसा एक है। बारह बंडल घास उनके डाली गई है, जिसमें दो-दो बंडल भैंसों के और 12 बंडल भैंसा के डाला गया है।

- बैलगाड़ी का चक्का।

छै कान औ पूंछ दुई दस ग्वाड़ मुँह चार।
पै एक के जीभै नहीं पंचौ करा विचार।

छः कान और पूँछ दो है, पर पैर दस और मुँह चार हैं। किन्तु एक मुँह में जीभ ही नहीं, पंचों इस पर विचार करो।

- गाय, बछड़ा, ग्वाला और दूध दुहने का बर्तन।

छोट रहेव तब भर सहेव मै तोंहार सब मार।
जब से पहिरेव लाल लुगरियां सहौं न एकौ ब्यार।

जब मैं छोटी थी, तब तुम्हारी पिटाई को खूब सहा, पर जब से लाल रंग की ओढ़नी पहन ली, अब एक बार भी नहीं सह सकती।

- पका घड़ा।

छोट बूदा टोरबा ज्याटा भर भुखारी करै।

एक छोटा सा छोकरा है तो एक बंडल दातून करता है।

- चूल्हा।

छोट क लाला सगला घर ताके।

एक छोटा सा छोकरा है, जो सारे घर की रखवाली करता है।

- ताला।

छोट बूंदी नटिया जोति आई पटिया।

- सुई।

छोट बूदी टोरिया टान घोटान, दई दई मारैं बड़े-बड़े ज्वान।

एक छोटी सी छोकरी है जो देखने में बेडौल लगती है, पर इतनी बहादुर है कि बड़े-बड़े जवानों को पछाड़ देती है।

- बिच्छू

छोट बूंदा रामलाल ब्यामा भर पूंछ।
जहां जाय रामलाल हुये जांय पूंछ।

रामलाल देखने में अत्यंत छोटा है, पर पूँछ भारी भरकम है। रामलाल जहाँ भी जाता है, वहीं पूँछ भी चली जाती है।

- सूजा।

छोट बूंदा टोरबा तूल मतूल, काधे धोती माथे फूल।

छोटा सा छोकरा है जो बड़ा प्यारा लगता है। उसने कंधे में धोती पहन रखी है और माथे में फूल लगा रखा है।

– मुर्गा।

जब से परी त उची नहीं।

वह जब से पड़ी है, तब से आज तक खड़ी नहीं हुई।

– धरती

जब से बिछुड़े तब से मिले नहीं।

जब से बिछुड़े तब से मिले नहीं।

– सूर्य, चन्द्रमा

जब से घुसी त निकरी नहीं।

जब से घुसी तब से निकली नहीं।

– गाज ।

जब से टंगा तब से उतरा नहीं।

जब से ऊपर चला गया, तब से नीचे नहीं आया।

– आकाश।

जरिया तरी करिया लोटै।

एक झाड़ी के नीचे काला लेट रहा है।

– बैगन ।

जल मा उपजै हाट बिकाय, गूदा मिचकै बोकला खाय।

वह जल में पैदा होती और बाजार में बेची जाती है, उसके अंदर के भाग को फेंक दिया जाता है और ऊपरी आवरण का उपयोग होता है।

– सीपी।

जान–जान जनिया गढ़ै चिकनिया, गोहूं अस बाली कोदई अस कनिया।

हे जानकर! तुम बूझो कि क्या है उसे जानकार गढ़ता है, वह गेहूँ की बालों जैसी गुथी होती है और कोदो के चावल जैसे दाने होते हैं।

– करधनी

जीर अस अपनौ अजमाइन अस पेट, बरी तरे हगैं बइठी लगगै सरासेंट।

उसका शरीर जीरा के बराबर और पेट अजमाइन के बराबर होता है, पर जब वह बाड़ नीचे शौच करने बैठती है, तो ढेर लगा देती है।

– दीमक।

जे व्यसाहिस व पहिरिस नहीं, जे पहिरिस व देखिस नहीं।

जिसने खरीदा उसने नहीं पहना और जिसने पहना उसने देखा नहीं।

– कफन।

जो या जनत्यव तै, त रोजै अउत्यव मैं।

रोजै अउते तैं, त कासे काहत्यौं मैं।

अगर मैं जानता की तू यहाँ खड़ा है तो मैं प्रतिदिन आता। अगर तू रोज आता तो क्या करता मैं?

– सुअर और खेत में लगे बिजूखे (पुतले) की बात।

ज्वाता है कोपारावा है, लाल घोड़ा दउड़ाबा है।

खेत जोता और पाटे से बराबर किया हुआ है और उसमें लाल घोड़ा भी दौड़ा दिया गया है।

– मांग का सिंदूर।

झांपी रे झाऊं, का तोरे देश न नाऊं।

ये टोकने के आकार के बड़े-बड़े बालों वाले जन्तु क्या तेरे देश में नाई नहीं है।

– भालू।

टिकुरा मा खेती करै, पानी मा खलिहान।

उसकी खेती तो मैदान में की जाती है, पर उसका खलिहान पानी में होता है।

– सन अम्बारी।

टेंढ मेंढ़ थून थान, तीन मुंह छै कान।

वह टेढ़ी-मेढ़ी बल्लियों का बना है, पर उसके साथ-साथ तीन सिर और छः कान भी हैं।

– हल।

टेंढ़ी-मेंढ़ी बसुरी बजामै वाला को?

सीता चली मइके लउटामैं वाला को?

भला उस टेढ़ी-मेढ़ी बाँसुरी को कौन बजायेगा और यदि सीता जी मायके जायें तो उन्हें कौन लौटा सकता है।

– नदी और उसकी धारा।

टेंढ़ी-मेंढ़ी लकड़ी पहारै चली जाय।

एक टेढ़ी-मेढ़ी सी लकड़ी है, जो पहाड़ की ओर जा रही है।

– रास्ता।

टीप टपार कपार काहे फोरे रे।

सेगर अइसे मेंगर बइसे रात काहे हींठे रे।

क्यों रे टप-टप झरने वाले मेरे सिर में चोट क्यों कर रहा है? अरे! तुम मोगरे जैसे मोटे जन्तु रात्रि में मेरे नीचे से क्यों निकले हो?

- महुँए और साँप की बातचीत।

ठाढ़ है त ठाढ़ ही, बइठ है त ठाढ़ ही।

अगर खड़ा है, तब भी खड़ी है और बैठा है तो भी बैठी है?

- बैल की सींग।

डुड़बा पीपर रोजै फरै, सुरिज क देखे रोजै झरै।

एक बूढ़ा सा पीपल प्रतिदिन फलता है और जैसे ही सूर्य की किरणें पड़ती हैं, झड़ जाता है।

- ओंस कण।

तरी अदहन जरै, ऊपर आगी बरै।

नीचे पानी खौलता है और ऊपर आग जलती है।

- हुक्का।

तरी जर नहीं ऊपर छिछला है।

नीचे जड़ नहीं है पर ऊपर फैला हुआ है।

- अमरबेल।

तीन अच्छर के काली देह, है लड़किन से अधिक सनेह।

मेरी तीन अक्षरों की काली देह है और छोटे-छोटे बच्चे मुझसे अधिक स्नेह रखते हैं।

- स्लेट।

तीन जने के तेरह आँखी।

तीन लोगों की मिलकर तेरह आँखें हो जाती हैं।

- ब्रम्हा, विष्णु, महेश।

तीन नयन शंकर नहीं, दूध देत नहि गांय।

रूख चढ़ा पंक्षी नहीं, बिरलेन अरथ बताय।

उसके तीन नेत्र हैं, पर वह शिव नहीं है, दूध देता है पर गाय नहीं है। वृक्ष में चढ़ा रहता है पर पक्षी नहीं है, उसका अर्थ असाधारण लोग ही लगा सकते हैं।

- नारियल।

तीन सींग दुई पूंछ, न बनै त महतारी से पूंछ।

कुल मिलाकर तीन सींग और दो पूँछ हो जाते हैं, अगर तू नहीं जानता तो अपनी माँ से पूछ ले।

– नंदी, श्रंग, नाग।

तीन मिले त ओन्तिस आंखी।

तीन मिल गये तो उन्तीस आँख हो गई।

– पंचमुखी शिव, षणानन, पार्वती।

तुम छोटकी हम बड़का, तुम मार दिहा हम रोय दिहन।

तुम छोटी सी हो और हम बड़े, तुमने मार दिया तो हम रोने लगे।

– बिच्छू द्वारा डंक मारना।

तेली का तेल कुम्हार का हण्डा।

हाथी का सूंड़ नवाब का झण्डा।

उसमें तेली का तेल, कुम्हार की हंडी, हाथी की सूंड और नवाब का झंडा सभी एक साथ हैं।

– मिट्टी की ढेबरी।

तोरे मुंह म देव तोरे गये, आमै वाले के मुँह म देंय।

उसे तेरे मुँह में दे रहा हूँ और बाद में जो आयेगा, उसके मुँह के लिये भी दूँगा।

– लोटा।

तोरे घर म झींगुर लोटै।

तेरे घर में झींगुर लोट रहा है।

– पोताई में उपयोग होने वाला कपड़ा (पोता)।

तोहरे घरै उतार के बइठै।

तुम्हारे घर आया तो उसे उतार कर बैठा।

– जूता।

थोर क खाय बहुत नेरियाय।

वह खाती बहुत कम है पर आवाज बहुत करती है।

– बन्दूक।

दाई बइठै य कोनमा, पाँव पसारे व कोनमा।

बुढ़िया इस कोने में बैठी है, पर पैर उस कोने तक फैलाये हुये है।

– दीपक।

दिन के भरी रात के छूंछ।

वह दिन में भरी रहती है, पर रात में खाली हो जाती है।

– कपड़ों की अर्गला।

दिन मा परा रात मा खड़ा।

वह दिन भर पड़ी रहती है, पर शाम को खड़ी हो जाती है।

– पशुओं को बांधने की रस्सी, गेरमा।

दिया भर राई गिनी न बढ़ाय।

एक दीपक के बराबर राई है, पर गिनती में समाप्त नहीं होती है।

– अकाश के तारे।

दिल्ली देख बम्बई देखेंव औ देखेंव कलकत्ता।

अइसन पेड़ कहौं न पांयव फर के ऊपर पत्ता।

मैं दिल्ली, मुम्बई, कलकत्ता सभी जगह घूमकर आ गया, पर ऐसा फल नहीं मिला, जिसके ऊपर पत्ता हो।

– सिंघाड़ा।

दुई जन धउरे एक जन पाइन।

पांच उचाइन बत्तिस खाइन।

दो लोग लेने के लिये दौड़े, उसे एक ने पा लिया फिर पाँच ने उठाया और बत्तिस ने खा लिया।

– पैर, हाथ, पाँच उँगली और बत्तिस दाँत।

दुइ मुलुर–मुलुर दुई फटर–फटर, दुइ खटर–खटर।

दो देखने वाले, दो फट–फट करने वाले और दो खट–खट करने वाले ।

– गाय की दो आँखें, दो कान और सींग।

दुइ जन दूनौ सुंदर भाई, एक हेराय दूजो काम न आई।

दो भाई हैं, दोनों ही देखने में सुंदर हैं। पर अगर उनमें एक गुम जाये तो दूसरा किसी काम में नहीं आता।

– जूता।

देखत क निकही लगै, अंगुरी छुअत लजाय।

देखने में अच्छी लगती है, पर अँगुली छू जाने पर सरमा जाती है।

– छुई–मुई (लाजवन्ती)।

देखत कै लाल थथोलत कै गुल-गुल।

चीख के देख दीदी काट खई बुल-बुल।

देखने में लाल छूने, में गुल-गुल, पर माँ अगर उसे चीखेगी तो वह बुलबुल काट खायेगी।

- पकी मिर्च।

देखै न नंच बूंदी हरदी कस रंग, चटट चूमा लइगै हम देख हयन दंग।

देखने में छोटी है, पर उसका रंग हर्दीला है, पर वह इतनी जल्दी चुम्मा लेकर भाग गई कि देखकर मैं दंग रह गया।

- बर्र।

धरती धमकै कुसिया लपकै तीतुर अस अर्राय।

जान-जान तै मोर किहानी कउन संजुआ आय।

उसके गिरने से धरती में कम्पन होने लगती है, चमक लोहार के भट्ठी से निकले लौहफाल की तरह होता है और तीतर की तरफ आवाज करती है। ये जानने वाले बताओ वह कौन है?

- गाज।

नहि आय त खाय ले, होत त क खाते।

मेरे वह नहीं है, इसलिये तुम काट रहे हो, अगर वह होती तो तुम न काट पाती।

- बांड़े पशु की पूँछ।

नहि मारिन नहि खून किहिन, बीसन का सिर काट लिहिन।

न तो कोई मारा न किसी का खून हुआ, पर बीसों के सिर कट गये।

- बीसों अंगुलियों के नाखून कटना।

नदी बहै नार बहै टट्ट बहा जाय।

आगूं पाछू दिया जरै शंख बजत जाय।

नदी नाले बह रहे हैं और उनके ऊपर से एक टटिया बहती जा रही है, जिसमें आगे-पीछे दीपक जल रहे है और शंख बजता जा रहा है।

- जीप, गाड़ी।

नहि फूल नहि फर लगै नहि पंछिनौ बस्यार।

न तो उसमें फल लगते, न फूल आते और न ही कोई पक्षी बसेरा लेता है। बताओ वह सुगंधित पेड़ कौन सा है।

- पोदीना।

नीचे ताई ऊपर ताई, जेखे बीच म भरी मिठाई।

ऊपर और नीचे सभी ओर आवरण है और बीच में मिठाई भरी हुई है।

– सीताफल (सरीफा)।

नौ गज पेड़ सवाव गज डांडी बिना कुम्हारै।

गढ़ गै हाड़ी बिना जमाये जम गा दही।

मरद के पेट म औरत रही।

उसका नौ गज लम्बा पेड़ है और फल का डंठल सवा गज है। उस पेड़ में बिना कुम्हार के गढ़े हण्डी बन गई और उस हण्डी में बिना किसी के जमाये दही जम गई और आश्चर्य यह है कि पुरुष के पेट में महिला पलती रही है।

– नारियल का पेड़।

पन्द्रा जन पहुना रहे बरा बनाइस एक।

आधा-आधा सब लिहिन दुलहै दीहिन एक।

घर में पन्द्रह मेहमान आये थे, जिनके लिये एक बड़ा पकाया गया, जिसको आधा-आधा सभी मेहमानों ने लिया और दूल्हे को पूरा का पूरा बड़ा दे दिया गया।

– शुक्ल पक्ष।

पढ़ै लिखै मा आमौं काम, कलम न कागज बतावा मोर नाम।

मैं पढ़ने लिखने के काम आता हूँ, पर कलम और कागज नहीं हूँ, मेरा नाम बताओ।

– चश्मा।

पहुना चार-चार रोटी लेंय, एक के मुँह मा दुइ-दुइ देंय।

चार मेहमानों के लिये चार रोटियाँ आई, पर चारों ने दो-दो रोटियाँ खाया।

– चारपाई।

पहाड़ से आई बाघिन, पूछ म रहै गाभिन।

पहाड़ से एक शेरनी आई जो पूँछ में गर्भवती थी।

– ढेकली

पाँच जने पहुचामै जाय, घटवा उतर अकेलेन जाय।

उसे पाँच लोग पठवाने के लिये आये, पर वह उतर कर अकेले ही गया।

– पाँच उँगली और भोजन का ग्रास।

पीला है हरदीला है औ बिन मारे वा रोवै।

जानै बालै कै घूरदीन जे बिना जान के स्वाबै।

उसका रंग पीला हर्दीला है और वह बगैर मारे ही रो रहा है, उस जानकार को चुनौती है जो बगैर नाम बताये सो जायेगा।

– जंगल में आवाज करने वाला भरूही नाम का एक कीड़ा।

पान अस पत्ता सुपारी अस रंग, नौ देवर का छांड़ के गई जेठ के संग।

उसके पत्ते का रंग पान के पत्ते के जैसा और रंग सुपारी जैसा है, पर वह नौ देवरों को छोड़कर जेठ के संग हो ली।

– अरहर।

पूंछ पेट मूड़ परा, चोला राम रेंग चला।

पेट, पूँछ, सिर आदि पड़े रह गये और शरीर चला गया।

– साँप की केंचुली।

पेड़ न पत्ता ऊपर छत्ता।

– अमरबेल।

फरै न फूलै झउअन टूटै।

वह न तो फलती न फूलती है, पर प्रतिदिन एक टोकनी तैयार हो जाती है।

– चूल्हे की राख।

फरै न फूले लगै न डार, तेही खाय सकल संसार।

न तो वह फलता न फूलता और न ही किसी पेड़ की डाल में लगता, पर उसे सभी लोग खाते है।

– नमक।

बड़े सकारे उचै घींच पकड़ लई जाय।

मैं जब सुबह उठता हूँ तो उसका गला पकड़कर उसे ले जाता हूँ।

– लोटा।

बाबा स्वाबै य घर मा, पाँव पसारे व घर मा।

बुड्ढा इस घर में सो रहा है, पर पैर उस घर में फैलाये हुए है।

– किंवाड़ का हटका।

बाबू जी आये औ कोट उतार भीतर घूस गें।

बाबूजी आये और कोट उतारकर अंदर चले गये।

– केला का फल।

बीच टिकुर मा हर चलै थापक थइया होय।
मार के स्वांटा चली गई ता हा हा दइया होय।

बीच खेत में हल चलने की आवाज आ रही थी, पर तभी कोई आया और कील चुभाकर चला गया तो रोने की आवाज आने लगी।

– हल चलाने वाले को बिच्छू का काटना।

बिना हांथ के बिना पांव के चढ़ा पहारै जाय।
रानी पूंछै राजा से ग कउन संजुआ आग।

वह बिना हाथ पैर के पहाड़ में चढ़ा जा रहा था, रानी ने राजा से पूछा कि यह कौन पराक्रमी है।

– धुँआ।

बोखी दोहनिया उंचाई न उचै।

बगैर मोहड़े की दोहनी उठाई नहीं उठती।

– काली मिट्टी में फूटने वाली दरारें (कुरइंया)।

बोयौ कोदवा जमी जरिया, फूला कचनार फरा नारियर।

मैंने कोदो का बीज बोया, पर उससे काटो की झारियाँ निकली, फिर कचनार सा फूल खिला और नारियल जैसा फल निकला।

– बैगन।

मांटी का मटकुला बना है दिल्ली का दरवाजा।
मेघचन्द्र का टोप लगाये लड़ैं फिरंगी राजा।

मिट्टी के लोंदे के आकार का वह बना हुआ है और दिल्ली के जैसा दरवाजा है और वह मेघचन्द्र टोप लगाये हुये हैं। फिरंगिया नामक राजा युद्ध कर रहा है।

– धान दलने का चकरा।

मुँह चीता कस पींठ बाघ कस, पूंछ लोखर कस य संजुआ को?

उसका मुँह चीते की तरह पीठ बाघ की तरह और पूँछ लोमड़ी की तरह झबरी है, यह कौन सा जन्तु है।

– गिलहरी।

भूंजा बोकरा चढ़ा पहार, ओके नाक म एकठे बार।

भुना हुआ बकरा पहाड़ चढ़ रहा है, पर उसके नाक में एक ही बाल है।

– कुल्हाड़ी।

यतने बड़े पहार मा, बिन गांठी कै दूब।

इतने बड़े पहाड़ में बगैर गांठ की दूब है।

– सिर के बाल।

यतने बड़े खेत म दुइठे ढीला।
इतने बड़े खेत में मात्र दो ही ढेले है।
– सूर्य चन्द्रमा।

रात के भरा दिन मा छूंछ।
रात में वह भरा रहता है और दिन में खाली हो जाता है।
– चूल्हा।

रात दिन टें टें मा, होय सकार त पेटे मा।
रात दिन वह बगल में रखा जाता है, पर सुबह पेट में पहुँच जाता है।
– पोंताहड़ी का पोता।

रात निहारै दिन म सूर।
उसे रात्रि में दिखाई देता है, पर दिन में अंधा हो जाता है।
– चमगादड़।

रात भर गिनती कीन, सकारे देखेन त एकौ नहीं।
सारी रात गणना हुई, पर सुबह देखा तो एक भी नहीं है।
– आकाश के तारे।

राजा के राज नहीं माली के बाग नहीं।
फोरे से दाना नहीं खाये मा स्वाद नहीं।
वह किसी के राज में नहीं है, माली के बाग में नहीं पाया जाता, अगर उसे फोड़ा जाय तो दाने नहीं निकलते और खाने में कोई स्वाद नहीं होता।
– ओला।

रामायण मा है नहीं हनुमान नहि चीन्ह।
लम्ब पूंछ बड़ दन्त है लंक विनासन कीन्ह।
उसका वर्णन रामायण में नहीं है और न ही वो हनुमान कहलाता है, पर लम्बी पूँछ और बड़े दाँत हैं और वह लंका को समाप्त कर देता है।
– भूसा चढ़ाने का पांचा।

रूच रूच बनी त घर घर फिरी,
जरै अब करम खटोली तरे डरी।
जब मैं गोंठ–गोंठ कर बनाई गई तो घर–घर घूमा करती थी, पर अब तकदीर ऐसी फूटी की खाट के नीचे पड़ी रहती हूँ।
– टूटी हुई पनही (जूते)

लकड़ी जरी कोइला भई कोइला जर भा राख।
मैं पापिन अइसा रही कोइला भई न राख।

लकड़ी जलकर कोयला बन गई और कोयला जलकर राख में परिवर्तित हो गया, पर मैं ऐसी बदकिस्मत थी कि न तो कोयला हुई और न ही राख।

– पका हुआ घड़ा जो घर से बाहर हो गया।

लख ओढ़े लख पहिरे औघट चली नहाय।
बीच डगर म गिरपरीं हाड़िउ गीध न खांय।

लाख को ढके और लाख के गहने पहनकर औघट में स्नान करने गई, पर जब सुनसान रास्ते में गिर पड़ी तो मुझे कौआ गिद्धों तक ने नहीं खाया।

– घड़ा।

लड़कइया मा चोंथी चोंथा, बुढ़ाई के घुन घुनियां बाजै।

लड़कपन में लोग मुझे नोचते–चोथते रहे, पर अब बुढ़ापे में मैंने घुँघरू पहन रखा है।

– चना का पेड़।

लड़िकन से बोलौं नहीं ज्वान मोंर भाई।
बूढ़न क छोंड़ौं नहीं चाह औढ़ै रजाई।

मैं बच्चों को कुछ बोलता नहीं, सभी जवान तो मेरे जैसे हैं, पर बूढ़ों को हरगिज नहीं छोड़ता, भले वे रजाई ओढ़कर पड़े रहें।

– जाड़ा।

लम्ब पूंछ एक दंत मयाबा, लंक टूट तब कामे आबा।

उसकी लम्बी पूँछ और भयानक दाँत हैं। पर वह लाँक कटकर आ जाने पर काम आती है।

– अखैनी (गेहूँ की लाक फैलाने की लकड़ी)

लांपा कस हांथ गोड़ सूत अस करियाई।
मेछन मा हांथ फेरै सावला सिपाही।

उसके लांपा घास की तरह पतले–पतले हाथ पाँव हैं और काले धागे के समान पलके हैं। पर वह सांवले रंग का सिपाही मूँछों में हाथ फेरता चलता है।

– चींटा।

लाल कुठुलिया करिया पेहना।

लाल कुठली में काले रंग का ढक्कन लगा है।

– घुनची।

लाल मूंछ मुरगा नहीं लील कंठ नहिं मोर।
लम्ब पूंछ बांदर नहीं चार ग्वाड़ नहीं ढोर।

उसका सिर लाल है, पर वह मुर्गा नहीं है। कंठ में नीलापन है, पर मोर नहीं है उसकी पूँछ लम्बी है। पर वह बंदर नहीं है और उसके चार पैर हैं, वह पशु नहीं है।

– गिरगिट।

लाली गइया बइठत जाय, कारी गइया धउरत जाय।

लाल रंग की गाय बैठती जाती है और काले रंग की गाय दौड़ती जाती है।

– आग के अंगारे और धुँआ।

सनानना सुतरी सरकामै वाला को।

सीता चली मइके लउटामै वाला को।

सन की सुतली को सरकाने वाला कौन है और सीता जी मायके जा रही हैं लौटाने वाला कौन है।

– नदी।

सरकत आबै सरकत जाय, सांप न होंय बड़ा दइंदर आय।

वह सर्प की तरह आता और जाता है, पर सर्प नहीं है, बल्कि उससे भी भारी भरकम है।

– रस्सी ।

सरा है घुना है पै लड़ै क तयार है।

वह सड़कर कमजोर हो गया फिर भी लड़ने के लिये तैयार है।

– कांटा।

सर्री सेंमर बाढ़ी अस, ऊपर देखैं पइला कस।

सीधी सी सेंवर काफी लम्बी है, पर उसके ऊपर मोटा सा गुम्मच है, जो लकड़ी के पैले जैसा है।

– ज्वार।

संसी हथउड़ा अउर निहाई, तीन म वन को आंगे आई।

संसी, हथौड़ा और नहाई में पहले कौन बना?

– हथौड़ा।

सर्रा पेड़ फुनई म गांठी।

सीधा पेड़ है, जिसके ऊपरी तने में गांठ है।

– गोदली (नागर मोथा का पौधा)

सांकर कुंइयां सींक न जाय, मिरगा पानी पी–पी जाय।

इतना संकरा कुँआ है, जिसमें एक तिनका भी नहीं घुस सकता, पर मृगा पानी पी रहा है।

– थन।

सांकर कूप कै भाकुर मांटी, कूद परा दहिजार क नाती।

एक संकरा सा कूप है, जिसकी मिट्टी मटमैली है, पर उसमें अचानक डाढ़ीजार का पोता कूद पड़ा।

– मूसल।

साठ ऊंट नौ खूंट ऊनै ऊन बांध दे।

साठ ऊँट और एक खूंटा है, पर विषम संख्या में बांधना है।

– साठिया नाम एक ही ऊँट है।

साँप अस सरकै बिजार कस दहंकै।

वह सर्प की तरह सरकती चलती है और सांड की तरह चिंघाड़ती है।

– रेलगाड़ी।

साँप कस गुड़री दूध अस रंग, मोर किहानी जान पुन पहिरा अपने अंग।

वह साँप की तरह कुण्डली मार कर बैठी है और दूध की तरह उसका सफेद रंग, मेरी पहेली बूझ उसे गले में पहन लो।

– गले की हंसुली।

शीष जटा पोथी गहे सेत बसन गल माहिं।
जोगी जंगम वा नहीं ब्राम्हन पंडित नाहिं।

उसके सिर में जटायें और वह पोथी लिये हुये है, पर न तो वह साधु संन्यासी है और न ही ब्राह्मण पंडित है।

– लहसुन का पेड़।

सुपेत पलेट म करिया अंडा।

सफेद प्लेट में काला अण्डा रखा है।

– आँख।

सुरूर सुरूर सरकाबै, डुम्म भये चिचुआय।

वह सफेद रंग का है, पर इस देश में नहीं है। और कर्र–कर्र खा लीजिए, पर उसमें ऊपर का आवरण नहीं मिलेगा।

– ओला।

सेत है सुपेत है य देश म नहीं, कर्र–कर्र खाय लेय बोकला नहीं।

उसके सरकने से सर–सर की आवाज आती है और जब डुम्म की आवाज आती है तो पानी गिरने लगता है।

– रस्सी–बाल्टी।

सोने कै सलाई भीती म ओढ़काई।

सोने के रंग की सलाई दीवाल में लगी है।

– नाक का छीछन।

गोण्ड जनजातीय धंधा

रूपसिंह कुशराम

रूपसिंह कुशराम

चौदह गोड़ पाँच मूड़ दस आंखी जिव चार।
लखय पनिहारिन दोहरा तेमा बम्हना करय विचार॥
– चार लोगों के द्वारा शव ले जाना।

एक ईट सत्तर कुंआ सवा लाख पनिहार।
बिना डोरा के पानी हीचय कोन मरद के नार॥
– मधुमक्खी।

दस नख धरती मॉ रेंगय तीस गगन छतराय।
तीन लोक के सम्पदा एक झन घर के जायें॥
– श्रीकृष्ण – वासुदेव।

वोवय मिरचा जरवा जमय, फूल लगाय कचनार।
फर लगय नरियर कस, लगे ना तय विचार॥
– भटा।

निरसंखी का संखा हइस बिना दादा के लरका भईस।
कबय हइस जब ओखर दाई नही तब हइस॥
– वाल्मिक – कुश।

जसना तोर दाई करिस तसना तय करें।
बताय पिरमू मैं अब कसना करें॥
– लक्ष्मण को शक्तिबाण के प्रभाव से मुक्त करने के लिए संजीवनी बूटी हनुमान जी लेने गये थे। वापसी में भरत जी के ने हनुमान जी को बाण मार गिरा लिया था उस समय की कथा है।

उप्पर ले गिरय कुभ, तेखर लार चाटव तुम।
– आम।

सरील मा जटके रहथय, ओखर छाया कब्भू नहि दिखय।
– गोदना।

चुट्टू हस नोनो, धर भर सोना।
– दीपक।

एक राजा के सुग्धर रानी, अखर पीतय पूछी मा पानी।
– दीपक।

घन है कढ़वा विकट है बंधना या धंधला जेन नहिं बताही तेन बंदरा के वंश बेटा।
– ककई, कंघी।

सर्र सट लम डोर तीन मूड़ दस गौड़।
– गाय – बछड़ा, अहीर – रस्सी।

फरय न फूलय नवय न डार, जेला खावंय बारह मास।
– नमक।

सारंग को सारंग मिलय सारंग पहुंचे आय।
ना बोलूं तो परीत घटय बोलो ता भगजाय॥
– मयूर, सर्प, सावा माह।

काटे मा कटय नही बांटे मा बटय नहीं।
– छाया – परछाई।

कारी–कारी काजरी सुपारी केशव रंग।
ग्यारा देवर छांड के चलय जेठ के संग॥
– अरहर।

नानसी बाई छोकरी लाल बाई नाम।
लाल रंग के बत्ता पहरे दुई पैसा दाम॥
– मिर्ची।

एक पेड़ दमदार तेमा फरय नौ हजार।
कांवा जाय के देख ले आदमी जायके खायें॥
– सुपाड़ी।

बीच गली मा खुन के टिपका।
– टिकली।

अहार जाओं पहार जाओं, मूसा ला झुलाय दंओ।
– ताला।

झुर्रा कूंआ मा मुतवा भड़ भड़ाय।
– नारियल।

या गय वा गये चटुक चूमा दय गये।
– ततैया।

एक डकरा उचट के फेटा बांधय।
– लाई।

उठ पुत्तुल बूता कर।
– झाड़ू।

एक डकरी गेड़ा कर मुखारी करथ।
– चूल्हा।

एक पड़ी एक खड़ी एक छमा दम नाच पड़ी।
– तवा रोटी।

बाप अड़ानी बेटा सुजानी बिन बंधना के बांधय छानी।
– मुधमक्खी।

हरियर गैया के चरका पूछी।
नहिजानस ता तोर बहनी ला पूछी॥
– मूली।

चार डरेबल मा एक सवारी। तेखर पाछू जनता सारी॥
– मुर्दा।

हरी थी मन भरी थी, राज के बाग में पेट चीर पड़ी थी।
– दातून।

दूबर पातर अम्खम झाड़ उप्पर देखों सुन्दर नार।
तरी छेदा – उप्पर बाल॥
– महुवा।

महतारी बेटी के एक नाव बेटा के नाव और।
धंधा ला बताय के उठाने तय कौर।
– महुवा।

उप्पर मलगा तरी छानी, ओखर मित्तर घुसय न पानी।
– खोर कीड़ा।

धरनी मा गोड़ न धरय पानी के पास न जाय।
चाँद सुरुज के मुह न देखय कौन सा जीव आय॥
– ऊमर कीड़ा।

हरियर डिबिया पीयर मकार, तेना बैठय कालू राम।
– पपीता।

चार चिरैया चारय रंग। भीतर घुसयं ता एकय रंग॥
– चूना, कत्था, पान, सुपाड़ी।

चरका खेत मा करिया बीज, बीज बवैया गावय गीत।
– पेन कॉपी।

बिना बीमार के खावय गोली, सबय डरावयं ओखर बोली।
– बन्दूक।

हजारों मामी के एक ठन मामा।
नवावयं कनिहा पहरे जामा।
– कुँआ में पानी भरा।

चट के चाटय, बध ले गिरय।
– झाड़ू।

यह दे आथय वह दे जाथय।
– नजर।

चिकनी पथरा रोसे मा रोसावय नही।
– अंडा।

सोन्नें के सरई, मीठी मा लपटाई।
– नान।

तैय चल मैं, आथों।
–दरवाजा।

करिया गैया काटे खाये, अर पानी देखने डराय जायें।
– जूता।

अंध कुंवा कचनारी छाट, बत्तीस पीपर एक पान।
– मुख, दाँत, जीभ।

अरकस बरकस नौ सौ खूटा, मरनहा गैया के दूध मीठा।
– मधुमक्खी।

अड़बड़ घोटरी के पुट्ठा मा सीग।
– सिंघाड़ा।

एक बाली मा धर मर भूसा।
– दीया, दीपक।

एकठन लेय के आवैय, दुईठन फेकावैय।
– मुखारी, दातून।

लरका कारैय, खसर – खुसुट, जवान करैय।
पकर चुटैया ऐठ के, बुढ़वा कारैय बैठके॥
– जूता पहिनाना।

आय लो लो बाय लो लो, पानी देख के दराय डोलो।
– खलरी के पनही (जूता)।

तोर पटत जाय, मोर घुसत जाय।
– मजूर चरने का जाधा (मयूर चरने का जगह)।

एकठन धरगा जादा चोर, ओखर मुह हावैय करिया।
मेछा पकर के उखाड़ दे ता होय जाय उजियार॥
– माचिस।

तरी ताई, उप्पर ताई, माझे मा लाल बाई।
– मसरी के दार, मसूर।

अन्न खावैय, पानी के किरिया।
– कुटैया / बरैया / कोरो / लोहारी।

एकठन चिरैया के पुटुल लादा।
– गोनिया।

ईहा ले फेकैय डोरा, बगईस रतनपुर चोंरैय,
उप्पर हाड़ा तरी हावैय मांस।
– नरियल।

आगू कोरोऊ पिछारू रास।
– टट्टी बैठना।

करिया गईया करोदी बछिया।
मारदे लठिया ता बिहर जाय बछिया।
– बन्दूक – गोली।

चार घर मा चौतरा, ओमा बियानी गईया के लरका।
अतना पियारो, पानी मा उफलाय।
– सोहारी रोटी, पूड़ी।

जेखे करेजा मा दांत होथेय, काहिन आय।
– अनार।

मसकैय ता कसकैय, धुसर जायता हसैय।
– चूड़ी।

गुज–गुज–पुच–पुच – आर–पार–रोवा माझे मा छेद।
– महुआ – फूल।

कटिया गौजैय लाल निकारैय, ऊखरू बैठके भसा–भस मारैय।
– लोहरा – लोहा, फार।

छाती मा छाती मिलथैय, मिलथैय छेदा मा छेद
दोऊझन केघसका–मसकी मा निकटैय सफेद–सफेद।
– पथरा के चकिया, पिसान, आटा।

पेड़ देखैय थापक धैया, पत्ता हावैय जंजाली
खावत खा गुर सकरी लागे जाने कोऊ जान हारी।
– केला।

आठ खटा–खट नौ अन्टारी सोला धाधर अठारा नारी।
– रेहटा, रहट।

अथ्थर उप्पर पथ्थर, पथ्थर उप्पर पैसा।
बिना पानी के महल उचांवैय, वा कारीगिर कैसा॥
– दियार।

खड़े हावैय ता खड़े हैय, बैठे है ता खड़े हावैय।
– बैल का सींग।

एठन डोकरी राखैय राख पादैय।
– चूल्हा।

एकठन डोकरी गेंड़ाभर मुखारी कारैय।
– चूल्हा।

लाली बलाय ता कोकी डरवाय।
– बेर।

करिया कुकरा झब्बा कान, टोप लगाय जावे दुकान।
– भटा।

दिनमा भरे रहथैय, अर रात मा खाली राहथैय।
– अड़गानी।

एक चिरैया के ठुग्गू नाव, छुनुक–छुनुक फिर आवैय गाँव।
– डण्डा।

रेगत जाय सलगत जाय, साँप न होय अजगर आय।
– नांह, नांव।

पानी आय ता लू–लू–लू।
कुकरा आय ता लू–लू–लू॥
– खलरी के पनही, जूता।

अधकुंआ मुंह बोलैय।
– बाल्टी।

उप्पर दाशा तरी दाशा, माझे मा हावैय लाल टमाटर॥
– मसूर दाल।

अंध कुंआ भुर भुसिया माटी, ओमा नाथैय बौरा हाथी॥
– टटका, मेंढक।

एक लगोटा माँ बाप अर पूत।
– धरजी, बटुआ–पैयना।

आवे जाय दावें जाय, ओखर मास कोऊ न खाय॥
– गुड़नी।

आज जा ही ता न आं हूं। न आही त न आं हूं॥
– बाढ़।

फरैय न फूलैय न वैय न डार। ओही खाय बारो माह॥
– नमक।

एक खड़ी, एक पड़ी। एक खड़ी नाच रही॥
– रोटी।

हू क हू दादा कोरा लैय ले।
– मादर।

रातमा भरे राहै, दिन मा ओसर गये राहै।
– चिमनी, दीपक।

अतफर मा झूलैय, माझे मा फूलैय।
– लालटेन।

काटे मा काटे न ही, अर बाटे मा बटे नहीं।
– छाया।

बिना फूल के फरूहा लागैय।
– ऊमर, गूगल।

न तो खाय न तो पीवैह, संग मा रेंगत हैं॥
– छाया।

इथे जाथैय विथे जाथैय।
– नजर।

न करिया आय, न पीयर आय।
सप्फा जीवान के रंगीली आय॥
– पानी।

तिल जलै, तिलवारी जालैय जलैय बनके गोजा।
डोंगर उप्पर तितुर बोलैय छमकत आवैय राजा॥
– दिन।

करिया सीसा मा उज्जर दवाई।
– सिंघाड़ा।

घर राहै ता दुबार से निकर गये।
भैय कहाँ ले जांव।
– मछरी का जाल।

मिल गयै ता सवार, नही तो ग्यारा लम्मर कै गाड़ी।
– दोऊ गौढ़, दोनों पैर।

पेड़ न पत्ता उप्पर छत्ता।
– अमरबेल।

जाबे ता जावे दैयके जावें।
– दरवाजा।

तोर दाईला मोर दाई धसीलैय।
– पोताई करने का पोता, कपड़ा।

अड्मड़ घुटरी के पुट्ठा मा सींग।
माझे मा खाय बगलमा पगुराय॥
– जाता, चक्की, चकिया।

दोइठे चैयली बांधे मा न बघाय।
– धरती अर बादल।

साप कस गिर्री, मुर्गा कस केश।
– मुकुट।

एकठन डोकरा निफर निफर के बधिया बाधैय।
– सुई और धागा।

उप्पर चाकी, तरी अर चाकी, केमा निकरौव काकी॥
– चार चिरौरी।

झाझर झेला रतन पियारी।
या धंधाला जान जावें ता खावे बियारी॥
– छतरी, खुमरी।

चार गोड़ गाय नहीं, बंदरा सही उचटथैय ओखर पूछी नहीं।
– टटका, मेंढक।

रूखवा मा रहथों, पानी ले भरे रहथों।
मारे डाढ़ी हावैय, ता मैय बाबा नाहों॥
– कच्चा नारियल।

सरसट लमडोट, तीन मूड़ दस गोड़।
– गाय, बछड़ा, अर ग्वाल के तीन सिर, दस पैर।

गैया डारैय हाड़ा, अर हाड़ा डारैय बछिया।
– मुर्गी, अण्डा, चूजा।

करिया दोहनी मा लाल ढक्कर।
– मिलवा।

जाबे ता जावे चरका पथरा ले पठाय आवें।
– रास्ता।

दाई दादा काहों ता दुरिहा मागैय।
मामा–फुआ काहों ता लिघ्धा आवैय॥
– ओट।

डोगरा ले निकरैय मड़ मुड़िया।
दाना खाय पानी के किटिया॥
– बरिहा।

एक कारों, दुई छांड़ो।
– दातून।

डोगरा मा जनम लये, पानी मा लोंरैय।
– नौका, नाव।

लाल गैइया भगतैय जाय। करिया गैइया बैइतैय जाय॥
– आगी, आग।

दस मारैय पाँच गिरावैय।
– रोटी।

रूखवा मा रहाथें, चिरैया नाहों, दूध देवाथों, गैइया ना हों।
– नारियल।

मोंरैय रंगैय नही आय, न रूपैय आय अर न लकीर।
मानुख के कोनैय कहैं ब्राह्मा नही देखिस।
– हवा।

देखैय का हरियर, छीये मा चरियर।
– कटीली।

चुटुक–मुटुक चुट कुलिया बाजैय–बाजैय मन के काई।
नाम नगर मा धनसी बाजैय सुनैय परोसिन बाई।

– सूपा, सूप।

आठ अठेनी, बारा बेनी, चार चबूका, दुई दुई भोका।
– सुअरी के बारह दूध, कुतिया के आठ, गाय के चार, बकरी के दो दूध।

तरी अंधना, उप्पर आगी।
– दीया।

झिर–झिर–झिर झिरना झिरैय तहाँ रोपैय झिटका।
चार चिरैया पानी पियै, पीपर कस मीठा॥
– दारू, शराब।

ना खाथों, न पीयथों, सबला नाच नाचावाथों।
डफ–डफ मारै चिल्लाथों॥
– ढोलक।

व चलतिस, ता मांहू चलतो।
व रूकतैय, ता माहू रूकतो॥
– छाया।

झीलन मा बोवैय झिलहरी धान।
नूनो टोरो ता एकैय मुट्ठा॥
– सौखी जाल।

चार भाई चौरसिया, एक भाई धूकन।
– गाय के चार पैर, एक पूँछ।

पाँच भाईन के एकठन अंगना।
– हथेली।

सुआ काहै कहं जुवा, किर–किर बकली अनुहार।
– पान का पत्ता, सुपाड़ी।

सना सन सुतरी, सरकावै वारे कोन।
सीता जाथैय मैइके, लोवटावैय वारें कोन॥
– नर्मदा नदी।

तानी–तानी–तानी पताल कुआ पानी।
एकठन बंदरा कूदैय, ता पूछी पकर तानी॥
– बाल्टी।

बिना बादर ले छैहां।
– छाता।

एक गोड़ के लावा।
– मिरचा।

बिन मूड़ के बकरा।
– भटा।

अंधरा घोड़ा।
– जूता।

माछी के दूध।
– शहद।

राजा मारैय होड़, आगू जनमता पाछू गौड़।
– पन डुल–डुल।

बैठेस ला रदासने, चितरा कस खाल।
ओ हो हो राम, तोरैय पूछी न खाल॥
– टटका।

चार रस्से भरा, बिगर ढक्कन के ओंधा पड़ा।
– गाय का थन।

गोल, गोल गठिया, सुपारी कस रंग।
गियारा देवर लेका, गइन जेठ के संग॥
– अरहर।

लखकारी, लखगोरी, लखनी चलैय न होय।
माझे गली मा मर गैय, ता कौआ गिधवा न खाय॥
– गगरी।

ऐकैय रूख दमदार, बतिया लागैय सो हजार।
मुसवा आवैय काट जाय, बिलरा आंय खाज जाय॥
– सुपारी – सरोता।

देखिस ता पहरिस नही, पहरिस ता देखिस नही।
– कफन का कपड़ा।

करिया घोड़ा, लाल लगाम।
जेमा बैठय गद–गद राम॥
– कड़ाही, आग, तेल।

चार चरण चौदा गोड़, पाँच मूड़ चार जिव।
– मुर्दा को ले जाने का वक्त है।

अड़बड़ बिलरा के पूंछी मा सींग।
– बिच्छू।

जबले धूसी से अर निकरैय नही।
– गाज।

फरैय न फूलैय झौवन कुहराय।
– चूल्हा की राखा।

घर हावैय त दूरा निकरथैय।
अर मैय कहाँ ले जांव।
– मछली के जाल।

निहर के लेय, निपोर के नावैय।
– जानवर बाँधने का गेरमा।

सपुआ कस सर कैय, सांड़ कस दहकैय॥
– रेलगाड़ी।

अरिया मा लोखरिया माचैय।
– जीभ।

तरी पचरी उप्पर अर पचरी, माझे मा कोतरी मछरी॥
– जीभ।

राजा के अगारू अर धोखा के पछारू।
– खतरा।

अथमर मा झूलैय माझे मा फूलैय।
– लालटेन।

दुई झन सुधर, सुधर भाई।
एकठन हेरागे ता दूसर काम न आइस॥
– जूता।

चरका खावैय त करिया निकारैय।
– डीजल, इंजन।

चरका टटिआ मा करिया अड़वा।
– आँख की पुतली।

चार चरन चौउदा गोड़, लोग लोगाई के लगगैय होड़॥
– एक घोडी, पति, गर्भवती पत्नी एवं एक बछेड़ा।

जबलें टंगरी से तबले गिरैय नही।
– आकाश।

तरी जर नही आय, उपरैय उप्पर घुमड़ाय।
– अमरबेल।

नही आय ता खायले, होतिस ता खाय पाते॥
– बिना पूँछ का बैल।

पढ़े–लेखे मा आबो काम।
कलम न कागज बतावा मोर नांव॥
– चश्मा।

फरैय न फूलैय न ओखर डार।
जेखा खाथैय सप्फा संसार॥
– नमक।

करियाहों कलूढा हो करिया डोगरा मा रहथों।
अर लाल पानी पीथों।
– जुवाँ, जूँ।

टाँग पसारिस वा घर मा।
– किवाड़ की साँकल।

या दुनिया मा तीन बूता, अड़मड़ हावैय।
– नहाना, खाना, टट्टी जाना।

सपुआ कस गुड़री, दूध अस रंग।
– सुतिया, गले की हसिया, हसुली।

उप्परले डारैय, तरी ले निकारैय।
– साया, पेटीकोट।

सेत हावैय सुवेत है या ईहा नही आय।
चरूम-चरूम खायलेय, ओखर बोकला नही आय।
– ओला।

लाल गइया बैठत जाय, कारिया गईया धौवरत जाय।
– धुँआ।

करिया हावों कालूठी हांवो, करिया डोगरा मा रहथो।
लाल पानी पीथों, पिछारू जबाब देथों॥
– बन्दूक की गोली।

चार झन बरदा चार ठढेर।
एकक-एक झन के मुँह का दोई झन घुसेर।
– चारपाई।

जबले छुटी से ता मिलैय के नांव नही लेय।
टेढ़ा-मेढ़ा थून-थान, तीनढ़े मुंह छैयठे कान॥
– हल, बैल, किसान।

तरी अनधन धरैय, उप्पर आगी बारैय॥
– चोगी पीना, हुक्का।

टब टुब मारैय ता टप-टप चुहाये।
– मुखारी, दातून।

लरकन के सवंग लागो नही, जबान लागें भाई।
बुढ़वान का छांड़ो नही, ओढ़ थैय रजाई॥
– जाड़ा।

सोने के सलाई, भीती का चिपकाई।
– नाक के छीछन।

जरवान तरी करिया लोटैय।
– बैगन।

टेढ़ी–मेढ़ी बांसरी बजैया नहिं आय।
सीता गइसे भैय के लौटैया नहिं आय॥
– नदी।

राजा के फेटा ला कोउ नही नांप सकैय।
– गली।

दिन मा सोय, रात मा खड़े।
– गेरमा, जानवर बाँधने की रस्सी।

तीन टांग धरती, मा एक टांग उप्पर।
बिन बादर के पानी गिरैय, मूसर के धार॥
– कुत्ते का पिसाब फिरना।

डुड़वा पकरी रोज फरैय।
सूरज जा देखके रोज डरावैय॥
– ओस।

नारी पति संग मा सोइस नही।
सोइस अगरता जागिस नही।
– नाड़ी।

चार पहना चारैय रोटी लेय।
एक के मुंह मा दुई–दुई देय।
– खटिया (खाट)।

मुरधेसा उचैय, ता धीच पकर के लैय जाय।
– लोटा।

उधारिन डब्बा, खाथैय पान।
लोग–लुगाई के बाइस ढन कान॥
– रावण–मन्दोदरी।

फूलथैय कचनार जैसे, अर फरथैय नरियर।
– बैगन।

हरीरी फरैय पीरी पाकैय सुआ खाय मुईया गिरैय।
– भटकटइया।

ऊतना बड़ डोगरा मा, बिना गांठ के दूब।
– सिर के बाल।

रात भर गिनैय, संकरहा देखन ता कछु नही राहै।
– तारे।

भूजे हरा बकरा चढ़ गैय डोगरा मा।
– कुल्हाड़ी।

लरकैय मा चोथी–चोथा, सियाने मा धुन–धुन बाजैय।
– चना।

हरदी कस मा गफ गुप पीतर कस लोटा।
– बेल का फल।

इथे जाथैय, उथे जाथैय।
– नजर।

करिया शीशा मा चरका दवाई।
– सिंघाड़ा।

जबले बैयठी से ता उचैय के नांव नही लेय।
– जमीन।

तीन झन के तेरा ठन आंखी।
– ब्रह्मा, विष्णु, महेश।

तरी ताई उप्पर ताई, दोऊ के माझे मा भरिसे मठाई।
– सीताफल।

या खेर से व खेर कभू नही गैय आंव।
– दीवाल।

अतना बड़ खेत मा दोई ठन डेला।
– सूर्य–चन्द्रमा।

अठन्नी, चवन्नी नौ ठईयां, बंधे रुपया कै ठैंया।
– तीन रूपया।

आठ कुल्हारी नौ तलवारें, फिर भी न कटे बेल की डारें।
– परछाई।

आठ चरन दस नयन हैं, जीव चार सिर पांच।
पनिहारी को दोहरा, पंडित करे विचार।
– मुर्दा को श्मशान ले जाना।

एक नार के दोई बालक दोनैय के रंग एक।
एक खड़ा रहे एक चले फिर भी दोनों संग।
– चक्की के पाट।

एक दरोगा ऐसा कमर में बांधे पैसा।
– मोर।

एक चिरैया एकई हाथ, ओखर पूंछ अठारह हाथ।
– रस्सा बाल्टी।

एक कुंआ में गलगल ब्यानी, ओखर तेली बड़ी मिठानी।
– मधुमक्खी।

एक सिंगी गाय, पोंगत पोंगत जाय।
– चक्की।

एक रेल के चार ड्राइवर, उसमें बैठी एक सवारी
उसके पीछे डब्बे सारे।
– शव यात्रा।

एक राजा की सुंदर रानी,पीती है वह पूंछ से पानी।
– दीयाबाती।

एक टूरा राजा संग खावे।
– मधुमक्खी।

एक डागरी रगड़ राख फेंके।
– पत्थर की चक्की।

एक फल ऐसन जेखर पेट में पैसा।
– सिंहार फल।

एक झन डोकरा उचट के बांधे फेंटा।
– मक्का की लाई।

एक राजा के तीन आंख।
– नारियल।

एक कुंआ में थोड़ अस पानी, उसमें नाचे लाल भवानी।
– तेल की कुप्पी।

एक कबर में चालिस मुर्दा, उनकी मूंड़े कारी–कारी।
– माचिस।

दो पग चलें चार लटकायें, करत जायें मन चैना
ऐसी सखी मैं तुमसे पूंछो तीन शीस दो नैना।
– श्रवण कुमार और उनके माता–पिता।

एक खड़ी थी, एक पड़ी थी।
एक छमा–छम नाच रही थी।
– रोटी।

एक डुकरी गट्ठा भर दतून करें।
– चूल्हा।

एक ठे रूखवा काटे न कटे।
– आदमी की छाया।

एक डुकरी राखय राक पोकें।
– चकिया।

एक कुन्हा में बधवा गुर्राय।
– कुनेता या जाता।

एक डुकरी अंगना में कुंवारी।
– झुई–मुई।

एक दंत लम्बी पूंछ लंका विध्नकारी होय
खोज लो रमायन में पवन सुत नही होय।
– धान गाहने की कुरैली।

एक सींग के बकरा रे भैया, बर्र–बर्र निरयाएं
पुट्ठा से चारा चरे, कोरवा से पगुराये।
– चकिया।

ऐंड़ा बेंड़ा वंशी बजाने वाला कौन।
टूरी जाथै मायके लहुटाने वारे कौन।
– नदी की बाढ़।

एक चिरय के डुल–डुल पेट।
आवय राजा फोड़य खाय पेट।
– नारियल।

एक डुकरी राखै राख पौंके।
– चक्की।

एक डुकर उचट के पगिया बांधे।
– धान की लाई।

एक ठन भैंसिया पथरा में बियानी।
– नारियल।

एक खेत में ऐसा हुआ, आधा बगला आधा सुआ।
– मूली।

एक फकीर ऐसा, जिसके पेट में लकीर देखा।
– गेंहूँ।

एक खड़ी पड़ी, एक छमा–छम नाच पड़ी।
– चूल्हे में रोटी।

एक मंदिर के दो दरबारी, पकड़ महादेव दे दे मारी।
– नाक।

एक ईट की बनी बखारी, नौ सौ गाय समाय
ऐ री सखी मैं तोसें पूंछू गोबर कौन ले जाय।
– मधुमक्खी।

एक थाल मोती से भरा, सबके ऊपर औंधा धरा।
– आसमान।

एक पेटी में चालीस चोर, ओखर मुंह काले–काले।
– माचिस।

एक लिये दो फेंक दिये।
– दातून।

एक लाठी की सुनो कहानी, छुपा है इसमें मीठा पानी।
– गन्ना।

एक कुँआ में गलगल ब्यानी, छुपा है इसमें मीठा पानी।
– मधुमक्खी।

एक कुँआ में बत्तीस भूत।
– दाँत।

एक चिरैया चुंकीदार, उसके अंडा ढ़ाई हजार।
– ज्वार।

एक मोंडी को निनिया नांव, चढ़े चौतरा मारे गांव।
– बन्दूक।

एक थाल मोती से भरा, सबके सिर पर औंधा धरा।
चारो ओर वह थाली फिरे, फिर भी मोती एक न गिरे।
– आसमान में तारे।

एक नार के हैं दो बालक दोनों एक ही रंग।
एक चले एक खड़ा रहे फिर भी दोनों संग।
– चक्की।

एक रंग की मुर्गी, हजार रंग के बच्चे।
खड़ी हो गई मुर्गी, विखर गये बच्चे।
– रेलगाड़ी।

एक मोंड़ी गेल धरें, घूंघरी बगरात जाये।
– बकरी।

एक ड़िबिया में बारह खाने, हर खाने में पांच-पांच दाने।
- घड़ी।

एक कली ऐसी है, जो कभी खिलती नही है।
- छिपकली।

एक मोंड़ी गैल धरै, घूंघरी वगारत जाय।
एक बोदानौ चरवाहे।
- छोटे से काम के लिये कई मजदूर लगवाना।

एक अंगुल के छोटे मियां, नौ अंगुल की पूंछ।
भागत जात है छोटे मियां, घटत जात है पूंछ।
- सुई-धागा।

एक टांग पर खड़ी है, एक जगह में अड़ी है।
अंधियारे को दूर भगाये, धीरे-धीरे जलती जाये।
- मोमबत्ती।

एक फूल है काले रंग का, सर पर सदा सुहाये।
तेज धूप में खिल जाता है, छाया देख मुरझाय।
- छाता।

एक चबूतरा चार बाजार, सोलह बिटिया तीन दमाद।
- चौपड़ और पाँसा।

एक नार भौरा से काली, उसके घर हर दिन खुशहाली।
मेहनत करके काम बनाये, खुद से दुगना बोझ उठाय।
- चींटी।

एक चीज के तीन मुँह, दो छोटे एक बड़ा।
- फुलपेंट।

एक बहादुर ऐसा वीर, गान गाकर मारे तीर।
- मच्छर।

एक बाप के लाखों बच्चे, जितने सुंन्दर उतने सच्चे
सांझ ढले आ जाते हैं, बादल से घबराते हैं।
- तारे।

एक कहानी मैं कहूं, सुन ले मेरे पूत।
बिन पैरों के उड़ जाती हूँ, बांध गले में सूत।
– पतंग।

एक नार के पेट न आँत, ऊपर नीचे दाँत ही दाँत।
– कंघी।

एक घर में अंधा नर, कंधे ऊपर काठ का घर।
बारह कोस की मंजिल करे, फिर भी घर का घर में फिरे।
– कोल्हू का बैल।

एक चीज ऐसी कहलाये, हर कोई मजबूरी में खाय।
पर कैसी मजबूरी हाय, खाकर भी भूखा रह जाय।
– कसम।

एक डिबिया में बारह खाने, हर खाने में पांच–पांच दाने।
– घड़ी।

ऐसी कली जो खिलती नही।
– छिपकली।

एक फूल है काले रंग का, सिर पर सदा सुहाय।
तेज धूप में खिलजाता है, छाया देख मुरझा जाता है।
– छाता।

एक चबूतर चार बजार, सोलह बिटिया तीन दमाद।
– चौपड़ और बाँस।

एक नार भौरा सी काली, उसके हर दिन खुशहाली।
मेहनत करके काम बनाये, खुद से दुगना बोझ उठाये।
– चींटी।

एक बहादुर ऐसा वीर, गाना गाकर मारे तीर।
– मच्छर।

अठन्नी, चवन्नी नौ ठईयां, बंधे रूपैया कै ठैंया।
– तीन रुपया।

आठ कुल्हाड़ी नौ तलवारें, फिर भी न कटे बेल की डारें।
– परछाई।

अड़ी थी, खड़ी थी, पेट चीर मरी थी।
– दातौन।

अत की अस बालमियां, बड़े जनिक पूंछ।
जहां जाथै बाल मियां, तहां जाथै पूंछ।
– सुई–धागा।

अढमढ फतरी के पुट्ठा में सींग।
– जाता, कुनैता चकिया में घुमाने के लिये लगाई हुई लकड़ी।

अंध कुंआ कचनारी घाट, बत्तीस पीपर एक ठो पान।
– दाँत और जीभ।

अलगत सलगत जाये, सांप न होये अजगर नाये।
– नाव।

अकड़ी छेड़ी छाती में चारा, परैश पांजर मा पगुराय।
– चक्की।

आठ खटाखट नौ खंचारी, सोलह बैल अठारह नारी।
– चरखा।

अंध खोह में चरई बियानी, ओखर पानी बड़ी मिठानी।
– शहद।

अटपट सट गांव, तनी मूंड़ दस पांव।
– बैलगाड़ी।

अंध कुँआ में बंदर ब्यानी, ओखर तेली बहुत मिठानी।
– शहद।

अन्न खाये पानी न पिये।
– बरहैया, कुड़ो।

आखस–पौखस नौ दस पांव, आंखी है पर मूंड़ नहाय।
– केंकड़ा।

आय नोनो जाय नोनो, पानी देख डराय नोनो।
– जूता।

आ जाथै बा जाथै।
– नजर।

आर पार ताई, बीच में लाल बाई।
– मसूर दाल।

आधी काली आधी लाल, लगवे मा चमड़ा की काल।
– भिलवा।

इतनी सी वितनी, काम करै कितनी।
– सुई–धागा।

इत्ती सी मुन्नीबाई डब्बा सी भेष।
कहां जाथै मुन्नी बाई जब्बलपुर देश।
– लिफाफा।

इत्ती सी डिबिया में रामबाई बोले।
– जीभ।

इंहां खूंटा, ऊहां खूंटा, गाय मरखनी दूध मीठा।
– सिंघाड़ा।

इतै से आऊं, उतै से आऊं।
दांत से कुतरुं, कछु न खाऊं।
– लकड़ी काटने की आरी।

करिया कोट पीला पानी, उसमें नाचे चंदा रानी।
– कड़ाही, तेल, पूड़ी।

करिया बाप, हरी मतारी, जेखर टूरी बड़ी प्यारी।
– चाट की चिरौंजी।

काली थी कलूटी थी, काले वन में रहती थी।
लाल पानी पीती थी।
– बालों में जुँआ।

कटोरा पै कटोरा, बेटा बाप से भी गोरा।
– नारियल।

कबरे बैल ला कोईच न जोत सकें।
– डोर।

करिया डारे लाल निकारे, उकरु बैठ फटाफट मारे।
– लोहा गर्म करके पीटना।

कटोरा भर भात, न तै खाय न तोरो बाप।
– नमक।

करिया है पर कौआ नहीं, लम्बा है पर सांप नहीं।
तेल चढ़े पर हनुमान नहीं, फूल चढ़े भगवान नहीं।
– बाल।

कारी हाड़ी सफेद पानी, ओ में नाचे चंपा रानी।
– आँख की पुतली।

काली है पर काग नहीं, लंबी है पर नाग नहीं।
– चोटी।

करिया खेत चरका बीज, पोतन बालो गाय गीत।
– स्लेट बत्ती और लिखने वाला।

कच्चा मा अच्छा लगे, गदरा मा मीठा
पके मा उल कड़वाय।
– बचपन, जवानी, बुढ़ापा।

करिया हंडिया, सफेद भात।
– सिंघाड़ा।

कारी गैया कोटा खाय, पानी देख बिचकत जाय।
– जूता।

कामर भर मुखारी करे, कम्मर बांध मुकद्दम चढ़।
– चूल्हा के ऊपर पैना।

करिया बस मा सफेद सवारी, एक के बाद एक सवारी।
– तवा और रोटी।

करिया बिलैया के हरिय पूंछ।
तोसे न बने तो अपन दाई ला पूंछ।
– भटा।

करिया हवै पर कौआ नहीं, बेढ़वा हवै पर हौवा नहीं।
करथै नाकले सब्बे काम, तै बता ओखर नाम।
– हाथी।

करिया डोकरा के, लाल-लाल टोपी।
- भिलवां।

करिया गाय सींग टेक के पानी पिये।
- कुनैता।

काकी के दो कान, काका के एकउ नइयां।
काकी बड़ी गुनवान, काका कछु जानत नइयां।
- कड़ाही, तवा।

कुर्री गैया कगार पेले।
- हंसिया।

करिया चिरैया के लंबी पूंछ।
नही जानस तो दाई-दादा ला पूंछ।
- गन्ना।

करिया बिल्ली की हरियर पूंछ।
न जान वे तो अपन दाई ला पूंछ।
- मूली।

कहात हौं मौसी गुर्राकर झौसी।
साधे रहती हूँ पूंछ, नारी हूँ पर है मूँछ।
- बिल्ली।

कांच का मटका कचनार की कली।
शरबत का प्याला, शक्कर की डली।
- तरबूज।

खाले पचरी ऊपर पचरी, बीच में मोंगरी मछली।
- जीभ।

खैर सुपारी बंगला पान, नर-नारी के बाइस कान।
- रावण, मन्दोदरी के कान।

खाती हूँ न पीती हूँ, सबको नाच नचाती हूँ,
बोलो क्या कहलाती हूँ।
- ढोलक।

गली–गली दो रांडें जायें, उसरा पदरी पादत जायें।
– जूता।

गिरे रद्द से दस झन, उठाये पांच झन
खाय बत्तीस झन, स्वाद लयेस एक झन।
– पैर, हाथ, दाँत, जीभ।

गली–गली दो रांडें जाय, हिरना घुरना करते जाय।
– जूता।

गोल–गोल गोला, तू काट खाये मोला।
मैं खा जाऊं तोला।
– बेर।

गहरा ताल खौलता पानी, तैरत भर में फूलत रानी।
– पुड़ी।

खाले करे चुभुर चाभर,ऊपर से सुस्ताय।
अंगरेजी में बात करे, कछु समझ न आय।
– साइकिल।

खुट्टा उप्पर बिट्टा नाचे।
– छुरा ब्लेड।

खाती हूं न पीती हूं, सबको नाच नचाती हूं।
बोलो क्या कहलाती हूं।
– ढोलक।

घेर दार लहंगा मेरा, एक टांग पर खड़ी हूं।
सब करते हैं प्यार मुझसे, जब बरसात की लगे झड़ी।
– छाता।

चार कान सिर एक, बिना पुरुष की नार।
काली है गोरी नही, सब कोई करो विचार।
– लोंग।

चले जो नाक पै धरै गोड़े कान पै।
बता टूरा या शैतान के नाम।
– चश्मा।

चार पैर का डाक्टर, रात-रात कुन आय।
बिना पूंछे सुई लगाय।
– मच्छर।

चार चौक में बैठी रानी, जलते ही उसमें बहता पानी।
– मोमबत्ती।

चार पहर चौदह घड़ी, नर के ऊपर नारी खड़ी।
– खपरा।

चार खूंट को चौतरा, ओमें चढ़ गओ सेठ।
सेठ के ऊपर चढ़ी सिठानी, ओको फूलो पेट।
– रोटी।

चक-चक चकली, मूसा कस बकली।
खात की न पियत की, हाथ में धरत की।
– आईना।

चार खूंट की चखरी,कलोर गाय अफरी।
– भरा बोरा।

चक-चक चकरी, बीच में डुकरी।
– मकड़ी।

चार पांव की चम्पा रानी, रोज नहावे जाती।
दार भात को स्वाद न जाने, कच्ची रोटी खाती।
– चौकी बेलन।

चार खूंट चार मुंडा, ओखर मुंह में दे दो डंडा।
– खटिया।

चाट गई चूम गई, दगा दे गई रांड़।
– बरैया।

चिकना पेड़ पुजारी पत्ता, न जाने सरकार का बच्चा।
– केला।

चार चहूका मारिस झूका, कोई कोई हूका।
– गाय का थन।

चार खूंट को चौकड़ा, अस्सी कोष की डोर।
– पतंग।

चार खेत चौंसठ क्यारी, तीन मुकद्दम सोलह पटवारी।
– चौपड़।

चौकी पर चढ़ बैठी रानी, सर पर आग बदन पर पानी।
बार–बार सिर काटो जाका, कोई नाम बताओ काका।
– दीया।

छोटी सी छोकरी,लालबाई नाम।
पहने वह घाघरा, एक पैसा दाम।
– मिर्चा।

छोटे अस गुटान, मारे बड़े जुआन।
– बिच्छू।

छकड़ कान, दो पूछिया,दस गोड़े मुख चार।
एक मूंड़ में सींगई नईयां, पंडा करे विचार।
– गाय, बछड़ा, ग्वाला।

छोट अस बुलबुल राजा के देश।
राजा बड़ा बेईमान फोड़ खाही पेट।
– इलायची।

छै भाई न के एकई पौंद।
– सींका।

छै महिना चोली सीई फंदा लगाये हजार।
उतारी सो पहनी नहीं पंडा करो विचार।
– साँप की केंचुली।

छै पैर की गधैया, कूंद गई नरैया।
पांव भीगी न परैया।
– मकड़ी।

छोट अस टूरा गोल मटोल, कांधा धोती माथा फूल।
– मुर्गा।

छोटा हूँ पर बड़ा कहाता, रोज दही की नदी में नहाता।
– दहीबड़ा।

छोटी सी रामबाई लकीर तीन, दाना खाये हाथ से बीन।
– गिलहरी।

जब मैं हती भोली भाली, तब खूब सही मार।
जबसे पहनी लाल घघरिया, अब न सहूं मार।
– घड़ा।

जरिया के नीचे करिया चमके।

– भटा।

जहाँ–जहाँ जाऊं, तहां–तहां आऊं।
– परछाई।

जड़वा तो पाताल गये, बेला गई आकाश।
फल वातो तीखो लगे, रहे संत के पास।
– तुंबा।

जरा सी लड़की का गोल–गोल पेट।
कहां जाही लड़की रतनपुर देश।
राजा बेइमान फोड़ खाही पेट।
– सुपाड़ी।

जहाँ तक बेला वहां तक फल।
– नदी, मछली।

जब रही लरकैया खूब सही मार।
अब पहनी है लाल चुनरिया, अब न सहहों मार।
– मिट्टी का घड़ा।

जरा सा टूरा, गठ्ठा भर दातून करे।
– चूल्हा, लकड़ी।

जो खाये वो करे कमाल, डारे हरी निकारे लाल।
– पान।

तन्नक सो टूरा तूलमतूल, कांधे धोती माथे फूल।
– मुर्गा।

तन्नक सी मन्नक सी पहने सुतनिया।
तुरत फुरत काम करे राजा की मनिया।
– सुई–धागा।

तेली को तेल कुम्हार को हंडा।

हाथी की सूंड, नवाब को झंडा।
– चिमनी, दीपक।

तनका छोटा मन का हीन, बांसुरी बजाने में बड़ा शौकीन।
– मच्छर।

तीन गोड़ धरनी धरे, एक गोड़ अगाश।
बिन बदरा बरसा करे, शंकरजी के पास।
– कुत्ते का पेशाब करना।

तन्नक सो सोनो, सब घर नोनो।
– दीपक।

तीन खूंट की तितली, नहा धोकर निकली।
– समोसा।

तन्नक सी डिबिया में कोदों भरो।
बूझ तोर दाई से कहां धरिस।
– ऊमर का फल।

तुम बड़े हम छोटे, हम छुई देयन तुम रोय देयन।
– बिच्छू।

तन्नक सी थैली में, दुल-दुल के बीज।
– मिर्च।

तीन पांव हैं हाथ नहीं, तन है बड़ा कठोर।
आती जाती कहीं नहीं, खड़ी रहे निजठौर।
– स्टूल।

दादा कहे से न मिले, मामा कहत मिल जाय।
– ओंठ।

दिन में भरी, रात में खाली।
– अरगनी।

दिन की बहन, रात की नारी, भोर होत लगती महतारी।
– पत्नी।

दादा के फटीस, दाई के फटीस।
दोनों के जाके एक मा गुथीस।

– पिताजी की धोती, माँ की साड़ी, फटने के बाद बनी गोदड़ी।

दाई के देखो बहिन के देखो, और देखो सास और सारिन के।
समय–समय पर सबके देखो, और न देखो घरवाली के।
– पत्नी के विधवा होने के बाद चूड़ी का टूटना।

दादा पकरे दाई को कान, दाई पकरै सब लरकन को कान।
– घर की बढ़ेरी।

दादा खों छोड़ गये, बऊ खों ले गये।
– ताला, चाबी।

दादा की गहरी, दाई की उथली।
– जूता, चप्पल।

देवे सें घटत नहीं,छीने से जाती नहीं।
जो पा जाता है इसको, उसका बढ़ता मान।
– विद्या।

दाँत चुहिया के चोंच चिड़िया के, बंदर जैसा मुख।
यह पखेरू दूध पिलाये, कभी न पाये सुख।
– चमगादड़।

दो सींग छोटी पूंछ, दाढ़ी संग नाम भर मूंछ।
– बकरा।

दस करती है दिन भर काम,दस का होता यों ही नाम।
बीसों रहतीं सबके, देखो धर पैरों पर हाथ।
– हाथ पैर की अंगुलियाँ।

धन्य बगीचा ओही, फल के ऊपर गोही।
– भिलवा।

धूप मा पैदा होवै, छाँव देख मुरझाय
ऐ रे भाई मैं तोला पूंछ, हवा लगे मर जाय।
– पसीना।

न राजा के राज में, न माली के बाग में
फोड़ो तो गुठली नहीं, खाओ तो स्वाद नहीं।
– ओला।

नन्ही सी रामबाई, राजा संग जेवै।
– मक्खी।

नारी एक पुरुष हैं ढेर, सबसे मिले वह सौ–सौ बेर।
– कंघा, ककई।

नाक में चढ़के, कान को पकड़े।
– चश्मा।

पन्द्रा आये पाहुने, बरा बनाओ एक।
सबको दे दओ खावे, मोको बच गओ एक।
– मुँह का कौर।

पड़रा खेत में करिया नागर।
– कागज कलम।

डोंगर से उतरी बांदरी, घरै छिदाये कान।
खीर पुड़ी का भोजन किया, घूरे लये मिलाय।
– दौना पत्तल।

परन न पाई पोह दई।
– साँकल लगाना।

पूरा जंगल जल गया, बाबा की लंगोटी बच गई।
– पगडंडी।

पहले रही मैं भोली–भाली, फिर पहनी हरी री चोली।
अब हो गई डगमग डोली, दुनिया में अब घूंघट खोली।
– ज्वार की फसल।

पंचम पकरम दस करम, बत्तीस पुरुष के नार।
अपना मतलब साधकें, डारिन पीछे मार।
– दातून।

पाखा से पगुराय।
– चक्की।

पेड़ न पत्ता चली जा कलकत्ता।
– अमर बेल।

पहार ला निकरो भोई, कम्मर पकड़े लुगाई।
– मूसर।

पेंचक–पेंचक जात कहां, आंखें जुग–जुग सिर कहां।
– केंकड़ा।

फूले फुनई करे करहाई, एक अचंभा ऐसा भाई।
– भुट्टा।

फूट गई तुम्मी, बगर गओ खेल।
तीन भये रडुआ, एक हो गयो फैल।
– तूमरा।

फरे न फूले झौवा भर होय।
– राख।

पैन नहीं पर चलती हूँ, रंग बिरंगी होती हूँ।
सस्ते में मिल जाती हूँ, पर रबर से डरती हूँ।
– पेन्सिल।

पिये न खावै घर को तकावै।
– ताला।

फिरत मडैया में बाप गुराय।
– कुनैता।

फरै न फूलै नवै न डार, यह फल खईयो बारौ मास।
– आलू।

बारा कोठा एकई गांठ, परखी लगी तीन सौ गांठ।
– एक वर्ष।

बात की बात, ठिठोली की ठिठोली।
आदमी की गांठ औरत ने खोली।
– ताला–चाबी।

बाबा सोवै जा घर में, पांव पसारे वा घर में।
– दीपक का उजाला।

बिना बटन की चोली पहरे, फुन्दा लगे हजार।
छै महीना पहीरे रहै, कोरी धरै उतार।
– साँप की केंचुली।

बाप बड़ो बेटा बड़ो, नाती बड़ो अमोल।
जिनके पंती ऐसे भये, बिके माटी के मोल।
– मठा।

बारह माह में आ गओ, बादी नौ रंग बिछाये खाट।
बिछात न तो बिछा दओ, पर उठाहै के को बाप।
– गुदना।

बिन पांव ऊपर चढ़ै बिन मुंह आटा खाय।
मारे से जी उठे, बिन मारे मर जाय।
– मांदर।

बचपन में चौथी चौथा, जवानी में झोंपा।
बुढ़ापा में खल्लर–खुल्लर, तबहूं न छोड़ा मोला।
– चना।

ब्रम्हाजी सागर रचे, तिल बूड़े न राई
हाथी पीवै घोड़ा पीवै, पीवैं लोग लुगाई
उड़ता पक्षी न पी पाये धन्य प्रभु चतुराई।
– आँचल का दूध।

बिन पैर पर्वत चढ़ै, बिन मुंह फल खाये।
ऐसा कौन है जो, पानी पियता मर जाय।
–आग।

बाबा की थैली में हुं हुं के बीजा।
– मिर्ची।

बत्तीस पीपर एक पान।
– जीभ।

बीस नख ऊपर चले, दस नख अध फहराये।
दस नख धरनी पै चले, तीन लोक की संपदा सिर पर लेके जाय।
– कृष्णजी और वासुदेव।

बाबा सोय जा घर में, टांग पसारे वा घर में।
– दीपक का प्रकाश।

बैठे है तो ठांड़े हैं, ठांडे हैं तो ठाँडे हैं।
ठाँडे हिरना किरकिराय, पानी पिये न अन्न खाय।
– किवाड़।

बत्तीसों के बीच अकेली नाचे।
– जीभ।

बरिया तरे करिया लोटे।
– भटा।

बीच कुंआ में गलगल करनी, ओखर चीखी बड़ी मिठानी।
– शहद।

बुढ्ढी निकली उछारी, बुढ्ढा निकले कथरी ओढ़के।
– मक्का।

बारह घोड़े तीस गाड़ी, तीन सौ पैंसठ करे सवारी।
– साल, महिना, दिन।

बरी रहूं धड़ के बिना, करी बनूं सिर के बिना।
पैर कटे तो बक बन जाऊं, तीन अक्षर का नाम बताऊं।
– बकरी।

बैठा–बैठा बात बनाये, ऐसा नर की सबको भाये।
बूढ़ा बाढ़ा जो भी आये, उसके आगे शीश नवाये।
– नाई।

माटी का घोड़ा,लोहे की लगाम।
एक चढ़े एक उतरे, एक करे सलाम।
– चूल्हा, तवा और रोटी।

मैं हरी मेरे बच्चे काले, मुझे छोड़ मेरे बच्चे खाले।
– इलायची।

मरो बुकरा पानी पिये।
– मांदर।

मोर पति को ऐसो नाम, रेल चले और रूक भी जाय।
– हरी लाल।

मखमल की थैली में बुलबुल के अंडे, न बतावे तो पडही डंडे।
– भिंडी।

मैं कटूं मैं मरूं तू क्यों रोय।
यहाँ गई वहाँ गई, न जाने कहाँ गई।
– सड़क।

ये रे बेगा बावरो,वन कजरी को राव।
फूल के आगू फर लगे, एखर अर्थ बतावो।
– भिलवा।

रात में एक दिन में दो।
– दरवाजा।

राजा फाँसी टंगे, रानी घूमे ला जाय।
– ताला–चाबी।

राजा केर पैसा, कोनो न गिन सके।
– तारे।

रींगा–रींगा तीन सींगा, गाय कारी दूध मीठा।
– सिंघाड़ा।

राजा के राज में नहीं, माली के बाग में नहीं।
फोड़ो तो गुठली नहीं, खाओ तो स्वाद नहीं।
– ओला।

राम–लखन ने खेती जोती, सीता ले गई रोटी।
बिन लकड़ी का पेड़ बतइयो, फिर खइयो तुम रोटी।
– केला का पेड़।

रह रह बजती घड़ी नहीं, दुबली–पतली छड़ी नहीं
दो मुँह वाली साँप नहीं, सांसें भरती आप नहीं।
– बाँसुरी।

लाल मूंड मुरगा नहीं, हरी घींच नहीं मोर।
लंबी पूँछ बानर नहीं, चार पाँव नहीं ढोर।
– गिरगिटान।

लड़का डाले लटक पटक, बुड्ढा डालै बैठकें।
जवान डाले पकड़ चुटैया, रह गई तब में ऐठ के।
– जूता।

लख लखनी गयी नहान, बीच गली में लखनी गिर गई।
कौआ खाय न गीध।
– मिट्टी का मटका।

लोहा के डब्बा में काँटा जड़ा, खोल के देखा तो मेवा भरा।
– कटहल।

लाल हरे सब मोती से, पैदा हुये सब खेती से।
बड़ी दूर से आते हैं, बड़े चाव से खाते हैं।
– अंगूर।

लाल–लाल डिबिया में पीले खाने।
अंदर सजे रखे मोती के दाने।
– अनार।

नानकुन टूरी उचक उचक के पार बांधे।
– सुई–धागा।

नान अस डिबिया मा लाल बाई बैठिस।
– मूँगफली।

नीचे तैया ऊपर तैया, बीच में बैठी भूरी बिलैया।
– चार की चिरौंजी।

नाव के अंदर नदी, नदी के अंदर नाव।
– आँख।

नीचे से ऊपर को जाती, फिर मोती बन नीचे आती।
– वर्षा की बूँद।

वर मांगन वा गई, वर मिले तत्काल।
वर मिलते विधवा भई, ऐसी सुंदर नार।
– कैकेई।

वजन बहुत है थोड़ा, बैठा है नाक सिकोड़ा।
– चना।

सफेद बिलैया के हरियर पूँछ।
तोसे न बने तो आपन दाई ला पूंछ।
– मूली।

सुंदर से पुत्तुलाल, बड़ी लंबी पूंछ।
वो गये पुत्तु लाल,पकड़ो उसकी पूंछ।
– पतंग।

सूपा भर लाई, देश भर बगराई।
– तारे।

सोना है सुनार नहीं, गुम्मज है द्वार नहीं।
– अण्डा।

सरपट लकड़ी तीन गठान, जो न बताये ओखर बाप पठान।
– अंगुली।

सरी रूख के फुनगी में गांठी
– नागर मोथा।

सास खिसयानी बहु बियानी, ननद हरिरो खाय।
सात सखी देखन आंय, वोऊ गाभिन हो जाय।
– शराब बनाने का चूल्हा।

सिर में फूले कमर में फले, जादा खाये तो हग भरे।
– मक्का।

सांप कस सरके, सांड़ कस दहके।
– रेल।

साठ ऊँट नौ खूँट, बांधे ऊने ऊन।
– खूँटा।

सांकर कुँइया सीक न जाये, मिरगा पानी पी पी जाय।
– थन।

सर्रा पेड़ सर्र गठान, जो न जाने ओखर बाप पठान।
– छींद का पेड़।

सोन के गाधर, मैन के ढकना।
– तेन्दू फल।

हरी–हरी मछली के, हरे हरे अंडे।
जल्दी बताओ नहीं तो पड़ेंगे डंडे।
– मटर।

हरा आटा लाल पराठा।
– मेहंदी।

हड्डी फोड़ के बछड़ा छूटे, बिन थन की गाय।
बिन दूध के कैसे जियत, या को अर्थ बताओ।
– मुर्गी का बच्चा।

हरी बस लाल कीट, बैठन वारे काले कीट।
– तरबूज।

भीली हेखण्या वात्रा

भानुशंकर गेहलोत

भानुशंकर गेहलोत

धम-धम राणीं महल चठे।

- बूटी (गिलहरी)।

छव पुरई, एक-एक पुरई पर दुई दुई घेर जवायला राख्या ते पुण निहिं रही।

एक घेर जवायलो अळि राख्यो तिं रहीं।

- छः लड़कियाँ, एक-एक लड़की पर दो-दो घर जँवाई रखे तो भी नहीं रहीं। एक घर जँवाई और रखा तब रहीं।

गाड़ी नो पयड़ो जैरामा छव पुठी अळि बारह आरा होय छे।

एक-एक पुठि मा दुई-दुई आरा लागे तेर पर एक पाटो चढ़ावे तिं सूद मा रहे छे।

- गाड़ी का पहिया जिसमें छः पुठी और बारह आरे, एक-एक पुठी में दो-दो आरे लगे होते हैं। उस पर एक लोहे का पाटा चढ़ाते हैं तथा पुठ्ठियाँ सीध में रहती हैं।

बास ने पुर्‌यान एक नाव

पिता व पुत्र का एक नाम।

- महुए का वृक्ष व फूल (महुआ)।

आठ पाय उटड़ी ने वासे पिछड़ी।

आठ पैर की उटनी और पीठ पर पिछड़ी।

- तराजू।

आग्ठि काजे सिंव लागे, पाणी काजे तिस लागे।

आग को सर्दी लगती है, पानी को प्यास लगती है।

- आग को राख में ढाँकना और पानी में नहाते समय समोवण डालना (गरम पानी में ठंडा मिलाना)।

तारी बायर तारो निहिं लेय दिसरान् लेय।

– तेरी पत्नी तेरा नहीं लेती है, दूसरे का लेती है। पत्नी स्वयं के पति का नाम नहीं बोलती है, दूसरे का नाम बोलती है।

अधर पोतरो भुएँ आंडा।
ऊपर घोंसला, घोंसले के नीचे अण्डे।
– महुआ।

माय वाकड़ी बेटी धोकड़ी नानो काल्यो।
माँ टेड़ी लड़की टेड़ी–मेढ़ी व पुत्र काला।
– इमली व उसका बीज।

माळे चढ़िन् कचरो काढ देजि,
वीस जणा ना मुंडका काट देजि,
अळि कोठड़ी मा रंग नाख देजि।
मेड़ी पर चढ़कर कचरा साफ कर देना, बीस आदमियों के सिर काट देना एवं कमरे में रंग डाल देना।
– बालों में कंघा करना, नाखून काटना एवं पान खाना।

एक डोकरी उठि सुटिन दर मा हात नाखे।
एक बुढ़िया उठकर दर में हाथ डालती है।
– काँचली पहनना।

माय वाकड़ी ने पुर्‌यो डाकणों।
माँ टेड़ी और लड़का डाकणा।
– कमान एवं तीर।

औंधे वाटके धुल्यो लटके।
औंधे कटोरे में दही लटके।
– कपास।

झाड़ धामधुम, पान थाटी, नाव श्यामसुन्दर गांड काळी।
झाड़–पत्तों से भरा पूरा, पान थाली, नाम श्यामसुन्दर, गुदा काला।
– पलाश का पेड़, पत्ते एवं फूल।

एक गिलास मा दुइ रंग्यो पाणी।
एक गिलास में दो रंग का पानी।
– अंडा।

छव पुरइ पर बारेह घेर जवांयला।
छः लड़कियों पर बारह घर जँवाई।
– गाड़ी की छः पुट्ठी और बारह आरा।

सवळी सुटि छेड़े गाँठ।
सवली (बिना गठान की लकड़ी, सिरे पर गठान)।
– डोंगला घास।

धवळला बुकड़ान् बारेह खाल।
सफेद बकरे की बारह खाल।
– प्याज।

भूरया हेल्गान बारेह दुसा।
भूरे पाड़े की बारह गुदा।
– दीमक का बिल।

उचली डुकरी गलाम् धाद्या।
ऊँची (लम्बी) बुढ़िया गले में स्तन।
– पपीता।

आवती नंद मा हड़मान कूदे।
पूर आइ हुई नदी में हनुमान कूदे।
– लकड़ी का चम्मच।

देय तीं निहिं खाय, निहिं देय तीं खाय।
देते हैं तब नहीं खाते हैं, नहीं देते हैं तो खाते हैं।
– बैलों के मुस्के।

उँचली डुकरिन् रंगला दाँत।
ऊँची बुढ़िया के रंगे हुए दाँत।
– सिंदी।

आखा घरेन् एक बंद।
पूरे घर का एक बंध।
– डूठी।

एक घाले दुइ करिन् हेड़े।
एक घाले दो मिलकर निकाले।
– काँटा निकालने का सूला व चिमटा।

मसरून् कुथळी, हाय-हय ना बीजा।
मसरू की थैली, हाय-हाय के बीच।
- मिर्च।

काळी चापरी हेट चार डुकल्या।
काली चट्टान के नीचे पार डोकल्या।
- भैंस के आँचल।

खालड़ान् धल्लि पवन नो सर, देधि सातल्ये ने लागी नाके।
चमड़े की कमान हवा का तीर छोड़ा जाँघ पर और लगा नाक पर।
- अपानवायु निकलना।

रातड़ चरती जाय काळी बसती जाय।
- आग्ठि।

नाल चरती जाय काली बैठती जाय।
- आगी।

चापरी ऊपर पाणी, पाणी पर वेलु, वेलु पर फूल।
सिला के ऊपर पानी, पानी पर बेल, बेल पर फूल।
- चिमनी।

थापड़ा इन सुवाड़ूयो ने धोदाइन् उठाड़ूयो।
- रूटो मकिन्।

थप्पड़ मारकर सुलाया और एड़ लगाकर उठाया।
- मक्का की रोटी।

आखी वागुम् बुबराल्यु कुण।
पूरी बाग में बाल वाला कौन।
- नारियल।

आखो जंगल धपग्यो ने कोष्टो ततरो रहिग्यो।
पूरा जंगल जल गया, लंगोटा बच गया।
- रास्ता।

लावरी सुसरती जाय ने आंडा मेक्ती जाय।
लावरी चलती जाय और अंडे देती जाय।
- सुई।

टुचकी हेड़िन् खीर खाऊँ।
ढकनी निकालकर खीर खाऊँ।
– टेमरू।

पाय काटिन झाड़के चढ़ूँ।
पैर काटकर वृक्ष पर चढ़ूँ।
– जूते।

आर जाय पार जाय पाणी देखिन् गळि जाय।
इस पार से उस पार जाय पानी देखकर गल जाये।
– कागज।

बोकड़ा दवड़ाइन दही खाऊँ।
बकरे भगाकर दही खाऊँ।
– शहद।

एक लिंबु चार चीर नाळो–नाळो सवाद लागे।
एक नींबू की चार फाँक अलग–अलग स्वाद लगे।
– दही, छाछ, मक्कन, घी।

भड़क बुकड़िन् एक सींग।
भड़क बकरी का एक सींग।
– घट्टी (हाथचक्की)।

नव सौ ओंउदा नव सौ सुदा।
नौ सौ औधे, नौ सौ सीधे।
– नलिया, कवेलू।

लाड़ा नो मुड़को निहिं छे ने लाड़ी नो पाय निहिं छे।
दूल्हे का सिर नहीं और दुल्हन के पैर नहीं।
– केकड़ा व मछली।

पोल्ट्या वड़ मा पाच आंडा।
पोले वड़ में पाँच अंडे।
– जूते।

एक डुकरी उठि सुटिन दर मा हात भरे।
एक बुढ़िया सुबह उठकर दर में हाथ भरती है।
– काँचली।

लुहारेन् पुर्‌यो कुवा मा पड़े ने सुतारेन् पुर्‌यो आयड़े।
लोहार का लड़का कुँए में गिरता है और सुतार का लड़का चिल्लाता है।
– मोठ एवं चाँक।

धवळ्‌लो खेत काळो बीज वेरना हारो गावे गीत।
सफेद खेत काला बीज, बोने वाला गावे गीत।
– कागज, स्याही एवं लिखने वाला।

एक हेल्गान् बारे नाथ।
एक पाड़े की बारह नाथ।
– ढोल।

दुइ भाइ मिळिन् एक पाघड़ी बाँधे।
– बैल ने रास।

दो भाई मिलकर एक पगड़ी बाँधते हैं।
– बैल एवं रस्सी।